अनुक्रम

प्रथम प्रकरण

वर्ण-विचार

सस्कृत भाषा मे वर्ण दो प्रकार के है—**स्वर** और **व्यञ्जन**। स्वर १३ हैं और व्यञ्जन ३५।

स्वर

जिसके उच्चारण मे अन्य वर्ण की सहायता नही लेनी पडती, उसे स्वर कहते हैं। स्वर ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत होते हैं। जैसे, ह्रस्व—उ, दीर्घ—ऊ, प्लुत—उ३।[१]

स्वर ये हैं—

ह्रस्व—अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

दीर्घ—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है, वे प्लुत माने जाते हैं।

ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत मे से प्रत्येक के तीन भेद होते हैं—

उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

उदात्त—तालु आदि स्थानो के ऊपरी भाग से उच्चारित स्वर को उदात्त कहते हैं।

अनुदात्त—तालु आदि स्थानो के निचले भाग से उच्चारित स्वर को अनुदात्त कहते हैं।

स्वरित—जिसमें उदात्त और अनुदात्त—दोनो का मेल रहता है, उसे स्वरित कहते हैं।

इन स्वरो में से प्रत्येक के दो भेद हैं—**अनुनासिक** तथा **अननुनासिक**।

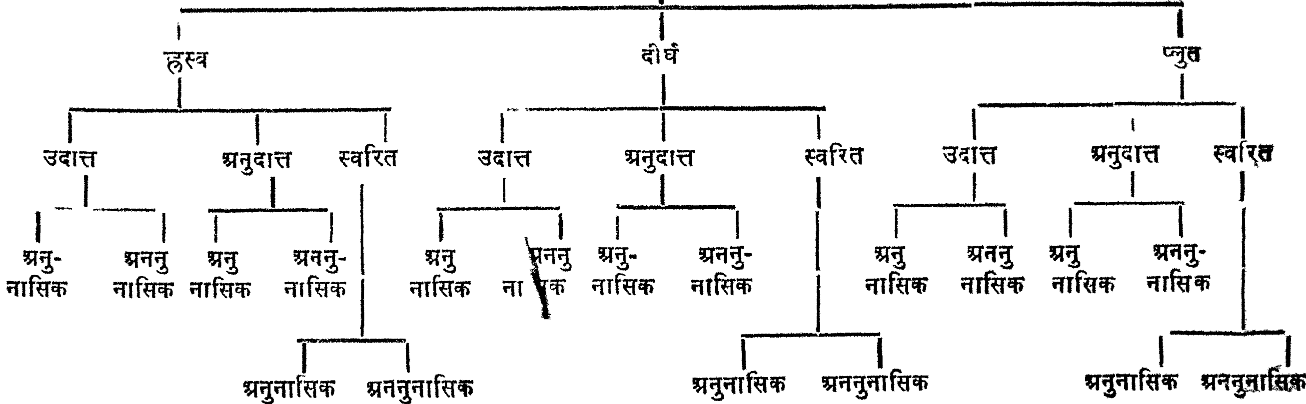
जिसका उच्चारण नासिका की सहायता से होता है, उसे **अनुनासिक** कहते हैं और जिसका उच्चारण नासिका की सहायता से नही होता, उसे **अननुनासिक** कहते हैं।

इस प्रकार स्वर के अठारह भेद हुए।

---

१ एकमात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जन चार्धमात्रकम्॥

जिसके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उसे ह्रस्व कहते है, जिसके उच्चारण मे दो मात्राओ का समय लगता है, उसे दीर्घ कहते हैं और जिसके उच्चारण मे तीन मात्राओ का समय लगता है, उसे प्लुत कहते हैं।


(पृष्ठ २ का चक्र द्रष्टव्य)
स्वर
ह्रस्व
दीर्घ
प्लुत
उदात्त
अनुदात्त
स्वरित
उदात्त
अनुदात्त
स्वरित
उदात्त
अनुदात्त
स्वरित
अनु-नासिक
अननु नासिक
अनु नासिक
अननु-नासिक
अनु नासिक
अननु नासिक
अनु-नासिक
अननु-नासिक
अनु नासिक
अननु नासिक
अनु नासिक
अननु-नासिक
अनुनासिक
अननुनासिक
अनुनासिक
अननुनासिक
अनुनासिक
अननुनासिक

व्यञ्जन

जिसका उच्चारण स्वर के बिना नहीं होता, उसे व्यञ्जन कहते हैं।

कवर्ग (कु)—क ख ग घ ङ।

चवर्ग (चु)—च छ ज झ ञ।

टवर्ग (टु)—ट ठ ड ढ ण।

तवर्ग (तु)—त थ द ध न।

पवर्ग (पु)—प फ ब भ म।

अन्तःस्थ—य र ल व।

ऊष्मवर्ण—श ष स ह।

अनुस्वार

विसर्ग

क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श कहे जाते हैं—कादयो मावसाना स्पर्शाः।

क ख च छ ट ठ त थ प फ श ष स का परुषव्यञ्जन और शेष को मृदुव्यञ्जन भी कहते हैं।

क ख के पहले का अर्धविसर्ग सदृश संकेत जिह्वामूलीय कहा जाता है। जैसे—≍क ≍ख। प फ के पहले आने वाला अर्धविसर्ग-सदृश संकेत उपध्मानीय कहा जाता है। जैसे—≍प ≍फ।

उच्चारण

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः—अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है। इन्हे कण्ठ्य कहते हैं।

इचुयशानां तालु—इ ई च छ ज झ ञ य और श का उच्चारण-स्थान तालु है। ये तालव्य कहे जाते हैं।

ऋटुरषाणां मूर्धा—ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र और ष का उच्चारण स्थान मूर्धा है। ये मूर्धन्य कहे जाते हैं।

लृतुलसानां दन्ताः—लृ त थ द ध न ल और स का उच्चारण दाँतो से होता है। ये दन्त्य कहे जाते हैं।

उपूपध्मानीयानामोष्ठौ—उ ऊ उपध्मानीय प फ ब भ म का उच्चारण ओठो से होता है। ये ओष्ठ्य कहे जाते हैं।

ञमङणनानां नासिका च—ञ म ङ ण और न का उच्चारण-स्थान नासिका भी है।

एदैतोः कण्ठतालु —ए और ऐ का उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालु है।

ओदौतोः कण्ठोष्ठम् —ओ और औ का उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ है।

वकारस्य दन्तोष्ठम् —व का उच्चारण-स्थान दन्त और ओष्ठ है।

जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् —जिह्वामूलीय का उच्चारण स्थान जिह्वा की जड़ है।

नासिकानुस्वारस्य—अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है।

प्रयत्न

प्रयत्न दो प्रकार के हैं—आभ्यन्तर और बाह्य।

आभ्यन्तर के चार भेद हैं—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत तथा संवृत।

स्पृष्ट—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।

ईषत्स्पृष्ट—य र ल व।

विवृत—स्वर तथा श ष स ह।

संवृत—ह्रस्व अवर्ण के प्रयोग में संवृत प्रयत्न होता है। प्रक्रिया दशा में ह्रस्व अवर्ण का विवृत प्रयत्न होता है।

बाह्य प्रयत्न ११ प्रकार के हैं—

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

विवार, श्वास और अघोष—वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण तथा श, ष, स।

संवार, नाद और घोष—वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण तथा य, र, ल, व, ह।

अल्पप्राण—वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चमवर्ण तथा य, र, ल, व।

महाप्राण—वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण तथा श, ष, स, ह।

माहेश्वरसूत्र

अइउण्। ऋलृक्। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्। लण्। ञमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। शषसर्। हल्।

इन चौदह सूत्रों से प्रत्याहारों की सिद्धि होती है। प्रत्याहार बनाने के लिए अन्तिम इत्संज्ञक वर्ण के साथ आदिवर्ण मिलाया जाता है। प्रत्याहार से आदिवर्ण और इत्संज्ञक वर्ण तथा आदिवर्ण के बीच में आने वाले सभी वर्णों का बोध

होता है। इत्संज्ञक वर्ण की गणना नहीं होती। जैसे अण् प्रत्याहार अ इ, उ का बोधक है। इसी प्रकार अच् प्रत्याहार से अ, इ, उ, ऋ, लृ ए, ओ, ऐ, औ का बोध होता है।

उपर्युक्त सूत्रों से ४२ प्रत्याहार बनते हैं।[१] ये प्रत्याहार अधोलिखित हैं—

१ अण्—अ इ उ।

२ अक्—अ इ उ ऋ लृ।

३ अच्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ।

४ अट्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र।

५ अण्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल।

६ अम्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न।

७ अश्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

८ अल्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

९ इक्—इ उ ऋ लृ।

१० इच्—इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ।

११ इण्—इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल।

१२ उक्—उ ऋ लृ।

१३ एङ्—ए ओ।

१४ एच्—ए ओ ऐ औ।

१५ ऐच्—ऐ औ।

१६ हश्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

१७ हल्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

१८ यण्—य व र ल।

१९ यम्—य व र ल ञ म ङ ण न।

२० यञ्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ।

२१ यय्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।

---

१ सिद्धान्त कौमुदी के टीकाकार वासुदेव दीक्षित ४४ प्रत्याहारों की चर्चा करते हैं।

२२ यर्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।

२३ वश्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

२४ वल्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द् ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

२५ रल—र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

२६ मय्—म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।

२७ ङम्—ङ ण न।

२८ झष्—झ भ घ ढ ध।

२९ झश्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

३० झय्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।

३१ झर्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।

३२ झल्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

३३ भष्—भ घ ढ ध।

३४ जश्—ज ब ग ड द।

३५ बश्—ब ग ड द।

३६ खय्—ख फ छ ठ थ च ट त क प।

३७ खर्—ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।

३८ छव्—छ ठ थ च ट त।

३९ चय्—च ट त क प।

४० चर्—च ट त क प श ष स।

४१ शर्—श ष स।

४२ शल्—श ष स ह।

द्वितीय प्रकरण

सन्धि

दो वर्णों का अति समीप आना सन्धि है। सहिता या सन्धि के विषय में निम्नलिखित नियम है—

> 'सहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयो ।
> नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥'

एक पद मे, धातु और उपसग में तथा समास में सन्धि करना अनिवार्य है। वाक्य के शब्दो में सन्धि करना या न करना वक्ता की इच्छा पर है।

एक पद—नै + अक = नायक ।

उपसर्ग और धातु—प्र + अवतत = प्रावतत ।

समास—श्री + ईश = श्रीश ।

वाक्य—मुनिर्ध्यायति या मुनि ध्यायति ।

स्वर सन्धि

अक सवर्णे दीर्घ—यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ के बाद सवर्ण स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) आए, तो दोनो के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे—

दैत्य	+	अरि	=	दैत्यारि ।
पुस्तक	+	आलय	=	पुस्तकालय ।
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय ।
गिरि	+	इन्द्र	=	गिरीन्द्र ।
कवि	+	ईश	=	कवीश ।
विष्णु	+	उदय	=	विष्णूदय ।
वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव ।
होतृ	+	ऋकार	=	होतॄकार ।

अदेङ् गुण—अ (ह्रस्व अकार), ए और ओ को गुण कहते हैं।

आद्गुण—यदि अ या आ के बाद इ या ई आए, तो दोनो के स्थान पर ए हो जाता है, उ या ऊ आए, तो दोनो के स्थान पर ओ हो जाता है, ऋ या

ऋ आए, तो दोनो के स्थान पर अर् हो जाता है और लृ आए, तो दोनो के स्थान पर अल् हो जाता है। जैसे—

पुत्र + इष्टि = पुत्रेष्टि।
महा + इन्द्र = महेन्द्र।
उमा + ईश = उमेश।
चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय।
गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्।
महा + उदय = महोदय।
कृष्ण + ऋद्धि = कृष्णर्द्धि।
देव + ऋषि = देवर्षि।
तव + लृकार = तवल्कार।

वृद्धिरादैच—आ, ऐ और औ को वृद्धि कहते हैं।

वृद्धिरेचि—यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आए, तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है और ओ या औ आए, तो दोनो के स्थान पर औ हो जाता है। जैसे—

मम + एतत् = ममैतत।
मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्।
गङ्गा + ओघः = गङ्गौघ।
परम + औदार्यम् = परमौदार्यम्।

एत्येधत्यूठसु—यदि अवर्ण के बाद एजादि इण् या एध् धातु हो या ऊठ् हो, तो पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है। जैसे—

उप + एति = उपैति।
उप + एधते = उपैधते।
प्रष्ठ + ऊह = प्रष्ठौह।

अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् (वा०)—यदि अक्ष के बाद ऊहिनी शब्द आए, तो पूर्व और पर वर्णों (अ+ऊ) के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है। यथा—अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी।

प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (वा०) यदि प्र के बाद ऊह, ऊढ, ऊढि, एष और एष्य आएँ, तो पहले और बाद के स्वरों के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है। जैसे—

प्र + ऊह = प्रौह। (प्रकृष्ट तर्क)।
प्र + ऊढ = प्रौढ।

प्र + उढि = प्रौढि ।

प्र + एष = प्रैष (प्रेषण) ।

प्र + एष्य = प्रैष्य (सेवक) ।

ऋते च तृतीयासमासे (वा०)—तृतीया-तत्पुरुष समास मे अवर्ण के बाद ऋत शब्द के आने पर पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है अर्थात् आर् हो जाता है । जैसे—सुख + ऋत (सुखेन ऋत) = सुखार्त ।

वृद्धि आदेश तृतीया तत्पुरुष मे ही होता है, अन्य स्थल पर नही । जैसे—परम + ऋत (परमश्चासौ ऋत) = परमर्त ।

प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे (वा०)—यदि प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण और दश शब्दो के बाद ऋण शब्द आए, तो पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है । जैसे—

प्र + ऋणम् = प्रार्णम् ।

वत्सतर + ऋणम् = वत्सतरार्णम् ।

कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम ।

वसन + ऋणम् = वसनार्णम् ।

ऋण + ऋणम् = ऋणार्णम् ।

दश + ऋणम् = दशार्णम् (देश–विशेष) ।

उपसर्गादृति धातौ—यदि अवर्णान्त उपसर्ग के बाद ऐसी धातु हो, जिसके प्रारम्भ मे ऋ हो, तो पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर वृद्धि आदेश होता है । जैसे—प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति ।

एङि पररूपम्—यदि अवर्णान्त उपसर्ग के बाद ऐसी धातु हो, जिसके प्रारम्भ मे ए या ओ हो, तो पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप एकादेश होता है । जैसे—

प्र + एजते = प्र् + अ + एजते = प्र् एजते = प्रेजते ।

उप + ओषति = उपोषति ।

एवे चानियोगे (वा०) यदि अकार के बाद अनिश्चय बोधक एव हो, तो पूर्व और पर वर्णो के स्थान पर पररूप एकादेश होता है । जैसे—क्व + एव = क्वेव भोक्ष्यसे ।

जब भोजन का स्थान निश्चित रहता है, तब वृद्धि होती है ।

जैसे—तव + एव = तवैव । अर्थात् मैं तुम्हारे घर भोजन करूँगा ।

ओमाङोश्च—यदि अवर्ण के बाद ओम् या आङ् उपसर्ग हो, तो पररूप एकादेश होता है। जैसे—शिवाय + ओ नमः = शिवायो नम, शिव + एहि (आ + इहि) = शिवेहि।

शकन्ध्वादिषु पररूप वाच्यम् (वा०)—शकन्धु आदि मे पररूप एकादेश होता है। यहाँ पूर्व शब्द की टि[1] का लोप हो जाता है। जैसे—

शक + अन्धु = शकन्धु ।
कर्क + अन्धु = कर्कन्धुः।
मनस् + ईषा = मन् + ईषा = मनीषा ।
कुल + अटा = कुलटा ।
पतत + अञ्जलि = पतञ्जलिः ।
सीमन् + अन्त = सीमन्त ।
सार + अङ्ग = सारङ्ग ।
मात + अण्ड = मार्तण्ड ।

ओत्वोष्ठयोः समासे वा (वा०)—यदि अवर्ण के बाद ओतु या ओष्ठ शब्द आए, तो समास में विकल्प से वृद्धि होती है। जैसे—स्थूलोतुः, स्थूलौतुः, बिम्बोष्ठः, बिम्बौष्ठ ।

इको यणचि—यदि बाद मे असमान स्वर हो, तो इ या ई के स्थान पर य्, उ या ऊ के स्थान पर व्, ऋ या ॠ के स्थान पर र् और लृ के स्थान पर ल् हो जाता है। जैसे—

यदि + अपि = यद्यपि ।
इति + अत्र = इत्यत्र ।
सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्य ।
मधु + अरि = मध्वरि ।
सु + आगतम = स्वागतम् ।
धातृ + अंश = धात्रंश ।
लृ + आकृति = लाकृति ।

अचोरहाभ्यां द्वे—यदि स्वर के बाद र् या ह् हो और उसके बाद यर्

---

१ **अचोऽन्त्यादि टि**—शब्द के अन्त का स्वर जिस वर्ण समुदाय के आदि में रहता है, उस वर्ण-समुदाय को टि कहते हैं।

जैसे—मनस् में टि है—अस्, शक में टि है—अ।

हो, तो यर को विकल्प से द्वित्व होता है। जैसे—हरि + अनुभव = हर् य् + अनुभव = हर य् य् + अनुभव = हर्य्यनुभव ।

जब द्वित्व नहीं होता, तब हर्यनुभव रूप होता है।

यर् प्रत्याहार है। इसमें ह को छोडकर सभी व्यञ्जन आ जाते हैं।

एचोऽयवायाव —यदि ए ओ ऐ औ के बाद कोई स्वर आए, तो क्रमश. अय अव् आय् आव् आदेश होते हैं। जैसे—

हरे + ए = हरये ।

विष्णो + ए = विष्णवे ।

नै + अक = नायक ।

पौ + अकः = पावक ।

लोप शाकल्यस्य—यदि पदान्त य् या व् के पहले अवर्ण हो और बाद में अश्[1] हो, तो य् और व् का विकल्प से लोप होता है। जैसे—

हरे + इह = हर् अय् + इह = हरय् + इह = हर इह, हरयिह ।

विष्णो + इह = विष्ण् अव् + इह = विष्णव् + इह = विष्ण इह, विष्णविह ।

वान्तो यि प्रत्यये—जब ओ या औ के बाद कोई ऐसा प्रत्यय आता है, जिसके प्रारम्भ में य हो, तो ओ के स्थान पर अव् और औ के स्थान पर आव् हो जाता है। जैसे—

गो + यम् = गव्यम् ।

नौ + यम् = नाव्यम् ।

अध्वपरिमाणे च (वा०)—यदि गो शब्द के बाद यूति शब्द हो, तो गो के ओ के स्थान पर अव् हो जाता है। यह नियम तब लगता है, जब शब्द मार्ग के परिमाण का बोध कराता है। जैसे—

गो + यूति = गव्यूति. (दो कोस)।

एङ. पदान्तादति—जब पदान्त ए या ओ के बाद अ आता है, तब पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है। जैसे—

हरे + अव = हरेऽव ।

विष्णो + अव = विष्णोऽव ।

ऽ चिह्न सूचित करता है कि यहाँ पहले अकार था ।

१—अश्—स्वर, ह य व र ल तथा प्रत्येक वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण ।

सर्वत्र विभाषा गो – जब ओकारान्त गो शब्द के पश्चात् अ आता है, तब विकल्प से प्रकृति-भाव होता है। प्रकृति-भाव होने पर कोई विकार नहीं होता। जैसे—

गो + अग्रम् = गो अग्रम्, गोऽग्रम्।

अवङ् स्फोटायनस्य – यदि ओकारान्त गो शब्द के बाद स्वर हो, तो गो के ओ के स्थान पर विकल्प से अव होता है। अत —

गो + अग्रम् = ग् अव अग्रम् = गवाग्रम्।

इन्द्रे च—यदि ओकारान्त गो शब्द के बाद इन्द्र शब्द आए, तो गो के ओ के स्थान पर अव कर दिया जाता है। अत —

गो + इन्द्र = गवेन्द्र ।

यह आदेश नित्य होता है।

ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्—ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन प्रगृह्य होते है।

प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्—यदि प्लुत या प्रगृह्य के बाद कोई स्वर आए, तो सन्धि नही होती। जैसे—

हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू।

यहाँ हरी इकारान्त द्विवचन है, विष्णू ऊकारान्त द्विवचन है और गङ्गे एकारान्त द्विवचन है। इनके बाद स्वर आए है, अत सन्धि नही हुई।

निपात एकाजनाङ्—यदि आङ् को छोडकर एक स्वर वाले निपात के बाद कोई स्वर आए, तो सन्धि नही होती। जैसे—इ इन्द्र, उ उमेश।

ओत्—ओकारान्त निपात प्रगृह्य कहा जाता है। जैसे—अहो ईशा। यहाँ प्रगृह्य के बाद स्वर आया है, इसलिए सन्धि नही हुई।

सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे—यदि सम्बुद्धि (सम्बोधन) के ओकार के बाद अवैदिक इति शब्द हो, तो विकल्प से सधि नही होती। जैसे—विष्णो इति। इसके अन्य रूप है—विष्णविति, विष्ण इति।

अदसो मात्—जब अदस् के मकार के बाद ई या ऊ आता है और उसके बाद कोई स्वर आता है, तो सधि नही होती। जैसे—

अमी ईशा., रामकृष्णावमू आसाते।

व्यञ्जन-सन्धि

स्तोः श्चुना श्चु – सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के साथ योग होने पर सकार के स्थान पर शकार और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

जैसे—

रामस् + शेते = रामश्शेते ।

रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति ।

सत् + चित् = सच्चित् ।

शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय ।

शात्—यदि शकार के बाद तवर्ग हो, तो तवर्ग के स्थान पर चवर्ग नहीं होता । जैसे—

विश् + न. = विश्न , प्रश्न ।

ष्टुना ष्टुः—सकार और तवर्ग का षकार और टवर्ग के साथ योग होने पर सकार के स्थान पर षकार और तवर्ग के स्थान पर टवर्ग कर दिया जाता है । जैसे—

रामस् + षष्ठ = रामष्षष्ठ ।

रामस् + टीकते = रामष्टीकते ।

पेष् + ता = पेष्टा ।

तत् + टीका = तट्टीका ।

चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे ।

न पदान्ताट्टोरनाम्—यदि पदान्त टवर्ग के बाद सकार या तवर्ग हो, तो सकार के स्थान पर षकार और तवर्ग के स्थान पर टवर्ग नहीं होता, किन्तु यदि टवर्ग के बाद 'नाम' हो, तो नकार के स्थान पर णकार होता है । उदाहरण—

षट् + सन्त = षट् सन्त , षट् ते ।

अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम् (वा०)—यदि टवर्ग के बाद नाम्, नवति या नगरी शब्द आए, तो नकार के स्थान पर णकार होता है । जैसे—

षड् + नाम् = षण्णाम् ।

षड् + नवति = षण्णवति ।

षड् + नगर्य = षण्णगर्य ।

तोः षि—यदि तवर्ग के बाद षकार हो, तो तवर्ग के स्थान पर टवर्ग नहीं होता । जैसे—सन् षष्ठ ।

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा—पदान्त यर् के बाद अनुनासिक के आने पर यर् के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक होता है । जैसे—एतद् + मुरारि = एतन्मुरारि , एतद्मुरारि ।

प्रत्यये भाषाया नित्यम् (वा०)—यदि पदान्त यर् के बाद प्रत्यय का अनुनासिक वर्ण हो, तो यर् के स्थान पर अनुनासिक वर्ण होता है। जैसे—

तद् + मात्रम् = तन्मात्रम, चिन्मयम ।

तोर्लि—यदि तवर्ग के बाद लकार हो, तो तवर्ग के स्थान पर लकार होता है। जैसे—

तद + लय = तल्लय ।

विद्वान् + लिखति = विद्वाल्ँ लिखति ।

उद स्थास्तम्भो पूर्वस्य—उद् उपसर्ग के बाद स्था और स्तम्भ के स् के स्थान पर थ् हो जाता है। जैसे—

उद् + स्थानम् = उत्थानम् ।

उद् + स्तम्भनन् = उत्तम्भनम ।

झयो होऽन्यतरस्याम्—झय् (वर्ग के १ से ४) के बाद आने वाले हकार के स्थान पर विकल्प से पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण होता है। तात्पर्य यह है कि यदि हकार के पहले कवर्ग है, तो हकार के स्थान पर विकल्प से घकार हो जायगा। इसी प्रकार पूर्ववर्ण के आधार पर झकार, ढकार आदि होंगे। जैसे—

वाग् + हरि. = वाग्घरि , वाग्हरि ।

अज् + हीनम् = अज्झीनम्, अज्हीनम् ।

तद् + हानि = तद्धानि , तद्हानि ।

शश्छोऽटि—यदि झय् के बाद शकार हो और उसके बाद अट् (स्वर, ह, य, व, र) हो, तो शकार के स्थान पर विकल्प से छकार होता है। जैसे—

तद् + शिव = तच्छिव , तच् शिव ।

छत्वममीति वाच्यम् (वा०)—यदि झय् के बाद शकार हो और उसके बाद अम् (स्वर, अन्त स्थ, ह, वर्ग के पञ्चम वर्ण) हो, तो भी शकार के स्थान पर विकल्प से छकार होता है। जैसे—

तद् + श्लोकेन = तच्छ्लोकेन, तच्श्लोकेन ।

मोऽनुस्वार—यदि पदान्त म् के बाद कोई व्यञ्जन हो, तो उसके स्थान पर अनुस्वार कर दिया जाता है। जैसे—

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे ।

नश्चापदान्तस्य झलि—जब अपदान्त न् और म् के बाद झल् (वर्ग के १ से ४, श ष स ह) आता है, तब न् और म् के स्थान पर अनुस्वार कर दिया जाता है।

जैसे—

यशान् + सि = यशांसि।

आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते।

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः—जब अनुस्वार के बाद यय् (श ष स ह को छोडकर सभी व्यञ्जन) आता है, तब अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है। जैसे—

शां + त = शान्त ।

अं + कित = अङ्कित. ।

कुं + ठित = कुण्ठित ।

गुं + फित = गुम्फित. ।

ङ्णोः कुक् टुक् शरि—यदि ङकार के बाद श, ष या स हो, तो दोनो के बीच मे विकल्प से कुक (क्) जोडा जाता है और यदि णकार के बाद श, ष या स हो, तो दोनो के बीच में विकल्प से टुक् (ट) कर दिया जाता है ।

चयो द्वितीया शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् (वा०)—पौष्करसादि आचार्य का मत है कि यदि शर् बाद में हो, तो वर्गों के प्रथम वर्णों के स्थान पर वर्गों के द्वितीय वर्ण हो जाते हैं। उदाहरण—

प्राङ् + षष्ठ = प्राङ् क् षष्ठ = प्राङ् ख् षष्ठः, प्राङ्क्षष्ठः ।

जब 'कुक्' आगम नही होता, तब 'प्राङ् षष्ठ' ही रहता है।

'टुक्' आगम के पक्ष में—

सुगण् + षष्ठ = सुगण्ट् षष्ठ = सुगण्ठ् षष्ठः, सुगण्ट् षष्ठ ।

जब 'टुक्' आगम नही होता, तब 'सुगण् षष्ठ' ही रहता है।

डः सि धुट्—जब डकार के बाद सकार आता है, तब डकार और सकार के बीच में विकल्प से धुट् (ध) का आगम होता है। जैसे—

षड् + सन्त = षड् ध् सन्तः = षड् त् सन्त = षट त् सन्त ।

आगम के अभाव के पक्ष में 'षट् सन्त.' होता है।

नश्च—यदि नकार के बाद सकार हो, तो दोनो के बीच में विकल्प से धुट् (ध) का आगम होता है। जैसे—

सन् + सन्त = सन् ध् सन्त. = सन् त् सन्तः ।

आगम न होने पर 'सन् सन्त' होता है।

शि तुक्—यदि पदान्त नकार के बाद शकार हो, तो दोनो के बीच मे विकल्प से तुक् (त) कर दिया जाता है। जैसे—

सन् + शम्भु = सन् त् शम्भुः = सञ्छम्भु ।

इसके अन्य रूप हैं—

सञ्चछम्भु, सञ्चशम्भु, सञ्शम्भु ।

ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्—यदि ह्रस्व के बाद पद के अन्त मे ङ्, ण् या न् हो और बाद मे कोई स्वर हो, तो ङ्, ण् और न् को द्वित्व होता है। जैसे—

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ् ङ् आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा ।

सुगण् + ईश = सुगण् ण् ईश = सुगण्णीश ।

सन् + अच्युत = सन्न् अच्युत = सन्नच्युत ।

सम सुटि—यदि सम् के बाद सुट् हो, तो सम् के म् के स्थान पर रु कर दिया जाता है। जैसे—

सम् स्कर्ता = सरु स्कर्ता ।

अत्रानुनासिक पूर्वस्य तु वा—रु के प्रकरण में रु (र्) के पहले के वर्ण को विकल्प से अनुनासिक कर दिया जाता है। अत —

सर् स्कर्ता = सँर् स्कर्ता ।

अनुनासिकात्परोऽनुस्वार —जब रु के पहले के वर्ण को अनुनासिक नही किया जाता, तब अनुस्वार की योजना की जाती है। अत —

सर् स्कर्ता = संर् स्कर्ता ।

खरवसानयोर्विसर्जनीय—यदि रकारान्त पद के बाद खर् (वर्ग के १, २ तथा श ष स) हो या र् पद के अन्त मे हो, तो र् के स्थान पर विसर्ग कर दिया जाता है। अत —

सँः स्कर्ता, सं. स्कर्ता ।

सम्पुङ्कानां सो वक्तव्य. (वा०)—सम्, पुम्, और कान् शब्दो के विसर्ग के स्थान पर स् कर दिया जाता है। अत —

सँस्स्कर्ता, संस्स्कर्ता ।

पुम. खय्यम्परे—यदि पुम् के बाद खय् (वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण) हो और उसके बाद अम् हो, तो पुम् के म् के स्थान पर र् हो जाता है। अत —

पुम् + कोकिल = पुर् कोकिल. = पुँस्कोकिल, पुंस्कोकिलः ।

छे च—यदि ह्रस्व के बाद छ हो, तो ह्रस्व को तुक् का आगम होता है, अर्थात् दोनो के बीच में त् जोडा जाता है। जैसे—शिव + छाया = शिव त् छाया = शिवच्छाया।

पदान्ताद्वा—यदि दीघ पदान्त के बाद छ हो, तो विकल्प से त् रखा जाता हैं। जैसे—लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

विसर्ग-सन्धि

विसर्जनीयस्य स.—यदि विसग के बाद खर् हो, तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। जैसे—

विष्णु + त्राता = विष्णुस्त्राता।

तरो + छाया + तरोश्छाया।

वा शरि—यदि विसग के बाद शर (श, ष, स) हो, तो विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग ही रहता है। जैसे—

हरि शेते, हरिश्शेते।

ससजुषो रु—पदान्त स् के स्थान पर और सजुष् के ष् के स्थान पर 'र्' होता है।

अतो रोरप्लुतादप्लुते—यदि ह्रस्व अ के बाद र् हो और उसके बाद ह्रस्व अ हो, तो र् के स्थान पर उ होता है। जैसे—शिव र् + अर्च्य = शिव उ + अर्च्य. = शिवोऽर्च्य।

हशि च—यदि ह्रस्व अ के बाद र् हो और उसके बाद हश् (वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण और ह, य, व, र, ल) हो, तो र् के स्थान पर उ कर दिया जाता है। जैसे—

शिव र् + वन्द्य = शिव उ + वन्द्य = शिवो वन्द्य।

राम + गच्छति = रामो गच्छति।

विशेष—यदि अ और आ को छोडकर किसी अन्य स्वर के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद कोई स्वर या मृदु व्यञ्जन हो, तो विसग के स्थान पर र् हो जाता है। जैसे—

भानु + उदेति = भानुरुदेति।

हरिः + जयति = हरिर्जयति।

मुनिः + वदति = मुनिर्वदति।

प्रभु. + याति = प्रभुर्याति।

भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि । हलि सर्वेषाम्—यदि भो, भगो, अघो या अवर्ण के बाद र् हो और उसके बाद अश् (स्वर, ह य व र ल तथा वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण) हो, तो र के स्थान पर य् कर दिया जाता है। यदि य् के बाद व्यञ्जन हो, तो य् का लोप हो जाता है। उदाहरण—

भोस् देवा = भोर् देवा = भोय् देवा = भो देवा ।

भगो नमस्ते, अघो याहि, देवा नम्या , देवा यान्ति ।

रोऽसुपि—यदि अहन् के बाद सुप् (सु, औ आदि प्रत्यय) न हो, तो न् के स्थान पर र् हो जाता है। जैसे—

अहन् + अह = अहरह , अहन् + गण = अहर्गण. ।

रोरि । ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण—यदि र् के बाद र् हो और ढ् के बाद ढ् हो, तो र् और ढ् का लोप होता है और र् या ढ् के पहले आए हुए ह्रस्व अ, इ तथा उ को दीर्घ कर दिया जाता है। जैसे—

पुनर् + रमते = पुना रमते ।

हरिर् + रम्य = हरी रम्य. ।

एतत्तदो सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि—यदि एष या सः के बाद व्यञ्जन हो, तो विसर्ग का लोप होता है। जैसे—एष विष्णुः, स शम्भु ।

नञ् समास में और अन्त में क होने पर विसग का लोप नही होता। जैसे—एषको रुद्र , असः शिव ।

सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्—यदि स के बाद स्वर हो और पाद की पूर्ति लोप द्वारा होती हो, तो विसर्ग का लोप होता है। जैसे-सैष दाशरथी राम ।

सोऽपदादौ । पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम् (वा०) । अनव्ययस्येति वाच्यम् (वा०)—यदि विसर्ग के बाद पाश, कल्प, क या काम्य प्रत्यय हो, तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। अव्यय का विसर्ग होने पर स् नही होता। जैसे—पयस्पाशम्, यशस्कल्पम्, यशस्कम्, यशस्काम्यति ।

'प्रात कल्पम्' में विसर्ग के स्थान पर स् नही होता, क्योकि यहा अव्यय का विसर्ग है।

इरा ष—यदि इवर्ण या उवर्ण के बाद आने वाले विसर्ग के बाद पाश, कल्प आदि हो, तो विसर्ग के स्थान पर ष् हो जाता है। जैसे—

सर्पिष्पाशम्, सर्पिष्कल्पम्, सर्पिष्कम्, सर्पिष्काम्यति ।

नमःपुरसोर्गत्यो—यदि गतिसज्ञक नमः और पुर के बाद कवर्ग या पवर्ग हो, तो विसर्ग के स्थान पर स् होता है। जैसे—नमस्करोति, पुरस्करोति ।

इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य— यदि प्रत्यय-भिन्न विसर्ग के पहले इ या उ हो और बाद में कवर्ग या पवर्ग हो, तो विसर्ग के स्थान पर ष् हो जाता है। जैसे— निष्प्रत्यूहम्, आविष्कृतम्, दुष्कृतम।

तिरसोऽन्यतरस्याम्—यदि तिर के बाद कवर्ग या पवर्ग हो, तो विसर्ग के स्थान पर विकल्प से स् होता है। जैसे—तिरस्करोति, तिर करोति।

• **इसुसो सामर्थ्ये**—यदि शब्द के अन्त में आने वाले इस् या उस् के बाद कवर्ग या पवर्ग हो, तो स् के स्थान पर विकल्प से ष् होता है। जैसे—सर्पिष्करोति, सर्पि करोति, धनुष्करोति, धनुः करोति।

यह नियम तब लगता है, जब दोनो पद परस्पर सम्बद्ध रहते हैं।

अत कृकमिकसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य—यदि समास में अ के बाद विसर्ग हो और उसके बाद कृ या कम् धातु का कोई रूप हो या कस, कुम्भ, पात्र, कुशा या कर्णी शब्द हो, तो विसर्ग के स्थान पर स् होता है। विसर्ग समास के प्रथम पद का हो और अव्यय का न हो। उदाहरण—अयस्कारः, अयस्कामः, अयस्कस , अयस्कुम्भ , अयस्पात्रम्, अयस्कुशा, अयस्कर्णी।

अधश्शिरसी पदे—यदि बाद मे पद शब्द हो, तो अध और शिर के विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता हैं। जैसे—अधस्पदम्, शिरस्पदम्।

तृतीय प्रकरण

णत्व-विधि

रषाभ्या नो ण· समानपदे—यदि एक पद में रकार या षकार के बाद न आए, तो न का ण हो जाता है। जैसे—पूषण ।

ऋवर्णान्नस्य णत्व वाच्यम् (वा०)—यदि ऋवर्ण के बाद न हो, तो न के स्थान पर ण हो जाता है। जैसे—धातृणाम् ।

अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि—यदि ऋ ॠ र या ष और न के बीच मे कोई स्वर, य व र ह, कवग, पवग आङ और अनुस्वार (इनमें से एक हो या अनेक हो) आएँ, तो भी न के स्थान पर ण होता है। जैसे—प्रभुणा, करेण ।

पदान्तस्य—पदान्त न् का ण् नही होता । जैसे—रामान् ।

वन पुरगामिश्रकासिध्रकासारिकाकोटराग्रेभ्य—यदि समास के प्रथम पद में पुरगा, मिश्रका, सिध्रका, सारिका, कोटर या अग्र शब्द हो और उसके बाद वन शब्द हो, तो वन के न के स्थान पर ण होता है। समस्त पद सज्ञा—वाचक होना चाहिए। जैसे—पुरगावणम्, मिश्रकावणम्, सिध्रकावणम्, कासारिकावणम्, कोटरावणम्, अग्रेवणम् ।

प्रनिरन्त शरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्योऽसज्ञायामपि—यदि प्र, निर्, अन्तर्, शर, इक्षु, प्लक्ष, आम्र, कार्ष्य, खदिर या पीयूक्षा के बाद वन शब्द आए, तो वन के न के स्थान पर ण होता हैं। जैसे—प्रवणम्, निर्वणम्, अन्तर्वणम्, शरवणम्, इक्षुवणम्, प्लक्षवणम्, आम्रवणम्, कार्ष्यवणम्, खदिरवणम्, पीयूक्षावणम् ।

विभाषौषधिवनस्पतिभ्य—जब औषधि और वनस्पति वाचक शब्दो के बाद वन शब्द आता है, तब वन के न के स्थान पर विकल्प से ण होता है। पूर्वपद में णत्व का निमित्त होना चाहिए। जैसे—दूर्वावणम्, दूर्वावनम्, शिरीषवणम्, शिरीषवनम् ।

द्व्यच्त्र्यच्भ्यामेव (वा०)—पूर्वपद में दो या तीन स्वरो के होने पर ही वन के न के स्थान पर ण होता हैं। अत· देवदारुवनम् में णत्व नही हुआ ।

इरिकादिभ्य प्रतिषेधो वक्तव्य. (वा०)—यदि इरिका आदि शब्दो के बाद वन शब्द हो, तो णत्व नही होता। जैसे—इरिकावनम्, मिरिकावनम्, तिमिरावनम्।

वाहनमाहितात्– यदि वाहन के पहले आने वाले पद मे णत्व का निमित्त हो और पद उस वस्तु को सूचित करे, जो ढोई जाय, तो वाहन के न के स्थान पर ण हो जाता है। जैसे—इक्षुवाहणम्।

पान देशे—यदि पूर्वपद मे णत्व का निमित्त हो और बाद में पान शब्द हो तथा पूरा पद देश का वाचक हो, ता पान के न का ण हो जाता है। जैसे—क्षीरपाणा उशीनरा, सुरापाणा प्राच्या.।

वा भावकरणया.—यदि पूवपद के र या ष के बाद भाव या करण में स्थित पान शब्द हो, तो विकल्प से णत्व होता है। जैसे—क्षीरपानम्, क्षीरपाणम्।

गिरिनद्यादीना वा (वा०)—गिरिनदी आदि पदो मे विकल्प से णत्व होता है। जैसे—गिरिनदी, गिरिणदी, चक्रनितम्बा, चक्रणितम्बा।

प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च—यदि पूवपद मे णत्व का निमित्त हो और उसके बाद प्रातिपदिकान्त नकार हो या नुम हो या विभक्ति का नकार हो, तो न के स्थान पर विकल्प से णत्व होता है। जैसे—

प्रातिपदिकान्त	—	माषवापिणौ, माषवापिनौ।
नुम्	—	व्रीहिवापाणि, व्रीहिवापानि।
विभक्ति	—	माषवापेण, माषवापेन।

एकाजुत्तरपदे णः। कुमति च—यदि पूवपद में णत्व का निमित्त हो और उत्तरपद एक स्वर वाला हो या कवर्गयुक्त हो और उत्तरपद में प्रातिपदिकान्त न हो या नुम् हो या विभक्ति का नकार हो, तो न के स्थान पर नित्य णकार होता है। जैसे—वृत्रहणौ, हरिमाणी, क्षीरपाणि, क्षीरपेण, हरिकामिणौ।

पदव्यवायेऽपि—पद का व्यवधान होने पर णत्व नही होता। जैसे—माषकुम्भवापेन, चतुरङ्गयोगेन।

अह्नोऽदन्तात्—यदि अहन् के पहले ऐसा पद हो, जिसके अन्त मे अ हो और जिसमे णत्व का निमित्त हो, तो अहन् के न के स्थान पर ण हो जाता है। जैसे—पूर्वाह्णः, अपराह्णः।

उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य—यदि उपसर्गस्थ निमित्त के बाद णोपदेश धातु का नकार हो, तो नकार के स्थान पर णकार होता है। जैसे—प्रणदति।

आनि लोट—उपसर्गस्थ निमित्त के बाद आने वाले लोट् के आनि के नकार के स्थान पर णकार होता है। जैसे—प्रभवाणि।

दुर षत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रतिषेधो वक्तव्य (वा०)—षत्व और णत्व के विधान की अवस्था मे दुर् उपसर्ग नही माना जाता। तात्पर्य यह है कि दुर् के बाद आने वाली धातु मे षत्व या णत्व का विधान नही होता। जैसे—दु स्थिति, दुर्भवानि।

नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च—यदि उपसर्गस्थ निमित्त के बाद नि हो और उसके बाद गद, नद् आदि धातुओ मे से कोई धातु हो, तो नि के नकार के स्थान पर णकार होता है। धातुएँ ये हैं—१ गद्-स्पष्ट बोलना, २ नद् अस्पष्ट बोलना ३ पत्—गिरना, ४ पद्—चलना, ५ घुसज्ञक धातुएँ—दा, धा आदि, ६ मा—नापना, ७ सो—नाश करना, ८ हन्—मारना, ९ या=जाना, १० वा—बहना, ११ द्रा—दौडना, १२ प्सा—खाना, १३ वप्=बोना, १४ वह्—ले जाना, १५ शम—शान्त होना, १६ चि—एकत्र करना तथा १७ दिह—लीपना। उदाहरण—प्रणिगदति।

हिनुमीना—उपसर्गस्थ निमित्त के बाद हिनु और मीना के नकार के स्थान पर णकार होता है। जैसे—प्रहिणोति, प्रमीणाति।

षत्व-विधि

आदेशप्रत्ययो—यदि इण् (इ, उ) प्रत्याहार या कवर्ग के बाद अपदान्त आदेशरूप या प्रत्यय का अवयव सकार हो, तो सकार के स्थान पर मूर्धन्य वर्ण कर दिया जाता है। सकार के स्थान पर षकार आदेश होता है। जैसे—रामेषु। यहाँ सकार प्रत्ययावयव और अपदान्त है।

नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि—नुम्, विसर्ग और शर् (श, ष, स) में से किसी एक का व्यवधान होने पर भी इण् या कवर्ग के बाद आने वाले सकार के स्थान पर षकार होता है। जैसे—पिपठीष्षु, पिपठी षु।

सहे साड स—सह धातु से बने 'साड्' रूप के सकार के स्थान पर षकार आदेश होता है। जैसे—तुराषाट्, तुराषाड्।

समासेऽङ्गुलेः सङ्गः—यदि समास मे अङ्गुलि के बाद सङ्ग शब्द आए, तो सकार के स्थान पर षकार होता है। अत—अङ्गुलिषङ्गः।

भीरो स्थानम्—यदि समास में भीरु शब्द के बाद स्थान शब्द हो, तो सकार के स्थान पर षकार होता है। अत—भीरुष्ठानम्।

ज्योतिरायुष स्तोम —यदि समास में ज्योतिस् या आयुस् शब्द के बाद स्तोम शब्द हो, तो सकार के स्थान पर षकार होता है। अत —ज्योतिष्टोमः, आयुष्टोम•।

सुषामादिषु च—सुषामा आदि म सकार के स्थान पर षकार होता है। जैसे—सुषामा ब्राह्मण —शोभन साम यस्य असौ।

• सुषामादि में ये हैं—

सुषामा, नि.षामा, दु षामा, सुषेध, निषेध (नि षेध.), दु.षेध, सुषन्धि, निःषन्धि (निषन्धि.), नौषेंचनम्, दुन्दुभिषेवणम्, हरिषेण आदि।

एति सञ्ज्ञामगात्—यदि इण् या कवग के बाद सकार हो और उसके बाद ए हो और बना हुआ पद किसी का नाम हो, तो सकार के स्थान पर षकार होता है। जैसे—हरिषेण, वारिषेण.।

जब गकार के बाद सकार आता है, तब षकार नही होता। जैसे—विष्वक्सेन।

शासिवसिघसीना च—यदि इण् या कवग के बाद शास्, वस् या घस् धातु हो, तो सकार के स्थान पर षकार होता है। जैसे—ऊषतु।

स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्य —निर, नि और वि के बाद आनेवाली स्फुर् और स्फुल् धातुओ के सकार के स्थान पर विकल्प से षकार होता है। अतः—निष्फुरति, नि.स्फुरति, निष्फुलति, नि.स्फुलति।

चतुर्थ प्रकरण

सुबन्त

सज्ञा के मूल रूप को प्रातिपदिक कहते हैं। धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोडकर अर्थवान् शब्द स्वरूप ही प्रातिपदिक है—अर्थवदधातुरप्रत्यय प्रातिपदिकम् (अष्टा॰ १।२।४५)। सज्ञाओ के तीन लिङ्ग होते है—पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुसकलिङ्ग।

सस्कृत मे तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

सस्कृत में सात विभक्तियाँ होसी हैं—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी।

प्रातिपदिको मे लगने वाले प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	(सु)	औ	अः (जस्)
द्वितीया	अम्	औ (औट्)	अ (शस्)
तृतीया	आ (टा)	भ्याम्	भिः (भिस्)
चतुर्थी	ए (ङे)	भ्याम्	भ्य (भ्यस्)
पञ्चमी	अ (ङसि)	भ्याम्	भ्य (भ्यस्)
षष्ठी	अ (ङस्)	ओ (ओस्)	आम्
सप्तमी	इ (ङि)	ओः (ओस्)	सु (सुप्)

इन प्रत्ययो को सुप् कहते हैं। इनको लगाने से जो पद बनता है, उसे सुबन्त कहते हैं।

पुंलिङ्ग शब्द

अकारान्त-राम

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰	रामः	रामौ	रामा
द्वि॰	रामम्	रामौ	रामान्
तृ॰	रामेण	रामाभ्याम्	रामै

च०	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य
प०	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्य.
ष०	रामस्य	रामयो	रामाणाम्
स०	रामे	रामयो	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामा

• १ अश, अकुश, अज, आचार्य, गज, चन्द्र, मनुष्य, रथ, व्याघ्र, सुर, हय आदि अकारान्त पुलिङ्ग शब्दो के रूप राम की भाँति होते हैं। इसी प्रकार तादृश, एतादृश, यादृश, भवादृश, मादृश आदि शब्दो के रूप भी चलते हैं।

२ प्रथम, चरम, तयप् प्रत्ययान्त शब्द, अल्प, अध, कतिपय और नेम के रूप राम की भाति होते है। केवल प्रथमा, बहुवचन मे इनके दो-दो रूप होते हैं। जैसे—प्रथमे, प्रथमाः, द्वितये, द्वितया इत्यादि।

आकारान्त—विश्वपा (विश्व का पालक)

प्र०	विश्वपा	विश्वपौ	विश्वपा
द्वि०	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृ०	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभि
च०	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्य
प०	विश्वप	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्य
ष०	विश्वपः	विश्वपो	विश्वपाम्
स०	विश्वपि	विश्वपो	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपा	हे विश्वपौ	हे विश्वपाः

गोपा (ग्वाला), धूम्रपा, शङ्खध्मा, सोमपा, बलदा आदि आकारान्त शब्दो के रूप विश्वपा की भाँति होते हैं।

हाहा (एक गन्धर्व का नाम)

इसके रूप कुछ विभक्तियो में विश्वपा से भिन्न होते हैं।

प्र०	हाहा	हाहौ	हाहा
द्वि०	हाहाम्	हाहौ	हाहान्
तृ०	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभि
च०	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्य
प०	हाहा.	हाहाभ्याम्	हाहाभ्य

ष०	हाहा	हाहौ	हाहाम्
स०	हाहे	हाहौ	हाहासु
सम्बोधन	हे हाहा	हे हाहौ	हे हाहा.

इकारान्त कवि

प्र०	कविः	कवी	कवय
द्वि०	कविम्	कवी	कवीन्
तृ०	कविना	कविभ्याम्	कविभि
च०	कवये	कविभ्याम्	कविभ्य
प०	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
ष०	कवे	कव्योः	कवीनाम्
स०	कवौ	कव्यो	कविषु
सम्बोधन	हे कवे	हे कवी	हे कवय

मुनि, हरि, ऋषि, कपि, अतिथि, गिरि, उदधि, आधि, व्याधि, विरञ्चि, यति, रवि आदि इकारान्त शब्दो के रूप कवि की भाँति होते हैं।

पति (स्वामी, मालिक, दूल्हा)

प्र०	पति.	पती	पतयः
द्वि०	पतिम्	पती	पतीन्
तृ०	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
प०	पत्यु	पतिभ्याम्	पतिभ्य
ष०	पत्युः	पत्यो	पतीनाम्
स०	पत्यौ	पत्यो	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतय

जब समास में पति शब्द अन्त में आता है, तब इसके रूप कवि की भाँति होते हैं। जैसे—भूपति, नृपति, महीपति, गृहपति, श्रीपति, गजपति, गणपति आदि।

सखि (मित्र)

प्र०	सखा	सखायौ	सखाय
द्वि०	सखायाम्	सखायौ	सखीन्
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभि

च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्य
प०	सख्यु	सखिभ्याम्	सखिभ्य
ष०	सख्यु	सख्यो	सखीनाम्
स०	सख्यौ	सख्यो	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखाय

ईकारान्त--सुधी (विद्वान्)

प्र०	सुधी	सुधियौ	सुधिय.
द्वि०	सुधियम्	सुधियौ	सुधिय
तृ०	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभि
च०	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्य
प०	सुधियः	सुधीभ्याम	सुधीभ्य.
ष०	सुधिय	सुधियो	सुधियाम्
स०	सुधियि	सुधियो	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधी.	हे सुधियौ	है सुधिय

शुद्धधी, परमधी, यवक्री (जव खरीदने वाला), सुश्री आदि शब्दो के रूप सुधी के समान होते हैं।

प्रधी के रूप कुछ भिन्न होते हैं।

प्रधी (अच्छा ध्यान करने वाला)

प्र०	प्रधी	प्रध्यौ	प्रध्य'
द्वि०	प्रध्यम्	प्रध्यौ	प्रध्य.
तृ०	प्रध्या	प्रधीभ्याम्	प्रधीभि.
च०	प्रध्ये	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्य.
प०	प्रध्य	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
ष०	प्रध्यः	प्रध्यो	प्रध्याम्
स०	प्रध्यि	प्रध्योः	प्रधीषु
सम्बोधन	हे प्रधी	हे प्रध्यौ	हे प्रध्य

उन्नी, ग्रामणी, सेनानी आदि शब्दो के रूप प्रधी की भाँति होते हैं। सप्तमी, एकवचन में उन्नी आदि के रूप प्रधी से भिन्न होते हैं—उन्न्याम्, ग्रामण्याम्, सेनान्याम्।

वातप्रमी के रूप कुछ स्थलो पर प्रधी के रूपो से भिन्न होते हैं।

वातप्रमी (वायु के समान तीव्र दौड़ने वाला मृग)

प्र०	वातप्रमी	वातप्रम्यौ	वातप्रम्यः
द्वि०	वातप्रमीम	वातप्रम्यौ	वातप्रमीन्
तृ०	वातप्रम्या	वातप्रमीभ्याम्	वातप्रमीभिः
च०	वातप्रम्ये	वातप्रमीभ्याम्	वातप्रमीभ्य
प०	वातप्रम्य.	वातप्रमीभ्याम्	वातप्रमीभ्य
ष०	वातप्रम्य	वातप्रम्योः	वातप्रम्याम्
स०	वातप्रमी	वातप्रम्योः	वातप्रमीषु
सम्बोधन	हे वातप्रमी	हे वातप्रम्यौ	हे वातप्रम्यः

इसी प्रकार ययी (माग), पपी (सूय) के भी रूप चलते हैं।

उकारान्त—भानु (सूर्य)

प्र०	भानु	भानू	भानव
द्वि०	भानुम्	भानू	भानून्
तृ०	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभि
च०	भानवे	भानुभ्याम	भानुभ्य.
प०	भानो	भानुभ्याम्	भानुभ्य
ष०	भानो	भान्वो	भानूनाम्
स०	भानौ	भान्वो	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

प्रभु, विष्णु, शत्रु, गुरु, शिशु, विधु, बन्धु, पशु, शम्भु, ऋतु आदि उकारान्त पुलिङ्ग शब्दो के रूप भानु के समान चलते हैं।

क्रोष्टु (गीदड़)

प्र०	क्रोष्टा	क्रोष्टारौ	क्रोष्टारः
द्वि०	क्रोष्टारम्	क्रोष्टारौ	क्रोष्टून्
तृ०	क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभि.
च०	क्रोष्ट्रे, क्रोष्टवे	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभ्य
प०	क्रोष्टु , क्रोष्टोः	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभ्य
ष०	क्रोष्टु , क्रोष्टो	क्रोष्ट्रो, क्रोष्ट्वो	क्रोष्टूनाम्
स०	क्रोष्टरि, क्रोष्टौ	क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वो.	क्रोष्टुषु
सम्बोधन	हे क्रोष्टो	हे क्रोष्टारौ	हे क्रोष्टार.

ऊकारान्त—स्वयम्भू (ब्रह्मा)

प्र०	स्वयम्भू.	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुव
द्वि०	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृ०	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूम्याम	स्वयम्भूभि
च०	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूम्याम्	स्वयम्भूम्य
प०	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूम्याम्	स्वयम्भूम्यः
ष०	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवो	स्वयम्भुवाम्
स०	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवो	स्वयम्भूषु
सम्बोधन	हे स्वयम्भू	हे स्वयम्भुवौ	हे स्वयम्भुवः

प्रतिभू (जामिन), स्वभू, अग्निभू के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

वर्षाभू (मेढक), दृभू आदि के ऊ को यण् होता है। जैसे—वर्षाभ्वौ, वर्षाभ्व., दृन्भ्वौ, दृन्भ्व ।

ऋकारान्त—दातृ (देने वाला)

प्र०	दाता	दातारौ	दातार.
द्वि०	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृ०	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभि.
च०	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
प०	दातु	दातृभ्याम्	दातृभ्य
ष०	दातु	दात्रो	दातॄणाम्
स०	दातरि	दात्रो	दातृषु
सम्बोधन	हे दात	हे दातारौ	हे दातार

कर्तृ, धातृ, श्रोतृ, गन्तृ आदि के रूप 'दातृ' के समान होते हैं।

पितृ—पिता

प्र०	पिता	पितरौ	पितर
द्वि०	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि.
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य
प०	पितु	पितृभ्याम्	पितृभ्य.
ष०	पितु.	पित्रो.	पितॄणाम्
स०	पितरि	पित्रो	पितृषु
सम्बोधन	हे पित	हे पितरौ	हे पितर.

इसी प्रकार भ्रातृ, जामातृ, देवृ (देवर), और नृ के रूप चलते हैं। नृ (मनुष्य) की षष्ठी के बहुवचन मे दो रूप होते हैं—नॄणाम्, नृणाम् ।

ऐकारान्त—रै (धन)

प्र०	रा	रायौ	राय
द्वि०	रायम्	रायौ	राय
तृ०	राया	राभ्याम्	राभि
च०	राये	राभ्याम्	राभ्य
प०	रायः	राभ्याम्	राभ्य
ष०	राय	रायो	रायाम्
स०	रायि	रायो॰	रासु
सम्बोधन	हे रा	हे रायौ	हे रायः

ओकारान्त—गो (बैल, गाय)

प्र०	गौ	गावौ	गाव
द्वि०	गाम	गावौ	गा
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभि
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्य
प०	गो.	गोभ्याम्	गोभ्य
ष०	गो	गवो	गवाम्
स०	गवि	गवो	गोषु
सम्बोधन	हे गौ	हे गावौ	हे गावः

इसी प्रकार द्यो (आकाश-स्त्रीलिङ्ग) और स्मृतो (स्मृत उः शङ्कर येन) के रूप चलते हैं।

औकारान्त—ग्लौ (चन्द्रमा)

प्र०	ग्लौ	ग्लावौ	ग्लाव
द्वि०	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लाव
तृ०	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभि.
च०	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्य
प०	ग्लाव	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्य
ष०	ग्लाव.	ग्लावो	ग्लावाम्
स०	ग्लावि	ग्लावो	ग्लौषु
सम्बोधन	हे ग्लौ.	हे ग्लावौ	हे ग्लावः

स्त्रीलिङ्ग शब्द

आकारान्त लता

प्र०	लता	लते	लता
द्वि०	लताम्	लते	लता
तृ०	लतया	लताभ्याम	लताभि
च०	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्य
प०	लताया	लताभ्याम	लताभ्य
ष०	लतायाः	लतयो.	लतानाम्
स०	लतायाम्	लतयो	लतासु
सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लता'

रमा, बाला, निशा, गङ्गा, चिन्ता, कन्या, आशा, करुणा, कलिका, क्षमा, दया, कला, प्रार्थना, भार्या, माला, धरा, सुधा आदि सभी आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप लता के समान होते हैं।

अम्बा, अल्ला, अक्का के सम्बोधन, एकवचन में क्रमशः ये रूप हैं—हे अम्ब, हे अल्ल, हे अक्क।

इकारान्त-रुचि

प्र०	रुचि	रुची	रुचय
द्वि०	रुचिम्	रुची	रुची
तृ०	रुच्या	रुचिभ्याम्	रुचिभि
च०	रुच्यै, रुचये	रुचिभ्याम्	रुचिभ्य
प०	रुच्या , रुचेः	रुचिभ्याम्	रुचिभ्य
ष०	रुच्याः, रुचे	रुच्यो.	रुचीनाम्
स०	रुच्याम्, रुचौ	रुच्योः	रुचिषु
सम्बोधन	हे रुचे	हे रुची	हे रुचय

मति, उन्नति, बुद्धि, मूर्त्ति, गति, शक्ति, शान्ति, भक्ति, कृति, स्मृति, नीति, प्रकृति, विपत्ति, गीति, भूति, कान्ति आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप रुचि के समान होते हैं।

ईकारान्त नदी

प्र०	नदी	नद्यौ	नद्य
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि.
च०	बद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्य
प०	नद्या.	वदीभ्याम्	वदीभ्यः
ष०	नद्या	नद्यो.	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्यो	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्य

पार्वती, गौरी, जावकी, अटवी, कुमारी, पृथिवी, नगरी, भगिनी आदि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप नदी के समान होते हैं।

श्री

प्र०	श्री.	श्रियौ	श्रिय
द्वि०	श्रियम्	श्रियौ	श्रिय
तृ०	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभि
च०	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम	श्रीभ्य.
प०	श्रिया , श्रिय	श्रीभ्याम्	श्रीभ्य
ष०	श्रिया , श्रियः	श्रियो	श्रीणाम्, श्रियाम्
स०	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्री	हे श्रियौ	हे श्रिय

इसी प्रकार भी (भय), धी (बुद्धि) और ह्री (लज्जा) के रूप होते हैं।

स्त्री

प्र०	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रिय
द्वि०	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रिय , स्त्री
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभि
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्य
प०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
ष०	स्त्रियाः	स्त्रियो.	स्त्रीणाम्
स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रिय

ईकारान्त लक्ष्मी

प्र०	लक्ष्मी.	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
द्वि०	लक्ष्मीम	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मी
तृ०	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभि
च०	लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्य
प०	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्य.
ष०	लक्ष्म्या.	लक्ष्म्यो	लक्ष्मीणाम्
स०	लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्यो	लक्ष्मीषु
सम्बोधन	हे लक्ष्मि	हे लक्ष्म्यौ	हे लक्ष्म्य

उकारान्त धेनु

प्र०	धेनु	धेनू	धेनव
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनू
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभि
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्य
प०	धेन्वा , धेनो	धेनुभ्याम	धेनुभ्य·
ष०	धेन्वा , धेनो	धेन्वो	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वो	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनव

तनु, रेणु, रज्जु आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप धेनु के समाव होते हैं।

ऊकारान्त वधू

प्र०	वधू	वध्वौ	वध्व
द्वि०	वधूम्	वध्वौ	वधू
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभि
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्य
प०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभ्य·
ष०	वध्वा	वध्वो	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वो	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्व.

चमू, श्वश्रू, कर्कन्धू (बेर), चम्पू (गद्य पद्य-मिश्रित-काव्य) आदि शब्दो के रूप वधू के समान चलते हैं।

भ्रू (भौंह)

प्र०	भ्रू	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वि०	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुव
तृ०	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभि·
च०	भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्य
प०	भ्रुवा, भ्रुव	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्य
ष०	भ्रुवा, भ्रुव	भ्रुवो	भ्रुवाम, भ्रूणाम
स०	भ्रुवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
सम्बोधन	हे भ्रू	हे भ्रुवौ	हे भ्रुव

इसी प्रकार भू के रूप चलते हैं।

ऋकारान्त-मातृ (माता)

प्र०	माता	मातरौ	मातर
द्वि०	मातरम्	मातरौ	मातृ
तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभि
च०	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्य.
प०	मातुः	मातृभ्याम	मातृभ्य
ष०	मातु·	मात्रोः	मातृणाम्
स०	मातरि	मात्रो.	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः	हे मातरौ	हे मातर

इसी प्रकार यातृ (देवरानी), और दुहितृ (पुत्री) के रूप चलते हैं।

स्वसृ-बहन

प्र०	स्वसा	स्वसारौ	स्वसार
द्वि०	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृ
तृ०	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभि
च०	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्य
प०	स्वसु	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्य
ष०	स्वसु	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
स०	स्वसरि	स्वस्रो	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसार

ओकारान्त और औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप पुलिङ्ग शब्दो के समान होते हैं। द्यो के रूप गो की भाँति और नौ (नाव) के रूप ग्लौ की भाँति चलते हैं।

नपुंसकलिङ्ग शब्द

अकारान्त—फल

प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	फलम	फले	फलानि
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलै
च०	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्य
प०	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्य
ष०	फलस्य	फलयो	फलानाम्
स०	फले	फलयो॰	फलेषु
सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

सुख, दु॰ख, ज्ञान, पुष्प, मुख, कार्य, जल, भाग्य, शरीर, काव्य, अर्चन, सौन्दर्य, कलत्र आदि अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दो के रूप फल के समान होते हैं।

इकारान्त—वारि (जल)

प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभि
च०	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्य॰
प०	वारिण	वारिभ्याम्	वारिभ्य
ष०	वारिण	वारिणो	वारीणाम्
स०	वारिणि	वारिणो	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, हे वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

दधि, अस्थि, सक्थि (जघा) और अक्षि को छोडकर इकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्दो के रूप वारि की भाति चलते हैं।

दधि

प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभि
च०	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्य

प०	दध्न	दधिभ्याम्	दधिभ्य
ष०	दध्न	दध्नो	दध्नाम्
स०	दध्नि, दधनि	दध्नो	दधिषु
सम्बोधन	हे दधि, हे दधे	हे दधिनी	हे दधीनि

अक्षि (आँख)

प्र०	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वि०	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृ०	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभि
च०	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्य
प०	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्य
ष०	अक्ष्ण	अक्ष्णो	अक्ष्णाम्
स०	अक्ष्णि, अक्षणि	अक्ष्णो	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि, हे अक्षे	हे अक्षिणी	हे अक्षीणि

जब इकारान्त और उकारान्त विशेषण शब्द नपुसकलिङ्ग विशेष्य के साथ प्रयुक्त होते हैं, तब उनके रूप चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियो के एकवचक में और षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियो के द्विवचन में इकारान्त और उकारान्त पुलिङ्ग शब्दो के समान भी होते हैं। यहाँ शुचि (पवित्र) और गुरु (भारी) के रूप दिये जा रहे हैं—

शुचि

प्र०	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
द्वि०	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
तृ०	शुचिना	शुचिभ्याम्	शुचिभि
च०	शुचये, शुचिने	शुचिभ्याम्	शुचिभ्य
प०	शुचे, शुचिन	शुचिभ्याम्	शुचिभ्य
ष०	शुचे, शुचिन	शुच्योः, शुचिनो.	शुचीनाम
स०	शुचौ, शुचिनि	शुच्यो, शुचिनो.	शुचिषु
सम्बोधन	हे शुचि, हे शुचे	हे शुचिनी	हे शुचीनि

गुरु

प्र०	गुरु	गुरुणी	गुरूणि
द्वि०	गुरु	गुरुणी	गुरूणि

तृ०	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभि
च०	गुरवे, गुरुणे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्य
प०	गुरो , गुरुण	गुरुभ्याम्	गुरुभ्य.
ष०	गुरो , गुरुण	गुवा , गुरुणा	गुरूणाम्
स०	गुरौ, गुरुणि	गुर्वो , गुरुणो.	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरु, हे गुरो	हे गुरुणी	हे गुरूणि

मधु

प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभि
च०	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्य
प०	मधुन	मधुभ्याम्	मधुभ्य
ष०	मधुन	मधुनो	मधूनाम्
स०	मधुनि	मधुनो.	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, हे मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

दारु, वस्तु, अश्रु आदि उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दो के रूप मधु के समान होते हैं।

ऋकारान्त—कर्तृ (करने वाला)

प्र०	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वि०	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
तृ०	कर्त्रा, कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभि.
च०	कर्त्रे, कर्तृणे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्य
प०	कर्तु , कर्तृण	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्य
ष०	कर्तु , कर्तृण	कर्त्रो , कर्तृणो	कर्तृणाम्
स०	कर्तरि	कर्त्रो॰, कर्तृणोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ , हे कर्त	हे कर्तृणी	हे कर्तृणि

व्यजनान्त शब्द

चकारान्त पुलिङ्ग—जलमुच् (बादल)

प्र०	जलमुक	जलमुचौ	जलमुच
द्वि०	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः

तृ०	जलमुचा	जलमुग्भ्याम	जलमुग्भि
च०	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
प०	जलमुच.	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्य
ष०	जलमुच	जलमुचो	जलमुचाम्
स०	जलमुचि	जलमुचो	जलमुक्षु
सम्बोधन	हे -लमुक्	हे जलमुचौ	हे जलमुच

सत्यवाच, वारिमुच् (बादल) आदि शब्दो के रूा इसी प्रकार चलते हैं। प्राञ्च, प्रत्यञ्च्, उदञ्च् और तिर्यञ्च् के रूप भिन्न होते हैं। त्वच्, वाच् आदि स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप भी जलमुच् के समान होते हैं।

पुंलिङ्ग—प्राञ्च् (पूर्व)

प्र०	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्च.
द्वि०	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	प्राञ्च.
तृ०	प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भि
च०	प्राचे	प्राग्भ्याम	प्राग्भ्य
प०	प्राच	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्य
ष०	प्राच	प्राचो	प्राचाम्
स०	प्राचि	प्राचोः	प्राक्षु
सम्बोधन	हे प्राङ्	हे प्राञ्चौ	हे प्राञ्च

प्रत्यञ्च्, उदञ्च् और तिर्यञ्च् द्वितीया के बहुवचन में, तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमी के एकवचन मे, षष्ठी के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन मे तथा सप्तमी के एकवचन और द्विवचन में क्रमश प्रतीच्, उदीच् और तिरश्च् हो जाते हैं और फिर इनके रूप प्राञ्च् के समान चलते हैं।

जकारान्त पुंलिङ्ग –ऋत्विज्

प्र०	ऋत्विक्	ऋत्विजौ	ऋत्विज
द्वि०	ऋत्विजम्	ऋत्विजौ	ऋत्विज
तृ०	ऋत्विजा	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भि
च०	ऋत्विजे	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्य.
प०	ऋत्विज	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्य
ष०	ऋत्विज	ऋत्विजो	ऋत्विजाम्
स०	ऋत्विजि	ऋत्विजो	ऋत्विक्षु
सम्बोधन	हे ऋत्विक्	हे ऋत्विजौ	हे ऋत्विज.

वणिज् (बनिया), भिषज् (वैद्य), भूभुज् (राजा), हुतभुज् (अग्नि) आदि पुलिङ्ग तथा रुज् (रोग), स्रज् (माला) आदि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप ऋत्विज् के समान होते हैं ।

पुलिङ्ग--सम्राज् (सम्राट्)

प्र०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि०	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च०	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
प०	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
ष०	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
स०	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	हे सम्राट्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः

इसी प्रकार परिव्राज् के रूप चलते हैं ।

नपुंसकलिङ्ग असृज् (लोहू)

प्र०	असृक्	असृजी	असृञ्जि
द्वि०	असृक्	असृजी	असृञ्जि
तृ०	असृजा	असृग्भ्याम्	असृग्भिः
च०	असृजे	असृग्भ्याम्	असृग्भ्यः
प०	असृजः	असृग्भ्याम्	असृग्भ्यः
ष०	असृजः	असृजोः	असृजाम्
स०	असृजि	असृजोः	असृक्षु
सम्बोधन	हे असृक्	हे असृजी	हे असृञ्जि

जकारान्त नपुंसलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं ।

तकारान्त पुंलिङ्ग--भूभृत् (राजा, पहाड़)

प्र०	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वि०	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृ०	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
च०	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
प०	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
ष०	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्

स०	भूभृति	भूभृतो	भूभृत्सु
सम्बोधन	हे भूभृत	हे भूभृतौ	भूभृत

दिनकृत् (सूर्य), पापकृत् (पापी), शशभृत (चन्द्रमा), महीभृत् (राजा, पहाड), विपश्चित् (बुद्धिमान्) आदि पुलिङ्ग तथा तडित (बिजली), सरित् (नदी) आदि स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप इसी प्रकार चलते हैं ।

पुंलिङ्ग—श्रीमत् (भाग्यवान्)

प्र०	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्त
द्वि०	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमत
तृ०	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भि
च०	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्य
प०	श्रीमत	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्य
ष०	श्रीमत.	श्रीमतो	श्रीमताम
स०	श्रीमति	श्रीमतो	श्रीमत्सु
सम्बोधन	हे श्रीमन्	हे श्रीमन्तौ	हे श्रीमन्त

धनुष्मत्, धीमत्, हनुमत्, भानुमत्, बुद्धिमत्, भगवत्, कृतवत् आदि के रूप श्रीमत् के समान होते हैं ।

पुलिङ्ग—महत् (बड़ा)

प्र०	महान्	महान्तौ	महान्त
द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	महत
तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भि
च०	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्य
प०	महत	महद्भ्याम्	महद्भ्य
ष०	महतः	महतो	महताम
स०	महति	महतोः	महत्सु
सम्बोधन	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्त

शतृप्रत्ययान्त पुलिङ्ग—पठत् (पढ़ता हुआ)

प्र०	पठन्	पठन्तौ	पठन्त॰
द्वि०	पठन्तम्	पठन्तौ	पठत
तृ०	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भि.
च०	पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्य.

प०	पठत	पठद्भ्याम्	पठद्भ्य
ष०	पठत.	पठतो	पठताम्
स०	पठति	पठतो	पठत्सु
सम्बोधन	हे पठन	हे पठ तौ	हे पठन्त

गच्छत्, धावत्, तिष्ठत्, कुर्वत् आदि शतृप्रत्ययान्त शब्दो के रूप पठत् के समान होते हैं।

नपुसकलिङ्ग-जगत्

प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	जगत्	जगती	जगन्ति
तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
च०	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्य
प०	जगत	जगद्भ्याम्	जगद्भ्य
ष०	जगत	जगतो.	जगताम्
स०	जगति	जगतो	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्	हे जगती	हे जगति

श्रीमत्, गच्छत् (जाता हुआ), भवत् आदि तकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्दो के रूप जगत् के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग-महत्

प्र०	महत्	महती	महान्ति
सम्बोधन	हे महत्	हे महती	हे महान्ति
द्वि०	महत्	महती	महान्ति

शेष रूप जगत् के समान चलते हैं।

दकारान्त पुलिङ्ग—सुहृद् (मित्र)

प्र०	सुहृत्, सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वि०	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृद
तृ०	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भि.
च०	सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्य
प०	सुहृद	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्य
ष०	सुहृद	सुहृदोः	सुहृदाम्
स०	सुहृदि	सुहृदो	सुहृत्सु
सम्बोधन	हे सुहृत्, हे सुहृद	हे सुहृदौ	हे सुहृद

सभासद्, धमविद्, ब्रह्मविद् आदि शब्दो के रूप सुहृद् की भांति होते हैं।

धकारान्त स्त्रीलिङ्ग—विरुध् (लता)

प्र०	वीरुत्	वीरुधौ	वीरुध
द्वि०	वीरुधम्	वीरुधौ	वीरुध
तृ०	वीरुधा	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भि
च०	वीरुधे	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्य.
प०	वीरुध.	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्य
ष०	वीरुध	वीरुधो	वीरुधाम्
स०	वीरुधि	वीरुधो	वीरुत्सु
सम्बोधन	हे वीरुत्	हे वीरुधौ	हे वीरुध

इसी प्रकार समिध्, क्षुध् (भूख), युध् (युद्ध) आदि धकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दो के रूप चलते हैं।

नकारान्त शब्द

पुलिङ्ग आत्मन् (आत्मा)

प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मान.
द्वि०	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभि
च०	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य
प०	आत्मन.	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य.
ष०	आत्मन	आत्मनोः	आत्मनाम्
स०	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मान·

अध्वन् (मार्ग), अश्मन् (पत्थर), ब्रह्मन् (ब्रह्मा) आदि के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

पुलिङ्ग-युवन् (युवक)

प्र०	युवा	युवानौ	युवान
द्वि०	युवानम्	युवानौ	यून.
तृ०	यूना	युवभ्याम्	युवभि
च०	यूने	युवभ्याम्	युवभ्य

प०	यून	युवभ्याम	युवभ्य
ष०	यून	यूनो	यूनाम्
स०	यू न	यूनो	युवसु
सम्बोधन	ह युवन्	हे युवानौ	हे युवान:

पुलिङ्ग—राजन् (राजा)

प्र०	राजा	राजानौ	राजान:
द्वि०	राजानम्	राजानौ	राज्ञ
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि
च०	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य
प०	राज्ञ	राजभ्याम्	राजभ्य
ष०	राज्ञ	राज्ञो.	राज्ञाम्
स०	राज्ञि, राजनि	राज्ञो	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजान

पुलिङ्ग—श्वन् (कुत्ता)

प्र०	श्वा	श्वानौ	श्वान
द्वि०	श्वानम्	श्वानौ	शुन
तृ०	शुना	श्वभ्याम्	श्वभि
च०	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्य
प०	शुन	श्वभ्याम्	श्वभ्य
ष०	शुन	शुनो:	शुनाम्
स०	शुनि	शुनो	श्वसु
सम्बोधन	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वान

पुलिङ्ग—मघवन् (इन्द्र)

प्र०	मघवा	मघवानौ	मघवान.
द्वि०	मघवानम	मघवानौ	मघोन
तृ०	मघाना	मघवभ्याम्	मघवभि:
च०	मघोने	मघवभ्याम	मघवभ्य
प०	मघोन	मघवभ्याम्	मघवभ्य:
ष०	मघोन:	मघोनो:	मघोनाम्

स०	मघोनि	मघोनो	मघवसु
सम्बोधन	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवान.

मघवन् का रूप विकल्प से इस प्रकार भी होता है—

प्र०	मघवान	मघवन्तौ	मघवन्त
द्वि०	मघवन्तम	मघवन्तौ	मघवत
तृ०	मघवता	मघवद्भ्याम्	मघवद्भिः
च०	मघवते	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्य
प०	मघवतः	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्य
ष०	मघवत	मघवतो	मघवताम्
स०	मघवति	मघवतो	मघवत्सु
सम्बोधन	हे मघवन्	हे मघवन्तौ	हे मघवन्तः

पुलिङ्ग—महिमन् (महिमा)

प्र०	महिमा	महिमानौ	महिमानः
द्वि०	महिमानम्	महिमानौ	महिम्नः
तृ०	महिम्ना	महिमभ्याम	महिमभि.
च०	महिम्ने	महिमभ्याम्	महिमभ्य
प०	महिम्न	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
ष०	महिम्न	महिम्नोः	महिम्नाम्
स०	महिम्नि, महिमनि	महिम्नो	महिमसु
सम्बोधन	हे महिमन्	हे महिमानौ	हे महिमान

गरिमन् (गरिमा), लघिमन् (छोटापन), कालिमन् (कालापन), मूधन् (शिर) आदि शब्दो के रूप महिमन् के समान होते हैं।

पुंलिङ्ग-अर्वन् (घोड़ा)

प्र०	अर्वा	अर्वन्तो	अर्वन्त.
द्वि०	अर्वन्तम्	अर्वन्तौ	अर्वत
तृ०	अर्वता	अर्वद्भ्याम्	अर्वद्भि.
च०	अर्वते	अर्वद्भ्याम्	अर्वद्भ्य
प०	अर्वतः	अर्वद्भ्याम्	अर्वद्भ्य
ष०	अर्वत	अर्वतोः	अवताम्

स०	अर्वति	अर्वतो	अर्वत्सु
सम्बोधन	हे अर्वन्	हे अर्वन्तौ	हे अर्वन्त

पुलिङ्ग पूषन् (सूर्य)

प्र०	पूषा	पूषणौ	पूषण
द्वि०	पूष्णम्	पूषणौ	पूष्ण
तृ०	पूष्णा	पूषभ्याम्	पूषभि
च०	पूष्णे	पूषभ्याम्	पूषभ्य
प०	पूष्ण॰	पूषभ्याम्	पूषभ्यः
ष०	पूष्ण	पूष्णोः	पूष्णाम्
स०	पूष्णि, पूषणि	पूष्णो	पूषसु
सम्बोधन	हे पूषन्	हे पूषणौ	हे पूषण

पुंलिङ्ग वृत्रहन् (इन्द्र)

प्र०	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहण
द्वि०	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रहण
तृ०	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभि
च०	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्य
प०	वृत्रघ्न	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्य
ष०	वृत्रघ्न.	वृत्रघ्नो	वृत्रघ्नाम्
स०	वृत्रघ्नि, वृत्रहणि	वृत्रघ्नो॰	वृत्रहसु
सम्बोधन	हे वृत्रहन्	हे वृत्रहणौ	हे वृत्रहण

पुंलिङ्ग करिन् (हाथी)

प्र०	करी	करिणौ	करिण
द्वि०	करिणम्	करिणौ	करिण
तृ०	करिणा	करिभ्याम्	करिभि
च०	करिणे	करिभ्याम	करिभ्य
प०	करिण	करिभ्याम्	करिभ्य
ष०	करिणः	करिणोः	करिणाम्
स०	करिणि	करिणो	करिषु
सम्बोधन	हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः

शशिन् (चन्द्रमा), दण्डिन् (दण्डधारी), हस्तिन् (हाथी), गुणिन (गुणी), पक्षिन् (पक्षी), प्राणिन्, धनिन्, तपस्विन् इत्यादि इन् मे अन्त होने वाले शब्दो के रूप करिन् की भाति चलते हैं।

पुल्लिङ्ग पथिन् (मार्ग)

प्र०	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थान
द्वि०	पन्थानम्	पन्थानौ	पथ
तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभि
च०	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्य
प०	पथ	पथिभ्याम्	पथिभ्य
ष०	पथः	पथो	पथाम्
स०	पथि	पथो	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्था	हे पन्थानौ	हे पन्थान

स्त्रीलिङ्ग-सीमन् (सीमा)

प्र०	सीमा	सीमानौ	सीमान
द्वि०	सीमानम्	सीमानौ	सीम्न
तृ०	सीम्ना	सीमभ्याम्	सीमभि
च०	सीम्ने	सीमभ्याम्	सीमभ्य
प०	सीम्नः	सीमभ्याम्	सीमभ्यः
ष०	सीम्न	सीम्नो	सीम्नाम्
स०	सीम्नि, सीमनि	सीम्नो	सीमसु
सम्बोधन	हे सीमन्	हे सीमानौ	हे सीमान

नपुंसकलिङ्ग-ब्रह्मन्

प्र०	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
द्वि०	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
तृ०	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभि
च०	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्य
प०	ब्रह्मण	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
ष०	ब्रह्मण.	ब्रह्मणो	ब्रह्मणाम्
स०	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु
सम्बोधन	हे ब्रह्म, हे ब्रह्मन्	हे ब्रह्मणी	हे ब्रह्माणि

वमन् (कवच), चमन् (चाम), नमन् क्रीडा), जन्मन् (जन्म), पवन् (पर्व), शर्मन (कल्याण) आदि शब्दों के रूप ब्रह्मन् के समान होते हैं।

नपुसकलिङ्ग-नामन् (नाम)

प्र०	नाम	नामनी नाम्नी	नामानि
द्वि०	नाम	नामनी नाम्नी	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभि
च०	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्य
प०	नाम्न	नामभ्याम्	नामभ्य.
ष०	नाम्न.	नाम्नो	नाम्नाम्
स०	नाम्नि, नामनि	नाम्नो	नामसु
सम्बोधन	हे नाम, हे नामन्	हे नामनी, हे नाम्नी	हे नामानि

इसी प्रकार व्योमन् (आकाश), धामन् (घर, तेज), सामन (सामवेद का मन्त्र) आदि के रूप चलते हैं।

नपुसकलिङ्ग—अहन् (दिन)

प्र०	अह'	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वि०	अह	अह्नी, अहनी	अहानि
तृ०	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभि
च०	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्य.
प०	अह्न	अहोभ्याम्	अहोभ्य·
ष०	अह्न	अह्नो	अह्नाम
स०	अह्नि, अहनि	अह्नो	अह सु, अहस्सु
सम्बोधन	हे अह	हे अह्नी, हे अहनी	हे अहानि

पकारान्त स्त्रीलिङ्ग—अप् (पानी)

इसके रूप बहुवचन में ही होते हैं—

प्र०	आप
द्वि०	अप
तृ०	अद्भि
च०	अद्भ्य
प०	अद्भ्य.

ष०	अपाम्		
स०	अप्सु		
सम्बोधन	हे आपः		

भकारान्त स्त्रीलिङ्ग—ककुभ् (दिशा)

प्र०	ककुप्	ककुभौ	ककुभ
द्वि०	ककुभम्	ककुभौ	ककुभ
तृ०	ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः
च०	ककुभे	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्य
प०	ककुभ	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्य
ष०	ककुभ.	ककुभो	ककुभाम्
स०	ककुभि	ककुभो	ककुप्सु
सम्बोधन	हे ककुप	हे ककुभौ	हे ककुभ

रकारान्त नपुंसकलिङ्ग—वार् (जल)

प्र०	वा	वारी	वारि
द्वि०	वा	वारी	वारि
तृ०	वारा	वार्भ्याम्	वार्भि
च०	वारे	वार्भ्याम्	वार्भ्यं
प०	वारः	वार्भ्याम्	वार्भ्यं
ष०	वार	वारोः	वाराम्
स०	वारि	वारो	वार्षु
सम्बोधन	हे वाः	हे वारी	हे वारि

स्त्रीलिङ्ग—गिर् (वाणी)

प्र०	गीः	गिरौ	गिर
द्वि०	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृ०	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भि
च०	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्य
प०	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यं.
ष०	गिर	गिरोः	गिराम्
स०	गिरि	गिरो	गीर्षु
सम्बोधन	हे गी	हे गिरौ	हे गिर.

पुर्, धुर आदि के रूप भी इसी प्रकार चलते हैं।

वकारान्त स्त्रीलिङ्ग—दिव् (स्वर्ग)

प्र०	द्यौ	दिवौ	दिव
द्वि०	दिवम्	दिवौ	दिव
तृ०	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभि
च०	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्य
प०	दिव	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
ष०	दिव	दिवो	दिवाम्
स०	दिवि	दिवो	द्युषु
सम्बोधन	हे द्यौ	हे दिवौ	हे दिव.

शकारान्त शब्द

पुलिङ्ग—विश् (वैश्य)

प्र०	विट्, विड्	विशौ	विश
द्वि०	विशम्	विशौ	विश
तृ०	विशा	विड्भ्याम्	विड्भि
च०	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
प०	विश	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
ष०	विश·	विशो	विशाम्
स०	विशि	विशो	विट्सु
सम्बोधन	हे विट्, हे विड्	हे विशौ	हे विशः

स्त्रीलिङ्ग—दिश् (दिशा)

प्र०	दिक्, दिग्	दिशौ	दिश
द्वि०	दिशम्	दिशौ	दिश
तृ०	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
च०	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्य
प०	दिश	दिग्भ्याम्	दिग्भ्य
ष०	दिशः	दिशो	दिशाम्
स०	दिशि	दिशो	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्, हे दिग्	हे दिशौ	हे दिशः

पुंलिङ्ग—पुरोडाश्

प्र०	पुरोडा	पुराडाशो	पुरोडाश
द्वि०	पुरोडाशम	पुरोडाशौ	पुरोडाशः
तृ०	पुरोडाशा	पुरोडोभ्याम्	पुरोडोभिः
च०	पुरोडाशे	पुरोडोभ्याम्	पुरोडोभ्यः
प०	पुरोडाश	पुरोडोभ्याम्	पुरोडोभ्य
ष०	पुरोडाश	पुरोडाशो	पुरोडाशाम्
स०	पुरोडाशि	पुरोडाशोः	पुरोडःशु
सम्बोधन	हे पुरोडा	हे पुरोडाशौ	हे पुरोडाश

पुलिङ्ग—तादृश् (उसके समान)

प्र०	तादृक्, तादृग्	तादृशौ	तादृश
द्वि०	तादृशम	तादृशो	तादृश
तृ०	तादृशा	तादृगभ्याम्	तादृग्भि
च०	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्य
प०	तादृश	तादग्भ्याम्	तादृग्भ्य
ष०	तादृश	तादृशो.	तादृशाम्
स०	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सम्बोधन	हे तादृक्, हे तादृग्	हे तादृशौ	हे तादृश

मादृश् (मेरे समान), भवादृश् (आपके समान), त्वादृश् (तुम्हारे समान) आदि के रूप तादृश् के समान होते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग में इनके तादृशी, मादृशी, भवादृशी, त्वादृशी रूप बनते हैं । इनके रूप नदी के समान चलते हैं ।

नपुंसकलिङ्ग—तादृश्

प्र०	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
सम्बोधन	हे तादृक्	हे तादृशी	हे तादृंशि
द्वि०	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः

इसके और रूप पुलिङ्ग तादृश् की भाँति चलते हैं ।

षकारान्त पुलिङ्ग—द्विष् (शत्रु)

प्र०	द्विट्	द्विषौ	द्विष
द्वि०	द्विषम्	द्विषौ	द्विष
तृ०	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भि.
च०	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्य
प०	द्विष	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्य
ष०	द्विष	द्विषोः	द्विषाम्
स०	द्विषि	द्विषो	द्विट्सु
सम्बोधन	हे द्विट्	हे द्विषौ	हे द्विषः

सकारान्त शब्द

पुलिङ्ग—चन्द्रमस् (चन्द्रमा)

प्र०	चन्द्रमा	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस
द्वि०	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य
प०	चन्द्रमस	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य
ष०	चन्द्रमस	चन्द्रमसो	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	चन्द्रमसो	चन्द्रम सु, चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रम	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमस.

दिवौकस् (देवता), वेधस् (ब्रह्मा), प्रचेतस् (वरुण), महायशस् आदि के रूप चन्द्रमस् के समान होते हैं।

पुलिङ्ग-दोस् (भुजा)

प्र०	दो	दोषौ	दोषः
द्वि०	दो	दोषौ	दोष , दोष्ण.
तृ०	दोषा, दोष्णा	दोर्म्याम्, दोषभ्याम्	दोर्भि , दोषभिः
च०	दोषे, दोष्णे	दोर्म्याम् दोषभ्याम्	दोर्भ्य , दोषभ्य.
प०	दोष , दोष्ण	दोर्भ्याम्, दोषभ्याम्	दोर्भ्य., दोषभ्य
ष०	दोषः, दोष्ण	दोषो , दोष्णो	दोषाम्, दोष्णाम्
स०	दोषि,दोष्णि,दोषणि	दोषो दोष्णो	दोष्षु, दो षु दोषषु
सम्बोधन	हे दो.	हे दोषौ	हे दोष.

पुंलिङ्ग पुंस् (पुरुष)

प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वि०	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृ०	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
च०	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
पं०	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
ष०	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
स०	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः

नपुंसकलिङ्ग—सुपुंस् (शोभनाः पुमांसः यस्मिन् तत्—शोभन पुरुषों वाला)

प्र०, द्वि०, सम्बोधन	सुपुम्	सुपुंसी	सुपुमांसि

शेष रूप पुलिङ्ग पुंस् के समान होते हैं।

पुंलिङ्ग—विद्वस् (विद्वान्)

प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

इसका स्त्रीलिङ्ग का रूप विदुषी है। विदुषी के रूप नदी के समान होते हैं।

पुंलिङ्ग—लघीयस्

प्र०	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वि०	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृ०	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः

च०	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
प०	लघीयस	लघीयोभ्याम	लघीयोभ्य
ष०	लघीयस	लघीयसो	लघीयसाम्
स०	लघीयसि	लघीयसो	लघीय सु, लघीयस्सु
सम्बोधन	हे लघीयन्	हे लघीयासौ	हे लघीयास

कनीयस् (उससे छोटा), गरीयस् (उससे भारी), ज्यायस्, प्रेयस् आदि शब्दो के रूप लघीयस् के समान होते हैं।

पुल्लिङ्ग—जग्मिवस् (जो चला गया है)

प्र०	जग्मिवान्	जग्मिवासौ	जग्मिवास.
द्वि०	जग्मिवासम्	जग्मिवासौ	जग्मुष
तृ०	जग्मुषा	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भि
च०	जग्मुषे	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भ्य
प०	जग्मुष	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भ्य
ष०	जग्मुष	जग्मुषो	जग्मुषाम्
स०	जग्मुषि	जग्मुषो	जग्मिवत्सु
सम्बोधन	हे जग्मिवन्	हे जग्मिवासौ	हे जग्मिवास

तस्थिवस् (जो रुका है), शुश्रुवस् (जिसने सुना है), सेदिवस् (बैठा हुआ) आदि के रूप जग्मिवस् के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग—आशिस् (आशीर्वाद)

प्र०	आशी	आशिषौ	आशिष
द्वि०	आशिषम्	आशिषौ	आशिष
तृ०	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भि
च०	आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्य
प०	आशिष	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्य.
ष०	आशिष	आशिषो	आशिषाम्
स०	आशिषि	आशिषो	आशी षु, आशीष्षु
सम्बोधन	हे आशी	हे आशिषौ	हे आशिष

नपुसकलिङ्ग—पयस् (दूध, जल)

प्र०	पय	पयसी	पयासि
द्वि०	पय	पयसी	पयासि

तृ०	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
च०	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्य
प०	पयस	पयोभ्याम्	पयोभ्य॰
ष०	पयस	पयसोः	पयसाम्
स०	पयसि	पयसो	पय सु
सम्बोधन	हे पय	हे पयसी	हे पयांसि

अम्भस् (पानी), आगस् (पाप), उरस् (छाती), मनस् (मन), वयस् (अवस्था), वचस् (वचन), यशस् (यश), सरस् (तालाब) आदि नपुंसकलिङ्ग शब्दो के रूप पयस् के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग—हविस् (हवि)

प्र०	हवि	हविषी	हवींषि
द्वि०	हवि	हविषी	हवींषि
तृ०	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भि.
च०	हविषे	हविर्भ्याम्	हविभ्य॰
प०	हविष	हविर्भ्याम्	हविर्भ्य
ष०	हविषः	हविषो	हविषाम्
स०	हविषि	हविषोः	हविष्षु
सम्बोधन	हे हवि	हे हविषी	हे हवींषि

नपुंसकलिङ्ग—धनुस्

प्र०	धनु	धनुषी	धनूंषि
द्वि०	धनु	धनुषी	धनूंषि
तृ०	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भि
च०	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्य
प०	धनुष	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्य
ष०	धनुष	धनुषोः	धनुषाम्
स०	धनुषि	धनुषोः	धनुष्षु
सम्बोधन	हे धनु	हे धनुषी	हे धनूंषि

चक्षुस् (नेत्र), वपुस् (शरीर), आयुस् (आयु) आदि नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

हकारान्त शब्द

स्त्रीलिङ्ग—उपानह्

प्र०	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
द्वि०	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृ०	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
च०	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
प०	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
ष०	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
स०	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु
सम्बोधन	हे उपानत्	हे उपानहौ	हे उपानहः

पुंलिङ्ग—विश्ववाह् (संसार का धर्ता, स्वामी)

प्र०	विश्ववाट्	विश्ववाहौ	विश्ववाहः
द्वि०	विश्ववाहम्	विश्ववाहौ	विश्वौहः
तृ०	विश्वौहा	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भिः
च०	विश्वौहे	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भ्यः
प०	विश्वौहः	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भ्यः
ष०	विश्वौहः	विश्वौहोः	विश्वौहाम्
स०	विश्वौहि	विश्वौहोः	विश्ववाट्सु
सम्बोधन	हे विश्ववाट्	हे विश्ववाहौ	विश्ववाहः

पुंलिङ्ग—अनडुह् (बैल)

प्र०	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वि०	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
तृ०	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
च०	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
प०	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
ष०	अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्
स०	अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु
सम्बोधन	हे अनड्वन्	हे अनड्वाहौ	हे अनड्वाहः

सर्वनाम

सव आदि ३५ शब्द सवनाम कहे जाते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

सव, विश्व, उभ, उभय, डतर जोडकर बनाये गये शब्द (कतर, यतर आदि), डतम जोडकर बनाये गये शब्द (कतम, यतम आदि), अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम, पूव, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्, तद्, यद्, एतद् इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवत् और किम्।

अस्मद् (मैं)

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, न
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, न
प०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम, मे	आवयो, नौ	अस्माकम्, नः
स०	मयि	आवयो	अस्मासु

युष्मद्—तुम

प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, व.
तृ०	त्वया	युवाभ्याम	युष्माभि।
च०	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
प०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव, ते	युवयो., वाम्	युष्माकम्, व.
स०	त्वयि	युवयो.	युष्मासु

अस्मद् के वैकल्पिक रूप (मा, नौ, न., मे, नौ, नः, मे, नौ, न) तथा युष्मद् के वैकल्पिक रूप (त्वा, वाम्, वः, ते, वाम्, वः, ते, वाम्, वः) वाक्य के प्रारम्भ में तथा श्लोक के चरण के प्रारम्भ में और च, वा, अह, ह और एव के ठीक पहले और सम्बोधन के ठीक बाद प्रयुक्त नही होते। जैसे—'मे पुस्तकम्'

प्रयोग अशुद्ध है, क्योंकि यहा मे वाक्य के प्रारम्भ में आया है। इसका शुद्ध रूप है—मम पुस्तकम्। जब च आदि का साक्षात् सम्बन्ध नही रहता, तब इन वैकल्पिक रूपो का प्रयोग होता है। जैसे—हरो हरिश्च मे स्वामी। वाक्य में एक क्रिया के रहने पर उपर्युक्त वैकल्पिक रूपो का प्रयोग हो सकता है। जैसे—शालीना ते ओदन दास्यामि। जब दो क्रियाएँ रहती हैं, तब प्रयोग नही होता। जैसे—ओदन पच तव भविष्यति।

जब सम्बोधन के बाद उसका कोई विशेषण आता है, तब इन वैकल्पिक रूपो का प्रयोग होता है। जैसे—हरे दयालो न पाहि। जहाँ अन्वादेश (वर्णित विषय का पुन वर्णन) नही है, वहा इन रूपो का प्रयोग विकल्प से होता है। जैसे—धाता ते भक्तोऽस्ति, धाता तव भक्तोऽस्ति। जहाँ अन्वादेश है, वहाँ प्रयोग अनिवार्य है। जैसे—तस्मै ते नम।

इदम्—यह

पुंलिङ्ग

प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभि
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य
प०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य.
ष०	अस्य	अनयो, एनयो·	एषाम्
स०	अस्मिन्	अनयो, एनयो·	एषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमा, एना.
तृ०	अनया, एनया	आभ्याम्	आभि
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्य.
प०	अस्या	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्या	अनयो, एनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	अनयो., एनयोः	आसु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

एतद्-यह

पुलिङ्ग

प्र०	एष	एतौ	एते
द्वि०	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
तृ०	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
च०	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्य
प०	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्य
ष०	एतस्य	एतयो, एनयो	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	एतयो, एनयो	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	एषा	एते	एता
द्वि०	एताम्, एनाम्	एते, एने	एता, एनाः
तृ०	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्य
प०	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
ष०	एतस्याः	एतयो., एनयो	एतासाम्
स०	एतस्याम्	एतयो, एनयो	एतासु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	एतत्	एते	एतानि
द्वि०	एतत्, एनत्	एते, एने	एतानि, एनानि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

अदस् वह

पुलिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	अमू	अमून्

तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभि
च०	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
प०	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्य
ष०	अमुष्य	अमुयो	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	अमुयो	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमू
द्वि०	अमूम्	अमू	अमू
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
प०	अमुष्या	अमूभ्याम्	अमूभ्य
ष०	अमुष्या	अमुयो.	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	अद.	अमू	मूनि
द्वि०	अद	अमू	अमूनि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

तद्-वह

पुलिङ्ग

प्र०	स	तौ	ते
द्वि०	तम्	तौ	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम	तैः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
प०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य
ष०	तस्य	तयो.	तेषाम्
स०	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	सा	ते	ता
द्वि०	ताम्	ते	ताः

तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभि
च०	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
प०	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्य
ष०	तस्या	तयो	तासाम्
स०	तस्याम्	तयो	तासु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	तत्	ते	तानि
द्वि०	तत्	ते	तानि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते है ।

यद्यपि इदम् और एतद्—दोनो का अर्थ 'यह' हैं, परन्तु उनमें कुछ भेद है इसी प्रकार अदस् और तद् मे भी भेद है —

'इदमस्तु सन्निकृष्ट समीपतरवर्ति चैतदो रूपम् ।
अदसस्तु विप्रकृष्ट तदिति परोक्षे विजानीयात् ।।'

जब किसी निकट के व्यक्ति या वस्तु का बोध कराना होता है, तब इदम् का प्रयोग होता है और जब उससे भी अधिक समीपस्थ का बोध कराना होता है, तब एतद् का प्रयोग किया जाता है । दूरस्थ व्यक्ति या वस्तु का बोध करने के लिए अदस् शब्द का प्रयोग होता है और तद का प्रयोग परोक्ष के लिए होता है ।

इदम् और एतद् के एनम् आदि वैकल्पिक रूपो का प्रयोग अन्वादेश में होता है। जैसे—अनेन व्याकरणमधीतम्, एन छन्दोऽध्यापय, अनयोः पवित्र कुलम्, एनयो प्रभूत स्वम् ।

यद्-जो

पुलिङ्ग

प्र०	य	यौ	ये
द्वि०	यम्	यौ	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यै
च०	यस्मै	याभ्याम्	येभ्य
प०	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्य
ष०	यस्य	ययो	येषाम्
स०	यस्मिन्	ययो	येषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	ये	या
तृ०	यया	याभ्याम्	याभि
च०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्य
प०	यस्या	याभ्याम्	याभ्य
ष०	यस्या.	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	ययो	यासु

नपुंकसलिङ्ग

प्र०	यत्	ये	यानि
द्वि०	यत्	ये	यानि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

किम्-क्या

पुलिङ्ग

प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कै
च०	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य
प०	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य
ष०	कस्य	कयो	केषाम्
स०	कस्मिन्	कयो	केषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	का	के	का
द्वि०	काम्	के	का
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	काभ्याम्	काभ्य·
प०	कस्या	काभ्याम्	काभ्य
ष०	कस्या	कयो	कासाम्
स०	कस्याम्	कयो	कासु

नपुसकलिङ्ग

प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	किम्	के	कानि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

स्व-वाचक सर्वनाम

आत्मन्, स्व और स्वयम् शब्दो से स्ववाचक सर्वनाम का भाव प्रकट किया जाता है। आत्मन् शब्द का प्रयोग पुलिङ्ग, एकवचन में होता है। जैसे—गुप्त ददृशुरात्मान सर्वा. स्वप्नेषु वामनै।

जब स्व शब्द का 'अपना' अर्थ होता है, तब यह सर्वनाम होता है। इसके रूप तीनो लिङ्गो में चलते हैं और 'सव' के समान होते हैं। पुलिङ्ग, प्रथमा, बहुवचन और पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्तियो के एकवचन में राम के समान भी होते हैं। जैसे—स्वे, स्वाः, स्वात्, स्वस्मात्, स्वे, स्वस्मिन्।

'स्वयम्' शब्द का रूप नही चलता। इसका प्रयोग है—राजा स्वय समरभूमि जगाम।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

किम् शब्द के विभिन्न रूपो में चित्, चन, अपि या स्वित् लगाकर अनिश्चय-वाचक सवनाम बनाये जाते हैं। जैसे—कश्चित्, कश्चन, कोऽपि, कस्यचित्, कास्वित् आदि।

अनिश्चय के अथ का बोध कराने के लिए प्रश्नवाचक क्रियाविशेषणो के साथ चित्, चन आदि लगाये जाते हैं। जैसे—कदाचित्, कतिचित्, क्वचित् आदि।

परस्परसम्बन्धबोधक सर्वनाम

पारस्परिक सम्बन्ध का प्रकटन परस्पर, इतरेतर और अन्योन्य द्वारा किया जाता है। जैसे—परस्परेण स्पृहणीयशोभम्, इतरेतरयोगाः, अन्योन्यशोभाजनाद् इत्यादि।

मेरा, तुम्हारा, उसका आदि सम्बन्धबोधक भाव को सस्कृत में दो प्रकार से प्रकट करते हैं। पहला प्रकार है—षष्ठी विभक्ति का प्रयोग। जैसे—मम गृहम्, तव पिता, तस्य ग्रन्थः। दूसरा प्रकार है—अस्मद्, युष्मद् आदि में छ, खञ् आदि प्रत्ययों को जोडकर बनाये गये शब्दो का प्रयोग।

जब छ प्रत्यय लगाया जाता है, तब अस्मद् के स्थान पर मत् और अस्मत् तथा युष्मद् के स्थान पर त्वत् और युष्मत् हो जाते हैं। छ का ईय हो जाता है।

जब अण् और खञ् प्रत्यय लगाये जाते हैं, तब अस्मद् और युष्मद् के स्थान पर एकवचन में क्रमश मामक् और तावक् और बहुवचन में क्रमश आस्माक् और यौष्माक होते हैं। खञ् का ईन हो जाता है।

अस्मद्—पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग

एकवचन		बहुवचन	
छ—मदीय	मेरा	अस्मदीय	हमारा
अण्—मामक	मेरा	आस्माक	हमारा
खञ्—मामकीन	मेरा	आस्माकीन	हमारा

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन		बहुवचन	
छ—मदीया	मेरी	अस्मदीया	हमारी
अण्—मामिका	मेरी	आस्माकी	हमारी
खञ्—मामकीना	मेरी	आस्माकीना	हमारी

युष्मद्—पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग

एकबचन		बहुवचन	
छ—त्वदीय	तेरा	युष्मदीय	तुम्हारा
अण्—तावक	तेरा	यौष्माक	तुम्हारा
खञ्—तावकीन	तेरा	यौष्माकीण	तुम्हारा

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन		बहुवचन	
छ—त्वदीया	तेरा	युष्मदीया	तुम्हारा
अण्—तावकी	तेरा	यौष्माकी	तुम्हारा
खञ्—तावकीना	तेरा	यौष्माकीणा	तुम्हारा

एतद्

पुलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग	एतदीय	स्त्रीलिङ्ग	एतदीया

तद्

पुलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग	तदीय	स्त्रीलिङ्ग	तदीया

यद्

पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग	यदीय	स्त्रीलिङ्ग	यदीया

अकारान्त पुलिङ्ग के रूप राम की भांति और नपुसकलिङ्ग के रूप फल की भाँति चलते हैं। आकारान्त स्त्रीलिङ्ग के रूप लता की भाँति और ईकारान्त स्त्री-लिङ्ग के रूप नदी की भाँति होते हैं।

परिमाण के अर्थ को व्यक्त करने के लिए यद्, तद्, एतद् में वतुप् (वत्) प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—यावत्, तावत्, एतावत्।

किम् और इदम् में भी वतुप् प्रत्यय लगाया जाता है। यहाँ वतुप् के व को घ हो जाता है। घ को इय हो जाता है। जैसे—कियत्, इयत्।

सादृश्य का अर्थ प्रकट करने के लिए तद्, यद् आदि उपपद से युक्त दृश् धातु से कञ् तथा क्विन् प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे—तादृश (कञ् प्रत्यय), तादृश् (क्विन् प्रत्यय), यादृश, यादृश्, एतादृश, एतादृश्, ईदृश, ईदृश्। इनके स्त्रीलिङ्ग के रूप हैं—तादृशी, यादृशी, एतादृशी, ईदृशी।

संख्या का परिमाण सूचित करने के लिए किम् से डति प्रत्यय होता है। जैसे—कति–कितना। इसके रूप बहुवचन में ही होते हैं—

प्र०	कति
द्वि०	कति
तृ०	कतिभि
च०	कतिभ्य
प०	कतिभ्यः
ष०	कतीनाम्
स०	कतिषु

सर्व

पुलिङ्ग

प्र०	सर्व	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै.
च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
प०	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
ष०	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	सर्वयो.	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वा
द्वि०	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा.
तृ०	सवया	मर्वाभ्याम्	सर्वाभि
च०	सवस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य
प०	मवस्या	सवाभ्याम्	सर्वाभ्य
ष०	मर्वस्या	सवयो:	सर्वासाम्
स०	सवस्याम्	सर्वयो	सर्वासु

नपुसकलिङ्ग

प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	सवम्	सर्वे	सवाणि

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं।

विशेष ज्ञातव्य

१—पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसज्ञायाम्—पूर्व (पहला), पर (दूमरा), अवर (पश्चिम), दक्षिण (दक्षिण दिशा), उत्तर (उत्तर दिशा), अपर (पश्चिम), अधर (नीचा)—ये शब्द व्यवस्था और असज्ञा मे सर्वनाम होते हैं।

२—अन्तर बहिर्योगोपसव्यानयो—बहिर्योग (बाहर का) और उप-सव्यान (अधोवस्त्र) अर्थ में अन्तर शब्द सवनाम होता है।

३—उभ (दोनो) के रूप केवल द्विवचन में चलते हैं—

	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुसकलिङ्ग
प्र०	उभौ	उभे	उभे
द्वि०	उभौ	उभे	उभे
तृ०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
च०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम
प०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
ष०	उभयो:	उभयो	उभयो.
स०	उभयो	उभयो	उभयो

४—उभय के रूप एकवचन और बहुवचन में होते हैं। जैसे—उभय, उभये।

५—नेम शब्द 'अर्ध' अर्थ में सर्वनाम होता है। इसके रूप सर्व के समान होते हैं। प्रथमा, बहुवचन में राम के समान भी रूप होता है। जैसे—नेमे, नेमा

६-एक शब्द संख्या का वाचक होने पर एकवचन में होता है। अन्य अर्थ होने पर द्विवचन और बहुवचन मे भी रूप चलते हैं। एक शब्द के अनेक अर्थ हैं—

'एकोऽल्पार्थे प्रधाने च प्रथमे केवले तथा।
साधारणे समानेऽपि संख्यायां च प्रयुज्यते॥'

अल्प, प्रधान, प्रथम, केवल, साधारण, समान तथा संख्या—इन अर्थों में एक का प्रयोग होता है।

७—प्रथम, चरम, अल्प, अर्ध, कतिपय और तयप्रत्ययान्त शब्दों के रूप प्रथमा, बहुवचन में सर्व के समान भी होते हैं। जैसे—प्रथमे, प्रथमाः, कतिपये कतिपयाः, द्वितये, द्वितयाः आदि।

८—सर्व आदि शब्द निम्नलिखित स्थलों पर सर्वनाम नहीं रहते—(१) संज्ञा होने पर, (२) समास मे गौण रूप से प्रयुक्त होने पर, (३) तृतीया समास में होने पर, (४) द्वन्द्व समास में होने पर।

उदाहरण —(१) सर्वो नाम कश्चित्तस्मै सर्वाय देहि, (२) अतिक्रान्तः सर्वमतिसर्वस्तस्मै अतिसर्वाय देहि, (३) मासपूर्वाय, (४) वर्णाश्रमेतराणाम्।

सर्वनाम सम्बन्धी क्रियाविशेषण

१ **पञ्चम्यास्तसिल्**—पञ्चम्यन्त किम् आदि से तसिल् प्रत्यय होता है। जैसे—कुतः (कहाँ से), इतः, अतः, अमुतः, यतः।

२ **सप्तम्यास्त्रल्**—सप्तम्यन्त किम् आदि से त्रल् प्रत्यय होता है। जैसे—कुत्र (कहाँ), यत्र, तत्र।

३ **इदमो ह्**—सप्तम्यन्त इदम् से ह प्रत्यय होता है। जैसे—इह। यह प्रत्यय त्रल् का बाधक है।

४ **सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा**—सप्तम्यन्त कालवाचक सर्व, एक, अन्य, किम्, यद् और तद् से स्वार्थ में दा प्रत्यय होता है। जैसे—सर्वदा (सब समय), एकदा (एक समय), अन्यदा, कदा, यदा, तदा।

५ **इदमोर्हिल्**—सप्तम्यन्त कालवाचक इदम् शब्द से र्हिल् प्रत्यय होता है। जैसे—एतर्हि—इस समय।

६ अधुना—सप्तम्यन्त कालवाचक इदम् से स्वार्थ में अधुना प्रत्यय होता है। इसमें प्रत्यय ही अवशिष्ट रहता है। जैसे—इदम् + अधुना = अधुना।

७ दानीं च—सप्तम्यन्त कालवाचक इदम् से स्वाथ में दानीम् प्रत्यय होता है। जैसे—इदानीम्—इस समय।

८ अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम्—अनद्यतन (आज न होने वाला) काल अर्थ मे स्थित किम् आदि से विकल्प से र्हिल् प्रत्यय होता है। जैसे—कर्हि, कदा, यर्हि, यदा, तर्हि, तदा।

६ प्रकारवचने थाल्—प्रकारवृत्ति किम् आदि से स्वार्थ में थाल् (था) प्रत्यय होता है। जैसे—तथा (तेन प्रकारेण), यथा।

१० इदमस्थमु —प्रकारवृत्ति इदम् से स्वाथ में थमु प्रत्यय होता है। जैसे—इत्थम् (अनेन एतेन वा प्रकारेण)।

११ किमश्च--किम् से भी प्रकार अथ में थमु प्रत्यय होता है। जैसे—कथम् (केन प्रकारेण)।

१२ दिक्शब्देभ्य. सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्ताति—सप्तम्यन्त, पञ्चम्यन्त और प्रथमान्त दिशा, देश तथा काल अर्थों में वर्तमान दिशावाचक शब्दो से अस्ताति प्रत्यय होता है। जैसे—पुरस्तात्, अवस्तात्, अवस्तात्, अवरस्तात्।

१३ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच्—दक्षिण और उत्तर से अतसुच प्रत्यय होता है। जैसे—दक्षिणत , उत्तरत ।

१४ विभाषा परावराभ्याम्—पर और अवर से विकल्प से अतसुच् प्रत्यय होता है। जैसे—परत , अवरत , परस्तात्, अवरस्तात्।

१५ उत्तराधरदक्षिणादाति —उत्तर, अधर और दक्षिण से अस्ताति प्रत्यय के अर्थ में आति प्रत्यय होता है। जैसे—उत्तरात्, अधरात्, दक्षिणात्।

१६ दक्षिणादाच्—अस्ताति के अर्थ में दक्षिण से आच् प्रत्यय होता है। जैसे —दक्षिणा वसति।

१७ आहि च दूरे—दूर अथ में दक्षिण से आहि और आच् प्रत्यय होते हैं। जैसे—दक्षिणाहि, दक्षिणा।

१८ उत्तराच्च—उत्तर से भी आहि और आच् प्रत्यय होते हैं। जैसे—उत्तराहि, उत्तरा।

संख्यावाचक शब्द

संख्या	पूरणी संख्या पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग	पूरणी संख्या स्त्रीलिङ्ग
१ एक	प्रथम, अग्रिम, आदिम	प्रथमा
२ द्वि	द्वितीय	द्वितीया
३ तृ	तृतीय	तृतीया
४ चतुर्	चतुर्थ, तुरीय, तुर्य	चतुर्थी, तुरीया, तुर्या
५ पञ्चन्	पञ्चम	पञ्चमी
६ षष्	षष्ठ	षष्ठी
७ सप्तन्	सप्तम	सप्तमी
८ अष्टन्	अष्टम	अष्टमी
९ नवन्	नवम	नवमी
१० दशन्	दशम	दशमी
११ एकादशन्	एकादश	एकादशी
१२ द्वादशन्	द्वादश	द्वादशी
१३ त्रयोदशन्	त्रयोदश	त्रयोदशी
१४ चतुर्दशन्	चतुर्दश	चतुर्दशी
१५ पञ्चदशन्	पञ्चदश	पञ्चदशी
१६ षोडशन्	षोडश	षोडशी
१७ सप्तदशन्	सप्तदश	सप्तदशी
१८ अष्टादशन्	अष्टादश	अष्टादशी
१९ नवदशन्	नवदश	नवदशी
एकोनविंशति	एकोनविंश, एकोनविंशतितम	एकोनविंशी एकोनविंशतितमी
ऊनविंशति	ऊनविंश, ऊनविंशतितम	ऊनविंशी ऊनविंशतितमी
एकान्नविंशति	एकान्नविंश, एकान्नविंशतितम	एकान्नविंशी एकान्नविंशतितमी
२० विंशति	विंश, विंशतितम	विंशी, विंशतितमी
२१. एकविंशति	एकविंश, एकविंशतितम	एकविंशी एकविंशतितमी

२२ द्वाविंशति	द्वाविंश, द्वाविंशतितम	द्वाविंशी द्वाविंशतितमी
२३ त्रयोविंशति	त्रयोविंश त्रयोविंशतितम	त्रयोविंशी त्रयोविंशतितमी
२४ चतुर्विंशति	चतुर्विंश चतुर्विंशतितम	चतुर्विंशी चतुर्विंशतितमी
२५ पञ्चविंशति	पञ्चविंश पञ्चविंशतितम	पञ्चविंशी पञ्चविंशतितमी
२६ षड्विंशति	षड्विंश षड्विंशतितम	षड्विंशी षड्विंशतितमी
२७ सप्तविंशति	सप्तविंश सप्तविंशतितम	सप्तविंशी सप्तविंशतितमी
२८ अष्टाविंशति	अष्टाविंश अष्टाविंशतितम	अष्टाविंशी अष्टाविंशतितमी
२९ नवविंशति	नवविंश नवविंशतितम	नवविंशी नवविंशतिनमी
एकोनत्रिंशत्	एकोनत्रिंश एकोनत्रिंशत्तम	एकोनत्रिंशी एकोनत्रिंशत्तमी
ऊनत्रिंशत्	ऊनत्रिंश ऊनत्रिंशत्तम	ऊनत्रिंशी ऊनत्रिंशत्तमी
एकान्नत्रिंशत्	एकान्नत्रिंश एकान्नत्रिंशत्तम	एकान्नत्रिंशी एकान्नत्रिंशत्तमी
३० त्रिंशत्	त्रिंश, त्रिंशत्तम	त्रिंशी, त्रिंशत्तमी
३१ एकत्रिंशत्	एकत्रिंश एकत्रिंशत्तम	एकत्रिंशी एकत्रिंशत्तमी
३२ द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंश द्वात्रिंशत्तम	द्वात्रिंशी द्वात्रिंशत्तमी
३३ त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंश त्रयस्त्रिंशत्तम	त्रयस्त्रिंशी त्रयस्त्रिंशत्तमी
३४ चतुस्त्रिंशत्	चतुस्त्रिंश चतुस्त्रिंशत्तम	चतुस्त्रिंशी चतुस्त्रिंशत्तमी
३५ पञ्चत्रिंशत्	पञ्चत्रिंश पञ्चत्रिंशत्तम	पञ्चत्रिंशी पञ्चत्रिंशत्तमी
३६ षट्त्रिंशत्	षट्त्रिंश षड्त्रिंशत्तम	षट्त्रिंशी षट्त्रिंशत्तमी

३७	सप्तत्रिंशत्	सप्तत्रिंश सप्तत्रिंशत्तम	सप्तत्रिंशी सप्तत्रिंशत्तमी
३८	अष्टात्रिंशत्	अष्टात्रिंश अष्टात्रिंशत्तम	अष्टात्रिंशी अष्टात्रिंशत्तमी
३९	नवत्रिंशत्	नवत्रिंश नवत्रिंशत्तम	नवत्रिंशी नवत्रिंशत्तमी
	एकोनचत्वारिंशत्	एकोनचत्वारिंश एकोनचत्वारिंशत्तम	एकोनचत्वारिंशी एकोनचत्वारिंशत्तमी
	ऊनचत्वारिंशत्	ऊनचत्वारिंश ऊनचत्वारिंशत्तम	ऊनचत्वारिंशी ऊनचत्वारिंशत्तमी
	एकान्नचत्वारिंशत्	एकान्नचत्वारिंश एकान्नचत्वारिंशत्तम	एकान्नचत्वारिंशी एकान्नचत्वारिंशत्तमी
४०	चत्वारिंशत्	चत्वारिंश चत्वारिंशत्तम	चत्वारिंशी चत्वारिंशत्तमी
४१	एकचत्वारिंशत्		
४२	द्वाचत्वारिंशत् द्विचत्वारिंशत्		
४३	त्रयश्चत्वारिंशत् त्रिचत्वारिंशत्		
४४	चतुश्चत्वारिंशत्		
४५	पञ्चचत्वारिंशत्		
४६	षट्चत्वारिंशत्		
४७	सप्तचत्वारिंशत्		
४८	अष्टचत्वारिंशत् अष्टाचत्वारिंशत्		
४९	नवचत्वारिंशत् एकोनपञ्चाशत् ऊनपञ्चाशत् एकान्नपञ्चाशत्		
५०	पञ्चाशत्	पञ्चाश, पञ्चाशत्तम	पञ्चाशी, पञ्चाशत्तमी
५१	एकपञ्चाशत्		
५२	द्वापञ्चाशत् द्विपञ्चाशत्		

५३	त्रयःपञ्चाशत्	
	त्रिपञ्चाशत	
५४	चतुःपञ्चाशत्	
५५	पञ्चपञ्चाशत्	
५६	षट्पञ्चाशत	
५७	सप्तपञ्चाशत्	
५८	अष्टपञ्चाशत्	
	अष्टापञ्चाशत्	
५९	नवपञ्चाशत्	
	एकोनषष्टि	एकोनषष्ट, एकोनषष्टितम
	ऊनषष्टि	ऊनषष्ट, ऊनषष्टितम
	एकान्नषष्टि	एकान्नषष्ट, एकान्नषष्टितम
६०	षष्टि	षष्टितम
६१	एकषष्टि	
६२	द्वाषष्टि	
	द्विषष्टि	
६३	त्रयःषष्टि	
	त्रिषष्टि	
६४	चतुष्षष्टि	
६५	पञ्चषष्टि	
६६	षट्षष्टि	
६७	सप्तषष्टि	
६८	अष्टषष्टि	
	अष्टाषष्टि	
६९	नवषष्टि	
	एकोनसप्तति	एकोनसप्तत, एकोनसप्ततितम
	ऊनसप्तति	ऊनसप्तत, ऊनसप्ततितम
	एकान्नसप्तति	एकान्नसप्तत, एकान्नसप्ततितम
७०	सप्तति	सप्तत, सप्ततितम
७१	एकसप्तति	
७२	द्वासप्तति	
	द्विसप्तति	

७३	त्रयस्सप्तति	
	त्रिसप्तति	
७४	चतुस्सप्तति	
७५	पञ्चसप्तति	
७६	षट्सप्तति	
७७	सप्तसप्तति	
७८	अष्टसप्तति	
	अष्टासप्तति	
७९	नवसप्तति	
	एकोनाशीति	एकोनाशीत, एकोनाशीतितम
	ऊनाशीति	ऊनाशीत, ऊनाशीतितम
	एकान्नाशीति	एकान्नाशीत, एकान्नाशीतितम
८०	अशीति	अशीतितम
८१	एकाशीति	एकाशीत, एकाशीतितम
८२	द्व्यशीति	
८३	त्र्यशीति	
८४	चतुरशीति	
८५	पञ्चाशीति	
८६	षडशीति	
८७	सप्ताशीति	
८८	अष्टाशीति	
८९	नवाशीति	
	एकोननवति	एकोननवत, एकोननवतितम
	ऊननवति	
	एकान्ननवति	
९०	नवति	नवतितम
९१	एकनवति	एकनवत, एकनवतितम
९२	द्वानवति	
	द्विनवति	
९३	त्रयोनवति	
	त्रिनवति	
९४	चतुर्नवति	

९५ पञ्चनवति
९६ षण्णवति
९७ सप्तनवति
९८ अष्टनवति
अष्टानवति
९९. नवनवति
एकोनशत् (न०)

१०० शत	शततम	शततमी
२०० द्विशत		
३०० त्रिशत		
४०० चतुश्शत		
५०० पञ्चशत		
१००० सहस्र (न०)	सहस्रतम	सहस्रतमी

१०००० अयुत (न०)
१००००० लक्ष (न०), लक्षा (स्त्री०)
१०००००० प्रयुत (न०)
१००००००० कोटि (स्त्री०)
१०००००००० अर्बुद (न०)
१००००००००० अब्ज (न०)
१०००००००००० खर्व (पु०, न०)
१००००००००००० निखर्व पु०, न०)
१०००००००० ०० ० महापद्म (पु०)
१००००००००००००० शङ्कु पु०)
१०००००००००००००० जलधि (पु०)
१००००००००००००००० अन्त्य (न०)
१०००००००००००००००० मध्य (न०)
१००००००००००००००००० परार्ध (न०)

संख्यावाचक शब्दों के रूप

एक

	पु०	स्त्री०	नपु०
प्र०	एक	एका	एकम्

द्वि०	एकम	एकाम्	एकम
तृ०	एकेन	एकया	एकेन
च०	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
प०	एकस्मात	एकस्या	एकस्मात्
ष०	एकस्य	एकस्या	एकस्य
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि शब्द के रूप केवल द्विवचन में चलते है।

द्वि—दो

	पु०	स्त्री० तथा नपु०
प्र०	द्वौ	द्वे
द्वि०	द्वौ	द्वे
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	द्वाभ्याम	द्वाभ्याम्
प०	द्वाभ्याम	द्वाभ्याम
ष०	द्वयो	द्वयो
स०	द्वयो	द्वयो

त्रि शब्द के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

त्रि—तीन

	पु०	स्त्री०	नपु०
प्र०	त्रय.	तिस्र	त्रीणि
द्वि०	त्रीन्	तिस्र	त्रीणि
तृ०	त्रिभि	तिसृभि	त्रिभि
च०	त्रिभ्य	तिसृभ्य.	त्रिभ्य.
प०	त्रिभ्य·	तिसृभ्य	त्रिभ्य
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् (चार) शब्द के भी रूप केवल बहुवचन मे होते हैं।

	पु०	स्त्री०	नपु०
प्र०	चत्वार	चतस्र	चत्वारि
द्वि०	चतुर	चतस्र	चत्वारि
तृ०	चतुर्भि	चतसृभिः	चतुर्भि

च०	चतुर्भ्य	चतसृभ्य	चतुर्भ्य
प०	चतुर्भ्य	चतसृभ्य	चतुर्भ्यः
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चन् तथा आगे की सख्याओ के रूप तीनो लिङ्गो में समान होते हैं और सदा बहुवचन में होते हैं।

पञ्चन्

पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग

प्र०	पञ्च
द्वि०	पञ्च
तृ०	पञ्चभिः
च०	पञ्चभ्य
प०	पञ्चभ्य
ष०	पञ्चानाम्
स०	पञ्चसु

षष

प्र०	षट्
द्वि०	षट्
तृ०	षड्भिः
च०	षड्भ्य
प०	षड्भ्य
ष०	षण्णाम्
स०	षट्सु

सप्तन्

प्र०	सप्त
द्वि०	सप्त
तृ०	सप्तभि
च०	सप्तभ्य
प०	सप्तभ्य.
ष०	सप्तानाम्
स०	सप्तसु

अष्टन्

प्र०	अष्टौ, अष्ट
द्वि०	अष्टौ, अष्ट
तृ०	अष्टाभि अष्टभि
च०	अष्टाभ्य., अष्टभ्यः
प०	अष्टाभ्य, अष्टभ्य.
ष०	अष्टानाम्
स०	अष्टासु, अष्टसु

नवन् दशन् आदि नकारान्त सख्यावाची शब्दो के रूप पञ्चन् के समा चलते हैं।

ऊनविंशति, विंशति आदि इकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप रुचि समान चलते हैं। षष्टि, सप्तति, अशीति आदि के भी रूप रुचि के तुल्य होते हैं।

त्रिंशत्, चत्वारिंशत् आदि शब्दो के रूप सारत् के समान चलते है।

शत, सहस्र, अयुत आदि नपुसकलिङ्ग शब्दो के रूप फल के समान होते हैं

लक्षा के रूप लता के समान होते है।

कोटि के रूप रुचि के समान चलते हैं।

शङ्कु के रूप भानु के समान और जलधि के रूप कवि के समान होते हैं।

विशेषण

जो विशेष्य की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं। विशेषणो के रूप विशेष्य की भाँति चलते हैं। बिशेष्य का जो लिङ्ग, वचन और विभक्ति होती है, विशेषण का भी वही लिङ्ग, वचन और विभक्ति होती है।

'यल्लिङ्ग यद्वचन या च विभक्ति विशेष्यस्य।
तल्लिङ्ग तद्वचनं सा च विभक्ति विशेषणस्यापि ॥'

उदाहरण—सुन्दर बालक, शुभ्र वस्त्रम्, कृष्णा गौ।

कुछ विशेषण ध्यातव्य हैं—

कृष्ण = काला	अवद्य = अधम
नील = नीला	अनवद्य = निर्दोष
रक्त = लाल	अव्यक्त = अस्पष्ट
शुक्ल = सफेद	अशून्य = भरा हुआ
शीतल = ठण्डा	उग्र = प्रचण्ड, भयानक

उष्ण = गरम	उदग्र = ऊँचा
शुष्क = सूखा	क्षीण = दुबला
आर्द्र = गीला	जिह्म = कुटिल, टेढा
नवीन = नया	तरल = चञ्चल
प्राचीन = पुराना	दक्ष = योग्य, चतुर
ह्रस्व = छोटा	निविड = घना
दीर्घ = बडा	प्रचुर = अधिक
महत् = बडा	ललित = सुन्दर प्रिय
रम्य = सुन्दर	विमल = निर्मल
मृदु = कोमल	विशाल = बडा
प्रवीण = निपुण	शठ = कपटी, दुष्ट
कर्कश = कठोर	शूर = वीर
स्थूल = मोटा	शोण = लाल
स्थिर = अटल	सान्द्र = घना
अलस = आलसी	हरित - हरा

तुलनात्मक विशेषण

दो में से एक की उत्कृष्टता बताने के लिए तरप् और बहुतो में से एक की उत्कृष्टता बताने के लिए तमप् प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

कुशल	कुशलतर	कुशलतम
चतुर	चतुरतर	चतुरतम
महान्	महत्तर	महत्तम
लघु	लघुतर	लघुतम

दो में से एक को उत्कृष्ट बताने के लिए ईयसन् और बहुतो में से एक को उत्कृष्ट बताने के लिए इष्ठन् प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। ये प्रत्यय गुणवाचक शब्दो में ही लगाए जाते हैं।

उदाहरण—

अल्प	अल्पीयस्, कनीयस्	अल्पिष्ठ, कनिष्ठ
कृश	क्रशीयस्	क्रशिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ

दीर्घ	द्राघीयस्	द्राघिष्ठ
दूर	दवीयस्	दविष्ठ
प्रशस्य	श्रेयस्, ज्यायस्	श्रेष्ठ, ज्येष्ठ
प्रिय	प्रेयस्	प्रेष्ठ
बहु	भूयस्	भूयिष्ठ
मृदु	म्रदीयस्	म्रदिष्ठ
स्थिर	स्थेयस्	स्थेष्ठ
स्थूल	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
स्फिर	स्फेयस्	स्फेष्ठ
ह्रस्व	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ

— —

पञ्चम प्रकरण

अव्यय

• जिसके रूप मे कोई परिवतन नही होता, उसे अव्यय कहते हैं। अव्यय का रूप तीनो लिङ्गो, सभी विभक्तियो और तीनो वचनो मे समान होता है—

'सदृश त्रिपु लिङ्गेपु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेपु च सर्वेपु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

अव्यय के भेद ये है—उपसग, क्रियाविशेपण, समुच्चयबोधक, मनोविकार-सूचक, निपात ।

उपसर्ग

उपसर्ग अव्यय हैं । य धातुओ आदि के पहले जाडे जाते हैं ।

उपसग ये हैं—

प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप ।

कुछ उपसर्गों से युक्त शब्द दिये जा रहे हैं[1]—

अतिक्रम, अविक्रमः, अधिक्षेप, अधिगम, अनुकषणम्, अनुकीर्तनम्, अनुपानम्, अपकार, अभिमान, अवतार, उपसर्ग, निदेश., निर्दोष, परिणाम, प्रतिकार., वियोग, सस्कार ।

क्रियाविशेषण

ये भी अव्यय हैं । निम्नलिखित शब्दो का क्रियाविशेषण के रूप में प्रयोग होता है—

अकस्मात्	अचानक
अग्रत	सामने
अग्रे	आगे, पहले

---

१ उपसगयुक्त शब्दा क ज्ञान के लिए द्रष्टव्य 'उपसगवग'

—सम्पादक अमरनाथ पाण्डेय

अचिरम् अचिरात् अचिरेण अचिराय	शीघ्र
अजस्रम्	सदा
अतः	इसलिए
अतीव	अत्यधिक
अत्र	यहाँ
अथ	तब, तदनन्तर
अथकिम्	हाँ
अद्धा	वस्तुतः
अद्य	आज
अधः अधस्तात्	नीचे
अधुना	अब, इस समय
अनिशम्	सदा
अन्तरा अन्तरेण अन्तरे	बीच में
अन्यच्च	और भी
अन्यत्र	दूसरे स्थान पर
अन्यथा	नहीं तो, अन्य प्रकार से
अपरम्	और, फिर
अपरेद्यु	दूसरा दिन, आने वाला दिन
अभितः	दोनों ओर, चारों ओर
अभीक्ष्णम्	निरन्तर
अमुत्र	वहाँ, परलोक में
अर्वाक्	पहले
अलम्	पर्याप्त
असकृत्	बार-बार
असम्प्रति असाम्प्रतम्	अनुचित
आरात्	समीप, दूर

इत	यहाँ से
इतस्तत॰	इधर-उधर
इति	इस प्रकार
इदानीम्	अब, इस समय
इह	यहाँ
ईषत्	थोडा
उच्चै	ऊँचा, जोर से
उपाशु	मन-ही मन, चुपके से
उभयत	दोनो ओर
ऋते	बिना
एकत्र	एक स्थान पर
एकदा	एक समय
एकधा	एक प्रकार से
एव	ही
एवम्	ऐसा
ओम्	हाँ
कथम्	क्यो ? कैसे ?
कदा	कब ?
कदाचित्	कभी
किंवा	अथवा
किन्तु	परन्तु, लेकिन
किम्	क्या ? क्यो ?
किमुत	और कितना ?
किल	वस्तुत.
कुत	कहाँ से ?
कुत्र	कहाँ ?
कुत्रचित्	कही
कृतम्	बस
केवलम्	केवल
क्व	कहाँ ?
क्वचित्	कही
खलु	अवश्य

चिरम्	देर तक
जातु	सभवत , कभी
झटिति झगिति	शीघ्र
तत.	तब
तत्र	वहाँ
तथा	वैसे
तथाहि	जैसे
तदा	तब
तदानीम्	उस समय
तर्हि	तो
तावत्	तब तक
तिरस् तिर्यक्	तिरछा
तूष्णीम्	चुपके से
दिवा	दिन में
दिष्ट्या	भाग्य से
दूरम्	दूर
दोषा	रात्रि में
द्राक्	शीघ्र
ध्रुवम्	निश्चय ही
न	नही
नक्तम्	रात्रि में
नाना	अनेक प्रकार से
निकषा	समीप
नूनम्	अवश्य
नो	नही
परम्	तब
परश्व	आने वाला परसो
परित	चारो ओर
परेद्यवि	दूसरे दिन

पश्चात्	बाद में
पुन	फिर
पुर पुरत. पुरस्तात्	सामने
पुरा	पहले, प्राचीन काल में
• पूर्वेद्यु.	पहले दिन, बीता हुआ कल
पृथक्	अलग
प्रकामम्	अत्यधिक
प्रतिदिनम्	प्रतिदिन
प्रत्युत	उलटे
प्रसह्य	बलात्
प्राक्	पहले
प्रात	सबेरे
प्रायः	अकसर
भूय	फिर
भृशम्	अधिक, बार-बार
मनाक्	थोडा
मिथः	परस्पर
मिथ्या	झूठ, व्यथ
मुधा	व्यर्थ
मुहु	बार-बार
मृषा	झूठ
यत.	क्योकि
यावत्	जब तक
युगपत्	साथ साथ, उसी क्षण
वत्	समान
विना	बिना
वै	अवश्य
शनैः	धीरे से
शश्वत्	सदा
सकृत्	एक बार

सततम्	सदा
सद्य	तुरन्त
सपदि	शीघ्र
समन्ततः	चारो ओर
समम्	समान रूप से
समया	समीप
समीपम् समीपे	समीप
सम्प्रति	इस समय
सम्मुखम्	सामने
सम्यक्	ठीक
सर्वतः	सब ओर
सर्वत्र	सब जगह
सर्वदा	सदा
सह	साथ
सहसा	अचानक
सहितम	साथ
साकम्	साथ
साक्षात्	सामने
सामि	आधा
साम्प्रतम्	इस समय
सार्धम्	साथ
सुष्ठु	ठीक
स्वयम्	अपने आप
हि	क्योंकि
ह्यः	बीता हुआ कल

समुच्चयबोधक

अथ, अथो, च, तु, यदि, चेत्, नोचेत्, तर्हि, यावत्, तावत, तथापि, किन्तु हि, किंवा, अथवा आदि ।

मनोविकारसूचक

हन्त—हर्षसूचक, खेदसूचक।

आ, हम्, हुम्—घृणासूचक, क्रोधसूचक।

किम्, धिक्—घृणासूचक

हा, बत—शोक, दुःख आदि के सूचक।

• आ, इ, उ, ए, ऐ, ओ, अह, अहह, अहो, बत, ह, हा—आश्चर्य, खेद आदि के सूचक हैं।

कुछ अव्यय पुकारने के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं—

अग, अये, अहो, बत, उ ए, ओ, भो, हे, हो—इनसे आदर का भाव प्रकट होता है।

अरे, अग, अवे, रे, अरेरे—इनसे अनादर या घृणा का भाव प्रकट होता है।

निपात

निपातो का प्रयोग पादपूर्ति के लिए होता है। कुछ निपात ये हैं—

किल, हि, च, तु, नु, खलु आदि।

कुछ निपातो का प्रयोग शब्दो के साथ होता है—

का—कापुरुष।

कु—कुकृत्यम्।

चन, चित्—कश्चन, कश्चित्।

षष्ठ प्रकरण

तिङन्त (क्रिया)

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातुएँ दस गणो में विभक्त की गयी हैं— भ्वादिगण, अदादिगण, जुहोत्यादिगण, दिवादिगण, स्वादिगण, तुदादिगण, रुधादिगण, तनादिगण, क्र्यादिगण और चुरादिगण।

सस्कृत में दस लकार होते हैं—

१	लट्	वर्तमान काल
२	लोट्	आज्ञा
३	विधिलिङ्	विधि
४	लङ्	अनद्यतनभूत
५	लिट्	परोक्षभूत
६	लुङ्	सामान्यभूत
७	लुट्	अनद्यतन भविष्य
८	लृट्	सामान्य भविष्य
९	आशीर्लिङ्	आशी
१०.	लृङ्	क्रियातिपत्ति

धातुओ में जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हे तिङ् कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—परस्मैपद और आत्मनेपद। कुछ धातुओ में केवल परस्मैपदी प्रत्यय लगाये जाते हैं और कुछ मे केवल आत्मनेपदी प्रत्यय। कुछ धातुओ मे दोनो प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं। ऐसी धातुएँ उभयपदी कही जाती हैं।

सस्कृत में तीन वाच्य होते हैं--(१) कर्तृवाच्य, जैसे—श्यामः शुक पश्यति, (२) कर्मवाच्य, जैसे—बालकेन शुक दृश्यते, (३) भाववाच्य, तेन भूयते।

प्रत्येक लकार में तीन पुरुष और तीन वचन होते हैं। पुरुष हैं—प्रथम पुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष। वचन हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

तिङ् प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

लट्—वर्तमान

परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ति	तस्	अन्ति
म० पु०	सि	थस्	थ
उ० पु०	मि	वस्	मस्

आत्मनेपद

प्र० पु०	ते	इते, आते	अन्ते, अते
म० पु०	से	इथे, आथे	ध्वे
उ० पु०	इ, ए	वहे	महे

लोट्—आज्ञा

परस्मैपद

प्र० पु०	तु	ताम्	अन्तु
म० पु०	तात्	तम्	त
उ० पु०	आनि	आव	आम

आत्मनेपद

प्र० पु०	ताम्	इताम्, आताम्	अन्ताम्, अताम्
म० पु०	स्व	इथाम्, आथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै

विधिलिङ्

परस्मैपद

प्र० पु०	ईत्, यात्	ईताम्, याताम्	ईयुः, युः
म० पु०	ई, या	ईतम्, यातम	ईत, यात
उ० पु०	ईयम्, याम्	ईव, याव	ईम, याम

आत्मनेपद

प्र० पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म० पु०	ईथा	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ० पु०	ईय	ईवहि	ईमहि

लङ्—अनद्यतनभूत

परस्मैपद

प्र० पु०	त्	ताम्	अन्
म० पु०	स्	तम्	त
उ० पु०	अम्	व	म

आत्मनेपद

प्र० पु०	त	इताम्, आताम्	अन्त, अत
म० पु०	थास्	इथाम्, आथाम्	ध्वम्
उ० पु०	इ	वहि	महि

लिट्—परोक्षभूत

परस्मैपद

प्र० पु०	अ	अतुस्	उस्
म० पु०	थ	अथुस्	अ
उ० पु०	अ	व	म

आत्मनेपद

प्र० पु०	ए	आते	इरे
म० पु०	से	आथे	ध्वे
उ० पु०	ए	वहे	महे

लुङ्—सामान्यभूत

परस्मैपद

प्र० पु०	सीत्	स्ताम्	सु
म० पु०	सीः	स्तम	स्त
उ० पु०	सम्	स्व	स्म

आत्मनेपद

प्र० पु०	स्त	साताम्	सत
म० पु०	स्थाः	साथाम्	ध्वम्
उ० पु०	सि	स्वहि	स्महि

टिप्पणी—लुङ् का रूप बनाने के लिए कुछ अवस्थाओं में उपर्युक्त प्रत्ययों के स्थान पर अन्य प्रत्यय लगाए जाते हैं।

लुट्—अनद्यतनभविष्य

परस्मैपद

प्र० पु०	ता	तारौ	तारः
म० पु०	तासि	तास्थ	तास्थ
उ० पु०	तास्मि	तास्व	तास्म.

आत्मनेपद

प्र० पु०	ता	तारौ	तार
म० पु०	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ० पु०	ताहे	तास्वहे	तास्महे

लृट्—सामान्यभविष्य

परस्मैपद

प्र० पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
म० पु०	स्यसि	स्यस्थ.	स्यथ
उ० पु०	स्यामि	स्याव	स्याम

आत्मनेपद

प्र० पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म० पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ० पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

आशीर्लिङ्

परस्मैपद

प्र० पु०	यात्	यास्ताम्	यासु
म० पु०	या	यास्तम्	यास्त
उ० पु०	यासम्	यास्व	यास्म

आत्मनेपद

प्र० पु०	सीष्टः	सीयास्ताम्	सीरन्
म० पु०	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ० पु०	सीय	सीवहि	सीमहि

लृङ्—क्रियातिपत्ति

परस्मैपद्

प्र० पु०	स्यत्	स्याताम्	स्यन्
म० पु०	स्य	स्यतम्	स्यत
उ० पु०	स्यम्	स्याव	स्याम

आत्मनेपद्

प्र० पु०	स्यत्	स्येताम्	स्यन्त
म० पु०	स्यथा	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ० पु०	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

भ्वादिगण

प्रत्येक गण का नामकरण उसकी प्रथम धातु के आधार पर हुआ है। भ्वादिगण का नामकरण इस गण की प्रथम धातु भू के आधार पर हुआ है।

भ्वादिगण की धातुओ में प्रत्यय लगाने के पहले अ जोडा जाता है और धातु के अंतिम स्वर को गुण आदेश होता है।

परस्मैपदी भू—होना

लट्

प्र० पु०	भवति	भवत	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथ.	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवाव	भवामः

लोट्

प्र० पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवे	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

लङ्

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन
म० पु०	अभव.	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लिट्

प्र० पु०	बभूव	बभूवतु	बभूवु
म० पु०	बभूविथ	बभूवथु	बभूव
उ० पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम

लुङ

प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म० पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

लुट्

प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितार
म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्व	भवितास्म

लृट्

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथ	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्याव	भविष्याम.

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासु
म० पु०	भूया	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

परस्मैपदी गम् — जाना

लट्

प्र० पु०	गच्छति	गच्छत	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथ	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छाव	गच्छाम

लोट्

प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु
म० पु०	गच्छे	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लङ्

प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छ	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लिट्

प्र० पु०	जगाम	जग्मतु	जग्मु
म० पु०	जगमिथ, जगन्थ	जग्मथु	जग्म
उ० पु०	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

लुङ्

प्र० पु०	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
म० पु०	अगम.	अगमतम्	अगमत
उ० पु०	अगमम्	अगमाव	अगमाम

लुट्

प्र० पु०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
म० पु०	गन्तासि	गन्तास्थ	गन्तास्थ
उ० पु०	गन्तास्मि	गन्तास्व	गन्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यत	गमिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथ	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्याव	गमिष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासु
म० पु०	गम्या	गम्यास्तम्	गम्यास्त
उ० पु०	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम	अगमिष्यन्
म० पु०	अगमिष्य	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
उ० पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

परस्मैपदी दृश्—देखना

लट्

प्र० पु०	पश्यति	पश्यत	पश्यन्ति
म० पु०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० पु०	पश्यामि	पश्याव	पश्याम

लोट्

प्र० पु०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० पु०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ० पु०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु
म० पु०	पश्ये	पश्येतम्	पश्येत
उ० पु०	पश्येयम	पश्येव	पश्येम

लङ्

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० पु०	अपश्य,	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० पु०	अपश्यम	अपश्याव	अपश्याम

लिट्

प्र० पु०	ददर्श	ददृशतु	ददृशु
म० पु०	दर्दशिथ, दद्रष्ठ	ददृशथु	ददृश
उ० पु०	ददश	ददृशिव	ददृशिम

लुङ्

प्र० पु०	अदशत्	अदशताम्	अदर्शन्
	अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
म० पु०	अदश	अदशतम्	अदर्शत
	अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
उ० पु०	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम
	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

लुट्

प्र० पु०	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टार
म० पु०	द्रष्टासि	द्रष्टास्थ	द्रष्टास्थ
उ० पु०	द्रष्टास्मि	द्रष्टास्व	द्रष्टास्म.

लृट्

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत.	द्रक्ष्यन्ति
म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ	द्रक्ष्यथ
उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव	द्रक्ष्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासु
म० पु०	दृश्या·	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त
उ० पु०	दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
म० पु०	अद्रक्ष्य	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत
उ० पु०	अद्रक्ष्यम्	अद्रक्ष्याव	अद्रक्ष्याम

परस्मैपदी जि-जीतना

लट्	प्र० पु०	जयति	जयतः	जयन्ति
लोट्	,,	जयतु	जयताम्	जयन्तु

विधिलिङ्	,,	जयेत्	जयेताम्	जयेयु
लङ्	,,	अजयत्	अजयताम्	अजयन्

लिट्

प्र० पु०	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्यु
म० पु०	जिगयिथ, जिगेथ	जिग्यथु	जिग्य
उ० पु०	जिगाय, जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम

लुङ्

प्र० पु०	अजैषीत्	अजैष्टाम्	अजैषुः
म० पु०	अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट
उ० पु०	अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म

लुट्

प्र० पु०	जेता	जेतारौ	जेतार
म० पु०	जेतासि	जेतास्थ	जेतास्थ
उ० पु०	जेतास्मि	जेतास्व	जेतास्म

लृट्

प्र० पु०	जेष्यति	जेष्यत	जेष्यन्ति
म० पु०	जेष्यसि	जेष्यथ	जेष्यथ
उ० पु०	जेष्यामि	जेष्याव	जेष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	जीयात्	जीयास्ताम्	जीयासु
म० पु०	जीया	जीयास्तम्	जीयास्त
उ० पु०	जीयासम्	जीयास्व	जीयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अजेष्यत्	अजेष्यताम्	अजेष्यन्
म० पु०	अजेष्य	अजेष्यतम्	अजेष्यत
उ० पु०	अजेष्यम्	अजेष्याव	अजेष्याम

उभयपदी नी—लेजाना

परस्मैपद

लट	प्र० पु०	नयति	नयत	नयन्ति
लोट्	,,	नयतु	नयताम्	नयन्तु

विधिलिङ्	,,	नयेत्	नयेताम्	नयेयु
लङ्	,,	अनयत्	अनयताम्	अनयन्

लिट्

प्र० पु०	निनाय	नि'यतु	निन्यु
म० पु०	निनयिथ, निनेथ	निन्यथु	निन्य
उ० पु०	निनाय, निनय	निन्यिव	निन्यिम

लुङ्

प्र० पु०	अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषु
म० पु०	अनैषी	अनैष्टम्	अनैष्ट
उ० पु०	अनैषम	अनैष्व	अनैष्म

लुट्

प्र० पु०	नेता	नेतारौ	नेतार
म० पु०	नेतासि	नेतास्थ	नेतास्थ
उ० पु०	नेतास्मि	नेतास्व	नेतास्म

लृट्

प्र० पु०	नेष्यति	नेष्यत	नेष्यन्ति
म० पु०	नेष्यसि	नेष्यथ	नेष्यथ
उ० पु०	नेष्यामि	नेष्याव	नेष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	नीयात्	नीयास्ताम्	नीयासु
म० पु०	नीया	नीयास्तम्	नीयास्त
उ० पु०	नीयासम्	नीयास्व	नीयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अनेष्यत्	अनेष्यताम	अनेष्यन्
म० पु०	अनेष्य	अनेष्यतम्	अनेष्यत
उ० पु०	अनेष्यम्	अनेष्याव	अनेष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
म० पु०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० पु०	नये	नयावहे	नयामहे

लृङ्

प्र० पु०	अनेष्यत	अनेष्येताम	अनेष्यन्त
म० पु०	अनेष्यथाः	अनेष्येथाम्	अनेष्यध्वम्
उ० पु०	अनेष्ये	अनेष्यावहि	अनेष्यामहि

उभयपदी धृ—धरना

परस्मैपद

लट्	प्र० पु०	धरति	धरत	धरन्ति
लोट्	,,	धरतु	धरताम्	धरन्तु
विधिलिङ्	,,	धरेत्	धरताम्	धरेयु.
लङ्	,,	अधरत्	अधरताम्	अधरन्

लिट्

प्र० पु०	दधार	दध्रतु	दध्रु
म० पु०	दधर्थ	दध्रथु	दध्र
उ० पु०	दधार, दधर	दधृव	दधृम

लुङ्

प्र० पु०	अधार्षीत्	अधार्ष्टाम्	अधार्षु
म० पु०	अधार्षी.	अधार्ष्टम्	अधार्ष्ट
उ० पु०	अधार्षम्	अधार्ष्व	अधार्ष्म

लुट्

प्र० पु०	धर्ता	धर्तारौ	धर्तारः
म० पु०	धर्तासि	धर्तास्थ	धर्तास्थ
उ० पु०	धर्तास्मि	धर्तास्वः	धर्तास्म

लृट्

प्र० पु०	धरिष्यति	धरिष्यत	धरिष्यन्ति
म० पु०	धरिष्यसि	धरिष्यथः	धरिष्यथ
उ० पु०	धरिष्यामि	धरिष्याव	धरिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ध्रियात्	ध्रियास्ताम्	ध्रियासुः
म० पु०	ध्रियाः	ध्रियास्तम्	ध्रियास्त
उ० पु०	ध्रियासम्	ध्रियास्व	ध्रियास्म

लृङ्

प्र० पु०	अधरिष्यत्	अधरिष्यताम्	अधरिष्यन्
म० पु०	अधरिष्यः	अधरिष्यतम्	अधरिष्यत
उ० पु०	अधरिष्यम्	अधरिष्याव	अधरिष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	धरते	धरेते	धर ते
म० पु०	धरसे	धरेथे	धरध्वे
उ० पु०	धर	धरावहे	धरामहे

लोट्

प्र० पु०	धरताम्	धरेताम्	धरन्ताम्
म० पु०	धरस्व	धरेथाम्	धरध्वम्
उ० पु०	धरै	धरावहै	धरामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	धरेत	धरेयाताम्	धरेरन्
म० पु०	धरेथा	धरेयाथाम	धरेध्वम्
उ० पु०	धरेय	धरेवहि	धरेमहि

लङ्

प्र० पु०	अधरत	अधरेताम्	अधरन्त
म० पु०	अधरथा	अधरेथाम्	अधरध्वम्
उ० पु०	अधरे	अधरावहि	अधरामहि

लिट्

प्र० पु०	दध्रे	दध्राते	दध्रिरे
म० पु०	दध्रिषे	दध्राथे	दध्रिध्वे
उ० पु०	दध्रे	दध्रिवहे	दध्रिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अधृत	अधृषाताम्	अधृषत
म० पु०	अधृथाः	अधृषाथाम्	अधृढ्वम्
उ० पु०	अधृषि	अधृष्वहि	अधृष्महि

लुट्

प्र० पु०	धर्ता	धर्तारौ	धर्तार
म० पु०	धर्तासे	धर्तासाथे	धर्ताध्वे
उ० पु०	धर्ताहे	धर्तास्वहे	धर्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	धरिष्यते	धरिष्येते	धरिष्यन्ते
म० पु०	धरिष्यसे	धरिष्येथे	धरिष्यध्वे
उ० पु०	धरिष्ये	धरिष्यावहे	धरिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	धृषीष्ट	धृषीयास्ताम्	धृषीरन्
म० पु०	धृषीष्ठाः	धृषीयास्थाम्	धृषीध्वम्
उ० पु०	धृषीय	धृषीवहि	धृषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अधरिष्यत	अधरिष्येताम्	अधरिष्यन्त
म० पु०	अधरिष्यथा	अधरिष्येयाम्	अधरिष्यध्वम्
उ० पु०	अधरिष्ये	अधरिष्यावहि	अधरिष्यामहि

आत्मनेपदी वृत् होना

लट्

प्र० पु०	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
म० पु०	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उ० पु०	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लोट्

प्र० पु०	वतताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
म० पु०	वतस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उ० पु०	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
म० पु०	वर्तेथा	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उ० पु०	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

लङ्

प्र० पु०	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
म० पु०	अवर्तथाः	अवर्तेथाम	अवर्तध्वम्
उ० पु०	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लिट्

प्र० पु०	ववृते	ववृताते	ववृतिरे
म० पु०	ववृतिषे	ववृताथे	ववृतिध्वे
उ० पु०	ववृते	ववृतिवहे	ववृतिमहे

लुङ्

प्र० पु०	{ अवर्तिष्ट अवृतत्	{ अवर्तिषाताम् अवृतताम्	{ अवर्तिषत अवृतन्
म० पु०	{ अवर्तिष्ठा अवृत.	{ अवर्तिषाथाम् अवृततम्	{ अवर्तिध्वम् अवृतत
उ० पु०	{ अवर्तिषि अवृतम्	{ अवर्तिष्वहि अवृताव	{ अवर्तिष्महि अवृताम

लुट

प्र० पु०	वर्तिता	वर्तितारौ	वर्तितार
म० पु०	वर्तितासे	वर्तितासाथे	वर्तिताध्वे
उ० पु०	वर्तिताहे	वर्तितास्वहे	वर्तितास्महे

लृट्

प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
म० पु०	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उ० पु०	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

या

प्र० पु०	वर्त्स्यति	वर्त्स्यत.	वर्त्स्यन्ति
म० पु०	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथ	वर्त्स्यथ
उ० पु०	वर्त्स्यामि	वर्त्स्याव	वर्त्स्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० उ०	वर्तिषीष्ट	वर्तिषीयास्ताम्	वर्तिषीरन्
म०पु०	वर्तिषीष्ठा	वर्तिषीयास्थाम्	वर्तिषीध्वम्
उ० पु०	वर्तिषीय	वर्तिषीवहि	वर्तिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अवर्तिष्यत	अवर्तिष्येताम	अवर्तिष्यन्त
म० पु०	अवर्तिष्यथा	अवर्तिष्येथाम	अवर्तिष्यध्वम्
उ० पु०	अवर्तिष्ये	अवर्तिष्यावहि	अवर्तिष्यामहि

या

प्र० पु०	अवत्स्यत	अवत्स्यताम्	अवत्स्यन्
म० पु०	अवत्स्य	अवत्स्यतम्	अवत्स्यत
उ० पु०	अवत्स्यम्	अवत्स्याव	अवत्स्याम

आत्मनेपदी लभ्–पाना

लोट्

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट्

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथा	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लङ्

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लिट्

प्र० पु०	लेभे	लेभाते	लेभिरे
म० पु०	लेभिषे	लेभाथे	लेभिध्वे
उ० पु०	लेभे	लेभिवहे	लेभिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अलब्ध	अलप्साताम्	अलप्सत
म० पु०	अलब्धाः	अलप्साथाम्	अलब्ध्वम्
उ० पु०	अलप्सि	अलप्स्वहि	अलप्स्महि

लुट्

प्र० पु०	लब्धा	लब्धारौ	लब्धारः
म० पु०	लब्धासे	लब्धासाथे	लब्धाध्वे
उ० पु०	लब्धाहे	लब्धास्वहे	लब्धास्महे

लृट्

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	लप्सीष्ट	लप्सीयास्ताम्	लप्सीरन्
म० पु०	लप्सीष्ठाः	लप्सीयास्थाम्	लप्सीध्वम्
उ० पु०	लप्सीय	लप्सीवहि	लप्सीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अलप्स्यत	अलप्स्येताम्	अलप्स्यन्त
म० पु०	अलप्स्यथा	अलप्स्येथाम्	अलप्स्यध्वम्
उ० पु०	अलप्स्ये	अलप्स्यावहि	अलप्स्यामहि

परस्मैपदी श्रु-सुनना

लट्

प्र० पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० पु०	शृणोषि	शृणुथ	शृणुथ
उ० पु०	शृणोमि	शृणुव, शृण्व	शृणुम, शृण्म

लोट्

प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ० पु०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० पु०	शृणुया	शृणुयातम	शृणुयात
उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

लङ्

प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० पु०	अशृणो	अशृणुतम	अशृणुत
उ० पु०	अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व	अशृणुम, अशृण्म

लिट्

प्र० पु०	शुश्राव	शुश्रुवतु	शुश्रुवु
म० पु०	शुश्रोथ	शुश्रुवथु	शुश्रुव
उ० पु०	शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम

लुङ्

प्र० पु०	अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषु
म० पु०	अश्रौषी	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
उ० पु०	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म

लुट्

प्र० पु०	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतार
म० पु०	श्रोतासि	श्रोतास्थ	श्रोतास्थ
उ० पु०	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः

लृट्

प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यत.	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथ	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्याव	श्रोष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	श्रूयात्	श्रूयास्तम्	श्रूयासु.
म० पु०	श्रूया	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त
उ० पु०	श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्
म० पु०	अश्रोष्य	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत
उ० पु०	अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम

परस्मैपदी स्था—रुकना

लट्

प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठत	तिष्ठन्ति
म० पु०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ० पु०	तिष्ठामि ।	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लोट

प्र० पु०	तिष्ठतु	तिष्ठताम	तिष्ठन्तु
म० पु०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठन
उ० पु०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म० पु०	तिष्ठे	तिष्ठेतम	तिष्ठेत्
उ० पु०	तिष्ठेयम	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लङ्

प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठनाम्	अतिष्ठन्
म० पु०	अतिष्ठ	अतिष्ठनम	अतिष्ठत
उ० पु०	अतिष्ठम	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लिट्

प्र० पु०	तस्थौ	तस्थतु.	तस्थुः
म० पु०	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थथु	तस्थ
उ० पु०	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

लुङ्

प्र० पु०	अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थु
म० पु०	अस्था	अस्थातम्	अस्थात
उ० पु०	अस्थाम	अस्थाव	अस्थाम

लुट

प्र० पु०	स्थाता	स्थातारौ	स्थातारः
म० पु०	स्थातासि	स्थातास्थः	स्थातास्थ
उ० पु०	स्थातास्मि	स्थातास्वः	स्थातास्मः

लृट्

प्र० पु०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म० पु०	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ० पु०	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	स्थेयात्	स्थेयास्ताम्	स्थेयासुः
म० पु०	स्थेयाः	स्थेयास्तम्	स्थेयास्त
उ० पु०	स्थेयासम्	स्थेयास्व	स्थेयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अस्थास्यत	अस्थास्यताम्	अस्थास्यन्
म० पु०	अस्थास्यः	अस्थास्यतम्	अस्थास्यत
उ० पु०	अस्थास्यम्	अस्थास्याव	अस्थास्याम

भ्वादिगण की कुछ अन्य धातुएँ —

क्रन्द् (प०)—रोना। लट्—क्रन्दति। लिट—चक्रन्द। लुङ्—अक्रन्दीत्, अक्रन्दिष्टाम्, अक्रन्दिषुः। लुट—क्रन्दिता। लृट्—क्रन्दिष्यति। आशीर्लिङ्—क्रन्द्यात्। लृङ्—अक्रन्दिष्यत्।

क्रीड (प०)—खेलना। लट्—क्रीडति। लिट्—चिक्रीड। लुङ्—अक्रीडीत्, अक्रीडिष्टाम्, अक्रीडिषुः। लुट्—क्रीडिता। लृट्—क्रीडिष्यति। आशीर्लिङ्—क्रीड्यात्। लृङ्—अक्रीडिष्यत्।

क्षम् (आ०)—सहना, क्षमा करना। लट्—क्षमते, क्षमेते, क्षमन्ते। लिट्—चक्षमे चक्षमाते चक्षमिरे।

चक्षमिषे / चक्षंसे	चक्षमाथे	चक्षमिध्वे / चक्षंध्वे
चक्षमे	चक्षमिवहे / चक्षण्वहे	चक्षमिमहे / चक्षण्महे

लुङ्—अक्षमिष्ट, अक्षंस्त। लुट्—क्षमिता, क्षन्ता। लृट्—क्षमिष्यते, क्षंस्यते। आशीर्लिङ्—क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट। लृङ्—अक्षमिष्यत।

क्षुभ् (आ०)—क्षुब्ध होना। लट्—क्षोभते। लिट्—चुक्षुभे। लुङ्—अक्षुभत, अक्षोभिष्ट। लुट्—क्षोभिता। लृट—क्षोभिष्यते। आशीर्लिङ्—क्षोभिषीष्ट। लृङ्—अक्षोभिष्यत।

खन् (उ०)—खोदना। लट्—खनति, खनते। लिट्—चखान, चख्नतु, चख्नु। चख्ने, चख्नाते, चख्निरे, चख्निषे, चख्नाथे, चख्निध्वे, चख्ने, चख्निवहे, चख्निमहे। लुङ्—अखनीत्, अखानीत्, अखनिष्ट। लुट्—खनिता। लृट—खनिष्यति, खनिष्यते। आशीर्लिङ्—खन्यात्, खायात्, खनिषीष्ट। लृङ—अखनिष्यत्—त।

खाद् (प०)—खाना। लट्—खादति। लिट्—चखाद। लुङ्—अखादीत्। लुट्—खादिता। लृट्—खादिष्यति। आशीर्लिङ—खाद्यात्। लृङ्—अखादिष्यत्।

खेल् (प०)—खेलना। लट्—खेलति। लिट्—चिखेल। लुङ्—अखेलीत्। लुट्—खेलिता।

ग्रस् (आ०)—निगलना। लट्—ग्रसते। लिट्—जग्रसे। लुङ्—अग्रसिष्ट। लुट—ग्रसिता। लृट्—ग्रसिष्यते। आशीर्लिङ्—ग्रसिषीष्ट।

चर् (प०)—चलना। लट्—चरति। लिट्—चचार। लुङ्—अचारीत्। लुट्—चरिता। लृट्—चरिष्यति। आशीर्लिङ्—चर्यात्।

ज्वल् (प०)—जलना, चमकना। लट्—ज्वलति। लिट्—जज्वाल। लुङ्—अज्वालीत्। लुट—ज्वलिता। लृट्—ज्वलिष्यति। आशीर्लिङ—ज्वल्यात्।

तॄ (प०)—तैरना, पार करना। लट्—तरति। लिट्—ततार। लुङ—अतारीत्। लुट्—तरिता, तरीता। लृट्—तरिष्यति, तरीष्यति आशीर्लिङ्—तीर्यात्।

त्यज् (प०)—छोडना। लट्—त्यजति। लिट—तत्याज। लुङ्—अत्याक्षीत्। लुट्—त्यक्ता। लृट्—त्यक्ष्यति। आशीर्लिङ्—त्यज्यात्।

दह् (प०)—जलाना। लट्—दहति। लिट्—ददाह। लुङ्—अधाक्षीत्, अदाग्धाम्, अधाक्षु। लुट्—दग्धा। लृट—धक्ष्यति। आशीर्लिङ्—दह्यात्।

दा (प०)—देना, यच्छति। द्रु (प०)—पिघलना, द्रवति। ध्यै (प०)—सोचना, ध्यान करना, ध्यायति। ध्वस् (आ०)—नष्ट होना, ध्वसते। नट् (प०)—नाचना, अभिनय करना, नटति। पच् (उ०)—पकाना, पचति-पचते। फल् (प०)—फलना, फलति। बाध् (आ०)—दुःख देना, बाधते। बुध् (उ०)—

जानना, बोधति-बोधते । भाष् (आ०)—बोलना, भाषते । भिक्ष् (आ०)—भीख माँगना, भिक्षते । भूष् (प०)—सजाना, भूषति । भृ (उ०)—भरण करना, भरति-भरते । भ्रंश् (आ०)—गिरना, भ्रंशते । भ्रम् (प०)—घूमना, भ्रमति । मन्थ् (प०)—मथना, मन्थति । मार्ग् (प०)—खोजना, मार्गति । मुद् (आ०)—प्रसन्न होना, मोदते । यज् (उ०)—यज्ञ करना, यजति यजते । यत् (आ०)—यत्न करना, यतते । याच् (उ०)—याचना करना, याचति-याचते । युज् (प०)—मिलाना, योजति । रक्ष् (प०)—रक्षा करना, रक्षति । रद् (प०)—खोदना, रगडना, रदति । रभ् (आ०)—प्रारम्भ करना, रभते रम् (आ०)—खेलना, क्रीडा करना, रमते । रय् (आ०)—जाना, हिलना, रयते । रस (प०)—गरजना, रसति । राज् (उ०)—चमकना, राजति-राजते । रुच् (आ०)—चमकना, (सुन्दर लगना, अच्छा लगना, रोचते । रुह् (प०)—उगना, बढना, रोहति । लोच् (आ०)—देखना, लोचते । वद् (प०)—कहना, बोलना, वदति । वन्द् (आ०)—नमस्कार करना, स्तुति करना, वन्दते । वस् (प०)—रहना, वसति । वह् (उ०)—ढोना, वहति-वहते । वाञ्छ् (प०)—चाहना, वाञ्छति । वृध् (आ०)—बढना वर्धते । वे (उ०)—बुनना, वयति-वयते । व्यथ् (आ०)—दुःखित होना, व्यथते । व्रज् (प०)—जाना, व्रजति । शस् (प०)—प्रशंसा करना, चोट पहुँचाना, शसति । शङ्क् (आ०)—शङ्का करना, शङ्कते । शिक्ष् (आ०)—सीखना, शिक्षते । शुच् (प०)—शोक करना, शोचति । शुभ् (आ०)—चमकना, प्रसन्न होना, शोभते । सह् (आ०)—सहना, सहते । सेव् (आ०)—सेवा करना, सेवते । ह्लाद् (आ०)—प्रसन्न होना, ह्लादते ।

अदादिगण

इस गण की पहली धातु अद् है । इस गण की धातुओं का रूप बनाने के समय धातु और प्रत्यय के बीच में कोई वर्ण नही रक्खा जाता । धातु के ठीक बाद प्रत्यय लगा दिया जाता है । जैसे—अद् + ति = अत्ति ।

परस्मैपदी अद्—खाना

लट्

प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ० पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लोट्

प्र० पु०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म० पु०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ० पु०	अदानि	अदाव	अदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्यु
म० पु०	अद्या	अद्यातम्	अद्यात
उ० पु०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

लङ्

प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म० पु०	आद	आत्तम्	आत्त
उ० पु०	आदम्	आद्व	आद्म

लिट

प्र० पु०	जघास	जक्षतु	जक्षु.
म० पु०	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
उ० पु०	जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम

या

आद	आदतु	आदु.
आदिथ	आदथु'	आद
आद	आदिव	आदिम

लुङ्

प्र० पु०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
म० पु०	अघस	अघसतम्	अघसत
उ० पु०	अघसम	अघसाव	अघसाम

लुट्

प्र० पु०	अत्ता	अत्तारौ	अत्तार.
म० पु०	अत्तासि	अत्तास्थ	अत्तास्थ
उ० पु०	अत्तास्मि	अत्तास्व	अत्तास्म.

लृट्

प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यत.	अत्स्यन्ति
म० पु०	अत्स्यसि	अत्स्यथ	अत्स्यथ
उ० पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासु
म० पु०	अद्या	अद्यास्तम्	अद्यास्त
उ० पु०	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
म० पु०	आत्स्य	आत्स्यतम्	आत्स्यत
उ० पु०	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

परस्मैपदी अस्--होना

लट्

प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० पु०	असि	स्थ	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्व	स्म.

लोट्

प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्यु
म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

लङ्

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु०	आसी	आस्तम्	आस्त
उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

अन्य लकारो में इसके रूप 'भू' धातु के होते हैं।

आत्मनेपदी आस्—बैठना

प्र० पु०	आस्ते	आसाते	आसते
म० पु०	आस्से	आसाथे	आध्वे
उ० पु०	आसे	आस्वहे	आस्महे

लोट्

प्र० पु०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म० पु०	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उ० पु०	आसै	आसावहै	आसामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म० पु०	आसीथा	आसीयाथाम	आसीध्वम्
उ० पु०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

लङ्

प्र० पु०	आस्त	आसाताम्	आसत
म० पु०	आस्था	आसाथाम्	आध्वम्
उ० पु०	आसि	आस्वहि	आस्महि

लिट्

प्र० पु०	आसाञ्चक्रे	आसाञ्चक्राते	आसाञ्चक्रिरे
म० पु०	आसाञ्चकृषे	आसाञ्चक्राथे	आसाञ्चकृध्वे
उ० पु०	आसाञ्चक्रे	आसाञ्चकृवहे	आसाञ्चकृमहे

लुङ्

प्र० पु०	आसिष्ट	आसिषाताम्	आसिषत
म० पु०	आसिष्ठा	आसिषाथाम्	आसिध्वम्
उ० पु०	आसिषि	आसिष्वहि	आसिष्महि

लुट्

प्र० पु०	आसिता	आसितारौ	आसितार.
म० पु०	आसितासे	आसितासाथे	आसिताध्वे
उ० पु०	आसिताहे	आसितास्वहे	आसितास्महे

लृट्

प्र० पु०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
म० पु०	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उ० पु०	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	आसिषीष्ट	आसिषीयास्ताम्	आसिषीरन्
म० पु०	आसिषीष्ठा	आसिषीयास्थाम्	आसिषीध्वम्
उ० पु०	आसिषीय	आसिषीवहि	आसिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	आसिष्यत	आसिष्येनाम	आसिष्यन्त
म० पु०	आसिष्यथाः	आसिष्येथाम्	आसिष्यध्वम्
उ० पु०	आसिष्ये	आसिष्यावहि	आसिष्यामहि

परस्मैपदी इ—जाना

लट्

प्र० पु०	एति	इत	यन्ति
म० पु०	एषि	इथ	इथ
उ० पु०	एमि	इवः	इम

लोट्

प्र० पु०	एतु	इताम्	यन्तु
म० पु०	इहि	इतम	इत
उ० पु०	अयानि	अयाव	अयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	इयात्	इयाताम्	इयुः
म० पु०	इया	इयातम्	इयात
उ० पु०	इयाम	इयाव	इयाम

लङ्

प्र० पु०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
म० पु०	ऐ	ऐतम्	ऐत
उ० पु०	आयम्	ऐव	ऐम

लिट्

प्र० पु०	इयाय	ईयतु	ईयु
म० पु०	इययिथ, इयेथ	ईयथुः	ईय
उ० पु०	इयाय, इयय	यिव	ईयिम

लुङ्

प्र० पु०	अगात्	अगाताम्	अगु
म० पु०	अगा	अगातम्	अगात
उ० पु०	अगाम्	अगाव	अगाम

लुट्

प्र० पु०	एता	एतारौ	एतार·
म० पु०	एतासि	एतास्थ	एतास्थ
उ० पु०	एतास्मि	एतास्व	एतास्म

लृट्

प्र० पु०	एष्यति	एष्यत	एष्यन्ति
म० पु०	एष्यसि	एष्यथ	एष्यथ
उ० पु०	एष्यामि	एष्याव.	एष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	इयात्	इयास्ताम्	इयासु
म० पु०	इया	इयास्तम्	इयास्त
उ० पु०	इयासम्	इयास्व	इयास्म

लृङ्

प्र० पु०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्
म० पु०	ऐष्य	ऐष्यतम्	ऐष्यत
उ० पु०	ऐष्यम्	ऐष्याव	ऐष्याम

उभयपदीब्र्—बोलना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	{ ब्रवीति { आह	ब्रूत , आहतु	{ ब्रुवन्ति { आहु
म० पु०	{ ब्रवीषि { आत्थ	ब्रूथः, आहथु	ब्रूथ
उ० पु०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लोट्

प्र० पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म० पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उ० पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

लङ्

प्र० पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम	अब्रुवन्
म० पु०	अब्रवी	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

लिट्

प्र० पु०	उवाच	ऊचतु	ऊचु
म० पु	उवचिथ, उवक्थ	ऊचथु	ऊच
उ० पु०	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम

लुङ्

प्र० पु०	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्
म० पु०	अवोच	अवोचतम्	अवोचत
उ० पु०	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम

लुट्

प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
म० पु०	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ
उ० पु०	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्म

लृट्

प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यत	वक्ष्यन्ति
म० पु०	वक्ष्यसि	वक्ष्यथ	वक्ष्यथ
उ० पु०	वक्ष्यामि	वक्ष्याव	वक्ष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासु
म० पु०	उच्या	उच्यास्तम्	उच्यास्त
उ० पु०	उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
म० पु०	अवक्ष्य	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
उ० पु०	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म० पु०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ० पु०	ब्रूवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लोट्

प्र० पु०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म० पु०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ० पु०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	ब्रुवीत	ब्रूवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म० पु०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ० पु०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

लङ्

प्र० पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म० पु०	अब्रूथा.	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ० पु०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

लिट्

प्र० पु०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
म० पु०	ऊचिष	ऊचाथे	ऊचिध्वे
उ० पु०	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
म० पु०	अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्वम
उ० पु०	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

लुट्

प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तार
म० पु०	वक्तासे	वक्तासाथे	वक्ताध्वे
उ० पु०	वक्ताहे	वक्तास्वहे	वक्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० पु०	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० पु०	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
म० पु०	वक्षीष्ठा	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्
उ० पु०	वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
म० पु०	अवक्ष्यथा.	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्
उ० पु०	अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि

परस्मैपदी स्ना— स्नान करना

लट्

प्र० पु०	स्नाति	स्नात	स्नान्ति
म० पु०	स्नासि	स्नाथ	स्नाथ
उ० पु०	स्नामि	स्नाव	स्नामः

लोट्

प्र० पु०	स्नातु	स्नाताम्	स्नान्तु
म० पु०	स्नाहि	स्नातम्	स्नात
उ० पु०	स्नानि	स्नाव	स्नाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्नायात्	स्नायाताम्	स्नायु.
म० पु०	स्नाया	स्नायातम्	स्नायात
उ० पु०	स्नायाम्	स्नायाव	स्नायाम

लङ्

प्र० पु०	अस्नात्	अस्नाताम्	अस्नु
म० पु०	अस्ना.	अस्नातम्	अस्नात
उ० पु०	अस्नाम्	अस्नाव	अस्नाम

लिट्

प्र० पु०	सस्नौ	सस्नतु	सस्नु
म० पु०	सस्निथ	सस्नथु	सस्न
उ० पु०	सस्नौ	सस्निव	सस्निम

लुङ्

प्र० पु०	अस्नासीत्	अस्नासिष्टाम्	अस्नासिषु
म० पु०	अस्नासी.	अस्नासिष्टम्	अस्नासिष्ट
उ० पु०	अस्नासिषम्	अस्नासिष्व	अस्नासिष्म

लुट्

प्र० पु०	स्नाता	स्नातारौ	स्नातारः
म० पु०	स्नातासि	स्नातास्थः	स्नातास्थ
उ० पु०	स्नातास्मि	स्नातास्व	स्नातास्म

लृट्

प्र० पु०	स्नास्यति	स्नास्यतः	स्नास्यन्ति
म० पु०	स्नास्यसि	स्नास्यथ	स्नास्यथ
उ० पु०	स्नास्यामि	स्नास्याव	स्नास्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	स्नायात्	स्नायास्ताम्	स्नायासु
म० पु०	स्नाया	स्नायास्तम्	स्नायास्त
उ० पु०	स्नायासम्	स्नायास्व	स्नायास्म

या

प्र० पु०	स्नेयात्	स्नेयास्ताम्	स्नेयासु
म० पु०	स्नेया	स्नेयास्तम्	स्नेयास्त
उ० पु०	स्नेयासम्	स्नेयास्व	स्नेयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अस्नास्यत्	अस्नास्यताम्	अस्नास्यन्
म० पु०	अस्नास्य	अस्नास्यतम्	अस्नास्यत
उ० पु०	अस्नास्यम्	अस्नास्याव	अस्नास्याम

परस्मैपदी या — जाना

लट्

प्र० पु०	याति	यात	यान्ति
म० पु०	यासि	याथ	याथ
उ० पु०	यामि	याव	याम

लोट्

प्र० पु०	यातु	याताम्	यान्तु
म० पु०	याहि	यातम्	यात
उ० पु०	यानि	याव	याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	यायात्	यायाताम्	यायु
म० पु०	याया	यायातम्	यायात
उ० पु०	यायाम्	यायाव	यायाम

लङ्

प्र० पु०	अयात्	अयाताम्	अयुः
म० पु०	अयाः	अयातम्	अयात
उ० पु०	अयाम्	अयाव	अयाम

लिट्

प्र० पु०	ययौ	ययतु	ययु
म० पु०	ययिथ	ययथु	यय
उ० पु०	ययौ	ययिव	ययिम

लुङ्

प्र० पु०	अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषुः
म० पु०	अयासी	अयासिष्टम्	अयासिष्ट
उ० पु०	अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्म

लुट्

प्र० पु०	याता	यातारौ	यातार
म० पु०	यातासि	यातास्थ•	यातास्थ
उ० पु०	यातास्मि	यातास्व	यातास्मः

लृट्

प्र० पु०	यास्यति	यास्यत•	यास्यन्ति
म० पु०	यास्यसि	यास्यथ	यास्यथ
उ० पु०	यास्यामि	यास्याव•	यास्याम

आशीर्लिङ्

प्र० म०	यायात्	यायास्ताम्	यायासुः
म० पु०	यायाः	यायास्तम्	यायास्त
उ० पु०	यायासम्	यायास्व	यायास्म

लृङ्

प्र० पु०	अयास्यत्	अयास्यताम्	अयास्यन्
म० पु०	अयास्य	अयास्यतम्	अयास्यत
उ० पु०	अयास्यम्	अयास्याव	अयास्याम

इस गण की कुछ धातुएँ ये हैं—

ईड् (आ०)—स्तुति करना, ईट्टे ।

ईश् (आ०)—शासन करना, ईष्टे ।

ख्या (प०)—कहना, ख्याति ।

चकास् (उ०)—चमकना, चकास्ति चकास्ते ।

चक्ष् (आ०)—बोलना, चष्टे ।

जागृ (प०)—जागना, जागर्ति ।

नु (प०)—स्तुति करना, नौति ।

पा (प०)—रक्षा करना, शासन करना, पाति ।

भा (प०)—चमकना, भाति ।

मा (प०)—नापना, माति ।

रा (प०)—देना, राति ।

रु (प०)—शब्द करना, चिल्लाना, रौति ।

रुद् (प०)—रोना, रोदिति ।

ला (प०)—लेना, देना, लाति ।
वा (प०)—हवा बहना, जाना, वाति ।
शास् (प०)—शिक्षा देना, शासन करना, शास्ति ।
शी (आ०)—सोना, लेटना, शेते ।
श्वस् (प०)—सास लेना, श्वसिति ।
स्वप् (प०)—सोना, स्वपिति ।
हन् (प०)—मारना, हिंसा करना, हन्ति ।
ह्नु (आ०)—छिपाना, ह्नुते ।

जुहोत्यादिगण

परस्मैपदी हु–हवन करना

लट्

प्र० पु०	जुहोति	जुहुत	जुह्वति
म० पु०	जुहोषि	जुहुथ	जुहुथ
उ० पु०	जुहोमि	जुहुव	जुहुम

लोट्

प्र० पु०	जुहोतु जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु
म० पु०	जुहुधि, जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उ० पु०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयु
म० पु०	जुहुया	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० पु०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

लङ्

प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवु
म० पु०	अजुहो	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० पु०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

लट्

प्र० पु०	जुहाव	जुहुवतु.	जुहुवुः
म० पु०	जुहविथ, जुहोथ	जुहुवथु	जुहुव
उ० पु०	जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम

प्र० पु०	जुहवाञ्चकार	जुहवाञ्चक्रतु	जुहवाञ्चक्रु
म० पु०	जुहवाञ्चकथ	जुहवाञ्चक्रथु.	जुहवाञ्चक्र
उ० पु०	जुहवाञ्चकार,-चकर	जुहवाञ्चकृव	जुहवाञ्चकृम

जुहवाबभूव । जुहवामास

लुङ्

प्र० पु०	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषु
म० पु०	अहौषी	अहौष्टम्	अहौष्ट
उ० पु०	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म

लुट्

प्र० पु०	होता	होतारौ	होतार
म० पु०	होतासि	होतास्थ	होतास्थ
उ० पु०	होतास्मि	होतास्व.	होतास्मः

लृट्

प्र० पु०	होष्यति	होष्यत	होष्यन्ति
म० पु०	होष्यसि	होष्यथ	होष्यथ
उ० पु०	होष्यामि	होष्याव	होष्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासु
म० पु०	हूया	हूयास्तम्	हूयास्त
उ० पु०	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्
म० पु०	अहोष्य	अहोष्यतम्	अहोष्यत
उ० पु०	अहोष्यम्	अहोष्याव	अहोष्याम

परस्मैपदी हा–छोड़ना ।

लट

प्र० पु०	जहाति	जहितः, जहीत	जहति
म० पु०	जहासि	जहिथः, जहीथ	जहिथ, जहै
उ० पु०	जहामि	जहिव , जहीवः	जहिमः, ज

लोट

प्र० पु०	जहातु जहितात् जहीतात्	जहिताम जहीताम्	जहतु
म० पु०	जहाहि जहिहि जहीहि	जहितम् जहीतम्	जहित, जहीत
उ० पु०	जहानि	जहाव	जहाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जह्यात्	जह्याताम्	जह्यु
म० पु०	जह्या	जह्यातम्	जह्यात
उ० पु०	जह्याम्	जह्याव	जह्याम

लङ्

प्र० पु०	अजहात्	अजहिताम अजहीताम्	अजहु
म० पु०	अजहाः	अजहितम् अजहीतम्	अजहित अजहीत
उ० पु०	अजहाम्	अजहिव अजहीव	अजहिम अजहीम

लिट्

प्र० पु०	जहौ	जहतु.	जहु
म० पु०	जहिथ, जहाथ	जहथु	जह
उ० पु०	जहौ	जहिव	जहिम

लुङ्

प्र० पु०	अहासीत्	अहासिष्टाम्	अहासिषु.
पु० प०	अहासी	अहासिष्टम्	अहासिष्ट
उ० पु०	अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म

लुट्

प्र० पु०	हाता	हातारौ	हातार
म० पु०	हातासि	हातास्थ	हातास्थ
उ० पु०	हातास्मि	हातास्व	हातास्म.

लृट्

प्र० पु०	हास्यति	हास्यत	हास्यन्ति
म० पु०	हास्यसि	हास्यथ	हास्यथ
उ० पु०	हास्यामि	हास्याव.	हास्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	हेयात	हेयास्ताम	हेयासु
म० पु०	हेयाः	हेयास्तम्	हेयास्त
उ० पु०	हेयासम्	हेयास्व	हेयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अहास्यत्	अहास्यताम	अहास्यन्
म० पु०	अहास्य	अहास्यतम्	अहास्यत
उ० पु०	अहास्यम्	अहास्याव	अहास्याम

परस्मैपदी भी–डरना

लट्

प्र० पु०	बिभेति	बिभित , बिभीत	बिभ्यति
म० पु०	बिभेषि	बिभिथ , बिभीथ	बिभिथ, बिभीथ
उ० पु०	बिभेमि	बिभिव., बिभीव	बिभिम. / बिभीम

लोट्

प्र० पु०	बिभेतु / बिभितात् / बिभीतात्	बिभिताम्, बिभीताम्	बिभ्यतु
म० पु०	बिभिहि / बिभीहि / बिभितात् / बिभीतात्	बिभितम् / बिभीतम्	बिभित / बिभीत
उ० पु०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	बिभियात् / बिभीयात्	बिभियाताम / बिभीयाताम्	बिभियु / बिभीयु
म० पु०	बिभिया / बिभीया	बिभियातम् / बिभीयातम्	बिभियात / बिभीयात
उ० पु०	बिभियाम् / बिभीयाम्	बिभियाव / बिभीयाव	बिभियाम / बिभींवाम्

लङ्

प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभिताम् अबिभीताम्	अबिभयु
म० पु०	अबिभे.	अबिभितम् अबिभीतम्	अबिभित अबिभीत
उ० पु०	अबिभयम्	अबिभिव अबिभीव	अबिभिम अबिभीम

लिट्

प्र० पु०	बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रतु	बिभयाञ्चक्रु
म० पु०	बिभयाञ्चकर्थं	बिभयाञ्चक्रथु	बिभयाञ्चक्र
उ० पु०	बिभयाञ्चकार—चकर	बिभयाञ्चकृव	बिभयाञ्चकृम

बिभयाम्बभूव । बिभयामास ।

प्र० पु०	बिभाय	बिभ्यतु	बिभ्यु
म० पु०	बिभयिथ बिभेथ	बिभ्यथु	बिभ्य
उ० पु०	बिभाय बिभय	बिभ्यिव	बिभ्यिम

लुङ्

प्र० पु०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषु
म० पु०	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट
उ० पु०	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म

लुट

प्र० पु०	भेता	भेतारौ	भेतारः
म० पु०	भेतासि	भेतास्थ	भेतास्थ
उ० पु०	भेतास्मि	भेतास्व	भेतास्म

लृट्

प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यत	भेष्यन्ति
म० पु०	भेष्यसि	भेष्यथ	भेष्यथ
उ० पु०	भेष्यामि	भेष्याव	भेष्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भीयात्	भीयास्ताम	भीयासु
म० पु०	भीया	भीयास्तम्	भीयास्त
उ० पु०	भीयासम्	भीयास्व	भीयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्
म० पु०	अभेष्य	अभेष्यतम्	अभेष्यत
उ० पु०	अभेष्यम्	अभेष्याव	अभेष्याम

उभयपदी दा—देना

परस्मैपद

लट

प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० पु०	ददासि	दत्थ	दत्थ
उ० पु०	ददामि	दद्व.	दद्मः

लोट्

प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० पु०	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्यु
म० पु०	दद्या	दद्यातम्	दद्यात
उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लङ्

प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददु
म० पु०	अददा	अदत्तम्	अदत्त
उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लिट्

प्र० पु०	ददौ	ददतु	ददुः
म० पु०	ददिथ, ददाथ	ददथु.	दद
उ० पु०	ददौ	ददिव	ददिम

लुङ्

प्र० पु०	अदात्	अदाताम्	अदुः
म० पु०	अदा	अदातम्	अदात
उ० पु०	अदाम्	अदाव	अदाम

लुट्

प्र० पु०	दाता	दातारौ	दातार
म० पु०	दातासि	दातास्थ	दातास्थ
उ० पु०	दातास्मि	दातास्व	दातास्म

लृट्

प्र० पु०	दास्यति	दास्यत	दास्यन्ति
म० पु०	दास्यसि	दास्यथ	दास्यथ
उ० पु०	दास्यामि	दास्याव	दास्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	देयात्	देयास्ताम्	देयासु
म० पु०	देया	देयास्तम्	देयास्त
उ० पु०	देयासम्	देयास्व	देयास्म

लृङ

प्र० पु०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
म० पु०	अदास्य	अदास्यतम्	अदास्यत
उ० पु०	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	दत्ते	ददाते	ददते
म० पु०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० पु०	ददे	दद्वहे	दद्महे

लोट्

प्र० पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० पु०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० पु०	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० पु०	ददीथा	ददीयाथाम्	ददीध्वम
उ० पु०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लङ्

प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० पु०	अदत्था	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० पु०	अददि	अद्द्वहि	अदद्महि

लिट्

प्र० पु०	ददे	ददाते	ददिरे
म० पु०	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उ० पु०	ददे	ददिवहे	ददिमहे

लुङ

प्र० पु०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
म० पु०	अदिथा.	अदिषाथाम्	अदिध्वम्
उ० पु०	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

लुट्

प्र० पु०	दाता	दातारौ	दातार
म० पु०	दातासे	दातासाथे	दाताध्वे
उ० पु०	दाताहे	दातास्वहे	दातास्महे

लृट्

प्र० पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० पु०	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० पु०	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
म० पु०	दासीष्ठा.	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
उ० पु०	दासीय	दासीवहि	दासीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
म० पु०	अदास्यथा	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
उ० पु०	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

उभयपदी धा–धारणकरना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	दधाति	धत्त	दधति
म० पु०	दधासि	धत्थ	धत्थ
उ० पु०	दधामि	दध्व	दध्म

लोट्

प्र० पु०	दधातु	धत्ताम्	दधतु
म० पु०	धेहि	धत्तम	धत्त
उ० पु०	दधानि	दधाव	दधाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्यु
म० पु०	दध्या	दध्यातम्	दध्यात
उ० पु०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

लङ्

प्र० पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधु
म० पु०	अदधा	अधत्तम्	अधत्त
उ० पु०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म

लिट्

प्र० पु०	दधौ	दधतु	दधु
म० पु०	दधिथ, दधाथ	दधथु	दध
उ० पु०	दधौ	दधिव	दधिम

लुङ्

प्र० पु०	अधात्	अधाताम्	अधु
म० पु०	अधा	अधातम्	अधात
उ० पु०	अधाम्	अधाव	अधाम

लुट्

प्र० पु०	धाता	धातारौ	धातार
म० पु०	धातासि	धातास्थः	धातास्थ
उ० पु०	धातास्मि	धातास्वः	धातास्मः

लृट्

प्र० पु०	धास्यति	धास्यत	धास्यन्ति
म० पु०	धास्यमि	धास्यथ	धास्यथ
उ० पु०	धास्यामि	धास्याव	धास्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासु
म० पु०	धेया	धेयास्तम्	धेयास्त
उ० पु०	धेयामम्	धेय स्व	धेयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्
म० पु०	अधास्य	अधास्यतम्	अधास्यत
उ० पु०	अधास्यम्	अधास्याव	अधास्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	धत्ते	दधाते	दधते
म० पु०	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
उ० पु०	दधे	दध्वहे	दध्महे

लोट्

प्र० पु०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
म० पु०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
उ० पु०	दधै	दधावहै	दधामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म० पु०	दधीथा	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उ० पु०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

लङ्

प्र० पु०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म० पु०	अधत्था	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
उ० पु०	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

लिट्

प्र० पु०	दधे	दधाते	दधिरे
म० पु०	दधिषे	दधाथे	दधिध्वे
उ० पु०	दधे	दधिवहे	दधिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अधित	अधिषाताम्	अधिषत
म० पु०	अधिथाः	अधिषाथाम्	अधिध्वम
उ० पु०	अधिषि	अधिष्वहि	अधिष्महि

लुट्

प्र० पु०	धाता	धातारौ	धातार
म० पु०	धातासे	धातासाथे	धाताध्वे
उ० पु०	धाताहे	धातास्वहे	धातास्महे

लृट्

प्र० पु०	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
म० पु०	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उ० पु०	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

आशीलिङ्

प्र० पु०	धासीष्ट	धासीयास्ताम	धासीरन्
म० पु०	धासीष्ठा	धासीयास्थाम्	धासीध्वम्
उ० पु०	धासीय	धासीवहि	धासीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अधास्यत	अधास्येताम्	अधास्यन्त
म० पु०	अधास्यथाः	अधास्येथाम्	अधास्यध्वम्
उ० पु०	अधास्ये	अधास्यावहि	अधास्यामहि

इस गण की कुछ धातुएँ ये हैं—

पॄ (प०)—पालन करना, भरना।

पिपर्ति	पिपृत	पिप्रति
पिपर्षि	पिपृथ	पिपृथ
पिपर्मि	पिपृव	पिपृम

भृ (उ०)—पालन पोषण करना, धारण करना। बिभर्ति, बिभृते।
विज् (उ०)—पृथक् करना। वेवेक्ति, वेविक्ते।
विष् (उ०)—व्याप्त होना, घेरना। वेवेष्टि, वेवष्टे।
ह्री (प०)—लज्जित होना, जिह्रेति।

दिवादिगण

परस्मैपदी दिव् -जुआ खेलना

लट्

प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यत	दीव्यन्ति
म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथ	दीव्यथ
उ० पु०	दीव्यामि	दीव्याव	दीव्याम

लोट्

प्र० पु०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० पु०	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० पु०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दीव्येत्	दाव्येताम्	दीव्येयु
म० पु०	दीव्ये	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

लङ्

प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम	अदीव्यन्
म० पु०	अदीव्य.	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० पु०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

लिट्

प्र० पु०	दिदेव	दिदिवतु	दिदिवु
म० पु०	दिदेविथ	दिदिवथु	दिदिव
उ० पु०	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

लुङ्

प्र० पु०	अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषु
म० पु०	अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
उ० पु०	अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म

लुट्

प्र० पु०	देविता	देवितारौ	देवितार.
म० पु०	देवितासि	देवितास्थ॰	देवितास्थ
उ० पु०	देवितास्मि	देवितास्व	देवितास्म

लृट

प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यत	देविष्यन्ति
म० पु०	देविष्यसि	देविष्यथ	देविष्यथ
उ० पु०	देविष्यामि	देविष्याव॰	देविष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	दीव्यात	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः
म० पु०	दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त
उ० पु०	दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अदेविष्यत्	अदेविष्यताम	अदेविष्यन्
म० पु०	अदेविष्य.	अदेविष्यनम्	अदेविष्यत
उ० पु०	अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

परस्मैपदी कुप्—क्रोध करना

लट्

प्र० पु०	कुप्यति	कुप्यत	कुप्यन्ति
म० पु०	कुप्यसि	कुप्यथ	कुप्यथ
उ० पु०	कुप्यामि	कुप्याव	कुप्याम

लोट्

प्र० पु०	कुप्यतु	कुप्यताम्	कुप्यन्तु
म० पु०	कुप्य	कुप्यतम्	कुप्यत
उ० पु०	कुप्यानि	कुप्याव	कुप्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुप्येत्	कुप्येताम्	कुप्येयु
म० पु०	कुप्ये	कुप्येतम	कुप्येत
उ० पु०	कुप्येयम	कुप्येव	कुप्येम

लङ्

प्र० पु०	अकुप्यत्	अकुप्यताम्	अकुप्यत्
म० पु०	अकुप्य	अकुप्यतम	अकुप्यत
उ० पु०	अकुप्यम्	अकुप्याव	अकुप्याम

लिट

प्र० पु०	चुकोप	चुकुपतु	चुकुपु
म० पु०	चुकोपिथ	चुकुपथु	चुकुप
उ० पु०	चुकोप	चुकुपिव	चुकुपिम

लुङ

प्र० पु०	अकुपत्	अकुपताम	अकुपन्
म० पु०	अकुप.	अकुपतम्	अकुपत
उ० पु०	अकुपम्	अकुपाव	अकुपाम

लुट्

प्र० पु०	कोपिता	कोपितारौ	कोपितार
म० पु०	कोपितासि	कोपितास्थ	कोपितास्थ
उ० पु०	कोपितास्मि	कोपितास्व	कोपितास्म

लृट

प्र० पु०	कोपिष्यति	कोपिष्यत	कोपिष्यन्ति
म० पु०	कोपिष्यसि	कोपिष्यथ	कोपिष्यथ
उ० पु०	कोपिष्यामि	कापिष्याव	कोपिष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	कुप्यात्	कुप्यास्ताम्	कुप्यासु
म० पु०	कुप्या	कुप्यास्तम्	कुप्यास्त
उ० पु०	कुप्यामम्	कुप्यास्व	कुप्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अकोपिष्यत्	अकोपिष्यताम	अकोपिष्यन्
म० पु०	अकोपिष्य	अकोपिष्यनम	अकोपिष्यत
उ० पु०	अकोपिष्यम्	अकोपिष्याव	अकोपिष्याम

परस्मैपदी नृत् – नाचना

लट्

प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यत.	नृत्यन्ति

म० पु०	नत्यसि	नृ यथ	नत्यथ
उ० पु०	नत्यामि	नृत्याव.	नृत्याम

लोट्

प्र० पु०	नत्यतु	नत्यताम	नृत्यन्तु
म० पु०	नृत्य	नत्यतम्	नृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नृत्येत	नत्येताम्	नृत्येयु
म० पु०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० पु०	नृत्येयम्	नत्येव	नृत्येम

लङ्

प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० पु०	अनृत्य	अनत्यतम	अनत्यत
उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनत्याम

लिट्

प्र० पु०	ननर्त	ननततु	ननृतु
म० पु०	ननर्तिथ	ननृतथु	ननृत
उ० पु०	ननर्त	ननृतिव	ननृतिम

लुङ्

प्र० पु०	अनर्तीत्	अनर्तिष्टाम्	अनर्तिषुः
म० पु०	अनर्तीः	अनर्तिष्टम्	अनर्तिष्ट
उ० पु०	अनर्तिषम्	अनर्तिष्व	अनर्तिष्म

लुट्

प्र० पु०	नर्तिता	नर्तितारौ	नर्तितार
म० पु०	नर्तितासि	नर्तितास्थ	नर्तितास्थ
उ० पु०	नर्तितास्मि	नर्तितास्व	नर्तितास्म

लृट

प्र० पु०	नर्त्स्यति, नर्तिष्यति	नर्त्स्यत , नर्तिष्यत	नर्त्स्यन्ति, नर्तिष्यन्ति
म० पु०	नर्त्स्यसि, नर्तिष्यसि	नर्त्स्यथ , नर्तिष्यथ	नर्त्स्यथ, नर्तिष्यथ
उ० पु०	नर्त्स्यामि, नर्तिष्यामि	नर्त्स्याव , नर्तिष्याव	नर्त्स्यामः, नर्तिष्यामः

आशीलिङ्

प्र० पु०	नृत्यात्	नृत्यास्ताम्	नृत्यासुः
म० पु०	नृत्या	नृत्यास्तम्	नृत्यास्त
उ० पु०	नृत्यासम्	नृत्यास्व	नत्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अनत्स्यत्, अनर्तिष्यत्	अनत्स्यंताम्, अनर्तिष्यताम्	अनत्स्यन्, अनर्तिष्यन्
म० पु०	अनत्स्य , अनर्तिष्य	अनत्स्यतम, अनर्तिष्यतम्	अनत्स्यंत, अनर्तिष्यत
उ० पु०	अनत्स्यंम्, अनर्तिष्यम्	अनत्स्यांव, अनर्तिष्याव	अनत्स्यांम, अनर्तिष्याम

परस्मैपदी भ्रम-घूमना

लट्

प्र० पु०	भ्राम्यति, भ्रमति	भ्राम्यत, भ्रमत	भ्राम्यन्ति, भ्रमन्ति
म० पु०	भ्राम्यसि, भ्रमसि	भ्राम्यथ, भ्रमथ	भ्राम्यथ, भ्रमथ
उ० पु०	भ्राम्यामि, भ्रमामि	भ्राम्याव, भ्रमाव	भ्राम्याम , भ्रमामः

लोट्

प्र० पु०	भ्राम्यतु, भ्रमतु	भ्राम्यताम्, भ्रमताम्	भ्राम्यन्तु, भ्रमन्तु
म० पु०	भ्राम्य, भ्रम	भ्राम्यतम्, भ्रमतम्	भ्राम्यत, भ्रमत
उ० पु०	भ्राम्याणि, भ्रमाणि	भ्राम्याव, भ्रमाव	भ्राम्याम, भ्रमाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भ्राम्येत्, भ्रमेत्	भ्राम्येताम्, भ्रमेताम्	भ्राम्येयु, भ्रमेयु
म० पु०	भ्राम्ये , भ्रमे	भ्राम्येतम्, भ्रमेतम्	भ्राम्येत, भ्रमेत
उ० पु०	भ्राम्येयम्, भ्रमेयम्	भ्राम्येव, भ्रमेव	भ्राम्येम, भ्रमेम

लङ्

प्र० पु०	अभ्राम्यत्, अभ्रमत्	अभ्राम्यताम्, अभ्रमताम्	अभ्राम्यन्, अभ्रमन्
म० पु०	अभ्राम्य , अभ्रम	अभ्राम्यतम् , अभ्रमतम्	अभ्राम्यत, अभ्रमत
उ० पु०	अभ्राम्यम्, अभ्रमम्	अभ्राम्याव, अभ्रमाव	अभ्राम्याम, अभ्रमाम

लिट्

प्र० पु०	बभ्राम	बभ्रमतु, भ्रेमतु	बभ्रमु, भ्रेमु
म० पु०	बभ्रमिथ, भ्रेमिथ	बभ्रमथु, भ्रेमथु	बभ्रम, भ्रेम
उ० पु०	बभ्राम, बभ्रम	बभ्रमिव, भ्रेमिव	बभ्रमिम, भ्रेमिम

लुङ्

प्र० पु०	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
म० पु०	अभ्रम	अभ्रमतम्	अभ्रमत
उ० पु०	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम

लुट्

प्र० पु०	भ्रमिता	भ्रमितारौ	भ्रमितारः
म० पु०	भ्रमितासि	भ्रमितास्थ	भ्रमितास्थ
उ० पु०	भ्रमितास्मि	भ्रमितास्व॰	भ्रमितास्म॰

लृट्

प्र० पु०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यत	भ्रमिष्यन्ति
म० पु०	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथ	भ्रमिष्यथ
उ० पु०	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्याव	भ्रमिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भ्रम्यात्	भ्रम्यास्ताम्	भ्रम्यासु
म० पु०	भ्रम्या	भ्रम्यास्तम्	भ्रम्यास्त
उ० पु०	भ्रम्यासम्	भ्रम्यास्व	भ्रम्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अभ्रमिष्यत्	अभ्रमिष्यताम्	अभ्रमिष्यन्
म० पु०	अभ्रमिष्य	अभ्रमिष्यतम्	अभ्रमिष्यत
उ० पु०	अभ्रमिष्यम्	अभ्रमिष्याव	अभ्रमिष्याम

टि०—भ्रम् भ्वादिगणी भी है, अतएव भ्रमति आदि रूप भी होते हैं।

आत्मनेपदी जन्—पैदा होना

लट्

प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट्

प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० पु०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० पु०	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म० पु०	जायेथा	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० पु०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

लङ्

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथा	अजायेथाम	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लिट्

प्र० पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
म० पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ० पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अजनि, अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
म० पु०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम
उ० पु०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

लुट्

प्र० पु०	जनिता	जनितारौ	जनितार
म० पु०	जनितासे	जनितासाथे	जनिताध्वे
उ० पु०	जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे

लृट्

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० पु०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्

म० पु०	जनिषीष्ठा	जनिषीयास्थाम	जनिषीध्वम्
उ० पु०	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त
म० पु०	अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम
उ० पु०	अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि

आत्मनेपदी विद्—होना

लट्

प्र० पु०	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म० पु०	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उ० पु०	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लोट्

प्र० पु०	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म० पु०	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उ० पु०	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	विद्येत	विद्येयाताम्	विद्येरन्
म० पु०	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उ० पु०	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

लङ्

प्र० पु०	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म० पु०	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उ० पु०	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

लिट्

प्र० पु०	विविदे	विविदाते	विविदिरे
म० पु०	विविदिषे	विविदाथे	विविदिध्वे
उ० पु०	विविदे	विविदिवहे	विविदिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अवित्त	अवित्साताम्	अवित्सत
म० पु०	अवित्था	अवित्साथाम्	अविद्ध्वम्
उ० पु०	अवित्सि	अवित्स्वहि	अवित्स्महि

लुट्

प्र० पु०	वेत्ता	वेत्तारौ	वेत्तारः
म० पु०	वेत्तासे	वेत्तासाथे	वेत्ताध्वे
उ० पु०	वेत्ताहे	वेत्तास्वहे	वेत्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
म० पु०	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उ० पु०	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	वित्सीष्ट	वित्सीयास्ताम्	वित्सीरन्
म० पु०	वित्सीष्ठा	वित्सीयास्थाम्	वित्सीध्वम
उ० पु०	वित्सीय	वित्सीवहि	वित्सीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अवेत्स्यत	अवेत्स्येताम्	अवेत्स्यन्त
म० पु०	अवेत्स्यथा	अवेत्स्येथाम्	अवेत्स्यध्वम्
उ० पु०	अवेत्से	अवेत्स्यावहि	अवेत्स्यामहि

इनके अतिरिक्त इस गण की कुछ धातुएँ ये हैं—

क्रुध् (प०)—क्रोध करना, क्रुध्यति।

क्षम् (प०)—क्षमा करना, क्षाम्यति।

खिद् (आ०)—खिन्न होना, खिद्यते।

छो (प०)—काटना, छ्यति।

त्रस् (प०)—डरना, त्रस्यति।

दू (आ०)—दुःखित होना, दूयते।

दो (प०)—काटना, द्यति।

नश् (प०)—नष्ट होना, नश्यति।

पुष् (प०)—पुष्ट करना पुष्यति।

मन् (आ०)—मानना, मन्यते।

युध् (आ०)—युद्ध करना, युध्यते।

व्यध् (प०)—बेधना, विध्यति।

शुष् (प०)—सूखना, शुष्यति।

शो (प०)—पतला करना, श्यति।

सिव् (प०)—सीना, सीव्यति।

स्वादिगण

इस गण की प्रथम धातु सु (निचोडना) है, अतएव इसका नाम स्वादि है इस गण की धातु और प्रत्यय के बीच मे नु जोडा जाता है।

उभयपदी सु

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	सुनोति	सुनुत	सुन्वन्ति
म० पु०	सुनोषि	सुनुथ	सुनुथ
उ० पु०	सुनोमि	सुन्व, सुनुव	सुन्म:, सुनुमः

लोट्

प्र० पु०	सुनोतु	सुनुताम्	सु वन्तु
म० पु०	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उ० पु०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म० पु०	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ० पु०	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

लङ्

प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म० पु०	असुनो	असुनुतम्	असुनुत
उ० पु०	असुनवम्	{ असुनुव असुन्व	{ असुनुम असुन्म

लिट्

प्र० पु०	सुषाव	सुषुवतु	सुषुवु
म० पु०	सुषोथ, सुषविथ	सुषुवथु	सुषुव
उ० पु०	सुषाव, सुषव	सुषुविव	सुषुविम

लुङ्

प्र० पु०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषु
म० पु०	असावी	असाविष्टम्	असाविष्ट
उ० पु०	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म

लुट्

प्र० पु०	सोता	सोतारौ	सोतार
म० पु०	सोतासि	सोतास्थ	सोतास्थ
उ० पु०	सोतास्मि	सोतास्व	सोतास्म

लृट्

प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यत	सोष्यन्ति
म० पु०	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उ० पु०	सोष्यामि	सोष्याव	सोष्यामः

आशीलिङ्

प्र० पु०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासु
म० पु०	सूया	सूयास्तम्	सूयास्त
उ० पु०	सूयासम	सूयास्व	सूयास्म

लृङ्

प्र० पु०	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
म० पु०	असोष्य	असोष्यतम्	असोष्यत
उ० पु०	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
म० पु०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ० पु०	सुन्वे	{ सुनुवहे सुन्वहे	{ सुनुमहे सुन्महे

लोट्

प्र० पु०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम
म० पु०	सुनुष्व	सुन्वाथाम	सुनुध्वम्
उ० पु०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म० पु०	सुन्वीथा	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ० पु०	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

लङ्

प्र० पु०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म० पु०	असुनुथा	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उ० पु०	असुन्वि	असुनुवहि / असुन्वहि	असुनुमहि / असुन्महि

लिट

प्र० पु०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
म० पु०	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
उ० पु०	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे

लुङ्

प्र० पु०	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
म० पु०	असोष्ठा	असोषाथाम्	असोढ्वम्
उ० पु०	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

लुट्

प्र० पु०	सोता	सोतारौ	सोतार
म० पु०	सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे
उ० पु०	सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्महे

लृट्

प्र० पु०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० पु०	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० पु०	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
म० पु०	सोषीष्ठा	सोषीयास्थाम्	सोषीढ्वम्
उ० पु०	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
म० पु०	असोष्यथा	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्
उ० पु०	असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्यामहि

उभयपदी चि—इकट्ठा करना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	चिनोति	चिनुत	चि वन्ति
म० पु०	चिनोषि	चिनुथ	चिनुथ
उ० पु०	चिनोमि	चिन्व , चिनुव	चिन्मः, चिनु

लोट

प्र० पु०	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
म० पु०	चिनु	चिनुतम्	चिनुत
उ० पु०	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयु
म० पु०	चिनुया	चिनुयातम्	चिनुयात
उ० पु०	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

लङ्

प्र० पु०	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
म० पु०	अचिनो	अचिनुतम्	अचिनुत
उ० पु०	अचिनवम्	अचिन्व	अचिन्म

लिट्

प्र० पु०	चिकाय	चिक्यतु.	चिक्यु.
म० पु०	चिकयिथ, चिकेथ	चिक्यथु.	चिक्य
उ० पु०	चिकाय, चिकय	चिक्यिव	चिक्यिम

या

चिचाय	चिच्यतु	चिच्युः
चिचयिथ, चिचेथ	चिच्यथुः	चिच्य
चिचाय, चिचय	चिच्यिव	चिच्यिम

लुङ्

प्र० पु०	अचैषीत्	अचैष्टाम्	अचैषु
म० पु०	अचैषी	अचैष्टम्	अचैष्ट
उ० पु०	अचैषम्	अचैष्व	अचैष्म

लुट्

प्र० पु०	चेता	चेतारौ	चेतार
म० पु०	चेतासि	चेतास्थ	चेतास्थ
उ० पु०	चेतास्मि	चेतास्व	चेतास्म

लृट्

प्र० पु०	चेष्यति	चेष्यत	चेष्यन्ति
म० पु०	चेष्यसि	चेष्यथ	चेष्यथ
उ० पु०	चेष्यामि	चेष्याव	चेष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चीयात्	चीयास्ताम्	चीयासु
म० पु०	चीया	चीयास्तम्	चीयास्त
उ० पु०	चीयासम्	चीयास्व	चीयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अचेष्यत्	अचेष्यताम्	अचेष्यन
म० पु०	अचेष्य	अचेष्यतम्	अचेष्यत
उ० पु०	अचेष्यम्	अचेष्याव	अचेष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते
म० पु०	चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे
उ० पु०	चिन्वे	चिन्वहे, चिनुवहे	चिन्महे, चिनुमहे

लोट्

प्र० पु०	चिनुताम्	चिन्वाताम्	चिन्वताम्
म० पु०	चिनुष्व	चिन्वाथाम्	चिनुध्वम्
उ० पु०	चिनवै	चिन्वावहै	चिन्वामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	चिन्वीत	चिन्वीयाताम्	चिन्वीरन्
म० पु०	चिन्वीथा	चिन्वीयाथाम	चिन्वीध्वम्
उ० पु०	चिन्वीय	चिन्वीवहि	चिन्वीमहि

लङ्

प्र० पु०	अचिनुत	अचिन्वाताम्	अचिन्वत
म० पु०	अचिनुथा	अचिन्वाथाम	अचिनुध्वम्
उ० पु०	अचिन्वि	अचि वहि	अचिन्महि

लिट्

प्र० पु०	चिक्ये	चिक्याते	चिक्यिरे
म० पु०	चिक्यिषे	चिक्याथे	चिक्यिध्वे
उ० पु०	चिक्ये	चि क्यिवहे	चिक्यिमहे

या

चिच्ये	चिच्याते	चिच्यिरे
चिच्यिषे	चिच्याथे	चिच्यिध्वे
चिच्ये	चिच्यिवहे	चिच्यिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अचेष्ट	अचषाताम्	अचेषत
म० पु०	अचेष्ठा	अचेषाथाम्	अचेढ्वम्
उ० पु०	अचेषि	अचेष्वहि	अचेष्महि

लुट

प्र० पु०	चेता	चेतारौ	चेतार
म० पु०	चेतासे	चेतासाथे	चताध्वे
उ० पु०	चेताहे	चेतास्वहे	चेतास्महे

लृट

प्र० पु०	चष्यते	चेष्येते	चेष्यन्ते
म० पु०	चेष्यस	चेष्यथे	चेष्यध्वे
उ० पु०	चष्ये	चेष्यावहे	चष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चषीष्ट	चेषीयास्ताम्	चषीरन्
म० पु०	चेषीष्ठा:	चषीयास्थाम्	चेषीढ्वम्
उ० पु०	चेषीय	चेषीवहि	चेषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अचेष्यत	अचष्येताम्	अचेष्यन्त
म० पु०	अचेष्यथा	अचेष्येथाम्	अचेष्यध्वम्
उ० पु०	अचेष्ये	अचेष्यावहि	अचेष्यामहि

उभयपदी वृ—चुनना, वरण करना

परस्मैपद

लट

प्र० पु०	वृणोति	वृणुत	वृण्वन्ति
म० पु०	वृणोषि	वृणुथ	वृणुथ
उ० पु०	वृणोमि	वृण्व , वृणुव	वृण्म , वृणुमः

लोट्

प्र० पु०	वृणोतु	वृणुताम्	वृण्वन्तु
म० पु०	वृणु	वृणुतम्	वृणुत
उ० पु०	वृणवानि	वृणवाव	वृणवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	वृणुयात्	वृणुयाताम्	वृणुयु
म० पु०	वृणुया	वृणुयातम्	वृणुयात
उ० पु०	वृणुयाम्	वृणुयाव	वृणुयाम

लङ्

प्र० पु०	अवृणोत्	अवृणुताम्	अवृण्वन्
म० पु०	अवृणो	अवृणुतम्	अवृणुत
उ० पु०	अवृणवम्	अवृण्व, अवृणुव	अवृण्म, अवृणुम

लिट्

प्र० पु०	ववार	वव्रतु	वव्रु
म० पु०	ववरिथ	वव्रथु	वव्र
उ० पु०	ववार, ववर	वव्रिव	वव्रिम

लुङ्

प्र० पु०	अवारीत्	अवारिष्टाम्	अवारिषु
म० पु०	अवारी	अवारिष्टम्	अवारिष्ट
उ० पु०	अवारिषम्	अवारिष्व	अवारिष्म

लुट्

प्र० पु०	वरिता / वरीता	वरितारौ / वरीतारौ	वरितार / वरीतार
म० पु०	वरितासि / वरीतासि	वरितास्थ / वरीतास्थ	वरितास्थ / वरीतास्थ
उ० पु०	वरितास्मि / वरीतास्मि	वरितास्व / वरीतास्व	वरितास्मः / वरीतास्मः

लृट्

प्र० पु०	वरिष्यति / वरीष्यति	वरिष्यत / वरीष्यत.	वरिष्यन्ति / वरीष्यन्ति
म० पु०	वरिष्यसि / वरीष्यसि	वरिष्यथ / वरीष्यथ.	वरिष्यथ / वरीष्यथ
उ० पु०	वरिष्यामि / वरीष्यामि	वरिष्याव / वरीष्याव.	वरिष्यामः / वरीष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	व्रियात्	व्रियास्ताम्	व्रियासुः
म० पु०	व्रिया	व्रियास्तम	व्रियास्त
उ० पु०	व्रियासम्	व्रियास्व	व्रियास्म

लृङ्

प्र० पु०	अवरिष्यत् / अवरीष्यत्	अवरिष्यताम् / अवरीष्यताम्	अवरिष्यन् / अवरीष्यन्
म० पु०	अवरिष्य. / अवरीष्य	अवरिष्यतम् / अवरीष्यतम्	अवरिष्यत / अवरीष्यत
उ० पु०	अवरिष्यम् / अवरीष्यम्	अवरिष्याव / अवरीष्याव	अवरिष्याम / अवरीष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	वृणुते	वृण्वाते	वृण्वते
म० पु०	वृणुष	वृण्वाथे	वृणुध्वे
उ० पु०	वृण्वे	वृण्वहे, वृणुवहे	वृण्महे, वृणुमहे

लोट्

प्र० पु०	वृणुताम	वृण्वाताम्	वृण्वताम्
म० पु०	वृणुष्व	वृण्वाथाम्	वृणुध्वम्
उ० पु०	वृणवै	वृण्वावहै	वृण्वामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	वृण्वीत	वृण्वीयाताम्	वृण्वीरन्
म० पु०	वृण्वीथाः	वृण्वीयाथाम्	वृण्वीध्वम्
उ० पु०	वृण्वीय	वृण्वीवहि	वृण्वीमहि

लङ्

प्र० पु०	अवृणुत	अवृण्वाताम्	अवृण्वत
म० पु०	अवृणुथा	अवृण्वाथाम्	अवृणुध्वम्
उ० पु०	अवृण्वि	अवृण्वहि	अवृण्महि

लिट्

प्र० पु०	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
म० पु०	ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
उ० पु०	वव्रे	ववृवहे	ववृमहे

लुङ्

प्र० पु०	अवरिष्ट अवरीष्ट	अवरिषाताम् अवरीषाताम्	अवरिषत अवरीषत
म० पु०	अवरिष्ठा अवरीष्ठा	अवरिषाथाम् अवरीषाथाम्	अवरिढ्वम् अवरीढ्वम्
उ० पु०	अवरिषि अवरीषि	अवरिष्वहि अवरीष्वहि	अवरिष्महि अवरीष्महि

या

अवृत	अवृषाताम्	अवृषत
अवृथा:	अवृषाथाम्	अवृढ्वम्
अवृषि	अवृष्वहि	अवृष्महि

लुट्

प्र० पु०	वरिता वरीता	वरितारौ वरीतारौ	वरितार वरीतारः
म० पु०	वरितासे वरीतासे	वरितासाथे वरीतासाथे	वरिताध्वे वरीताध्वे
उ० पु०	वरिताहे वरीताहे	वरितास्वहे वरीतास्वहे	वरितास्महे वरीतास्महे

लृट्

प्र० पु०	वरिष्यते वरीष्यते	वरिष्येते वरीष्येते	वरिष्यन्ते वरीष्यन्ते
म० पु०	वरिष्यसे वरीष्यसे	वरिष्येथे वरीष्येथे	वरिष्यध्वे वरीष्यध्वे
उ० पु०	वरिष्ये वरीष्ये	वरिष्यावहे वरीष्यावहे	वरिष्यामहे वरीष्यामहे

आशीलिंङ्

प्र० पु०	वरिषीष्ट / वृषीष्ट	वरिषीयास्ताम् / वृषीयास्ताम्	वरिषीरन् / वृषीरन्
म० पु०	वरिषीष्ठाः / वृषीष्ठा	वरिषीयास्थाम् / वृषीयास्था	वरिषीध्वम् / वृषीध्वम्
उ० पु०	वरिषीय / वृषीय	वरिषीवहि / वृषीवहि	वरिषीमहि / वृषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अवरिष्यत / अवरीष्यत	अवरिष्येताम् / अवरीष्येताम्	अवरिष्यन्त / अवरीष्यन्त
म० पु०	अवरिष्यथा / अवरीष्यथा.	अवरिष्येथाम् / अवरीष्येथाम्	अवरिष्यध्वम् / अवरीष्यध्वम्
उ० पु०	अवरिष्ये / अवरीष्ये	अवरिष्यावहि / अवरीष्यावहि	अवरिष्यामहि / अवरीष्यामहि

परस्मैपदी शक्—सकना

लट्

प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुत	शक्नुवन्ति
म० पु०	शक्नोषि	शक्नुथ	शक्नुथ
उ० पु०	शक्नोमि	शक्नुव	शक्नुम

लोट्

प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयु
म० पु०	शक्नुया	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० पु०	शक्नुयाम्'	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लङ्

प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० पु०	अशक्नो	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लिट्

प्र० पु०	शशाक	शेकतु	शेकु.
म० पु०	शेकिथ, शशक्थ	शेकथु	शेक
उ० पु०	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम

लुङ्

प्र० पु०	अशकत्	अशकताम्	अशकन्
म० पु०	अशक	अशकतम्	अशकत
उ० पु०	अशकम	अशकाव	अशकाम

लुट्

प्र० पु०	शक्ता	शक्तारौ	शक्तार
म० पु०	शक्तासि	शक्तास्थ	शक्तास्थ
उ० पु०	शक्तास्मि	शक्तास्व	शक्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	शक्ष्यति	शक्ष्यत	शक्ष्यन्ति
म० पु०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथ	शक्ष्यथ
उ० पु०	शक्ष्यामि	शक्ष्याव	शक्ष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	शक्यात्	शक्यास्ताम्	शक्यासु
म० पु०	शक्या	शक्यास्तम्	शक्यास्त
उ० पु०	शक्यासम्	शक्यास्व	शक्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अशक्ष्यत्	अशक्ष्यताम्	अशक्ष्यन्
म० पु०	अशक्ष्य	अशक्ष्यतम्	अशक्ष्यत
उ० पु०	अशक्ष्यम्	अशक्ष्याव	अशक्ष्याम

आत्मनेपदी अश्—व्याप्त होना

लट्

प्र० पु०	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते
म० पु०	अश्नुषे	अश्नुवाथे	अश्नुध्वे
उ० पु०	अश्नुवे	अश्नुवहे	अश्नुमहे

लोट्

प्र० पु०	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्
म० पु०	अश्नुष्व	अश्नुवाथाम्	अश्नुध्वम्
उ० पु०	अश्नुवि	अश्नुवहि	अश्नुमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	अश्नुवीत	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीरन्
म० पु०	अश्नुवीथा	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीध्वम्
उ० पु०	अश्नुवीय	अश्नुवीवहि	अश्नुवीमहि

लङ्

प्र० पु०	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत
म० पु०	आश्नुथा.	आश्नुवाथाम्	आश्नुध्वम्
उ० पु०	आश्नुवि	आश्नुवहि	आश्नुमहि

लिट्

प्र० पु०	आनशे	आनशाते	आनशिरे
म० पु०	आनशिषे, आनक्षे	आनशाथे	आनशिध्वे
उ० पु०	आनशे	आनशिवहे	आनशिमहे

लुङ्

प्र० पु०	आशिष्ट, आष्ट	आशिषाताम् आक्षाताम्	आशिषत आक्षत
म० पु०	आशिष्ठाः आष्ठाः	आशिषाथाम् आक्षाथाम्	आशिध्वम् आड्वम्
उ० पु०	आशिषि आक्षि	आशिष्वहि आक्ष्वहि	आशिष्महि आक्ष्महि

लुट्

प्र० पु०	अशिता अष्टा	अशितारौ अष्टारौ	अशितारः अष्टारः
म० पु०	अशितासे अष्टासे	अशितासाथे अष्टासाथे	अशिताध्वे अष्टाध्वे
उ० पु०	अशिताहे अष्टाहे	अशितास्वहे अष्टास्वहे	अशितास्महे अष्टास्महे

लृट्

प्र० पु०	अशिष्यते अक्ष्यते	अशिष्येते अक्ष्येते	अशिष्यन्ते अक्ष्यन्ते
म० पु०	अशिष्यसे अक्ष्यसे	अशिष्येथे अक्ष्येथे	अशिष्यध्वे अक्ष्यध्वे
उ० पु०	अशिष्ये अक्ष्ये	अशिष्यावहे अक्ष्यावहे	अशिष्यामहे अक्ष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अशिषीष्ट, अक्षीष्ट	अशिषीयास्ताम् अक्षीयास्ताम्	अशिषीरन् अक्षीरन्
म० पु०	अशिषीष्ठाः अक्षीष्ठाः	अशिषीयास्थाम् अक्षीयास्थाम्	अशिषीध्वम् अक्षीध्वम्
उ० पु०	अशिषीय	अशिषीवहि अक्षीवहि	अशिषीमहि अक्षीमहि

लृङ्

प्र० पु०	आशिष्यत आक्ष्यत	आशिष्येताम् आक्ष्येताम्	आशिष्यन्त आक्ष्यन्त
म० पु०	आशिष्यथाः आक्ष्यथाः	आशिष्येथाम् आक्ष्येथाम्	आशिष्यध्वम् आक्ष्यध्वम्
उ० पु०	आशिष्ये आक्ष्ये	आशिष्यावहि आक्ष्यावहि	आशिष्यामहि आक्ष्यामहि

आप् (प०)—पाना ।

लट्—आप्नोति, आप्नुतः, आप्नुवन्ति ।

लोट्—आप्नोतु, आप्नुताम्, आप्नुवन्तु ।

विधिलिङ्—आप्नुयात्, आप्नुयाताम्, आप्नुयुः।
लङ्—आप्नोत्, आप्नुताम्, आप्नुवन्।
लिट्—आप, आपतुः, आपुः।
लुङ्—आपत्, आपताम्, आपन्।
लुट्—आप्ता, आप्तारौ, आप्तारः।
लृट—आप्स्यति, आप्स्यतः, आप्स्यन्ति।
आशीर्लिङ्—आप्यात्, आप्यास्ताम्, आप्यासुः।
लृङ्—आप्स्यत, आप्स्यताम्, आप्स्यन्।

तुदादिगण

इस गण की पहली धातु तुद् है। इस गण की धातु और प्रत्यय के बीच मे अ जोडा जाता है।

उभयपदी तुद्-पीड़ा पहुँचाना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० पु०	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० पु०	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लोट्

प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लङ्

प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लिट्

प्र० पु०	तुतोद	तुतुदतु	तुतुदु.
म० पु०	तुतोदिथ	तुतुदथु	तुतुद
उ० पु०	तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम

लुङ्

प्र० पु०	अतौत्सीत्	अतौत्ताम	अतौत्सु.
म० पु०	अतौत्सी	अतौत्तम्	अतौत्त
उ० पु	अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म

लुट

प्र० पु०	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तार
म० पु०	तोत्तासि	तोत्तास्थ	तोत्तास्थ
उ० पु०	तोत्तास्मि	तोत्तास्वः	तोत्तास्म.

लृट

प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यत	तोत्स्यन्ति
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथ.	तोत्स्यथ
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्याव·	तोत्स्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासु
म० पु०	तुद्या	तुद्यास्तम	तुद्यास्त
उ० पु०	तुद्यासम्	तुद्यास्व	तुद्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	अतोत्स्यन्
म० पु०	अतोत्स्य·	अतोत्स्यतम्	अतोत्स्यत
उ० पु०	अतोत्स्यम्	अतोत्स्याव	अतोत्स्याम

आत्मनेपद

लट

प्र० पु०	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
म० पु०	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उ० पु०	तुदे	तुदावहे	तुदामहे

लोट्

प्र० पु०	तुदताम्	तुदेताम	तुदन्ताम्
म० पु०	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उ० पु०	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन
म० पु०	तुदेथा	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उ० पु०	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

लङ्

प्र० पु०	अतुदत	अतुदेताम	अतुदन्त
म० पु०	अतुदथा	अतुदेथाम्	अतुदध्वम
उ० पु०	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

लिट्

प्र० पु०	तुतुदे	तुतुदाते	तुतुदिरे
म० पु०	तुतुदिषे	तुतुदाथे	तुतुदिध्वे
उ० पु०	तुतुदे	तुतुदिवहे	तुतुदिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अतुत्त	अतुत्सातताम	अतुत्सत
म० पु०	अतुत्था	अतुत्साथाम्	अतुद्ध्वम्
उ० पु०	अतुत्सि	अतुत्स्वहि	अतुत्स्महि

लुट्

प्र० पु०	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तार
म० पु०	तोत्तासे	तोत्तासाथे	तोत्ताध्वे
उ० पु०	तोत्ताहे	तोत्तास्वहे	तोत्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
म० पु०	तोत्स्यसे	तोत्स्येथे	तोत्स्यध्वे
उ० पु०	तोत्स्ये	तोत्स्यावहे	तोत्स्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तुत्सीष्ट	तुत्सीयास्ताम्	तुत्सीरन्
म० पु०	तुत्सीष्ठा	तुत्सीयास्थाम्	तुत्सीध्वम्
उ० पु०	तुत्सीय	तुत्सीवहि	तुत्सीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अतोत्स्यत	अतोत्स्येताम्	अतोत्स्यन्त
म० पु०	अतोत्स्यथाः	अतोत्स्येथाम्	अतोत्स्यध्वम्
उ० पु०	अतोत्स्य	अतोत्स्यावहि	अतोत्स्यामहि

परस्मैपदी स्पृश् छूना

लट्

प्र० पु०	स्पृशति	स्पृशत	स्पृशन्ति
म० पु०	स्पृशसि	स्पृशथ	स्पृशथ
उ० पु०	स्पृशामि	स्पृशाव	स्पृशाम

लोट्

प्र० पु०	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म० पु०	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उ० पु०	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयु
म० पु०	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ० पु०	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

लङ्

प्र० पु०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
म० पु०	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ० पु०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

लिट

प्र० पु०	पस्पर्श	पस्पृशतुः	पस्पृशु
म० पु०	पस्पर्शिथ	पस्पृशथु	पस्पृश
उ० पु०	पस्पर्श	पस्पृशिव	पस्पृशिम

लुङ्

प्र० पु०	अस्पार्क्षीत्	अस्पार्ष्टाम्	अस्पार्क्षुः
म० पु०	अस्पार्क्षीः	अस्पार्ष्टम्	अस्पार्ष्ट
उ० पु०	अस्पार्क्षम्	अस्पार्क्ष्व	अस्पार्क्ष्म

अस्प्राक्षीत्, अस्पृक्षत् ।

लुट्

प्र० पु०	स्प्रष्टा, स्पर्ष्टा	स्प्रष्टारौ, स्पर्ष्टारौ	स्प्रष्टारः स्पर्ष्टारः
म० पु०	स्प्रष्टासि स्पर्ष्टासि	स्प्रष्टास्थः स्पर्ष्टास्थः	स्प्रष्टास्थ स्पर्ष्टास्थ
उ० पु०	स्प्रष्टास्मि स्पर्ष्टास्मि	स्प्रष्टास्वः स्पर्ष्टास्वः	स्प्रष्टास्मः स्पर्ष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	स्प्रक्ष्यति, स्पर्क्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः स्पर्क्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति स्पर्क्ष्यन्ति
म० पु०	स्प्रक्ष्यसि, स्पर्क्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः स्पर्क्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ स्पर्क्ष्यथ
उ० पु०	स्प्रक्ष्यामि स्पर्क्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः स्पर्क्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः स्पर्क्ष्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	स्पृश्यात्	स्पृश्यास्ताम्	स्पृश्यासुः
म० पु०	स्पृश्याः	स्पृश्यास्तम्	स्पृश्यास्त
उ० पु०	स्पृश्यासम्	स्पृश्याव	स्पृश्याम

लृङ्

प्र० पु०	अस्प्रक्ष्यत् अस्पर्क्ष्यत्	अस्प्रक्ष्यताम् अस्पर्क्ष्यताम्	अस्प्रक्ष्यन् अस्पर्क्ष्यन्
म० पु०	अस्प्रक्ष्यः, अस्पर्क्ष्यः	अस्प्रक्ष्यतम्, अस्पर्क्ष्यतम्	अस्प्रक्ष्यत अस्पर्क्ष्यत
उ० पु०	अस्प्रक्ष्यम्, अस्पर्क्ष्यम्	अस्प्रक्ष्याव अस्पर्क्ष्याव	अस्प्रक्ष्याम अस्पर्क्ष्याम

परस्मैपदी इष्—इच्छा करना

लट्

प्र० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म० पु०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० पु०	इच्छामि	इच्छाव	इच्छाम

लोट

प्र० पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० पु०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उ० पु०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

लङ्

प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म० पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ० पु०	ऐच्छम	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लिट

प्र० पु०	इयेष	ईषतु	ईषु
म० पु०	इयेषिथ	ईषथु	ईष
उ० पु०	इयेष	ईषिव	ईषिम

लुङ्

प्र० पु०	ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः
म० पु०	ऐषीः	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट
उ० पु०	ऐषिषम्	ऐषिष्व	ऐषिष्म

लुट्

प्र० पु०	एषिता / एष्टा	एषितारौ / एष्टारौ	एषितारः / एष्टारः
म० पु०	एषितासि / एष्टासि	एषितास्थः / एष्टास्थः	एषितास्थ / एष्टास्थ
उ० पु०	एषितास्मि / एष्टास्मि	एषितास्वः / एष्टास्वः	एषितास्मः / एष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	एषिष्यति	एषिष्यत	एषिष्यन्ति
म० पु०	एषिष्यसि	एषिष्यथ	एषिष्यथ
उ० पु०	एषिष्यामि	एषिष्याव	एषिष्याम.

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासु
म० पु०	इष्या.	इष्यास्तम्	इष्यास्त
उ० पु०	इष्यासम	इष्यास्व	इष्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्
म० पु०	ऐषिष्य	ऐषिष्यतम्	ऐषिष्यत
उ० पु०	ऐषिष्यम	ऐषिष्याव	ऐषिष्याम

परस्मैपदी प्रच्छ्—पूछना

लट्

प्र० पु०	पृच्छति	पृच्छत	पृच्छन्ति
म० पु०	पृच्छसि	पृच्छथ	पृच्छथ
उ० पु०	पृच्छामि	पृच्छाव	पृच्छामः

लोट

प्र० पु०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० पु०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० पु०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु
म० पु०	पृच्छे	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लङ्

प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० पु०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० पु०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लिट्

प्र० पु०	पप्रच्छ	पप्रच्छतु	पप्रच्छु
म० पु०	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
उ० पु०	पप्रच्छ	पप्रच्छव	पप्रच्छिम

लुङ

प्र० पु०	अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षु
म० पु०	अप्राक्षी	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
उ० पु०	अप्राक्षम	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म

लुट

प्र० पु०	प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टार
म० पु०	प्रष्टासि	प्रष्टास्थ	प्रष्टास्थ
उ० पु०	प्रष्टास्मि	प्रष्टास्व	प्रष्टास्म

लृट्

प्र० पु०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत	प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यथ
उ० पु०	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्याव	प्रक्ष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	पृच्छ्यात्	पृच्छ्यास्ताम्	पृच्छ्यासु
म० पु०	पृच्छ्या	पृच्छ्यास्तम	पृच्छ्यास्त
उ० पु०	पृच्छ्यासम्	पृच्छ्यास्व	पृच्छ्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अप्रक्ष्यत्	अप्रक्ष्यताम्	अप्रक्ष्यन्
म० पु०	अप्रक्ष्य	अप्रक्ष्यतम्	अप्रक्ष्यत
उ० पु०	अप्रक्ष्यम्	अप्रक्ष्याव	अप्रक्ष्याम

उभयपदी कृष्–जोतना

परस्मैपद

लट

प्र० पु०	कृषति	कृषत॰	कृषन्ति
म० पु०	कृषसि	कृषथ	कृषथ
उ० पु०	कृषामि	कृषाव	कृषाम

लोट्

प्र० पु०	कृषतु	कृषताम्	कृषन्तु
म० पु०	कृष	कृषतम्	कृषत
उ० पु०	कृषाणि	कृषाव	कृषाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कृषेत	कृषेताम्	कृषेयु
म० पु०	कृषे	कृषेतम्	कृषेत
उ० पु०	कृषेयम	कृषेव	कृषेम

लङ्

प्र० पु०	अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्
म० पु०	अकृष॰	अकृषतम	अकृषत
उ० पु०	अकृषम्	अकृषाव	अकृषाम

लिट्

प्र० पु०	चकष	चकृषतु॰	चकृषु
म० पु०	चकर्षिथ	चकृषथु	चकृष
उ० पु०	चकर्ष	चकृषिव	चकृषिम

लुङ्

प्र० पु०	अकार्क्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकाक्षु
म० पु०	अकार्क्षी	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
उ० पु०	अकार्क्षम्	अकार्क्ष्व	अकाक्ष्म

अक्राक्षीत्, अकृक्षत् ।

लुट्

प्र० पु०	कर्ष्टा क्रष्टा	कर्ष्टारौ क्रष्टारौ	कर्ष्टारः क्रष्टारः
म० पु०	कर्ष्टासि क्रष्टासि	कर्ष्टास्थः क्रष्टास्थः	कर्ष्टास्थ क्रष्टास्थ
उ० पु०	कर्ष्टास्मि क्रष्टास्मि	कर्ष्टास्वः क्रष्टास्वः	कर्ष्टास्मः क्रष्टास्मः

लृट्

प्र० पु०	कर्क्ष्यति क्रक्ष्यति	कर्क्ष्यतः क्रक्ष्यतः	कर्क्ष्यन्ति क्रक्ष्यन्ति
म० पु०	कर्क्ष्यसि क्रक्ष्यसि	कर्क्ष्यथः क्रक्ष्यथः	कर्क्ष्यथ क्रक्ष्यथ
उ० पु०	कर्क्ष्यामि क्रक्ष्यामि	कर्क्ष्यावः क्रक्ष्यावः	कर्क्ष्यामः क्रक्ष्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	कृष्यात्	कृष्यास्ताम्	कृष्यासुः
म० पु०	कृष्याः	कृष्यास्तम्	कृष्यास्त
उ० पु०	कृष्यासम्	कृष्यास्व	कृष्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अकर्क्ष्यत् अक्रक्ष्यत्	अकर्क्ष्यताम् अक्रक्ष्यताम्	अकर्क्ष्यन् अक्रक्ष्यन्
म० पु०	अकर्क्ष्यः अक्रक्ष्यः	अकर्क्ष्यतम् अक्रक्ष्यतम्	अकर्क्ष्यत अक्रक्ष्यत
उ० पु०	अकर्क्ष्यम् अक्रक्ष्यम्	अकर्क्ष्याव अक्रक्ष्याव	अकर्क्ष्याम अक्रक्ष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	कृषते	कृषेते	कृषन्ते
म० पु०	कृषसे	कृषेथे	कृषध्वे
उ० पु०	कृषे	कृषावहे	कृषामहे

लोट्

प्र० पु०	कृषताम	कृषेताम्	कृष ताम
म० पु०	कृषस्व	कृषेयाम्	कृषध्वम्
उ० पु०	कृषै	कृषावहै	कृषामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	कृषत	कृषेयाताम्	कृषेरन्
म० पु०	कृषेथा	कृषेयाथाम	कृषेध्वम्
उ० पु०	कृषय	कृषवहि	कृषेमहि

लङ्

प्र० पु०	अकृषत	अकृषेताम	अकृषन्त
म० पु०	अकृषथा	अकृषेयाम	अकृषध्वम्
उ० पु०	अकृषे	अकृषावहि	अकृषामहि

लिट्

प्र० पु०	चकृषे	चकृषाते	चकृषिरे
म० पु०	चकृषिषे	चकृष थे	चकृषिध्वे
उ० पु०	चकृषे	चकृषिवहे	चकृषिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अकृष्ट, अकृक्षत	अकृक्षाताम	अकृक्ष त
म० पु०	अकृष्ठा:, अकृक्षथा	अकृक्षाथाम	अकृड्ढ्वम् अकृक्षध्वम्
उ० पु०	अकृक्षि	अकृक्ष्वहि अकृक्षावहि	अकृक्ष्महि अकृक्षामहि

लुट

प्र० पु०	क्रष्टा, कर्ष्टा	क्रष्टारौ, कर्ष्टारौ	क्रष्टार , कर्ष्टारः
म० पु०	क्रष्टासे, कर्ष्टासे	क्रष्टासाथे कर्ष्टासाथे	क्रष्टाध्वे, कर्ष्टाध्वे
उ० पु०	क्रष्टाहे कर्ष्टाहे	क्रष्टास्वहे कर्ष्टास्वहे	क्रष्टास्महे कर्ष्टास्महे

लृट्

प्र० पु०	क्रक्ष्यते, कर्क्ष्यते	क्रक्ष्येते, कर्क्ष्येते	क्रक्ष्यन्ते, कर्क्ष्यन्ते
म० पु०	क्रक्ष्यसे कर्क्ष्यसे	क्रक्ष्येथे कर्क्ष्येथे	क्रक्ष्यध्वे कर्क्ष्यध्वे
उ० पु०	क्रक्ष्ये, कर्क्ष्ये	क्रक्ष्यावहे कर्क्ष्यावहे	क्रक्ष्यामहे कर्क्ष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	कृक्षीष्ट	कृक्षीयास्ताम्	कृक्षीरन्
म० पु०	कृक्षीष्ठाः	कृक्षीयास्थाम्	कृक्षीढ्वम्
उ० पु०	कृक्षीय	कृक्षीवहि	कृक्षीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अक्रक्ष्यत, अकर्क्ष्यत	अक्रक्ष्येताम् अकर्क्ष्येताम्	अक्रक्ष्यन्त अकर्क्ष्यन्त
म० पु०	अक्रक्ष्यथाः अकर्क्ष्यथाः	अक्रक्ष्येथाम् अकर्क्ष्येथाम्	अक्रक्ष्यध्वम् अकर्क्ष्यध्वम्
उ० पु०	अक्रक्ष्ये अकर्क्ष्ये	अक्रक्ष्यावहि अकर्क्ष्यावहि	अक्रक्ष्यामहि अकर्क्ष्यामहि

उभयपदी सिच्–सीचना

परस्मैपद

लट्	सिञ्चति	सिञ्चतः	सिञ्चन्ति
लोट्	सिञ्चतु	सिञ्चताम्	सिञ्चन्तु
विधिलिङ्	सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयुः
लङ्	असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्
लिट्	सिषेच	सिषिचतुः	सिषिचुः
लुङ्	असिचत्	असिचताम्	असिचन्
लुट्	सेक्ता	सेक्तारौ	सेक्तारः
लृट्	सेक्ष्यति	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यन्ति
आशीर्लिङ्	सिच्यात्	सिच्यास्ताम्	सिच्यासुः
लृङ्	असेक्ष्यत्	असेक्ष्यताम्	असेक्ष्यन्

उभयपदी मुच्-छोडना

परस्मैपद

लट	मुञ्चति	मुञ्चत	मुञ्चन्ति
लोट्	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
विधिलिङ्	मुञ्चेत	मुञ्चेताम	मुञ्चेयुः
लङ्	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
लिट्	मुमोच	मुमुचतु	मुमुचु•
लुङ्	अमुचत्	अमुचताम्	अमुचन
लुट्	मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
लृट्	मोक्ष्यति	मोक्ष्यत	मोक्ष्यन्ति
आशीर्लिङ्	मुच्यात्	मुच्यास्ताम	मुच्यासु
लृङ्	अमोक्ष्यत्	अमोक्ष्यताम्	अमोक्ष्यन्

परस्मैपदी मस्ज्-नहाना

लट्	मज्जति	मज्जत	मज्जन्ति
लोट्	मज्जतु	मज्जताम्	मज्जन्तु
विधिलिङ्	मज्जेत्	मज्जेताम्	मज्जेयु
लङ्	अमज्जत्	अमज्जताम्	अमज्जन्
लिट्	ममज्ज	ममज्जतु	ममज्जु
लुङ्	अमाङ्क्षीत्	अमाङ्क्ताम्	अमाङ्क्षुः
लुट्	मङ्क्ता	मङ्क्तारौ	मङ्क्तार
लृट्	मङ्क्ष्यति	मङ्क्ष्यत	मङ्क्ष्यन्ति
आशीर्लिङ्	मज्ज्यात्	मज्ज्यास्ताम	मज्ज्यासु
लृङ्	अमङ्क्ष्यत्	अमङ्क्ष्यताम्	अमङ्क्ष्यन्

आत्मनेपदी मृ-मरना

लट्	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
लोट्	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
विधिलिङ्	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
लङ्	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
लिट्	ममार	मम्रतु	मम्रु

लुङ्	अमृत	अमृषाताम्	अमृषत
लुट्	मर्ता	मर्तारौ	मर्तार
लृट	मरिष्यति	मरिष्यत	मरिष्यंति
आशीर्लिङ	मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	मृषीरन्
लृङ	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम	अमरिष्यन्

इस गण की कुछ धातुएँ ये हैं—

कृत् (प०)—काटना, कृन्तति ।

कृ (प०)—बिखेरना, किरति ।

गृ (प०) - निगलना, गिरति ।

त्रुट (प०)—टूटना त्रुटति ।

मिल् (उ०)—मिलना । मिलति, मिलते ।

रुज (प०)—तोडना, रुजति ।

लिख् (प०)—लिखना, लिखति ।

विश् (प०)—घुसना, विशति ।

सृज् (प०)—बनाना, सृजति ।

स्फुट् (प०)—खिलना, स्फुटति ।

स्फुर् (प०)—हिलना डुलना, चमकना । स्फुरति ।

रुधादिगण

इस गण की पहली धातु रुध् (रोकना) है । इस गण की धातुओ में प्रथम स्वर के बाद न या न् जोडा जाता है ।

उभयपदी रुध्

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
म० पु०	रुणत्सि	रुन्ध	रुन्ध
उ० पु०	रुणध्मि	रुन्ध्व	रुन्ध्मः

लोट्

प्र० पु०	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
म० पु०	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध
उ० पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुन्ध्यात	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्यु॰
म० पु०	रुन्ध्या	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० पु०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

लङ्

प्र० पु०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म० पु०	अरुणत्–अरुण॰	अरुन्धम	अरुन्ध
उ० पु०	अरुणधम	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

लिट्

प्र० पु०	रुरोध	रुरुधतु	रुरुधु
म० पु०	रुरोधिथ	रुरुधथु	रुरुध
उ० पु०	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम

लुङ्

प्र० पु०	अरुधत् अरौत्सीत्	अरुधताम् अरोद्धाम्	अरुधन अरौत्सु
म० पु०	अरुध अरौत्सी	अरुधतम् अरोद्धम्	अरुधत अरोद्ध
उ० पु०	अरुधम् अरौत्सम्	अरुधाव अरौत्स्व	अरुधाम अरौत्स्म

लुट

प्र० पु०	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धार
म० पु०	रोद्धासि	रोद्धास्थ	रोद्धास्थ
उ० पु०	रोद्धास्मि	रोद्धास्व	रोद्धास्मः

लृट्

प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यत	रोत्स्यन्ति
म० पु०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथ	रोत्स्यथ
उ० पु०	रोत्स्यामि	रोत्स्याव.	रोत्स्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासु
म० पु०	रुध्या	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त
उ० पु०	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्
म० पु०	अरोत्स्यः	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत
उ० पु०	अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म० पु०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ० पु०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लोट्

प्र० पु०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म० पु०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ० पु०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म० पु०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ० पु०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

लङ्

प्र० पु०	अरुन्ध	अरुन्धताम्	अरुन्धत
म० पु०	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ० पु०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

लिट्

प्र० पु०	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
म० पु०	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
उ० पु०	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
म० पु०	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्
उ० पु०	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि

लुट्

प्र० पु०	रोद्धा	राद्धारौ	रोद्धार
म० पु०	रोद्धासे	रोद्धासाथे	रोद्धाध्वे
उ० पु०	रोद्धाहे	राद्धास्वहे	राद्धास्महे

लृट्

प्र० पु०	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
म० पु०	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रात्स्यध्वे
उ० पु०	रोत्स्ये	रात्स्यावहे	रोत्स्यामहे

आशीलिङ्

प्र० पु०	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्
म० पु०	रुत्सीष्ठा	रुत्सीयास्थाम	रुत्सीध्वम
उ० पु०	रुत्सीय	रुत्सीवहि	रुत्सीमहि

लृङ

प्र० पु०	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	अरोत्स्यन्त
म० पु०	अरोत्स्यथा	अरोत्स्येथाम्	अरोत्स्यध्वम्
उ० पु०	अरोत्स्ये	अरोत्स्यावहि	अरोत्स्यामहि

उभयपदी भुज्—रक्षा करना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	भुनक्ति	भुङ्क्त	भुञ्जन्ति
म० पु०	भुनक्षि	भुङ्क्थ	भुङ्क्थ
उ० पु०	भुनज्मि	भुञ्ज्व	भुञ्ज्म

लोट्

प्र० पु०	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
म० पु०	भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त
उ० पु०	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
म० पु०	भुञ्ज्या	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उ० पु०	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

लङ्

प्र० पु०	अभुनक्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
म० पु०	अभुनक	अभुङ्क्तम	अभुङ्क्त
उ० पु०	अभुनजम	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म

लिट्

प्र० पु०	बुभोज	बुभुजतु	बभुजु
म० पु०	बुभोजिथ	बुभुजथु	बुभुज
उ० पु०	बुभोज	बुभुजिव	बुभुजिम

लुङ्

प्र० पु०	अभौक्षीत्	अभौक्ताम	अभौक्षु.
म० पु०	अभौक्षी	अभौक्तम	अभौक्त
उ० पु०	अभौक्षम्	अभौक्ष्व	अभौक्ष्म

लुट्

प्र० पु०	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तार
म० पु०	भोक्तासि	भोक्तास्थ	भोक्तास्थ
उ० पु०	भोक्तास्मि	भोक्तास्व	भोक्तास्म

लृट

प्र० पु०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यत	भोक्ष्यन्ति
म० पु०	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथ	भोक्ष्यथ
उ० पु०	भोक्ष्यामि	भोक्ष्याव.	भोक्ष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भुज्यात्	भुज्यास्ताम्	भुज्यासु
म० पु०	भुज्याः	भुज्यास्तम्	भुज्यास्त
उ० पु०	भुज्यासम्	भुज्यास्व	भुज्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	अभोक्ष्यन्
म० पु०	अभोक्ष्य	अभोक्ष्यतम्	अभोक्ष्यत
उ० पु०	अभोक्ष्यम्	अभोक्ष्याव	अभोक्ष्याम

आत्मनेपद

लट

प्र० पु०	भुङक्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० पु०	भुङक्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लोट्

प्र० पु०	भुङक्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङग्ध्वम
उ० पु०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म० पु०	भुञ्जीथा	भुञ्जीयाथाम	भुञ्जीध्वम्
उ० पु०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

लङ्

प्र० पु०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म० पु०	अभुङ्क्था	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उ० पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

लिट्

प्र० पु०	बुभुजे	बुभुजाते	बुभुजिरे
म० पु०	बुभुजिषे	बुभुजाथे	बुभुजिध्वे
उ० पु०	बुभुजे	बुभुजिवहे	बुभुजिमहे

लुङ

प्र० पु०	अभुक्त	अभुक्षाताम्	अभुक्षत
म० पु०	अभुक्था	अभुक्षाथाम्	अभुग्ध्वम्
उ० पु०	अभुक्षि	अभुक्ष्वहि	अभुक्ष्महि

लुट्

प्र० पु०	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तार
म० पु०	भोक्तासे	भोक्तासाथे	भोक्ताध्वे
उ० पु०	भोक्ताहे	भोक्तास्वहे	भोक्तास्महे

लृट

प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्याम हे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	भुक्षीरन्
म० पु०	भुक्षीष्ठा	भुक्षीयास्थाम्	भुक्षीध्वम्
उ० पु०	भुक्षीय	भुक्षीवहि	भुक्षीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्येताम्	अभोक्ष्यन्त
म० पु०	अभोक्ष्यथा	अभोक्ष्येथाम्	अभोक्ष्यध्वम्
उ० पु०	अभोक्ष्ये	अभोक्ष्यावहि	अभोक्ष्यामहि

उभयपदी छिद्—काटना

परस्मैपद

लट

प्र० पु०	छिनत्ति	छिन्त	छिन्दन्ति
म० पु०	छिनत्सि	छिन्त्थ	छिन्त्थ
उ० पु०	छिनद्मि	छिन्द्व	छिन्द्म

लोट

प्र० पु०	छिनत्तु	छिन्ताम्	छिन्दन्तु
म० पु०	छिन्द्धि	छिन्तम्	छिन्त
उ० पु०	छिनदानि	छिनदाव	छिनदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	छिन्द्यात्	छिन्द्याताम्	छिन्द्युः
म० पु०	छिन्द्या	छिन्द्यातम्	छिन्द्यात
उ० पु०	छिन्द्याम्	छिन्द्याव	छिन्द्याम

लङ्

प्र० पु०	अच्छिनत्	अच्छिन्ताम्	अच्छिन्दन्
म० पु०	अच्छिन	अच्छिन्तम्	अच्छिन्त
उ० पु०	अच्छिनदम्	अच्छिन्द्व	अच्छिन्द्म

लिट्

प्र० पु०	चिच्छेद	चिच्छिदतु	चिच्छिदु
म० पु०	चिच्छेदिथ	चिच्छिदथु	चिच्छिद
उ० पु०	चिच्छेद	चिच्छिदिव	चिच्छिदिम

लुङ्

प्र० पु०	अच्छिदत	अच्छिदताम्	अच्छिदन्
म० पु०	अच्छिद	अच्छिदतम	अच्छिदत
उ० पु०	अच्छिदम्	अच्छिदाव	अच्छिदाम

या

•	अच्छैत्सीत्	अच्छैत्ताम्	अच्छैत्सु
	अच्छैत्सी	अच्छैत्तम	अच्छैत्त
	अच्छैत्सम्	अच्छैत्स्व	अच्छैत्स्म

लुट्

प्र० पु०	छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तार
म० पु०	छेत्तासि	छेत्तास्थः	छेत्तास्थ
उ० पु०	छेत्तास्मि	छेत्तास्व	छेत्तास्म

लृट्

प्र० पु०	छेत्स्यति	छेत्स्यत	छेत्स्यन्ति
म० पु०	छेत्स्यसि	छेत्स्यथ	छे स्यथ
उ० पु०	छेत्स्यामि	छेत्स्याव	छेत्स्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	छिद्यात्	छिद्यास्ताम्	छिद्यासु
म० पु०	छिद्या	छिद्यास्तम्	छिद्यास्त
उ० पु०	छिद्यासम	छिद्यास्व	छिद्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अच्छेत्स्यत्	अच्छेत्स्यताम्	अच्छेत्स्यन्
म० पु०	अच्छेत्स्य.	अच्छेत्स्यतम्	अच्छेत्स्यत
उ० पु०	अच्छेत्स्यम	अच्छेत्स्याव	अच्छेत्स्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	छिन्ते	छिन्दाते	छिन्दते
म० पु०	छिन्त्से	छिन्दाथे	छिन्द्ध्वे
उ० पु०	छिन्दे	छिन्द्वहे	छिन्द्महे

लोट्

प्र० पु०	छिन्ताम्	छिन्दाताम्	छिन्दताम्
म० पु०	छिन्त्स्व	छिन्दाथाम्	छिन्द्ध्वम्
उ० पु०	छिनदै	छिनदावहै	छिनदामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	छिन्दीत	छिन्दीयाताम्	छिन्दीरन्
म० पु०	छिन्दीथाः	छिन्दीयाथाम्	छिन्दीध्वम्
उ० पु०	छिन्दीय	छिन्दीवहि	छिन्दीमहि

लङ्

प्र० पु०	अच्छिन्त	अच्छिन्दाताम्	अच्छिन्दत
म० पु०	अच्छिन्थाः	अच्छिन्दाथाम्	अच्छिन्द्ध्वम्
उ० पु०	अच्छिन्दि	अच्छिन्द्वहि	अच्छिन्द्महि

लिट्

प्र० पु०	चिच्छिदे	चिच्छिदाते	चिच्छिदिरे
म० पु०	चिच्छिदिषे	चिच्छिदाथे	चिच्छिदिध्वे
उ० पु०	चिच्छिदे	चिच्छिदिवहे	चिच्छिदिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अच्छित्त	अच्छित्साताम्	अच्छित्सत
म० पु०	अच्छित्थाः	अच्छित्साथाम्	अच्छिद्ध्वम्
उ० पु०	अच्छित्सि	अच्छित्स्वहि	अच्छित्स्महि

लुट्

प्र० पु०	छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तारः
म० पु०	छेत्तासे	छेत्तासाथे	छेत्ताध्वे
उ० पु०	छेत्ताहे	छेत्तास्वहे	छेत्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	छेत्स्यते	छेत्स्येते	छेत्स्यन्ते
म० पु०	छेत्स्यसे	छेत्स्येथे	छेत्स्यध्वे
उ० पु०	छेत्स्ये	छेत्स्यावहे	छेत्स्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	छित्सीष्ट	छित्सीयास्ताम्	छित्सीरन्
म० पु०	छित्सीष्ठाः	छित्सीयास्थाम्	छित्सीध्वम्
उ० पु०	छित्सीय	छित्सीवहि	छित्सीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अच्छेत्स्यत	अच्छेत्स्येताम्	अच्छेत्स्यन्त
म० पु०	अच्छेत्स्यथा	अच्छेत्स्येथाम्	अच्छेत्स्यध्वम्
उ० पु०	अच्छेत्स्ये	अच्छेत्स्यावहि	अच्छेत्स्यामहि

भिद् — तोड़ना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति
म० पु०	भिनत्सि	भिन्त्थः	भिन्त्थ
उ० पु०	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः

लोट्

प्र० पु०	भिनत्तु	भिन्ताम्	भिन्दन्तु
म० पु०	भिन्धि	भिन्तम्	भिन्त
उ० पु०	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः
म० पु०	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
उ० पु०	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम

लङ्

प्र० पु०	अभिनत्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्
म० पु०	अभिनः	अभिन्तम्	अभिन्त
उ० पु०	अभिनदम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म

लिट्

प्र० पु०	बिभेद	बिभिदतुः	बिभिदुः
म० पु०	बिभेदिथ	बिभिदथुः	बिभिद
उ० पु०	बिभेद	बिभिदिव	बिभिदिम

लुङ्

प्र० पु०	अभिदत्, अभैत्सीत्	अभिदताम्, अभैत्ताम्	अभिदन्, अभैत्सुः
म० पु०	अभिदः, अभैत्सीः	अभिदतम्, अभैत्तम्	अभिदत, अभैत्त
उ० पु०	अभिदम्, अभैत्सम्	अभिदाव, अभैत्स्व	अभिदाम, अभैत्स्म

लुट्

प्र० पु०	भेत्ता	भेत्तारौ	भेत्तार
म० पु०	भेत्तासि	भेत्तास्थ	भेत्तास्थ
उ० पु०	भेत्तास्मि	भेत्तास्व	भेत्तास्म

लृट्

प्र० पु०	भेत्स्यति	भेत्स्यत	भेत्स्यन्ति
म० पु०	भेत्स्यसि	भेत्स्यथ॰	भेत्स्यथ
उ० पु०	भेत्स्यामि	भेत्स्याव	भेत्स्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भिद्यात	भिद्यास्ताम	भिद्यासु
म० पु०	भिद्या	भिद्यास्तम्	भिद्यास्त
उ० पु०	भिद्यासम्	भिद्यास्व	भिद्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अभेत्स्यत्	अभेत्स्यताम्	अभेत्स्यन्
म० पु०	अभेत्स्य	अभेत्स्यतम्	अभेत्स्यत
उ० पु०	अभेत्स्यम्	अभेत्स्याव	अभेत्स्याम

भञ्ज्–तोड़ना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	भनक्ति	भङ्क्त.	भञ्जन्ति
म० पु०	भनक्षि	भङ्क्थ	भङ्क्थ
उ० पु०	भनज्मि	भञ्ज्व	भञ्ज्म

लोट्

प्र० पु०	भनक्तु	भङ्क्ताम्	भञ्जन्तु
म० पु०	भङ्ग्धि	भङ्क्तम्	भङ्क्त
उ० पु०	भनजानि	भनजाव	भनजाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भञ्ज्यात्	भञ्ज्याताम्	भञ्ज्युः
म० पु०	भञ्ज्याः	भञ्ज्यातम्	भञ्ज्यात
उ० पु०	भञ्ज्याम्	भञ्ज्याव	भञ्ज्याम

लङ्

प्र० पु०	अभनक्	अभङ्क्ताम्	अभञ्जन्
म० पु०	अभनक्	अभङ्क्तम	अभङ्क्त
उ० पु०	अभनजम्	अभञ्ज्व	अभञ्ज्म

लिट्

प्र० पु०	बभञ्ज	बभञ्जतु	बभञ्जु:
म० पु०	बभञ्जिथ, बभङ्क्थ	बभञ्जथु	बभञ्ज
उ० पु०	बभञ्ज	बभञ्जिव	बभञ्जिम

लुङ्

प्र० पु०	अभाङ्क्षीत्	अभाङ्क्ताम्	अभाङ्क्षुः
म० पु०	अभाङ्क्षी	अभाङ्क्तम्	अभाङ्क्त
उ० पु०	अभाङ्क्षम्	अभाङ्क्ष्व	अभाङ्क्ष्म

लुट्

प्र० पु०	भङ्क्ता	भङ्क्तारौ	भङ्क्तारः
म० पु०	भङ्क्तासि	भङ्क्तास्थ	भङ्क्तास्थ
उ० पु०	भङ्क्तास्मि	भङ्क्तास्व	भङ्क्तास्मः

लृट्

प्र० पु०	भङ्क्ष्यति	भङ्क्ष्यत	भङ्क्ष्यन्ति
म० पु०	भङ्क्ष्यसि	भङ्क्ष्यथ	भङ्क्ष्यथ
उ० पु०	भङ्क्ष्यामि	भङ्क्ष्याव	भङ्क्ष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भज्यात्	भज्यास्ताम्	भज्यासु
म० पु०	भज्या	भज्यास्तम्	भज्यास्त
उ० पु०	भज्यासम्	भज्यास्व	भज्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अभङ्क्ष्यत	अभङ्क्ष्यताम्	अभङ्क्ष्यन्
म० पु०	अभङ्क्ष्य	अभङ्क्ष्यतम्	अभङ्क्ष्यत
उ० पु०	अभङ्क्ष्यम्	अभङ्क्ष्याव	अभङ्क्ष्याम

इनके अतिरिक्त इस गण की कुछ धातुएँ ये हैं—

युज् (उ०)—मिलाना। युनक्ति, युङ्क्ते।

रिच् (उ०)—खाली करना। रिणक्ति, रिङ्क्ते।

अञ्ज् (प०)—स्वच्छ करना, लीपना, सजाना, जाना। अनक्ति।
इन्ध् (आ०)—चमकना, इन्धे।
कृत् (प० —घेरना, कृणत्ति।

तनादिगण

इस गण की प्रथम धातु तन् है। इस गण की धातु और प्रत्यय के बीच में उ जोड़ा जाता है।

उभयपदी तन्—फैलाना

परस्मैपद

लिट्

प्र० पु०	तनोति	तनुत	तन्वति
म० पु०	तनोषि	तनुथ	तनुथ
उ० पु०	तनोमि	{ तनुव तन्व	{ तनुम तन्म

लोट्

प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
म० पु०	तनु	तनुतम	तनुत
उ० पु०	तनवानि	तनवाव	तनवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तनुयात	तनुयाताम्	तनुयु
म० पु०	तनुया	तनुयातम्	तनुयात
उ० पु०	तनुयाम	तनुयाव	तनुयाम

लङ्

प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० पु०	अतनो	अतनुतम्	अतनुत
उ० पु०	अतनवम	{ अतनुव अतन्व	{ अतनुम अतन्म

लिट्

प्र० पु०	ततान	तेनतु	तेनु
म० पु०	तेनिथ	तेनथु	तेन
उ० पु०	ततान, ततन	तेनिव	तेनिम

लुङ्

प्र० पु०	अतनीत् अतानीत्	अतनिष्टाम अतानिष्टाम्	अतनिषु अतानिषु
म० पु०	अतनी अतानी	अतनिष्टम् अतानिष्टम्	अतनिष्ट अतानिष्ट
उ० पु०	अतनिषम् अतानिषम	अतनिष्व अतानिष्व	अतनिष्म अतानिष्म

लुट

प्र० पु०	तनिता	तनितारौ	तनितारः
म० पु०	तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ
उ० पु०	तनितास्मि	तनितास्व	तनितास्म

लृट

प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथ	तनिष्यथ
उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्याव	तनिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासु
म० पु०	तन्या	तन्यास्तम्	तन्यास्त
उ० पु०	तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म

लृङ

प्र० पु०	अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्
म० पु०	अतनिष्य	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत
उ० पु०	अतनिष्यम्	अतनिष्याव	अतनिष्याम

आत्मनेपद

लट

प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० पु०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० पु०	तन्वे	तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे

लोट्

प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० पु०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ० पु०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म० पु०	तन्वीथा	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ० पु०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

लङ्

प्र० पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म० पु०	अतनुथा	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ० पु०	अतन्वि	{ अतनुवहि { अतन्वहि	{ अतनुमहि { अतन्महि

लिट्

प्र० पु०	तेने	तेनाते	तेनिरे
म० पु०	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
उ० पु०	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अतत, अतनिष्ट	अतनिषाताम्	अतनिषत
म० पु०	अतथा, अतनिष्ठा	अतनिषाथाम्	अतनिध्वम्
उ० पु०	अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि

लुट्

प्र० पु०	तनिता	तनितारौ	तनितार.
म० पु०	तनितासे	तनितासाथे	तनिताध्वे
उ० पु०	तनिताहे	तनितास्वहे	तनितास्महे

लृट्

प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० पु०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० पु०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	तनिषीरन्
म० पु०	तनिषीष्ठा	तनिषीयास्थाम्	तनिषीध्वम्
उ० पु०	तनिषीय	तनिषीवहि	तनिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	अतनिष्यन्त
म० पु०	अतनिष्यथा.	अतनिष्येथाम्	अतनिष्यध्वम्
उ० पु०	अतनिष्ये	अतनिष्यावहि	अतनिष्यामहि

उभयपदी कृ-करना
परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	करोति	कुरुत	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	करुथ	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्व	कुर्म

लोट्

प्र० पु०	करोतु	कुरुनाम	कुवन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुनम्	कुरुन
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्यानाम्	कुर्यु
म० पु०	कुर्या	कुर्यातम	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्यात्र	कुर्याम

लङ्

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुनाम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरो	अकुरुनम्	अकुरुन
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्वं	अकुर्म

लिट्

प्र० पु०	चकार	चक्रतु	चक्रु
म० पु०	चकर्थ	चक्रथु	चक्र
उ० पु०	चकार, चकर	चकृव	चकृम

लुङ्

प्र० पु०	अकर्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षु
म० पु०	अकार्षी.	अकाष्टम	अकाष्ट
उ० पु०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म

लुट्

प्र० पु०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तार
म० पु०	कर्त्तासि	कर्त्तास्थ	कर्तास्थ
उ० पु०	कर्त्तास्मि	कर्त्तास्व	कर्त्तास्मः

लृट

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यत	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथ	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्याव	करिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्रियात्	क्रियास्ताम	क्रियासु
म० पु०	क्रिया	क्रियास्तम	क्रियास्त
उ० पु०	क्रियासम	क्रियास्व	क्रियास्म

लृङ

प्र० पु०	अकरिष्यत	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
म० पु०	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
उ० पु०	अकरिष्यम	अकरिष्याव	अकरिष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुवते
म० पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	कुर्वे	कुवहे	कुमहे

लोट्

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुवताम
म० पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम	कुरुध्वम्
उ० पु०	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ

प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० पु०	कुर्वीथा	कुर्वीयाथाम	कुर्वीध्वम
उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लङ्

प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुवत
म० पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुमहि

लिट्

प्र० पु०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
म० पु०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
उ० पु०	चक्र	चकृवहे	चकृमहे

लुङ्

प्र० पु०	अकृत	अकृषाताम	अकृषत
म० पु०	अकृथा	अकृषाथाम	अकृढवम
उ० पु०	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

लुट

प्र० पु०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तार
म० पु०	कर्त्तास	कर्त्तासाथे	कर्त्ताध्वे
उ० पु०	कर्त्ताहे	कर्त्तास्वहे	कर्त्तास्महे

लृट्

प्र० पु०	कारष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यमे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	कृषाष्ट	कृषीयास्ताम	कृषीरन्
म० पु०	कृषष्ठा	कृषायास्थाम	कृषीध्वम
उ० पु०	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
म० पु०	अकरिष्यथा	अकरिष्येथाम	अकरिष्यध्वम्
उ० पु०	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

क्र्यादिगण

इस गण की प्रथम धातु क्री (खरीदना) है। इस गण की धातु और प्रत्यय के बीच में ना जोड़ा जाता है। कुछ प्रत्ययों के पहले ना के स्थान पर न और कुछ के पहले नी हो जाता है।

उभयपदी क्री

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीत	क्रीणन्ति
म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथ	क्रीणीथ
उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीव	क्रीणीम.

लोट्

प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयु
म० पु०	क्रीणीया	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० पु०	क्रीणीयाम	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लङ्

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० पु०	अक्रीणा	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० पु०	अक्रीणाम	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लिट्

प्र० पु०	चिक्राय	चिक्रियतु.	चिक्रियु
म० पु०	चिक्रयिथ, चिक्रेथ	चिक्रियथु·	चिक्रिय
उ० पु०	चिक्राय, चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

लुङ्

प्र० पु०	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषु
म० पु०	अक्रैषी	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
उ० पु०	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

लुट्

प्र० पु०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतार
म० पु०	क्रेतासि	क्रेतास्थ	क्रेतास्थ
उ० पु०	क्रेतास्मि	क्रेतास्व	क्रेतास्मः

लृट्

प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यत	क्रेष्यन्ति
म० पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथ	क्रेष्यथ
उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्याव	क्रेष्याम

आशीलिङ्

प्र० पु०	क्रीयात	क्रीयास्ताम्	क्रीयासु.
म० पु०	क्रीया	क्रीयास्तम	क्रीयास्त
उ० पु०	क्रीयासम	क्रीयास्व	क्रीयास्म

लृङ

प्र० पु०	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम	अक्रेष्यन्
म० पु०	अक्रेष्य	अक्रेष्यतम	अक्रेष्यत
उ० पु०	अक्रेष्यम	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० पु०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० पु०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट

प्र० पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम	क्रीणताम्
म० पु०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

विधिलिङ

प्र० पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० पु०	क्रीणीथा.	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लङ्

प्र० पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम	अक्रीणत
म० पु०	अक्रीणीथा	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० पु०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लिट्

प्र० पु०	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
म० पु०	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिढ्वे
उ० पु०	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम	अक्रेषत
म० पु०	अक्रेष्ठा	अक्रेषाथाम	अक्रेढ्वम्
उ० पु०	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि

लुट्

प्र० पु०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतार.
म० पु०	क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे
उ० पु०	क्रेताहे	क्रेतास्वहे	क्रेतास्महे

लृट

प्र० पु०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० पु०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ० पु०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	क्रेषीरन्
म० पु०	क्रेषीष्ठा	क्रेषीयास्थाम	क्रेषीढ्वम्
उ० पु०	क्रेषीय	क्रेषीवहि	क्रेषीमहि

लृङ

प्र० पु०	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	अक्रेष्यन्त
म० पु०	अक्रेष्यथा	अक्रेष्येथाम	अक्रेष्यध्वम्
उ० पु०	अक्रेष्ये	अक्रेष्यावहि	अक्रेष्यामहि

उभयपदी ग्रह् – लेना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीत	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथ.	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीव	गृह्णीमः

लोट्

प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयु:
म० पु०	गृह्णीया:	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० पु०	गृह्णीयाम	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० पु०	अगृह्णा:	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लिट्

प्र० पु०	जग्राह	जगृहतु:	जगृहु:
म० पु०	जग्रहिथ	जगृहथु:	जगृह
उ० पु०	जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम

लुङ्

प्र० पु०	अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषु:
म० पु०	अग्रही:	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट
उ० पु०	अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म

लुट्

प्र० पु०	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतार:
म० पु०	ग्रहीतासि	ग्रहीतास्थ:	ग्रहीतास्थ
उ० पु०	ग्रहीतास्मि	ग्रहीतास्व:	ग्रहीतास्म:

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यत:	ग्रहीष्यन्ति
म० पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथ:	ग्रहीष्यथ
उ० पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्याव:	ग्रहीष्याम:

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासु:
म० पु०	गृह्या:	गृह्यास्तम्	गृह्यास्त
उ० पु०	गृह्यासम्	गृह्यास्व	गृह्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम	अग्रहीष्यन्
म० पु०	अग्रहीष्य	अग्रहीष्यतम	अग्रहीष्यत
उ० पु०	अग्रहीष्यम	अग्रहीष्याव	अग्रहीष्याम

आत्मनेपद

लट

प्र० पु०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म० पु०	गृह्णी	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ० पु०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट

प्र० पु०	गृह्णीताम	गृह्णानाम्	गृह्णनाम्
म० पु०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम	गृह्णीध्वम
उ० पु०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम	गृह्णीरन्
म० पु०	गृह्णीथा	गृह्णीयाथाम	गृह्णीध्वम्
उ० पु०	गृह्णीय	गृह्ण वहि	गृह्णीमहि

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णीत	अगृह्णानाम्	अगृह्णन
म० पु०	अगृह्णीथा	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ० पु०	अगृह्णि	अगृह्णे वहि	अगृह्णीमहि

लिट

प्र० पु०	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
म० पु०	जगृहिषे	गृहाथे	जगृहिध्वे
उ० पु०	जगृहे	गृहिवहे	जगृहिमहे

लुङ

प्र० पु०	अग्रहीष्ट	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत
म० पु०	अग्रहीष्ठा	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीध्वम् अग्रहीढ्वम्
उ० पु०	अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि

लुट्

प्र० पु०	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतार
म० पु०	ग्रहीतासे	ग्रहीतासाथे	ग्रहीताध्वे
उ० पु०	ग्रहीताहे	ग्रहीतास्वहे	ग्रहीतास्महे

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म० पु०	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ० पु०	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ग्रहीषीष्ट	ग्रहीषीयास्ताम्	ग्रहीषीरन्
म० पु०	ग्रहीषीष्ठा	ग्रहीषीयास्थाम्	ग्रहीषीध्वम्
उ० पु०	ग्रहीषीय	ग्रहीषीवहि	ग्रहीषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अग्रहीष्यत	अग्रहीष्येताम्	अग्रहीष्यन्त
म० पु०	अग्रहीष्यथा	अग्रहीष्येथाम्	अग्रहीष्यध्वम्
उ० पु०	अग्रहीष्ये	अग्रहीष्यावहि	अग्रहीष्यामहि

उभयपदी ज्ञा-जानना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० पु०	जानामि	जानीव	जानीम.

लोट्

प्र० पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म० पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ० पु०	जानानि	जानाव	जानाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयु
म० पु०	जानीया	जानीयातम्	जानीयात
उ० पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीय म

लङ्

प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० पु०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ० पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लिट्

प्र० पु०	जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः
म० पु०	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञथुः	जज्ञ
उ० पु०	जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम

लुङ्

प्र० पु०	अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः
म० पु०	अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट
उ० पु०	अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म

लुट्

प्र० पु०	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः
म० पु०	ज्ञातासि	ज्ञातास्थः	ज्ञातास्थ
उ० पु०	ज्ञातास्मि	ज्ञातास्वः	ज्ञातास्मः

लृट्

प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म० पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ज्ञेयात्, ज्ञायात्	ज्ञेयास्ताम्, ज्ञायास्ताम्	ज्ञेयासुः, ज्ञायासुः
म० पु०	ज्ञेयाः, ज्ञायाः	ज्ञेयास्तम्, ज्ञायास्तम्	ज्ञेयास्त, ज्ञायास्त
उ० पु०	ज्ञेयासम्, ज्ञायासम्	ज्ञेयास्व, ज्ञायास्व	ज्ञेयास्म, ज्ञायास्म

लृङ्

प्र० पु०	अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यन्
म० पु०	अज्ञास्यः	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्यत
उ० पु०	अज्ञास्यम्	अज्ञास्याव	अज्ञास्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	जानीते	जानाते	जानते
म० पु०	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ० पु०	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लोट्

प्र० पु०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम
म० पु०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ० पु०	जानै	जानावहै	जानामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
म० पु०	जानीथा	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ० पु०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

लङ्

प्र० पु०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
म० पु०	अजानीथा	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उ० पु०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लिट्

प्र० पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
म० पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ० पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अज्ञास्त	अज्ञासाताम्	अज्ञासत
म० पु०	अज्ञास्था	अज्ञासाथाम्	अज्ञाध्वम्
उ० पु०	अज्ञासि	अज्ञास्वहि	अज्ञास्महि

लुट्

प्र० पु०	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः
म० पु०	ज्ञातासे	ज्ञातासाथे	ज्ञाताध्वे
उ० पु०	ज्ञाताहे	ज्ञातास्वहे	ज्ञातास्महे

लृट्

प्र० पु०	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
म० पु०	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उ० पु०	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ज्ञासीष्ट	ज्ञासीयास्ताम्	ज्ञासीरन्
म० पु०	ज्ञासीष्ठाः	ज्ञासीयास्थाम्	ज्ञासीध्वम्
उ० पु०	ज्ञासीय	ज्ञासीवहि	ज्ञासीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अज्ञास्यत	अज्ञास्येताम्	अज्ञास्यन्त
म० पु०	अज्ञास्यथा.	अज्ञास्येथाम्	अज्ञास्यध्वम्
उ० पु०	अज्ञास्य	अज्ञास्यावहि	अज्ञास्यामहि

उभयपदी पू—पवित्र करना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	पुनाति	पुनीतः	पुनन्ति
म० पु०	पुनासि	पुनीथ.	पुनीथ
उ० पु०	पुनामि	पुनीव	पुनीम.

लोट्

प्र० पु०	पुनातु	पुनीताम्	पुनन्तु
म० पु०	पुनीहि	पुनीतम	पुनीत
उ० पु०	पुनानि	पुनाव	पुनाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पुनीयात्	पुनीयाताम्	पुनीयु
म० पु०	पुनीया	पुनीयातम्	पुनीयात
उ० पु०	पुनीयाम्	पुनीयाव	पुनीयाम

लङ्

प्र० पु०	अपुनात्	अपुनीताम	अपुनन्
म० पु०	अपुना·	अपुनीतम्	अपुनीत
उ० पु०	अपुनाम्	अपुनीव	अपुनीम

लिट्

प्र० पु०	पुपाव	पुपुवतु	पुपुवु.
म० पु०	पुपविथ	पुपुवथु	पुपुव
उ० पु०	पुपाव, पुपव	पुपुविव	पुपुविम

लुङ्

प्र० पु०	अपावीत्	अपाविष्टाम्	अपाविषुः
म० पु०	अपावी	अपाविष्टम्	अपाविष्ट
उ० पु०	अपाविषम्	अपाविष्व	अपाविष्म

लुट्

प्र० पु०	पविता	पवितारौ	पवितार.
म० पु०	पवितासि	पवितास्थ	पवितास्थ
उ० पु०	पवितास्मि	पवितास्व	पवितास्म

लृट्

प्र० पु०	पविष्यति	पविष्यत	पविष्यन्ति
म० पु०	पविष्यसि	पविष्यथ	पविष्यथ
उ० पु०	पविष्यामि	पविष्याव	पविष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	पूयात्	पूयास्ताम्	पूयासु
म० पु०	पूयाः	पूयास्तम्	पूयास्त
उ० पु०	पूयासम्	पूयास्व	पूयास्म

लृङ्

प्र० पु०	अपविष्यत्	अपविष्यताम्	अपविष्यन्
म० पु०	अपविष्यः	अपविष्यतम्	अपविष्यत
उ० पु०	अपविष्यम	अपविष्याव	अपविष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	पुनीते	पुनाते	पुनते
म० पु०	पुनीषे	पुनाथे	पुनीध्वे
उ० पु०	पुने	पुनीवहे	पुनीमहे

लोट्

प्र० पु०	पुनीताम्	पुनाताम्	पुनताम्
म० पु०	पुनीष्व	पुनाथाम्	पुनीध्वम्
उ० पु०	पुनै	पुनावहै	पुनामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	पुनीत	पुनीयाताम्	पुनीरन्
म० पु०	पुनीथा॰	पुनीयाथाम्	पुनीध्वम्
उ० पु०	पुनीय	पुनावहि	पुनीमहि

लङ्

प्र० पु०	अपुनीत	अपुनाताम्	अपुनत
म० पु०	अपुनीथाः	अपुनाथाम्	अपुनीध्वम्
उ० पु०	अपुनि	अपुनीवहि	अपुनीमहि

लिट्

प्र० पु०	पुपुवे	पुपुवाते	पुपुविरे
म० पु०	पुपुविषे	पुपुवाथे	पुपुविध्वे
उ० पु०	पुपुवे	पुपुविवहे	पुपुविमहे

लुङ्

प्र० पु०	अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत
म० पु०	अपविष्ठाः	अपविषाथाम्	अपविढ्वम्
उ० पु०	अपविषि	अपविष्वहि	अपविष्महि

लुट्

प्र० पु०	पविता	पवितारौ	पवितारः
म० पु०	पवितासे	पवितासाथे	पविताध्वे
उ० पु०	पविताहे	पवितास्वहे	पवितास्महे

लृट्

प्र० पु०	पविष्यते	पविष्येते	पविष्यन्ते
म० पु०	पविष्यसे	पविष्येथे	पविष्यध्वे
उ० पु०	पविष्ये	पविष्यावहे	पविष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	पविषीट	पविषीयास्ताम	पविषीरन्
म० पु०	पविषीष्ठाः	पविषीयास्थाम्	पविषीध्वम्
उ० पु०	पविषीय	पविषीवहि	पविषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अपविष्यत	अपविष्येताम्	अपविष्यन्त
म० पु०	अपविष्यथाः	अपविष्येथाम	अपविष्यध्वम्
उ० पु०	अपविष्ये	अपविष्यावहि	अपविष्यामहि

चुरादिगण

इस गण की पहली धातु चुर (चुराना) है। इस गण की धातु और प्रत्यय के बीच में अय जोडा जाता है।

उभयपदी चुर् —चुराना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु०	चोरयसि	चोरयथ	चोरयथ
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्

प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लङ्

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लिट्

प्र० पु०	चोरयामास चोरयाम्बभूव चोरयाञ्चकार	चोरयामासतु चोरयाम्बभूवतु. चोरयाञ्चक्रतु	चोरयामासु चोरयाम्बभूवु चोरयाञ्चक्रुः
म० पु०	चोरयामासिथ चोरयाम्बभूविथ चोरयाञ्चकथ	चोरयामासथु चोरयाम्बभूवथु चोरयाञ्चक्रथु	चोरयामास चोरयाम्बभूव चोरयाञ्चक्र
उ० पु०	चोरयामास चोरयाम्बभूव चोरयाञ्चकार चोरयाञ्चकर	चोरयामासिव चोरयाम्बभूविव चोरयाञ्चकृव	चोरयामासिम चोरयाम्बभूविम चोरयाञ्चकृम

लुङ्

प्र० पु०	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्
म० पु०	अचूचुर.	अचूचुरतम्	अचूचुरत
उ० पु०	अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम

लुट्

प्र० पु०	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
म० पु०	चोरयितासि	चोरयितास्थ	चोरयितास्थ
उ० पु०	चोरयितास्मि	चोरयितास्व.	चोरयितास्म.

लृट्

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यत	चोरयिष्यन्ति
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्याव	चोरयिष्यामः

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासु
म० पु०	चोर्या	चोर्यास्तम	चोर्यास्त
उ० पु०	चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्
म० पु०	अचोरयिष्य	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत
उ० पु०	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म० पु०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ० पु०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लोट्

प्र० पु०	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म० पु०	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ० पु०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म० पु०	चोरयेथा	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ० पु०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

लङ्

प्र० पु०	अचोरयत	अचोरयेताम	अचोरयन्त
म० पु०	अचोरयथा.	अचोरयेथाम	अचोरयध्वम्
उ० पु०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

लिट्

प्र० पु०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
म० पु०	चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृढ्वे
उ० पु०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

लुङ्

प्र० पु०	अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त
म० पु०	अचूचुरथा	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्
उ० पु०	अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि

लुट्

प्र० पु०	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितार
म० पु०	चोरयितासे	चोरयितासाथे	चोरयिताध्वे
उ० पु०	चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे

लृट्

प्र० पु०	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म० पु०	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उ० पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	चोरयिषीरन्
म० पु०	चोरयिषीष्ठा	चोरयिषीयास्थाम्	चोरयिषीध्वम्
उ० पु०	चोरयिषीय	चोरयिषीवहि	चोरयिषीमहि

लृङ

प्र० पु०	अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येताम्	अचोरयिष्यन्त
म० पु०	अचोरयिष्यथा	अचोरयिष्येथाम	अचोरयिष्यध्वम्
उ० पु०	अचोरयिष्ये	अचोरयिष्यावहि	अचोरयिष्यामहि

उभयपदी कथ्—कहना

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	कथयति	कथयत	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथ	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयाम

लोट्

प्र पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयु
म० पु०	कथये	कथयेतम्	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

लङ्

प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० पु०	अकथय	अकथयतम्	अकथयत
उ० पु०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लिट्

प्र० पु०	कथयामास	कथयामासतु	कथयामासु
म० पु०	कथयामासिथ	कथयामासथु	कथयामास
उ० पु०	कथयामास	कथयामासिव	कथयामासिम

कथयाम्बभूव, कथयाञ्चकार।

लुङ्

प्र० पु०	अचकथत	अचकथताम्	अचकथन्
म० पु०	अचकथ	अचकथतम्	अचकथत
उ० पु०	अचकथम्	अचकथाव	अचकथाम

लिट्

प्र० पु०	कथयिता	कथयितारौ	कथयितार
म० पु०	कथयितासि	कथयितास्थ	कथयितास्थ
उ० पु०	कथयितास्मि	कथयितास्व	कथयितास्म

लृट्

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यत	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्याव	कथयिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	कथ्यात्	कथ्यास्ताम्	कथ्यासु
म० पु०	कथ्या	कथ्यास्तम्	कथ्यास्त
उ० पु०	कथ्यासम्	कथ्यास्व	कथ्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अकथयिष्यत्	अकथयिष्यताम्	अकथयिष्यन्
म० पु०	अकथयिष्य	अकथयिष्यतम्	अकथयिष्यत
उ० पु०	अकथयिष्यम्	अकथयिष्याव	अकथयिष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म० पु०	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ० पु०	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लोट

प्र० पु०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम
म० पु०	कथयस्व	कथयेथाम	कथयध्वम
उ० पु०	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन
म० पु०	कथयेथा	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ० पु०	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

लङ्

प्र० पु०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म० पु०	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ० पु०	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

लिट

प्र० पु०	कथयाञ्चक्रे	कथयाञ्चक्राते	कथयाञ्चक्रिरे
म० पु०	कथयाञ्चकृषे	कथयाञ्चक्राथे	कथयाञ्चकृढ्वे
उ० पु०	कथयाञ्चक्रे	कथयाञ्चकृवहे	कथयाञ्चकृमहे

लुङ्

प्र० पु०	अचकथत	अचकथेताम्	अचकथन्त
म० पु०	अचकथथा	अचकथेथाम्	अचकथध्वम्
उ० पु०	अचकथे	अचकथावहि	अचकथामहि

लुट्

प्र० पु०	कथयिता	कथयितारौ	कथयितार
म० पु०	कथयितासे	कथयितासाथे	कथयिताध्वे
उ० पु०	कथयिताहे	कथयितास्वहे	कथयितास्महे

लृट्

प्र० पु०	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
म० पु०	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उ० पु०	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	कथयिषीष्ट	कथयिषीयास्ताम्	कथयिषीरन्
म० पु०	कथयिषीष्ठाः	कथयिषीयास्थाम्	कथयिषीढ्वम्
उ० पु०	कथयिषीय	कथयिषीवहि	कथयिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अकथयिष्यत	अकथयिष्येताम्	अकथयिष्यन्त
म० पु०	अकथयिष्यथाः	अकथयिष्येथाम्	अकथयिष्यध्वम्
उ० पु०	अकथयिष्ये	अकथयिष्यावहि	अकथयिष्यामहि

उभयपदी अर्च्—पूजा करना

लट्—अर्चयति, अर्चयते।
लोट्—अर्चयतु, अर्चयताम्।
विधिलिङ्—अर्चयेत्, अर्चयेत।
लङ्—आर्चयत्, आर्चयत।
लिट्—अर्चयामास, अर्चयाञ्चक्रे।
लुङ्—आर्चिचत्, आर्चिचत।
लुट्—अर्चयिता।
लृट्—अर्चयिष्यति, अर्चयिष्यते।
आशीर्लिङ्—अर्च्यात्, अर्चयिषीष्ट।
लृङ्—आर्चयिष्यत्, आर्चयिष्यत।

उभयपदी क्षल्—धोना

लट्—क्षालयति, क्षालयते।
लोट्—क्षालयतु, क्षालयताम्।
विधिलिङ्—क्षालयेत्, क्षालयेत।
लङ्—अक्षालयत्, अक्षालयत।
लिट्—क्षालयामास, क्षालयाञ्चक्रे।
लुङ्—अचिक्षलत्, अचिक्षलत।
लुट्—क्षालयिता।
लृट्—क्षालयिष्यति, क्षालयिष्यते।
आशीर्लिङ्—क्षाल्यात्, क्षालयिषीष्ट।
लृङ्—अक्षालयिष्यत्, अक्षालयिष्यत।

उभयपदी गण्—गिनना

लट्—गणयति, गणयते ।
लिट्—गणयामास, गणयाञ्चक्रे ।
लुङ्—अजीगणत् अजीगणत ।
लुट्—गणयिता ।
आशीर्लिङ्—गण्यात्, गणयिषीष्ट ।
लृङ्—अगणयिष्यत्, अगणयिष्यत ।

उभयपदी चिन्त्—सोचना

लुङ्—अचिचिन्तत्, अचिचिन्तत ।
लुट—चिन्तयिता ।
आशीर्लिङ्—चिन्त्यात्, चिन्तयिषीष्ट ।
लृङ्—अचिन्तयिष्यत्, अचिन्तयिष्यत ।

उभयपदी तड्—पीटना

लुङ्—अतीतडत्, अतीतडत ।
लुट्—ताडयिता ।
आशीर्लिङ्—ताड्यात्, ताडयिषीष्ट ।

उभयपदी तुल्—तौलना

लिट्—तोलयाञ्चकार, तोलयाञ्चक्रे ।
लुङ्—अतूतुलत्, अतूतुलत ।
लुट—तोलयिता ।
आशीर्लिङ्—तोल्यात्, तोलयिषीष्ट ।

उभयपदी दण्ड्—दण्ड देना

लुङ्—अददण्डत्, अददण्डत ।
लुट—दण्डयिता ।
आशीर्लिङ्—दण्ड्यात्, दण्डयिषीष्ट ।

उभयपदी भक्ष—खाना

लुङ्—अबभक्षत्, अबभक्षत ।
लुट्—भक्षयिता ।
आशीर्लिङ्—भक्ष्यात्, भक्षयिषीष्ट ।

उभयपदी भूष्- अलङ्कृत करना

लुङ् – अबुभूषत्, अबुभूषत ।

आशीर्लिङ – भूष्यात्, भूषयिषीष्ट ।

आत्मनेपदी मन्त्र्- मन्त्रणा करना, सलाह देना

लिट् – मन्त्रयाञ्चक्रे ।

लुङ्—अममन्त्रत, अममन्त्रेताम, अममन्त्रन्त ।

आशीर्लिङ्—मन्त्रयिषीष्ट ।

परस्मैपदी मान्—आदर करना

लट्—मानयति ।

लुङ्—अमीमनत् ।

उभयपदी मार्ग्—ढूँढ़ना

लुङ्—अममार्गत्, अममार्गत ।

आशीर्लिङ—मार्ग्यात्, मार्गयिषीष्ट ।

उभयपदी मार्ज्—शुद्ध करना

लुङ्—अममार्जत्, अममार्जत ।

आशीर्लिङ—मार्ज्यात्, मार्जयिषीष्ट ।

उभयपदी मिश्र्—मिलाना

लुङ्—अमिमिश्रत्, अमिमिश्रत ।

आशीर्लिङ्—मिश्र्यात्, मिश्रयिषीष्ट ।

उभयपदी मुट—तोड़ना

लट्—मोटयति, मोटयते ।

लुङ् – अमूमुटत् अमूमुटत ।

आत्मनेपदी मृग्—ढूँढ़ना

लट्—मृगयते ।

लुङ्—अममृगत ।

आशीर्लिङ्—मृगयिषीष्ट ।

आत्मनेपदी यक्ष--पूजा करना, सम्मान करना

लुङ्—अययक्षत ।

उभयपदी यम्—घेरना

लुङ्—अयीयमत्, अयीयमत।

उभयपदी युज्—मिलाना

लट्—योजयति, योजयते।

लुङ्—अयूयुजत्, अयूयुजत।

उभयपदी रच्—बनाना

लट्—रचयति, रचयते।

लुङ्—अररचत्, अररचत।

आशीर्लिङ्—रच्यात, रचयिषीष्ट।

उभयपदी रस्—स्वाद लेना

लुङ्—अररसत्, अररसत।

उभयपदी वर्ण्—रँगना, वर्णन करना

लुङ्—अववर्णत्, अववर्णत।

आशीर्लिङ्—वर्ण्यात्, वर्णयिषीष्ट।

उभयपदी स्पृह्—चाहना

लुङ्—अपिस्पृहत, अपिस्पृहत।

आशीर्लिङ्—स्पृह्यात्, स्पृहयिषीष्ट।

उभयपदी स्वाद्—स्वाद लेना

लुङ्—असिस्वदत्, असिस्वदत।

णिजन्त प्रक्रिया

तत्प्रयोजको हेतुश्च—कर्ता का प्रयोजक हेतुसंज्ञक और कर्तृसंज्ञक होता है।

कर्ता को किसी कार्य में जो प्रवृत्त करता है, उसे कर्ता और हेतु कहते हैं। 'श्याम पढ़ता है' में श्याम कर्ता है। 'मोहन श्याम को पढ़ाता है' में मोहन कर्ता (श्याम) का प्रेरक है, अतः मोहन कर्ता और हेतु है। पहला कर्ता प्रयोज्य कर्ता और प्रेरक कर्ता प्रयोजक कर्ता कहा जाता है।

प्रेरणा अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। णिजन्त के रूप चुरादि की भाँति चलते हैं।

अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ—ऋ, ह्री, व्ली, री, क्नूयी, क्ष्मायी और आकारान्त धातुओं के बाद णिच् प्रत्यय के रहने पर धातुओं को पुक् (प्) का आगम होता है। तात्पर्य यह है कि धातु और णिच् (इ) के बीच में प् जोड़ा जाता है। जैसे—

स्थापयति, दापयति, ज्ञापयति।

मितां ह्रस्वः—यदि णिच् बाद में हो, तो मित् (घट्, ज्ञप् आदि) धातुओं की उपधा के स्थान पर ह्रस्व होता है। जैसे—घटयति, ज्ञपयति।

कुछ धातुओं के णिजन्त रूप ये हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	आदयति	जागृ	जागरयति
इ (अधि + इ)	अध्यापयति	जि	जापयति
कुप्	कोपयति	ज्ञा	ज्ञापयति
क्नू (शब्द करना)	क्नोपयति	त्यज्	त्याजयति
क्षिप्	क्षेपयति	दह्	दाहयति
क्ष्माय् (काँपना)	क्ष्मापयति	दा	दापयति
गम्	गमयति	दुह्	दोहयति
गुह्	गूहयति	दृश्	दर्शयति
ग्रह्	ग्राहयति	धा	धापयति
चि	चाययति	नम्	नमयति
जन्	जनयति	नश्	नाशयति

धातु	रूप	धातु	रूप
नत्	नतयति	रक्ष्	रक्षयति
पच्	पाचयति	रुध्	रोधयति
पा (पीना)	पाययति	रुह्	रोहयति
पा (पालन करना)	पालयति	विद्	वेदयति
प्री	प्रीणयति	वृध्	वर्धयति
बुध्	बोधयति	शी	शाययति
भी	भाययति	श्रु	श्रावयति
भुज्	भोजयति	स्था	स्थापयति
भू	भावयति	स्फुर्	स्फारयति, स्फोरयति
भ्रम्	भ्रमयति	स्मृ	स्मारयति
मुच्	मोचयति	हन्	घातयति
मृज्	मार्जयति	हृ	हारयति
युध्	योधयति	ह्री	ह्रेपयति

णिजन्त के रूप

णिजन्त धातुओं के रूप चुरादिगण की धातुओं की भाँति चलते हैं। यहाँ णिजन्त बुध् के रूप दिये जा रहे हैं—

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	बोधयति	बोधयत	बोधयन्ति
म० पु०	बोधयसि	बोधयथ	बोधयथ
उ० पु०	बोधयामि	बोधयाव'	बोधयामः

लोट्

प्र० पु०	बोधयतु	बोधयताम्	बोधयन्तु
म० पु०	बोधय	बोधयतम्	बोधयत
उ० पु०	बोधयानि	बोधयाव	बोधयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	बोधयेत्	बोधयेताम्	बोधयेयु
म० पु०	बोधये	बोधयेतम्	बोधयेत
उ० पु०	बोधयेयम्	बोधयेव	बोधयेम

लङ्

प्र० पु०	अबोधयत्	अबोधयताम्	अबोधयन्
म० पु०	अबोधयः	अबोधयतम	अबोधयत
उ० पु०	अबोधयम्	अबोधयाव	अबोधयाम

लिट्

प्र० पु०	बोधयाञ्चकार	बोधयाञ्चक्रतु	बोधयाञ्चक्रुः
म० पु०	बोधयाञ्चकर्थं	बोधयाञ्चक्रथु	बोधयाञ्चक्र
उ० पु०	बोधयाञ्चकार-चकर	बोधयाञ्चकृव	बोधयाञ्चकृम

लुङ्

प्र० पु०	अबूबुधत्	अबूबुधताम्	अबूबुधन्
म० पु०	अबूबुधः	अबूबुधतम्	अबूबुधत
उ० पु०	अबूबुधम्	अबूबुधाव	अबूबुधाम

लुट्

प्र० पु०	बोधयिता	बोधयितारौ	बोधयितारः
म० पु०	बोधयितासि	बोधयितास्थ.	बोधयितास्थ
उ० पु०	बोधयितास्मि	बोधयितास्व	बोधयितास्मः

लृट

प्र० पु०	बोधयिष्यति	बोधयिष्यत	बोधयिष्यन्ति
म० पु०	बोधयिष्यसि	बोधयिष्यथ	बोधयिष्यथ
उ० पु०	बोधयिष्यामि	बोधयिष्याव	बोधयिष्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	बोध्यात्	बोध्यास्ताम्	बोध्यासु
म० पु०	बोध्या	बोध्यास्तम्	बोध्यास्त
उ० पु०	बोध्यासम्	बोध्यास्व	बोध्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अबोधयिष्यत्	अबोधयिष्यताम्	अबोधयिष्यन्
म० पु०	अबोधयिष्य	अबोधयिष्यतम्	अबोधयिष्यत
उ० पु०	अबोधयिष्यम्	अबोधयिष्याव	अबोधयिष्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	बोधयते	बोधयेते	बोधयन्ते
म० पु०	बोधयसे	बोधयेथे	बोधयध्वे
उ० पु०	बोधये	बोधयावहे	बोधयामहे

लोट

प्र० पु०	बोधयताम्	बोधयेताम्	बोधयन्ताम्
म० पु०	बोधयस्व	बोधयेथाम्	बोधयध्वम्
उ० पु०	बोधयै	बोधयावहै	बोधयामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	बोधयेत	बोधयेयाताम्	बोधयेरन्
म० पु०	बोधयेथा:	बोधयेयाथाम्	बोधयेध्वम्
उ० पु०	बोधयेय	बोधयेवहि	बोधयेमहि

लङ्

प्र० पु०	अबोधयत	अबोधयेताम्	अबोधयन्त
म० पु०	अबोधयथा:	अबोधयेथाम्	अबोधयध्वम्
उ० पु०	अबोधये	अबोधयावहि	अबोधयामहि

लिट्

प्र० पु०	बोधयाञ्चक्रे	बोधयाञ्चक्राते	बोधयाञ्चक्रिरे
म० पु०	बोधयाञ्चकृषे	बोधयाञ्चक्राथे	बोधयाञ्चकृढ्वे
उ० पु०	बोधयाञ्चक्रे	बोधयाञ्चकृवहे	बोधयाञ्चकृमहे

लुङ्

प्र० पु०	अबूबुधत	अबूबुधेताम	अबूबुधन्त
म० पु०	अबूबुधथा	अबूबुधेथाम्	अबूबुधध्वम्
उ० पु०	अबूबुधे	अबूबुधावहि	अबूबुधामहि

लुट्

प्र० पु०	बोधयिता	बोधयितारौ	बोधयितार
म० पु०	बोधयितासे	बोधयितासाथे	बोधयिताध्वे
उ० पु०	बोधयिताहे	बोधयितास्वहे	बोधयितास्महे

लृट्

प्र० पु०	बोधयिष्यते	बोधयिष्येते	बोधयिष्यन्ते
म० पु०	बोधयिष्यसे	बोधयिष्येथे	बोधयिष्यध्वे
उ० पु०	बोधयिष्ये	बोधयिष्यावहे	बोधयिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	बोधयिषीष्ट	बोधयिषीयास्ताम्	बोधयिषीरन्
म० पु०	बोधयिषीष्ठा	बोधयिषीयास्थाम्	बोधयिषीध्वम्
उ० पु०	बोधयिषीय	बोधयिषीवहि	बोधयिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अबोधयिष्यत	अबोधयिष्येताम	अबोधयिष्यन्त
म० पु०	अबोधयिष्यथा	अबोधयिष्येथाम्	अबोधयिष्यध्वम्
उ० पु०	अबोधयिष्ये	अबोधयिष्यावहि	अबोधयिष्यामहि

——

सन्नन्त-प्रक्रिया

धातो कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा—यदि इच्छा और धातु के कर्म का एक ही कर्ता हो, तो इच्छा अर्थ में धातु से विकल्प से सन् प्रत्यय होता है।

यहाँ यह आवश्यक है कि इच्छा और क्रिया का कर्ता एक ही हो। 'श्याम गन्तुमिच्छति' में इच्छा करने वाला और जाने वाला श्याम है, अतः इच्छा और क्रिया का एक ही कर्ता है। यहाँ सन् प्रत्यय लग सकता है। सन् प्रत्यय लगाने पर 'श्यामः जिगमिषति' (श्याम जाना चाहता है) प्रयोग होगा। 'राम' गच्छतु इति दशरथ इच्छति' में सन् का प्रयोग नहीं हो सकता, क्योंकि यहाँ जाने वाला राम है और इच्छा करने वाला दशरथ, अर्थात् क्रिया और इच्छा का एक कर्ता नहीं है।

सन् प्रत्यय विकल्प से लगता है, अतएव प्रयोग करने वाला चाहे तो इसका प्रयोग करे और यदि न चाहे, तो प्रयोग न करे। 'सः पिपठिषति' और 'स पठितुमिच्छति'—दोनो प्रयोग हो सकते हैं।

सन् प्रत्यय का स् धातु मे जोडा जाता है। सन्धि के नियम के अनुसार स् के स्थान पर ष् भी हो जाता है। जिस धातु से सन प्रत्यय लगाया जाता है, उसको द्वित्व किया जाता है। द्वित्व करने के बाद अभ्यास के अकार के स्थान पर इ कर दी जाती है।

यहाँ कुछ धातुओ के सन्नन्त रूप दिये जा रहे है--

अद्—जिघत्सति, आप्—ईप्सति, इ—जिगमिषति, अधि + इ—अधिजिगामते, ऋ—अरिरिषति, कृ—चिकीर्षति, गम्—जिगमिषति, गॄ (निगलना)—जिगरिषति, जिगलिषति, ग्रह्—जिघृक्षति, चि—चिचीषति, चिकीषति, जि—जिगीषति, तन्—तितसति, तितासति, तितनिषति, तृह (हिंसा करना)—तितृक्षति, तितृहिषति, दम्भ्—धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति, दा—दित्सति, दिव्—दुद्यूषति, दिदेविषति, दो (काटना)—दित्सति, दृश्—दिदृक्षते, धा—धित्सति, नश्—निनङ्क्षति, निनशिषति, पत्—पित्सति, पिपतिषति, भू—बुभूषति, मा (नापना)—मित्सति, मुच्—मुमुक्षते, मृज्—मिमृक्षति, मिमार्जिषति, लभ्—लिप्सते, हन्—जिघांसति, हृ—जिहीर्षति।

यङन्त-प्रक्रिया

धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्—क्रिया के बार बार होने या अधिक होने के अर्थ को प्रकट करने के लिए एक स्वर वाली हलादि धातु में यङ् प्रत्यय लगाया जाता है। यङ् का य शेष रहता है। यङ् प्रत्यय लगाने पर धातुको द्वित्व होता है।

नित्यं कौटिल्ये गतौ—गत्यर्थ धातुओ से कुटिलगति के अर्थ में ही यङ् प्रत्यय होता है, बार बार होने या अधिक होने के अर्थ में नही।

लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायाम्—लुप्, सद्, चर्, जप्, जभ्, दह्, दश् और गॄ—धातुओं में निन्दित ढग से कार्य करने के अर्थ में ही यङ् प्रत्यय लगाया जाता है।

नीचे कुछ यङन्त रुप दिये जाते हैं—

अट्—अटाट्यते (टेढा चलता है), अश्—अशाश्यते, कृ—चेक्रीयते, घ्रा—जेघ्रीयते, ज्ञा—जाज्ञायते, दश्—दन्दश्यते, दह्—दन्दह्यते, दा—देदीयते, नृत्—नरीनृत्यते, पत्—पनीपत्यते, पॄ—पोपूयते, बुध्—बोबुध्यते, भू—बोभूयते, वृत्—वरीवृत्यते, व्रज्—वाव्रज्यते, स्वप्—सोषुप्यते, हन्—जेघ्नीयते।

यङ्लुगन्त

यङोऽचि च—यदि अच् प्रत्यय बाद में हो, तो यङ् का लोप होता है। कुछ स्थितियों में अच् प्रत्यय के न रहने पर भी यङ् का लोप होता है।

यहाँ यङ्लुगन्त भू धातु के रूप दिये जा रहे हैं—

परस्मैपद

लट्, प्र० पु०—	बोभोति, बोभवीति	बोभूत	बोभुवति
लोट्, " —	बोभोतु, बोभवीतु	बोभूताम्	बोभुवतु
विधिलिङ्, " —	बोभूयात्	बोभूयाताम्	बोभूयु
लङ्, " —	अबोभोत्, अबोभवीत्	अबोभूताम्	अबोभुवु
लिट्, " —	बोभवाञ्चकार	बोभवाञ्चक्रतु	बोभवाञ्चक्रु
लुङ्, " —	अबोभूवीत्, अबोभोत्	अबोभूताम्	अबोभूवु
लुट्, " —	बोभविता	बोभवितारौ	बोभवितार
लृट्, " —	बोभविष्यति	बोभविष्यत	बोभविष्यन्ति
आशीर्लिङ्, —	बोभूयात्	बोभूयास्ताम्	बोभूयासु
लृङ्, " —	अबोभविष्यत्	अबोभविष्यताम्	अबोभविष्यत्

आत्मनेपद

लट्—बोभूते, लोट्—बोभताम् विधिलिङ्—बोभुवीत, लङ्—अबोभूत, लिट्—बोभवाञ्चक्रे, लुङ्—अबोभविष्ट, लुट्—बोभविता, लृट्—बोभविष्यते, आशीर्लिङ्—बोभविषीष्ट, लृङ्—अबोभविष्यत।

नामधातु

सुबन्त में प्रत्यय जोडकर धातुएँ बनाई जाती हैं। ऐसी धातुओं को नामधातु कहते हैं।

क्यच् प्रत्यय

जिस वस्तु की इच्छा हो, उसके बोधक शब्द में क्यच् प्रत्यय लगाया जाता है। क्यच् का य शेष रहता है। क्यच् प्रत्यय लगाने पर अधोलिखित परिवर्तन होते हैं—

(१) यदि शब्द के अन्त में अ या आ हो, तो उसके स्थान पर ई कर दी जाती है। जैसे—पुत्रीयति–आत्मनः पुत्रमिच्छति—वह पुत्र की इच्छा करता है।

(२) यदि शब्द के अन्त में इ या उ हो, तो उसे दीर्घ कर देते हैं। जैसे—वधूयति—वह वधू की इच्छा करता है।

(३) यदि शब्द के अन्त में ऋ हो, तो उसके स्थान पर री कर दी जाती है। जैसे—कर्त्रीयति।

उपमानादाचारे—आचार अर्थ में उपमानवाची सुबन्त कर्म से विकल्प से क्यच् प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्रमिवाचरति—पुत्रीयति शिष्यम्, विष्णूयति द्विजम।

काम्यच्

जिस अर्थ में क्यच् का प्रयोग होता है, उसी अर्थ में काम्यच् का भी प्रयोग होता है। जैसे—पुत्रकाम्यति—यह पुत्र की इच्छा करता है, यशस्काम्यति—वह यश की इच्छा करता है।

क्यङ्

कर्तुः क्यङ् सलोपश्च—आचार अर्थ में उपमानवाची सुबन्त कर्ता से विकल्प से क्यङ् प्रत्यय होता है और सकारान्त शब्दो के सकार का विकल्प से लोप होता है।

तात्पर्य यह है कि समान आचरण या व्यवहार करने के अर्थ को व्यक्त करने के लिए क्यङ् प्रत्यय लगाया जाता है। क्यङन्त के रूप आत्मनेपद में ही चलते हैं।

क्यङ् का य शेष रहता है। जब क्यङ् लगाया जाता है, तब उसके पहले के सुबन्त के अ को दीर्घ कर देते हैं। आ के स्थान पर आ ही रहता है और अन्य स्वरो में उसी प्रकार परिवतन होते हैं, जिस प्रकार क्यच् प्रत्यय लगाने पर होते हैं।

उदाहरण—कृष्णायते—कृष्ण इवाचरति—वह कृष्ण की भाँति आचरण करता है।

श्येनायते—काकः श्येन इवाचरति—कौआ बाज के समान आचरण करता है।

पण्डितायते—मूर्खः पण्डित इवाचरति—मूर्ख पण्डित की भाँति आचरण करता है।

यशायते, यशस्यते—यशस्वी के समान आचरण करता है।

विद्वायते, विद्वस्यते—विद्वान् के समान आचरण करता है।

अप्सरायते—अप्सरा की भाँति आचरण करती है।

शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे—शब्द, वैर, कलह, अभ्र, कण्व और मेघ शब्दो से करण (करता है) अर्थ को व्यक्त करने के लिए क्यङ् प्रत्यय का प्रयोग होता हे। जैसे—शब्दायते—शब्द करता है, वैरायते—वैर करता हैं, कलहायते—कलह करता है, इत्यादि।

कष्टाय क्रमणे—उत्साह अर्थ में चतुर्थ्यन्त कष्ट शब्द से क्यङ प्रत्यय होता है। जैसे—कष्टाय क्रमते—कष्टायते—वह पाप करने के लिए उत्साह करता है। यहाँ कष्ट का अर्थ पाप है।

आत्मनेपद-प्रक्रिया

•संस्कृत में दो पद होते हैं—परस्मैपद और आत्मनेपद। उपसर्ग लगा देने से कुछ अवस्थाओं में परस्मैपदी धातु आत्मनेपदी हो जाती है और आत्मनेपदी धातु परस्मैपदी। यहाँ इसका सूक्ष्म विवेचन किया जा रहा है।

नेर्विशः—निपूर्वक विश् धातु आत्मनेपदी होती है। अतः—निविशते।

परिव्यवेभ्यः क्रियः—यदि परि, वि और अव उपसर्ग पहले हों, तो क्री धातु आत्मनेपदी होती है। अत—परिक्रीणीते, विक्रीणीते, अवक्रीणीते।

विपराभ्यां जेः—वि और परा उपसर्गों से युक्त जि धातु आत्मनेपदी होती है। अत—विजयते, पराजयते।

क्रीडोऽनुसम्परिभ्यश्च—अनु, सम्, परि और आ उपसर्गों से युक्त क्रीड् धातु आत्मनेपदी होती है। अत—अनुक्रीडते, सक्रीडते, परिक्रीडते, आक्रीडते।

समवप्रविभ्यः स्थः—यदि सम्, अव, प्र और वि उपसर्ग पहले हो, तो स्था धातु आत्मनेपदी होती है। अत—सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते, वितिष्ठते।

उदोऽनूर्ध्वकर्मणि—यदि उत् उपसर्ग का ऊपर उठाना अर्थ न हो, तो उत् पूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होती है। अत—गेहे उत्तिष्ठते—घर में उन्नति करता है।

उपान्मन्त्रकरणे—मन्त्र द्वारा अनुष्ठान करने के अर्थ में उपपूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होती है। अतः—आग्नेय्या आग्नीध्रमुपतिष्ठते।

उद्विभ्यां तपः—यदि उत् और वि उपसर्ग पहले हो, तो अकर्मक तप् धातु आत्मनेपदी होती है। अत.—उत्तपते, वितपते।

आङो यमहनः—आङ् उपसर्ग से युक्त अकर्मक यम् और हन् धातुएँ आत्मनेपदी होती हैं। अत—आयच्छते, आहते।

समो गम्यृच्छिभ्याम्—सम् से युक्त अकर्मक गम् और ऋच्छ् धातुएँ आत्मनेपदी होती हैं। उदा०—सङ्गच्छते—साथ-साथ चलता है, समृच्छते।

गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः—गन्धन (हानि पहुँचाना), अवक्षेपण (डराना), सेवन, बलात्कार, प्रतियत्न (किसी गुण को भिन्न गुण में बदलना), प्रकथन और धर्मादि कार्य में लगना—

इन अर्थों में कृञ धातु आत्मनेपदी होती है। उदा०—उत्कुरुते—चुगली करके हानि पहुँचाता है, श्येनो वर्तिकामुदाकुरुते—बाज वर्तिका को डराता है, हरिमुपकुरुते—हरि की सेवा करता है, परदारान् प्रकुरुते—दूसरे की स्त्री से बलात्कार करता है, एध उदकस्य उपस्कुरुते—इन्धन जल के गुण को बदलता है अर्थात् उसे उष्ण करता है, गाथा. प्रकुरुते – गाथाएं कहता है, शत प्रकुरुते—सौ रुपये धार्मिक कार्य में लगाता है।

अधेः प्रसहने – प्रसहन अर्थ में अधिपूर्वक कृ धातु आत्मनेपदी होती है। अत —शत्रुमधिकुरुते–शत्रु को दबाता है।

वेः शब्दकर्मणि—वि पूर्वक कृ धातु उच्चारण करने या पढने के अर्थ में आत्मनेपदी है। अतः—स्वरान विकुरुते गायकः।

अकर्मकाच्च—वि पूवक अकमक कृ धातु भी आत्मनेपदी होती है। उदा०—सैन्धवाः विकुर्वते।

वृत्तिसर्गतायनेषु क्रम —वृत्ति (अप्रतिरोध), सर्ग (उत्साह) और तायन (विस्तार) के अर्थ मे क्रम् धातु आत्मनेपदी होती है। उदा०—मन्त्रे क्रमते बुद्धि, काव्याध्ययनाय क्रमते, अस्मिन् शास्त्राणि क्रमन्ते।

उपपराभ्याम्—उप और परा उपसर्गों से युक्त क्रम् धातु वृत्ति आदि अर्थों में आत्मनेपदी होती है। अत —उपक्रमते, पराक्रमते।

आङ उद्गमने—उदय होने के अर्थ में आङ् पूर्वक क्रम् धातु आत्मनेपदी होती है। अतः—चन्द्रमाः आक्रमते– चन्द्रमा उदित होता है।

अनुपसर्गाद्वा—उपसर्ग रहित क्रम् धातु विकल्प से आत्मनेपदी होती है। अत—क्रमते, क्रामति।

अपह्नवे ज्ञ —छिपाने के अर्थ में ज्ञा धातु आत्मनेपदी होती है। अत —शतमपजानीते–सौ रुपये छिपाता है, अर्थात् सौ रुपये के लिए झूठ बोलता है।

अकर्मकाच्च --अकर्मक ज्ञा धातु आत्मनेपदी होती है। अत—सर्पिषो जानीते (सर्पिषोपायेन प्रवर्तत इत्यर्थ.)।

उदश्चर सकर्मकात्— उत् पूर्वक सकर्मक चर् धातु आत्मनेपदी होती है। जैसे—धर्ममुच्चरते—धर्म का उल्लङ्घन कर चला जाता है, गुरुवचनमुच्चरते—गुरुवचन का उल्लङ्घन कर चला जाता है।

समस्तृतीयायुक्तात्—तृतीयान्त से युक्त सम् पूर्वक चर् धातु आत्मनेपदी होती है। जैसे—रथेन सञ्चरते—रथ से चलता है।

दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे- तृतीया विभक्ति के चतुर्थी के अर्थ में रहने पर तृतीयान्त से युक्त सम् पूर्वक दा धातु आत्मनेपदी होती है। जैसे— दास्या संयच्छते कामुक —कामी पुरुष दासी को देता है।

——

परस्मैपद-प्रक्रिया

अनुपराभ्यां कृञः —अनु और परा से युक्त कृ धातु परस्मैपदी होती है। जैसे—अनुकरोति--अनुकरण करता है, पराकरोति—दूर करता है।

अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः --अभि, प्रति और अति से युक्त क्षिप् धातु परस्मैपदी होती है। जैसे—अभिक्षिपति, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति।

प्राद्वहः —प्र पूर्वक वह् धातु परस्मैपदी होती है। यथा—प्रवहति।

परेर्मृषः —परि पूर्वक मृष् धातु परस्मैपदी होती है। यथा --परिमृष्यति।

व्याङ्परिभ्यो रमः —वि, आङ् और परि उपसर्गों से युक्त रम् धातु परस्मैपदी होती है। यथा —विरमति–रुकता है, आरमति–चारों ओर खेलता है, परिरमति--सर्वत्र सुख प्राप्त करता है।

उपाच्च--उप पूर्वक रम् धातु भी परस्मैपदी होती है। यथा —उपरमति—हटाता है, नाश करता है।

——

भावकर्म – प्रक्रिया

संस्कृत में तीन वाच्य हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। कर्मवाच्य केवल सकर्मक धातुओं में और भाववाच्य केवल अकर्मक धातुओं में होता है। कर्मवाच्य और भाववाच्य में आत्मनेपद होता है। उदा०—

कर्मवाच्य—बालकेन पुस्तकं पठ्यते।

भाववाच्य—तेन भूयते।

१— कर्मवाच्य और भाववाच्य का रूप बनाने के लिए धातु और प्रत्यय के बीच में य जोड़ा जाता है। जैसे—म्रियते, भूयते।

२— धातुओं के अन्तिम आ के स्थान पर ई कर दी जाती है। जैसे—दा—दीयते, मा—मीयते, पा—पीयते।

३—तन् धातु के न् का विकल्प से लोप होता है। लोप करने पर अ के स्थान पर आ कर दिया जाता है। जैसे—तायते, तन्यते (देखिए सूत्र – तनोतेर्यकि)।

४—शी के स्थान पर शय्य हो जाता है।

५—ब्रू को वच्, घस् को अद् और अन् को भू आदेश होता है।

यहाँ कुछ धातुओं के कर्मवाच्य और भाववाच्य के रूप दिए जा रहे हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	अद्यते	भञ्ज्	भज्यते
अश्	अश्यते	भी	भीयते
आप्	आप्यते	यज्	इज्यते
इन्ध	इध्यते	या	यायते
इष्	इष्यते	युज्	युज्यते
कथ्	कथ्यते	रुद्	रुद्यते
कुप्	कुप्यते	रुध्	रुध्यते
कृष्	कृष्यते	वच्	उच्यते
कॄ	कीयते	वद्	उद्यते
क्षिप्	क्षिप्यते	वस्	उष्यते
गुप्	गुप्यते, गोप्यते, गोपाय्यते	वह्	उह्यते
ग्रह	गृह्यते	व्यच् (धोखा देना, घेरना)	विच्यते
घ्रा	घ्रायते	शास्	शिष्यते
चि	चीयते	शी	शय्यते
चुर्	चोयते	शो	शायते
छिद्	छिद्यते	श्रु	श्रूयते
जागृ	जागर्यते	स्तु	स्तूयते
ज्या (वृद्ध होना)	जीयते	स्तृ (ढकना)	स्तयते
दिव्	दीव्यते	स्तॄ (फैलाना ढकना)	स्तीयते
दृश्	दृश्यते	स्था	स्थीयते
धा	धीयते	स्मृ	स्मर्यते
पद्	पद्यते	स्वप	सुप्यते
प्रच्छ्	पृच्छ्यते	हा (प०)	हीयते
ब्रू	उच्यते	हा (आ०)	हायते

कर्मवाच्य और भाववाच्य के रूप सभी लकारों में आत्मनेपदी धातुओं की भाँति चलते हैं। यहाँ कुछ धातुओं के रूप दिए जा रहे हैं—

ज्ञा—जानना (सकर्मक)

कर्मवाच्य

लट्

प्र० पु०	ज्ञायते	ज्ञायेते	ज्ञायन्ते
म० पु०	ज्ञायसे	ज्ञायेथे	ज्ञायध्वे
उ० पु०	ज्ञाये	ज्ञायावहे	ज्ञायामहे

लोट्

प्र० पु०	ज्ञायताम	ज्ञायेताम	ज्ञायन्ताम्
म० पु०	ज्ञायस्व	ज्ञायेथाम्	ज्ञायध्वम्
उ० पु०	ज्ञायै	ज्ञायावहै	ज्ञायामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	ज्ञायेत	ज्ञायेयाताम्	ज्ञायेरन्
म० पु०	ज्ञायेथा	ज्ञायेयाथाम्	ज्ञायेध्वम्
उ० पु०	ज्ञायेय	ज्ञायेवहि	ज्ञायेमहि

लङ्

प्र० पु०	अज्ञायत	अज्ञायेताम्	अज्ञायन्त
म० पु०	अज्ञायथा	अज्ञायेथाम्	अज्ञायध्वम्
उ० पु०	अज्ञाये	अज्ञायावहि	अज्ञायामहि

लिट्

प्र० पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
म० पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ० पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अज्ञायि	अज्ञायिषाताम् / अज्ञासाताम्	अज्ञायिषत / अज्ञासत
म० पु०	अज्ञायिष्ठा / अज्ञास्था	अज्ञायिषाथाम् / अज्ञासाथाम्	अज्ञायिध्वम् / अज्ञाध्वम्
उ० पु०	अज्ञायिषि / अज्ञासि	अज्ञायिष्वहि / अज्ञास्वहि	अज्ञायिष्महि / अज्ञास्महि

लुट्

प्र० पु०	ज्ञाता ज्ञायिता	ज्ञातारौ ज्ञायितारौ	ज्ञातारः ज्ञायितारः
म० पु०	ज्ञातासे ज्ञायितासे	ज्ञातासाथे ज्ञायितासाथे	ज्ञाताध्वे ज्ञायिताध्वे
उ० पु०	ज्ञाताहे ज्ञायिताहे	ज्ञातास्वहे ज्ञायितास्वहे	ज्ञातास्महे ज्ञायितास्महे

लृट्

प्र० पु०	ज्ञास्यते ज्ञायिष्यते	ज्ञास्येते ज्ञायिष्येते	ज्ञास्यन्ते ज्ञायिष्यन्ते
म० पु०	ज्ञास्यसे ज्ञायिष्यसे	ज्ञास्येथे ज्ञायिष्येथे	ज्ञास्यध्वे ज्ञायिष्यध्वे
उ० पु०	ज्ञास्ये ज्ञायिष्ये	ज्ञास्यावहे ज्ञायिष्यावहे	ज्ञास्यामहे ज्ञायिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	ज्ञासीष्ट ज्ञायिसीष्ट	ज्ञासीयास्ताम् ज्ञायिषीयास्ताम्	ज्ञासीरन् ज्ञायिषीरन्
म० पु०	ज्ञासीष्ठाः ज्ञायिसीष्ठाः	ज्ञासीयास्थाम् ज्ञायिषीयास्थाम्	ज्ञासीध्वम् ज्ञायिषीध्वम्
उ० पु०	ज्ञासीय ज्ञायिषीय	ज्ञासीवहि ज्ञायिषीवहि	ज्ञासीमहि ज्ञायिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अज्ञास्यत अज्ञायिष्यत	अज्ञास्येताम् अज्ञायिष्येताम्	अज्ञास्यन्त अज्ञायिष्यन्त
म० पु०	अज्ञास्यथाः अज्ञायिष्यथाः	अज्ञास्येथाम् अज्ञायिष्येथाम्	अज्ञास्यध्वम् अज्ञायिष्यध्वम्
उ० पु०	अज्ञास्ये अज्ञायिष्ये	अज्ञास्यावहि अज्ञायिष्यावहि	अज्ञास्यामहि अज्ञायिष्यामहि

नी—लेना (सकर्मक)

कर्मवाच्य

लट्

प्र० पु०	नीयते	नीयेते	नीयन्ते
म० पु०	नीयसे	नीयेथे	नीयध्वे
उ० पु०	नीये	नीयावहे	नीयामहे

लोट

प्र० पु०	नीयताम्	नायेनाम	नीयन्ताम्
म० पु०	नीयस्व	न येयाम्	नीयध्वम्
उ० पु०	नीयै	नीयावहै	नीयामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	नीयेत	नायेयाताम	नीयेरन्
म० पु०	नीयेथा	नीयेयाथाम्	नीयेध्वम्
उ० पु०	नीयय	नीयेवहि	नीयेमहि

लङ्

प्र० पु०	अनायत	अनीयेताम्	अनीयन्त
म० पु०	अनायथा	अनीयेथाम्	अनीयध्वम्
उ पु०	अनीये	अनीयावहि	अनीयामहि

लिट्

प्र० पु०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
म० पु०	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे
उ० पु०	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अनायि	अनायिषाताम् अनेषाताम्	अनायिषत अनेषत
म० पु०	अनायिष्ठा. अनेष्ठा	अनायिषाथाम् अनेषाथाम	अनायिध्वम् अनेध्वम्
उ० पु०	अनायिषि अनेषि	अनायिष्वहि अनेष्वहि	अनायिष्महि अनेष्महि

लुट्

प्र० पु०	नेता	नेतारौ	नेतार
म० पु०	नेतासे	नेतासाथे	नेताध्वे
उ० पु०	नेताहे	नेतास्वहे	नेतास्महे

लृट

प्र० पु०	नेष्यते, नायिष्यते	नेष्येते नायिष्येते	नेष्यन्ते नायिष्यन्ते
म० पु०	नेष्यसे, नायिष्यसे	नेष्येथे नायिष्येथे	नेष्यध्वे नायिष्यध्वे
उ० पु०	नेष्ये, नायिष्ये	नेष्यावहे नायिष्यावहे	नेष्यामहे नायिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	नेषीष्ट / नायिषीष्ट	नेषीयास्ताम / नायिषीयास्ताम्	नेषीरन् / नायिषीरन्
म० पु०	नेषीष्ठा: / नायिषीष्ठा	नेषीयास्थाम् / नायिषीयास्थाम्	नेषीढ्वम् / नायिषीढ्वम्
उ० पु०	नेषीय / नायिषीय	नेषीवहि / नायिषीवहि	नेषीमहि / नायिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अनेष्यत / अनायिष्यत	अनेष्येताम् / अनायिष्येताम्	अनेष्यन्त / अनायिष्यन्त
म० पु०	अनेष्यथाः / अनायिष्यथा	अनेष्येथाम् / अनायिष्येथाम	अनेष्यध्वम् / अनायिष्यध्वम्
उ० पु०	अनेष्ये / अनायिष्ये	अनेष्यावहि / अनायिष्यावहि	अनेष्यामहि / अनायिष्यामहि

बुध्—जानना (सकर्मक)

कर्मवाच्य

लट्

प्र० पु०	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
म० पु०	बुध्यसे	बुध्येथे	बुध्यध्वे
उ० पु०	बुध्ये	बुध्यावहे	बुध्यामहे

लोट्

प्र० पु०	बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्
म० पु०	बुध्यस्व	बुध्येथाम्	बुध्यध्वम्
उ० पु०	बुध्यै	बुध्यावहै	बुध्यामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
म० पु०	बुध्येथा:	बुध्येयाथाम्	बुध्येध्वम्
उ० पु०	बुध्येय	बुध्येवहि	बुध्येमहि

लङ्

प्र० पु०	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
म० पु०	अबुध्यथाः	अबुध्येथाम्	अबुध्यध्वम्
उ० पु०	अबुध्ये	अबुध्यावहि	अबुध्यामहि

लिट्

प्र० पु०	बुबुधे	बुबुधाते	बुबुधिरे
म० पु०	बुबुधिषे	बुबुधाथे	बुबुधिध्वे
उ० पु०	बुबुधे	बुबुधिवहे	बुबुधिमहे

लुङ्

प्र० पु०	अबोधि	अबोधिषाताम्	अबोधिषत
म० पु०	अबोधिष्ठा	अबोधिषाथाम्	अबोधिध्वम्
उ० पु०	अबोधिषि	अबोधिष्वहि	अबोधिष्महि

लुट्

प्र० पु०	बोधिता	बोधितारौ	बोधितार
म० पु०	बोधितासे	बोधितासाथे	बोधिताध्वे
उ० पु०	बोधिताहे	बोधितास्वहे	बोधितास्महे

लृट्

प्र० पु०	बोधिष्यते	बोधिष्येते	बोधिष्यन्ते
म० पु०	बोधिष्यसे	बोधिष्येथे	बोधिष्यध्वे
उ० पु०	बोधिष्ये	बोधिष्यावहे	बोधिष्यामहे

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	बोधिषीष्ट	बोधिषीयास्ताम	बोधिषीरन्
म० पु०	बोधिषीष्ठाः	बोधिषीयास्थाम्	बोधिषीध्वम्
उ० पु०	बोधिषीय	बोधिषीवहि	बोधिषीमहि

लृङ्

प्र० पु०	अबोधिष्यत	अबोधिष्येताम्	अबोधिष्यन्त
म० पु०	अबोधिष्यथा	अबोधिष्येथाम्	अबोधिष्यध्वम्
उ० पु०	अबोधिष्ये	अबाधिष्यावहि	अबोधिष्यामहि

कृ—करना। लट्—क्रियते, लोट्—क्रियताम्, विधिलिङ्—क्रियेत, लङ्—अक्रियत, लिट्—चक्रे, लुङ्—अकारि, लुट्—कर्ता-कारिता, लृट्—करिष्यते-कारिष्यते, आशीर्लिङ्—कृषीष्ट कारिषीष्ट, लृङ्—अकरिष्यत-अकारिष्यत।

दा—देना। लट्—दीयते, लोट्—दीयताम्, विधिलिङ्—दीयेत, लङ्—अदीयत, लिट्—ददे, लुङ्—अदायि, लुट्—दाता-दायिता, लृट्—दास्यते-दायिष्यते, आशीर्लिङ्—दासीष्ट दायिषीष्ट, लृङ्—अदास्यत-अदायिष्यत।

पा—पीना। लट्—पीयते, लोट्—पीयताम्, विधिलिङ्—पीयेत, लङ्—अपीयत, लिट्—पपे, लुङ्—अपायि, लुट्—पाता, लृट्—पास्यते, आशीर्लिङ्—पासीष्ट, लृङ्—अपास्यत।

——

सप्तम प्रकरण

कृदन्त

तव्य और अनीय

तव्यत्तव्यानीयर '—भाव और कर्म में धातु से तव्यत, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं। तव्यत् प्रत्ययान्त शब्द स्वरित होते हैं। तव्यत् और तव्य—दोनो के रूप समान होते हैं।

उदाहरण —एधितव्यम् (तव्यत् और तव्य), एधनीय (अनीयर) त्वया; चेतव्यश्चयनीयो वा धर्मस्त्वया।

इन प्रत्यया के निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

धातु	तव्य	अनीय
कृ	कर्तव्य (करने योग्य)	करणीय. (करने योग्य)
गम्	गन्तव्यः	गमनीय
चि	चेतव्य	चयनीय
छिद्	छेत्तव्य	छेदनीय
दा	दातव्य	दानीय
नी	नेतव्य	नयनीय
पच्	पक्तव्य	पचनीयः
पठ्	पठितव्य	पठनीयः
बुध्	बोद्धव्यः	बोधनीय
भिद्	भेत्तव्यः	भेदनीय
भू	भवितव्य.	भवनीय
मुच्	मोक्तव्यः	मोचनीय
मृज्	मार्ष्टव्य	मार्जनीयः
सृज्	स्रष्टव्य	सर्जनीय.

केलिमर्

केलिमर उपसंख्यानम् (वा०)—तव्यत् आदि प्रत्ययो की भाँति भाव और कर्म में केलिमर् प्रत्यय होता है। जैसे—पचेलिमा माषा., भिदेलिमाः सरला।

यत्

अचो यत्—अजन्त धातु से यत् प्रत्यय होता है। जैसे—

चि + यत् = चेयम।

ईद्यति—यत् प्रत्यय के पहले आने वाले आकार के स्थान पर ईकार हो जाता है। जैसे—दा + यत् = देयम्, ग्लै (ग्ला) + यत् = ग्लेयम।

पोरदुपधात—जिसकी उपधा में ह्रस्व अकार हो, उस पवर्गान्त धातु से यत् प्रत्यय होता है। जैसे—शप् + यत् = शप्यम, लभ् + यत् = लभ्यम्।

क्यप्

एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्—इण्, स्तु, शास, वृ, दृ और जुष् धातुओं से क्यप् प्रत्य होता है।

ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्—यदि कृत् प्रत्यय का पकार इत्संज्ञक हो, तो प्रत्यय के पहले आने वाले ह्रस्व को तुक् आगम होता है। जैसे—इण् + क्यप् = इ + य = इ + त् + य = इत्य॰, स्तु + क्यप् = स्तु + त् + य = स्तुत्य, वृत्य॰, आदृत्य ; जुष्य॰, शिष्य।

शास्[1] धातु की उपधा आ के स्थान पर इ कर दी गई है।

मृजेर्विभाषा—मृज् धातु से विकल्प से क्यप् होता है। अतः—मृज् + क्यप् = मृज्य (साफ करने योग्य)।

ण्यत्

ऋहलोर्ण्यत्—ऋवर्णान्त और हलन्त धातु से ण्यत् प्रत्यय होता है। जैसे—कृ + ण्यत् = कार्यम्; हृ + ण्यत् = हार्यम, धृ + ण्यत् = धार्यम्।

चजोः कुघिण्ण्यतोः—यदि बाद में घित् या ण्यत् प्रत्यय हो, तो च और ज के स्थान पर कवर्ग आदेश होता है।

मृजेर्वृद्धि—यदि मृज् धातु के बाद कोई सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय हो, तो मृज् धातु के इक को वृद्धि होती है। अत—मार्ग्य।

भोज्यं भक्ष्ये—भक्ष्य (भक्षण करने योग्य) अर्थ में भोज्य होता है। जब 'भक्षण करने योग्य' अर्थ नहीं होता, तब भोग्य बनता है।

---

[1] द्रष्टव्य सूत्र—"शास इदङ्हलोः"—६।४।३४

ण्वुल्, तृच्

ण्वुल्तृचौ—ण्वुल् और तृच् प्रत्यय धातु से होते हैं।

युवोरनाकौ—यु के स्थान पर अन और वु के स्थान पर अक होता है। जैसे—कृ + ण्वुल् = कृ + वु = कृ + अक = कारक। कृ धातु में तृच् प्रत्यय लगाने पर कर्ता रूप बनता है।

ल्यु, णिनि, अच्

नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—नन्द् आदि से ल्यु प्रत्यय, ग्रह आदि से णिनि प्रत्यय, और पच् आदि से अच् प्रत्यय होता है। जैसे—नन्द् + ल्यु = नन्दन. (आनन्दित करने वाला)। जनादन, लवणः। ग्रह + णिनि = ग्राही, स्था + णिनि = स्थायी (स्थिर रहने वाला)। पच् + अच् = पच।

क

इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः—इक् उपधा वाली, ज्ञा, प्री और कृ धातुओं से क प्रत्यय होता है। जैसे—बुध् + क = बुध., ज्ञा + क = ज्ञ (जानने वाला), प्रिय; किर (बिखेरने वाला)।

आतश्चोपसर्गे—उपसर्गयुक्त आकारान्त धातु से क प्रत्यय होता है। जैसे—प्रज्ञ (प्र + ज्ञा + क), सुग्ल।

गेहे कः—घर अर्थ में ग्रह् धातु से क प्रत्यय होता है। अतः—ग्रह् + क = गृहम्।

अण्

कर्मण्यण्—यदि कर्म उपपद हो, तो धातु से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—कुम्भकार – कुम्भ करोति।

ट

चरेष्टः—यदि अधिकरण उपपद हो, तो चर् धातु से ट प्रत्यय होता है। जैसे—कुरुचरः—कुरुषु चरति।

भिक्षासेनादायेषु च—यदि भिक्षा, सेना या आदाय उपपद हो, तो चर् धातु से ट प्रत्यय होता है। अत—भिक्षाचारः, सेनाचर (सैनिक), आदायचरः।

कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु—यदि हेतु, ताच्छील्य (स्वभाव) या आनुलोम्य (अनुकूलता) द्योतित हो, तो कृ धातु से ट प्रत्यय होता है।

जैसे—यशस्करी विद्या।

'यशस्करी' मे हेतु अर्थ में ट प्रत्यय हुआ है।

ताच्छील्य का उदाहरण है—श्राद्धकर (श्राद्ध कर्तुं शील यस्य)।

आनुलोम्य का उदाहरण है—वचनकर।

खश्

एजे खश्—ण्यन्त एज् धातु से खश प्रत्यय होता है।

अरुद्विषदजन्तस्य मुम्—यदि उत्तरपद खिदन्त हो, तो अरुष (मर्म), द्विषत् और अजन्त को मुम् आगम होता है। अव्यय को मुम् का आगम नही होता। अतः—जनमेजय (जनमेजयति)।

खच्

प्रियवशे वद खच्—यदि प्रिय या वश कर्म उपपद हो, तो वद् धातु से खच् प्रत्यय होता है। अत प्रियवदः, वशवद।

द्विषत्परयोस्तापेः—द्विषत् या पर कर्म के उपपद रहने पर तापि से खच् प्रत्यय होता है। अत —द्विषन्तप. – द्विषन्त तापयति, परन्तप – पर तापयति।

वाचि यमो व्रते—वाच् कर्म के उपपद रहने पर यम् धातु से व्रत अर्थ में खच प्रत्यय होता है।

वाचयमपुरन्दरौ च—वाचयम और पुरन्दर रूप निपातन से बनते हैं।

पूःसर्वयोर्दारिसहोः—पुर् कर्म उपपद से युक्त दारि धातु से और सर्व कर्म उपपद से युक्त स्पृह धातु से खच् प्रत्यय होता है। अत —पुरन्दरः (पुर दारयति), सर्वंसह।

सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः—सर्व, कूल, अभ्र या करीष कर्म के उपपद रहने पर कष् धातु से खच् प्रत्यय होता है। अत —सर्वंकष खल, कूलकषा नदी, अभ्रंकषो वायु, करीषंकषा वात्या।

मेघर्तिभयेषु कृञः—यदि मेघ, ऋति या भय कर्म रूप में उपपद हो, तो कृ धातु से खच् प्रत्यय होता है। अत —मेघंकर, ऋतिंकर, भयंकर।

क्षेमप्रियमद्रेऽण् च—यदि क्षेम, प्रिय या मद्र कर्म रूप में उपपद हो, तो कृ धातु से अण् और खच् प्रत्यय होते हैं। अतः—क्षेमकारः (अण्), क्षेमंकर (खच्), प्रियकारः (अण्), प्रियंकरः (खच्), मद्रकारः, मद्रंकर।

संज्ञायां भृतवृजिधारिसहितपिदमः—यदि बना हुआ पद संज्ञा हो, तो कर्म उपपद रहने पर भृ, तॄ, वृ, जि, धारि, सहि, तपि और दम् धातुओं से

खच् प्रत्यय होता है। जैसे--विश्वम्भरा, रथन्तर साम, स्वयंवरा कन्या, शत्रुञ्जय, युगन्धर', शत्रुसह', शत्रुन्तप, अरिन्दमः।

गमश्च--यदि बना हुआ पद संज्ञा हो, तो कर्म उपपद रहने पर गम् धातु से खच् प्रत्यय होता है। अत'—सुतङ्गम'।

ड

सप्तम्यां जनेर्डः--यदि सप्तम्यन्त उपपद हो, तो जन् धातु से ड प्रत्यय होता है। जैसे--वारिज -वारिणि जातः।

पञ्चम्यामजातौ--यदि पञ्चम्यन्त उपपद जातिवाचक न हो, तो जन् धातु से ड प्रत्यय होता है। जैसे--शोकज -शोकात् जात, संस्कारज -संस्काराज्जात।

उपसर्गे च संज्ञायाम्--यदि बना हुआ पद संज्ञा हो और उपसर्ग उपपद हो, तो जन् धातु से भूतकाल में ड प्रत्यय होता है। अत --प्रजाः-प्रजाता इति।

अनौ कर्मणि--कर्म उपपद रहने पर अनु पूर्वक जन् धातु से भूतकाल में ड प्रत्यय होता है। जैसे—पुमनुज., स्त्र्यनुज।

अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः--यदि अन्त, अत्यन्त, अध्वन्, दूर, पार, सर्व या अनन्त कम रूप में उपपद हो, तो गम् धातु से ड प्रत्यय होता है। जैसे--अन्तग, अत्यन्तग, अध्वग (पथिक), दूरग, पारग, सर्वग, अनन्तग।

आशिषि हनः--यदि आशीर्वचन द्योतित हो, तो कर्म उपपद रहने पर हन धातु से ड प्रत्यय होता है। जैस--शत्रुह, दुःखह। शत्रुहस्ते पुत्रो भूयात्, दु खहस्त्व भूयाः।

अपे क्लेशतमसो--यदि क्लेश या तमस् कर्म रूप में उपपद हो, तो अप पूर्वक हन धातु से ड प्रत्यय होता है। जैसे--क्लेशापह, तमोऽपह।

क्विन्

स्पृशोऽनुदके क्विन्--यदि उदक के अतिरिक्त कोई सुबन्त उपपद हो, तो स्पृश् धातु से क्विन् प्रत्यय होता है। जैसे—मन्त्रस्पृक् (मन्त्र का उच्चारण करके स्पर्श करने वाला), जलस्पृक्, घृतस्पृक्।

ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च--ऋत्विक, दधृक्, स्रक्, दिक् और उष्णिक् शब्द क्विन् प्रत्ययान्त निपातन हैं। अञ्चु, युजि और क्रुञ्च् धातुओं से भी क्विन् प्रत्यय होता है। अत.—

ऋतु + यज् + क्विन् = ऋत्विक ।

धृष् + क्विन् = दधृक् ।

सृज् + क्विन् = स्रक् ।

उत + स्निह् + क्विन् = उष्णिक् ।

प्र + अञ्चु + क्विन् = प्राङ् ।

प्रति + अञ्चु + क्विन् = प्रत्यक ।

युज् + क्विन् = युङ् ।

क्रुञ्च् + क्विन् = क्रुङ् ।

त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च—त्यदादि के उपपद रहने पर अनालोचन (न देखना) अर्थ में दृश धातु से क्विन् और कञ् प्रत्यय होते हैं। जैसे—

तद् + दृश् + क्विन् = तादृक् ।

तद् + दृश् + कञ् = तादृश ।

क्विप्

सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्—सुबन्त उपपद के रहने पर सद्, सू, द्विष्, द्रुह्, दुह्, युज्, विद्, भिद्, छिद्, जि, नी और राज् धातुओं से क्विप् प्रत्यय होता है। सुबन्त उपपद उपसर्ग भी हो सकता है। उदाहरण—

१ सद्—द्युसत्, वेदिषत्, उपनिषत्, शुचिषत्, अन्तरिक्षसत् ।

२ सू—वत्ससू गौः (वत्स सूते), अण्डसू, शतसू, प्रसू ।

३ द्विष्—मित्रद्विट् (मित्र द्वेष्टि), प्रद्विट् ।

४ द्रुह्—मित्रध्रुक्, प्रध्रुक् ।

५. दुह—गोधुक्, प्रधुक ।

६ युज—अश्वयुक्, प्रयुक् ।

७. विद्—वेदवित्, ब्रह्मवित्, प्रवित् ।

८ भिद्—काष्ठभित् (काष्ठ भिनत्ति), प्रभित् ।

९. छिद्—रज्जुच्छिद्, प्रच्छिद् ।

१० जि—शत्रुजित्, प्रजित् ।

११ नी—सेनानीः, प्रणी, अग्रणीः, ग्रामणी. ।

१२. राज्—विश्वराट्, विराट्, सम्राट् ।

ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्—यदि ब्रह्म, भ्रूण या वृत्र कर्मरूप में उपपद हो, तो हन् धातु से भूतकाल में क्विप् प्रत्यय होता है। अतः—ब्रह्महा, भ्रूणहा, वृत्रहा ।

सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः—यदि सु, कर्म, पाप, मन्त्र या पुण्य कर्म उपपद हो, तो कृञ् धातु से भूतकाल में क्विप् प्रत्यय होता है। अतः—सुकृत् (अच्छा करने वाला), कर्मकृत्, पापकृत्, मन्त्रकृत्, पुण्यकृत्।

सोमे सुञः—यदि सोम शब्द कर्म रूप में उपपद हो, तो सु धातु से भूतकाल में क्विप् प्रत्यय होता है। अतः—सोमसुत्।

अग्नौ चेः—यदि अग्नि शब्द कर्म रूप में उपपद हो, तो चि धातु से भूतकाल में क्विप् प्रत्यय होता है। अतः—अग्निचित्–अग्निम् अचैषीत्।

क्वनिप्

दृशेः क्वनिप्—कर्म उपपद के रहने पर दृश् धातु से भूतकाल में क्वनिप् प्रत्यय होता है। अतः—परलोकदृश्वा, पारदृश्वा।

राजनि युधिकृञः—यदि राजन् शब्द कर्म रूप में उपपद हो, तो युध् तथा कृञ् धातुओं से भूतकाल में क्वनिप् प्रत्यय होता है। अतः—राजयुध्वा (राजानं योधितवान्), राजकृत्वा।

सहे च—यदि सह उपपद हो, तो भी युध् और कृञ् धातुओं से भूतकाल में क्वनिप् प्रत्यय होता है। अतः—सहयुध्वा, सहकृत्वा।

क्त और क्तवतु

क्तक्तवतू निष्ठा—क्त और क्तवतु प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं।

निष्ठा—धातुओं से भूतकाल में निष्ठासंज्ञक प्रत्यय होते हैं। जैसे—स्नातं मया, स्तुतस्त्वया विष्णुः, विश्वं कृतवान् विष्णुः।

रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः—यदि रकार या दकार के बाद क्त या क्तवतु का तकार हो, तो उसके स्थान पर नकार हो जाता है और पूर्व दकार के स्थान पर भी नकार हो जाता है। जैसे—शीर्णं, भिन्न (भिद् + त), छिन्न (छिद् + त)।

संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः—यदि संयोगादि, आकारान्त और यण् वाली धातु के बाद क्त या क्तवतु का तकार हो, तो उसके स्थान पर नकार हो जाता है। जैसे—द्राणः, म्लानः।

ल्वादिभ्यः—लूञ् आदि धातुओं के बाद आने वाले क्त या क्तवतु प्रत्यय के त के स्थान पर न होता है। जैसे—लून। लूञ् आदि धातुएँ ये हैं—लूञ्, स्तॄञ्, वॄञ्, कॄञ्, धूञ्, शॄ, पॄ, वॄ, भॄ मॄ, दॄ, जॄ, नॄ, कॄ, ॠ, गॄ, ज्या, री, ली, व्ली और प्ली।

ओदितश्च—ओदित् (जिसका ओकार इत् हो) धातु के बाद आने वाले क्त और क्तवतु के तकार के स्थान पर नकार होता है। जैसे—भुज् + क्त = भुग्नः।

उद् + टुओश्वि + क्त = उद् + श्वि + त = उच्छून ।

शुषः क —शुष् धातु के बाद आने वाले क्त या क्तवतु के तकार के स्थान पर ककार होता है। अत —शुष्क ।

पचो व —पच धातु के बाद के क्त या क्तवतु के तकार के स्थान पर वकार कर दिया जाता है। अत.—पक्व ।

क्षायो म —क्षै धातु के बाद आने वाले क्त या क्तवतु के तकार के स्थान पर मकार कर दिया जाता है। अत -क्षाम ।

निष्ठाया सेटि—यदि इट् सहित निष्ठा बाद में हो, तो णि का लोप हो जाता है। जैसे—भावि + इ + त = भाव् + इ + त = भावित, भावितवान्।

दृढः स्थूलबलयो –स्थूल और बलवान् अर्थ में शब्द दृढ निपातित होता है।

प्रभौ परिवृढः—प्रभु अर्थ में परिवृढ शब्द का निपातन होता है।

कतिपय क्तप्रत्ययान्त रूप निम्नलिखित हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	जग्ध	त्रै	त्रात
अधि + इ	अधीत	दण्ड्	दण्डित
आ + रभ्	आरब्ध	दह्	दग्ध
कथ्	कथित	दा	दत्त
कम्प्	कम्पित	दृश्	दृष्ट
कुप्	कुपित	धा	हित
कृ	कृत	नम्	नत
कृष्	कृष्ट	नश	नष्ट
कॄ	कीर्ण	पद्	पन्न
क्रम्	क्रान्त	पुष्	पुष्ट
क्रुध्	क्रुद्ध	पू	पूत
क्षि	क्षीण	प्रच्छ	पृष्ट
खाद्	खादित	बन्ध्	बद्ध
गम	गत	ब्रू	उक्त
गै (गा)	गीत	भू	भूत
ग्रह्	गृहीत	यज्	इष्ट
चर्	चरित	युज्	युक्त
चि	चित	रुह्	रूढ
चुर्	चोरित	वच्	उक्त
जि	जित	वप	उप्त
ज्ञा	ज्ञात	वह	ऊढ
तन्	तत	शी	शयित
तुष	तुष्ट	स्पृश्	स्पृष्ट

क्तप्रत्ययान्त शब्दो के रूप तीनो लिङ्गो मे इस प्रकार होते हैं—

पु०	स्त्री०	नपु०
जग्ध	जग्धा	जग्धम
कृतः	कृता	कृतम
जित॰	जिता	जितम्

क्तवतुप्रत्ययान्त रूप इस प्रकार होगे—

पु०	स्त्री०	नपु०
कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
गतवान्	गतवती	गतवत्
त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
पठितवान्	पठितवती	पठितवत्

कानच् और क्वसु

लिट कानज्वा । क्वसुश्च—लिट् के स्थान पर क्वसु और कानच् प्रत्यय लगाये जाते हैं।

क्वसु प्रत्ययान्त रूप

अस्—आसिवस (फका हुआ), इण्—ईयिवस् (गया हुआ), कृ—चकृवस (किया हुआ), दा—ददिवस् (दिया हुआ), दृश्—ददृशिवस्, ददृश्वस् (देखा हुआ), पच—पेचिवस् (पकाया हुआ), भिद्—बिभिद्वस् (तोडा हुआ), यज्—ईजिवस् (यज्ञ किया हुआ); वच्—ऊचिवस् (कहा हुआ)।

टि०—इनके रूप जग्मिवस् (द्रष्टव्य पृ०, ५३) की भाँति चलते हैं।

कानच् प्रत्ययान्त रूप

कृ—चक्राणः, दा—ददान , नी—निन्यान , पच्—पेचान , यज्—ईजान॰, वच्—ऊचान ।

उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च—उपेयिवान्, अनाश्वान् और अनूचान शब्द निपातन हैं।

शतृ और शानच्

परस्मैपदी धातुओ में शतृ प्रत्यय लगाया जाता है और आत्मनेपदी धातुओं में शानच्। इन प्रत्ययो का प्रयोग वर्तमान में होता है।

विदे शतुर्वसु.—विद् के पश्चात् शतृ प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से वसु आदेश होता है। अत —विदन विद्वान्।

ईदासः—जब आस् धातु के बाद शानच् प्रत्यय आता है, तब शानच् के आन के स्थान पर ईन हो जाता है। जैसे—आस+शानच् = आसीन।

कुछ शतृ और शानच् प्रत्ययान्त रूप निम्नलिखित हैं—

शतृ प्रत्ययान्त रूप

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	अदन	मुष्	मुष्णन्
आप्	आप्नुवन्	रच्	रचयन्
इष्	इच्छन्	रुद्	रुदन्
कृष्	कर्षन	लिह	लिहन्
कॄ	किरन्	व्यध	विध्यन्
खन्	खनन्	शक	शक्नुवन्
खाद	खादन	शम	शाम्यन्
गण्	गणयन्	शुष्	शुष्यन्
गम्	गच्छन्	श्रि	श्रयन्
गै	गायन्	श्रु	शृण्वन्
घ्रा	जिघ्रन	सद्	सीदन्
चर्	चरन	सिच्	सिञ्चन्
चि	चिन्वन्	सिव्	सीव्यन्
छिद्	छिन्दन्	सृ	सरन्
तॄ	तरन्	सृप्	सर्पन्
दिव्	दीव्यन्	स्था	तिष्ठन्
ध्यै	ध्यायन	स्पृश्	स्पृशन्
नश्	नश्यन	स्मृ	स्मरन्
नृत्	नृत्यन्	स्वप्	स्वपन्
पा	पिबन्	हन्	हनन्
प्रच्छ्	पृच्छन्	हस्	हसन्
बन्ध्	बध्नन्	हु	जुह्वत्
भृ	भरन्	हृ	हरन्
भ्रम्	भ्रमन्, भ्राम्यन्	ह्वे	ह्वयन्

शानच् प्रत्ययान्त रूप

धातु	रूप	धातु	रूप
अधि + इ	अधीयान.	द्विष्	द्विषाणः
आ + रभ्	आरभमाण	धा	दधान
ईक्ष्	ईक्षमाणः	पलाय	पलायमान
ईह्.	ईहमान	बाध्	बाधमानः
एध्	एधमान	भिक्ष्	भिक्षमाण
कम्प्	कम्पमान	मुद	मोदमान
कृ	कुर्वाण	मृ	म्रियमाण
क्री	क्रीणान	यत्	यतमान
ग्रस्	ग्रसमान	रुच्	रोचमानः
चुर्	चोरयमाण	रुध	रुन्धान
चेष्ट्	चेष्टमान	वृत्	वर्तमान
तन	तन्वान	शी	शयानः
तुद्	तुदमान	शुच्	शोचमान
दिव्	दीव्यमान	सु	सुन्वानः
द्युत्	द्योतमान	स्मि	स्मयमान

शानन्

पूङ्‌यजो शानन्—पूङ् तथा यज् धातुओं से वर्तमानकाल में शानन् प्रत्यय होता है। अत —पवमानः (पवित्र करता हुआ), यजमान· (यज्ञ करता हुआ)।

चानश्

ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्—ताच्छील्य, वयोवचन (शरीर की अवस्था), शक्ति-इन अर्थों में वतमानकाल में धातु से चानश् प्रत्यय होता है। जैसे—

ताच्छील्य- कतीह मुण्डयमाना —यहाँ कितने मुण्डन किए हुए हैं ?

,, —कतीह भूषयमाणा —यहाँ कितने सजे हुए हैं ?

वयोवचन—कतीह कवच पर्यस्यमाना.—यहाँ कितने कवच धारण कर सकते हैं ?

शक्ति —कतीह पचमाना —यहाँ कितने पकाने वाले हैं ?

तृन्

तृन्—तच्छील, तद्धर्म और तत्साधुकारी कर्त्ता में धातु से तृन् प्रत्यय होता है। जैसे—कर्ता कटान—चटाई बनाने के स्वभाव वाला।

षाकन्

जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङ षाकन्—तच्छील, तद्धर्म और तत्साधुकारी कर्ता म जल्प, भिक्ष्, कुट्ट्, लुण्ट और वृङ् धातुओं से षाकन् प्रत्यय होता है। उदाहरण—

जल्प + षाकन् = जल्पाक।
भिक्ष् + षाकन् = भिक्षाक।
कुट्ट + षाकन् = कुट्टाक।
लुण्ट् + षाकन् = लुण्टाक।
वृङ + षाकन् = वराक।

उ

सनाशंभिक्ष उः—तच्छील, तद्धर्म और तत्साधुकारी कर्ता में सन्प्रत्ययान्त तथा आशंस और भिक्ष् धातुओं से उ प्रत्यय होता है। जैसे—

सन्नन्त—चिकीर्ष् + उ = चिकीर्षु।
आशंस + उ = आशंसु।
भिक्ष् + उ = भिक्षु।

ष्ट्रन्

दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे—करण अर्थ में दाप् (काटना), नी, शस् (मारना), यु (मिलाना), युज्, स्तु, तुद्, सि (बाँधना), सिच, मिह्, (सींचना), पत्, दश, और नह् (बांधना) धातुओं से ष्ट्रन् प्रत्यय होता है। उदाहरण—दात्रम्, नेत्रम्, शस्त्रम्, योत्रम्, योक्त्रम्, स्तोत्रम्, तोत्रम्, सेत्रम्, सेक्त्रम्, मेढ्रम्, पत्रम्, दंष्ट्रा, नद्ध्री।

इत्र

अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्र—करण अर्थ में ऋ, लू, धू, सू, खन्, सह् और चर् धातुओं से इत्र प्रत्यय होता है। अत—अरित्रम्, लवित्रम्, धवित्रम्, सवित्रम्, खनित्रम्, सहित्रम्, चरित्रम्।

तुमुन्

तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्—यदि क्रियार्थ क्रिया उपपद हो, तो भविष्यत् अर्थ में धातु से तुमुन् और ण्वुल प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कृष्णं द्रष्टुं (तुमुन्) याति। कृष्णं दर्शको (ण्वुल्) याति।

कालसमयवेलासु तुमुन् —काल, समय या वेला शब्द के उपपद रहने पर धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। जैसे— कालः समयो वेला वा भोक्तुम्।

पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु - सामर्थ्य अर्थ वाले पूर्णतावाचक शब्दों के उपपद रहने पर धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है।

जैसे—पर्याप्तो भोक्तुम्, समर्थो भोक्तुम्, अलं भोक्तुम्।

कुछ तुमुन् प्रत्ययान्त रूप ये हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	अत्तुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्
आप	आप्तुम्	डी	डयितुम्
आम्	आमितुम्	दा	दातुम्
इ	एतुम्	दुह्	दोग्धुम्
इष्	एषितुम्	द्युत	द्योतितुम्
एध्	एधितुम्	द्रुह्	द्रोग्धुम्
कथ	कथयितुम्	धाव्	धावितुम्
कुप्	कोपितुम्	धृ	धर्तुम्
कृ	कर्तुम्	पच्	पक्तुम्
कृष्	कर्ष्टुम्	प्रच्छ्	प्रष्टुम्
क्री	क्रेतुम्	बुध्	बोद्धुम्
क्रुध्	क्रोद्धुम्	बुध् + णिच्	बोधयितुम्
क्षिप	क्षेप्तुम्	बुध + सन्	बुबोधिषितुम्
खन्	खनितुम्	बुध् + यङ	बुबोधितुम्
गम्	गन्तुम्	ब्रू	वक्तुम्
गर्ज्	गर्जितुम्	भिद्	भेत्तुम्
गै	गातुम्	भू	भक्तुम्
ग्रस्	ग्रसितुम्	मुच्	मोक्तुम्
ग्रह्	ग्रहीतुम्	यज्	यष्टुम्
चि	चेतुम्	युज्	योक्तुम्
चुर्	चोरयितुम्	रुद्	रोदितुम्
छिद्	छेत्तुम्	रुध्	रोद्धुम्
जन्	जनितुम्	वप्	वप्तुम्
जप्	जपितुम्	सह्	सहितुम्, सोढुम्
जि	जेतुम्	स्तु	स्तोतुम्

घञ्

भावे—भाव अर्थ मे धातु से घञ् प्रत्यय होता है। जैसे—पच्+घञ् =पाक.।

श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे--उपसर्गरहित श्रि, नी और भू धातुओ से घञ् प्रत्यय होता है। अत --श्राय, नाय, भावः।

वौ क्षुश्रुव —वि पूर्वक क्षु और श्रु धातुओ से घञ् प्रत्यय होता है। अत—विक्षाव (शब्द करना), विश्राव (अत्यधिक प्रसिद्ध होना)।

अवोदोर्नियः--अव और उत् से युक्त नी धातु से घञ् प्रत्यय होता है। अतः--अवनाय (अवनति), उन्नाय. (उन्नति)।

घञि च भावकरणयो --यदि भाव और करण कारक में रञ्ज् धातु के बाद घञ् प्रत्यय हो, तो रञ्ज् धातु के न का लोप हो जाता है। अत —रज्यतेऽनेनेति राग।

पदरुजविशस्पृशो घञ्--पद्, रुज्, विश् और स्पृश् धातुओ से घञ् प्रत्यय होता है। अत --पाद, रोग, वेश, स्पर्श।

स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि--यदि स्फुर् और स्फुल् धातुओं के बाद घञ् प्रत्यय हो, तो इनको आ आदेश होता है। अतः—स्फारः, स्फालः।

अप्

ऋदोरप्--भाव और कर्ता से भिन्न कारक में संज्ञा विषय में ऋकारान्त और उवर्णान्त धातुओं से अप् प्रत्यय होता है। अत —कॄ+अप्=कर, गॄ+अप्=गरः, यु+अप्=यव, लू+अप्=लव, स्तु+अप्=स्तव, पू+अप्=पवः।

नङ्

यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्--भाव और कर्ता से भिन्न कारक में

संज्ञा अर्थ में यज्, याच्, यत्, विच्छ् (चमकना), प्रच्छ् तथा रक्ष् धातुओं से नङ् प्रत्यय होता है। अत —

यज् + नङ् = यज्ञः, याच् + नङ् = याच्ञा, यत् + नङ् = यत्न॰, विच्छ् + नङ् = विश्न॰, प्रच्छ् + नङ् = प्रश्न॰, रक्ष् + नङ् = रक्ष्णः ।

क्तिन्

स्त्रियां क्तिन्—स्त्रीलिङ्ग में भाव और कर्ता-भिन्न कारक में संज्ञा अर्थ में धातु से क्तिन् प्रत्यय होता है। जैसे—कृति, स्तुति.।

ॠल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्य (वा०)—ॠकारान्त और लू आदि धातुओं के बाद आने वाले क्तिन् प्रत्यय के तकार के स्थान पर नकार हो जाता है। अत —कॄ + क्तिन् = कीर्णि., लू + क्तिन् = लूनि, धू + क्तिन् = धूनि; पू + क्तिन् = पूनिः।

सम्पद् आदि से भी क्तिन् प्रत्यय होता है। अत —सम्पत्तिः, विपत्ति, आपत्तिः।

ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च—ऊति, यूति, जूति, साति, हेति और कीर्ति शब्दों का निपातन होता है।

ऊति (अव + क्तिन्), यूति (यु + क्तिन्), जूति (जु + क्तिन्), साति (सो-नष्ट करना + क्तिन्), हेति (हन्-मारना + क्तिन्), कीर्ति (कॄ-बिखेरना + क्तिन्)।

कुछ क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द ये हैं—

ख्याति, गति, चितिः, द्युति, नति, नीति, पक्ति, भक्ति, भीतिः, मति, मृति, युक्ति, श्रुति, सृतिः, स्तुति।

स्त्रियां क्तिन्—क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

अ

अ प्रत्ययात्—स्त्रीलिङ्ग में भाव और कर्ता-भिन्न कारक में संज्ञा अर्थ में प्रत्ययान्त धातु से अ प्रत्यय होता है। जैसे—चिकीर्षा, पुत्रकाम्या।

गुरोश्च हलः--गुरु वर्ण वाली हलन्त धातु से अ प्रत्यय होता है। जैसे--ईहा, ऊहा।

युच्

ण्यासश्रन्थो युच्--णि प्रत्ययान्त तथा आस् और श्रन्थ् धातुओं से स्त्रीलिङ्ग में युच प्रत्यय होता है। जैसे--कारणा, हारणा।

ल्युट

नपुंसके भावे क्तः। ल्युट् च--नपुंसकलिङ्ग में भाव में धातु से क्त और ल्युट् प्रत्यय होते हैं। जैसे--हसितम्, हसनम।

कुछ ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द निम्नलिखित हैं--

अद--अदनम्, अर्च्--अर्चनम्, आस्--आसनम, इष् एषणम्, कथ्-कथनम् कम्प् कम्पनम्, कुप् कोपनम्, कृ करणम्, कृष्-कर्षणम्, क्री-क्रयणम, क्षिप्-क्षेपणम, खन्-खननम्, गृ-गरणम्, गै गानम्, घ्रा घ्राणम्, चल् चलनम्, चि-चयनम्, चुर् चोरणम्, छिद् छेदनम, जि जयनम्, जीव् जीवनम्, डी-डयनम्, तुष्-तोषणम्, तृप्-तर्पणम्, तृ-तरणम, दिव् देवनम्, दिश् देशनम्, दुह्-दोहनम्, द्युत्-द्योतनम, नी-नयनम्, पठ् पठनम्, पूज् पूजनम्, ब्रू वचनम्, भू भवनम्, भृ भरणम्, मिल् मेलनम्, मुच् मोचनम्, मुह् मोहनम्, याच् याचनम्, युज्-योजनम्, युध्-योधनम्, लिख्-लेखनम्, लुभ् लोभनम्, विद् वदनम्, वृ वरणम्, वृत् वर्तनम्, शी-शयनम्, श्रि-श्रयणम्, श्रु-श्रवणम्, सृज् सर्जनम्, स्तु स्तवनम, स्पृश्-स्पर्शनम्, स्मृ-स्मरणम्।

खल्

ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्--ईषत्, दुस् और सु उपपद रहने पर कृच्छ्र (दुःख) और अकृच्छ्र अर्थ में खल् प्रत्यय होता है। जैसे--

कृच्छ्र--दुष्करः कटो भवता।

अकृच्छ्र--ईषत्करः, सुकरः।

क्त्वा

समानकर्तृकयो पूर्वकाले—समानकर्ता वाली धातुओं में से पूर्वकाल में विद्यमान धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। जैसे—भुक्त्वा व्रजति—खाकर जाता है।

यदि एक से अधिक धातुएँ पूर्वकाल में वर्तमान हो, तो उन सबसे क्त्वा प्रत्यय होता है। जैसे—भुक्त्वा पीत्वा व्रजति।

न क्त्वा सेट्—इट् सहित क्त्वा कित नहीं होता। जैसे—शयित्वा, स्नविदित्वा, देवित्वा वर्तित्वा।

मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा—मृड्, मृद् आदि धातुओं के बाद आने वाला सेट् क्त्वा कित् होता है। अत—मृडित्वा, मृदित्वा गुधित्वा, कुषित्वा, क्लिशित्वा-क्लिष्ट्वा, उदित्वा, उषित्वा।

रलो व्युपधाद्धलादे सश्च—इवर्ण या उवर्ण उपधा वाली, हलादि तथा रलन्त (जिसके अन्त मे रल् प्रत्याहार का कोई वर्ण हो) धातु के बाद आने वाले इट् सहित क्त्वा और सन् विकल्प से कित् होते हैं। जैसे—द्युतित्वा, द्योतित्वा, लिखित्वा लेखित्वा।

इसमें चार बातें आवश्यक है—

१ धातु की उपधा में इवर्ण या उवर्ण हो।
२ धातु के आदि में कोई व्यञ्जन वर्ण हो।
३ धातु के अन्त में रल् प्रत्याहार का कोई वर्ण हो।
४ क्त्वा के पहले इट् हो।

नोपधात्थफान्ताद्वा—जिसकी उपधा में न हो और अन्त मे थ या फ हो, उसके बाद आने वाला सेट् क्त्वा विकल्प से कित् होता है। जैसे ग्रथित्वा, ग्रन्थित्वा, श्रथित्वा, श्रन्थित्वा, गुफित्वा, गुम्फित्वा।

तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य—तृष्, मृष् और कृश् धातुओं के बाद आने वाला सेट् क्त्वा विकल्प से कित् होता है। यह आचार्य काश्यप का मत है। उदाहरण—तृषित्वा, तर्षित्वा; मृषित्वा, मर्षित्वा, कृशित्वा, कर्शित्वा।

अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा—यदि निषेधवाचक अलं या खलु उपपद हो, तो धातु से विकल्प से क्त्वा प्रत्यय होता है। जैसे—अलं कृत्वा, खलु कृत्वा।

कुछ क्त्वाप्रत्ययान्त रूप ये हैं—

धातु	रूप	धातु	रूप
अञ्ज	अक्त्वा, अञ्जित्वा	धा	हित्वा
अद्	जग्ध्वा	ध्यै	ध्यात्वा
अर्च्	अर्चित्वा	नम्	नत्वा
आप्	आप्त्वा	पच्	पक्त्वा
आस्	आसित्वा	पू	पवित्वा, पूत्वा
इ	इत्वा	प्रच्छ्	पृष्ट्वा
इष	इष्ट्वा, एषित्वा	ब्रू	उक्त्वा
ईक्ष	ईक्षित्वा	भज्	भक्त्वा
कम	कमित्वा	भू	भूत्वा
कृ	कृत्वा	भ्रम	भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा
कृष्	कृष्ट्वा	मा	मित्वा
क्रीड्	क्रीडित्वा	मुह्	मुग्ध्वा
क्रुध	क्रुद्ध्वा	यज्	इष्ट्वा
क्षुभ	क्षुभित्वा	युज्	युक्त्वा
खन्	खनित्वा, खात्वा	रच्	रचयित्वा
गण्	गणयित्वा	लिह्	लीढ्वा
गम्	गत्वा	लुभ्	लुब्ध्वा, लोभित्वा
गुह्	गुहित्वा, गूहित्वा, गूढ्वा	वच्	उक्त्वा
गॄ	गीर्त्वा	वन्द्	वन्दित्वा
गै	गीत्वा	वप्	उप्त्वा
ग्रह्	गृहीत्वा	वह्	ऊढ्वा
चर्	चरित्वा	विश्	विष्ट्वा
जि	जित्वा	शप्	शप्त्वा
ज्ञा	ज्ञात्वा	शम्	शमित्वा, शान्त्वा
तन्	तनित्वा, तत्वा	शास्	शिष्ट्वा
तॄ	तीर्त्वा	श्रु	श्रुत्वा
त्रै	त्रात्वा	सह्	सहित्वा, सोढ्वा
दश्	दष्ट्वा	सृज्	सृष्ट्वा
दम्	दमित्वा, दान्त्वा	स्था	स्थित्वा
दा	दत्त्वा	स्वप्	सुप्त्वा
दृश्	दृष्ट्वा	हन्	हत्वा

ल्यप्

समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्—यदि समास में नञ्-भिन्न अव्यय पूर्वपद हो, तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् होता है। जैसे—प्रकृत्य।

ल्यपि लघुपूर्वात्—यदि णिच् के पहले ह्रस्व स्वर हो और बाद में ल्यप् हो, तो णिच् की इ के स्थान पर अय् हो जाता है। जैसे—विगणय्य, प्रणमय्य।

विभाषापः—यदि आप् धातु के बाद णिच् हो और उसके बाद ल्यप हो, तो णिच् की इ के स्थान पर विकल्प से अय् होता है। अत.—प्रापय्य, प्राप्य।

क्षियः—यदि क्षि के बाद ल्यप् हो, तो क्षि की इ के स्थान पर ई कर दी जाती है। अत —प्रक्षीय, उपक्षीय।

ल्यपि च—यदि वे के बाद ल्यप् हो, तो वे को सम्प्रसारण नही होता। अत —प्रवाय, उपवाय।

ज्यश्च—ज्या को भी सम्प्रसारण नही होता। अत —प्रज्याय।

व्यश्च—व्ये को भी सम्प्रसारण नही होता। अत —उपव्याय।

विभाषा परेः—परि पूवक व्ये को विकल्प से सम्प्रसारण होता है। अत —परिवीय, परिव्याय।

कुछ ल्यप् प्रत्ययान्त रूप निम्नलिखित हैं—

अधि + इ—अधीत्य, अनु + भू—अनुभूय, अव + कॄ—अवकीर्य, आ + दा—आदाय, आ + दृ—आदृत्य, आ + नी—आनीय, आ + लिख्—आलिख्य, आ + लिह—आलिह्य, आ + हु—आहुत्य, आ + ह्वे—आहूय, आ + पॄ—आपूर्य, आ + श्रि—आश्रित्य, उत् + गॄ—उद्गीर्य, उत् + छिद्—उच्छिद्य, उत् + प्लु—उत्प्लुत्य, उप + आस्—उपास्य, उप + भुज्—उपभुज्य, नि + पत्—निपत्य, नि + ली—निलीय, नि + सद्—निषद्य, नि + हन्—निहत्य, परि + त्यज्—परित्यज्य, प्र + आप्—प्राप्य, प्र + क्षिप्—प्रक्षिप्य, प्र + नम्—प्रणम्य, प्र + हृ—प्रहृत्य, वि + क्री—विक्रीय, वि + जि—विजित्य, वि + धा—विधाय, वि + रम्—विरम्य, वि + सृज्—विसृज्य, वि + हा—विहाय, सम् + अर्च्—समर्च्य, सम् + क्रम्—सङ्क्रम्य, सम् + तप्—सन्तप्य, सम् + पूज्—सम्पूज्य, सम् + यम्—संयम्य, सम् + रक्ष्—संरक्ष्य।

णमुल्

आभीक्ष्ण्ये णमुल् च—आभीक्ष्ण्य (पौनःपुन्य) अर्थ में समान कर्ता वाली धातुओं में से पूर्वकाल में वर्तमान धातु से णमुल् प्रत्यय होता है और क्त्वा प्रत्यय भी। णमुल् का अम् शेष रहता है।

नित्यवीप्सयो —आभीक्ष्ण्य या वीप्सा अर्थ में पद का द्वित्व होता है। जैसे—स्मार स्मार नमति शिवम्, स्मृत्वा स्मृत्वा नमति शिवम्। पाय पायम, भोज भोजम, श्राव श्रावम्।

अन्यथैव कथमित्थमु सिद्धाप्रयोगश्चेत्[1] —यदि कृञ का अप्रयोग सिद्ध हो, तो अन्यथा, एवम्, कथम् या इत्थम् के उपपद रहने पर णमुल् प्रत्यय होता है। सिद्धाप्रयोग का तात्पर्य यह है कि यदि कृञ का प्रयोग न भी किया जाय, तो भी अभीष्ट भाव का प्रकटन हो जाय। उदाहरण —अन्यथाकारम् एवकार कथकारम् इत्थकार वा भुङ्क्ते।

'अन्यथाकार भुङ्क्ते' और 'अन्यथा भुङ्क्ते' समान अर्थ वाले हैं।

कर्मणि दृशिविदो साकल्ये—यदि सम्पूर्णताविशिष्ट कर्म उपपद हो, तो दृश और विद् धातुओं से णमुल् प्रत्यय होता है। जैसे—कन्यादर्शं वरयति—जिन-जिन कन्याओं को देखता है, उन सबका वरण करता है। ब्राह्मणवेद भोजयति—य य ब्राह्मण जानाति लभते विचारयति वा त सर्व भोजयतीत्यर्थ। यवनदर्शं घातयति।

यावति विन्दजीवो —यदि यावत् शब्द उपपद हो, तो विद् (लाभे) और जीव् धातुओं से णमुल् प्रत्यय होता है। अत —यावद्वेद भुङ्क्ते, यावज्जीव-मधीते।

चर्मोदरयोः पूरे —यदि चर्मन् या उदर शब्द कर्मरूप में उपपद हो, तो पूर् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है। अत —चर्मपूर स्तृणाति, उदरपूर भुङ्क्ते।

निमूलसमूलयो कष —यदि निमूल या समूल कर्मरूप में उपपद हो, तो कष् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है। अत —निमूलकाष कषति, समूलकाष कषति।

शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिष —यदि शुष्क, चूर्ण या रूक्ष कर्मरूप में उपपद हो, तो पिष् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है! अतः—शुष्कपेष पिनष्टि—शुष्क पिनष्टीत्यर्थ। चूर्णपेषम्, रूक्षपेषम्।

समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रह—यदि समूल कर्मरूप में उपपद हो, तो हन् धातु से, अकृत कर्मरूपमें उपपद हो, तो कृञ् धातु से तथा जीव कर्मरूप में उपपद हो, तो ग्रह् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है। उदाहरण—

समूलघातं हन्ति, अकृतकार करोति, जीवग्राह गृह्णाति।

---

१ 'व्यर्थत्वादप्रयोगानर्ह इत्यर्थः'—सिद्धान्तकौमुदी।

करणे हनः—यदि करण कारक उपपद हो, तो हन् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है। ग्रत –पादघात हन्ति।

स्नेहने पिष—स्नेहनवाची करण के उपपद रहने पर पिष् धातु से णमुल् प्रत्यय होता है। ग्रत –उदपेष पिनष्टि, तैलपेष पिनष्टि।

हस्ते वर्तिग्रहो—हस्तवाची करण के उपपद रहने पर वर्ति ग्रौर ग्रह् धातुग्रा से णमुल प्रत्यय होता है। ग्रत—हस्तवर्त वर्तयति। करवर्तम्, हस्त-ग्राहम्, पाणिग्राहम, करग्राहम्।

णिनि

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये– यदि जातिवाचक से भिन्न सुबन्त उपपद हो, तो स्वभाव ग्रथ में धातु से णिनि प्रत्यय होता है। जैसे—उष्णभोजी—उष्ण भाक्तु शीलमस्य। शीतभोजी, प्रियवादी।

कर्तर्युपमाने—यदि उपमानवाचक कर्ता उपपद हो, तो धातु से णिनि प्रत्यय होता है। जैसे—उष्ट्रक्रोशी—उष्ट्र इव क्रोशति। ध्वाङ्क्षरावी = ध्वाङ्क्ष इव रौति। काकवादी।

मनः—यदि सुबन्त उपपद हो, तो मन् धातु से णिनि प्रत्यय होता है। जैसे—दर्शनीयमानी, सुरूपमानी।

ग्रात्ममाने खश्च—'ग्रपने ग्रापको मानना' ग्रथ में विद्यमान मन् धातु से खश् ग्रौर णिनि प्रत्यय होते हैं। जैसे—पण्डितमन्य. (खश्)—ग्रपने ग्रापको पण्डित मानने वाला, पण्डितमानी णिनि प्रत्यय), दर्शनीयमन्य, दर्शनीयमानी।

करणे यज—करण उपपद रहने पर यज् धातु से भूतकाल में णिनि प्रत्यय होता है। जैसे—ग्रग्निष्टोमयाजी—ग्रग्निष्टोमेन इष्टवान्।

कर्मणि हनः—कर्म उपपद रहने पर हन् धातु से भूतकाल में णिनि प्रत्यय होता है। जैसे—पितृव्यघाती—पितृव्य हतवान्।



अष्टम प्रकरण

कारक

क्रिया के निवर्तक को कारक कहते हैं, अर्थात् जिसके बिना क्रिया का निर्वाह नहीं होता, उसे कारक कहते हैं। संस्कृत में ६ कारक माने गए हैं—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। षष्ठी को कारक नही मानते, क्योंकि इसका क्रिया के साथ सम्बन्ध नही रहता। जैसे—अहं रामस्य पुस्तकं पश्यामि। यहाँ 'रामस्य' का 'पश्यामि' के साथ सम्बन्ध नही है, अतः यह कारक नही है।

कारक और विभक्ति में भेद है। 'बालकः पुस्तकं पठति' में 'बालकः' कर्ता है। यहाँ कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग हुआ है। 'बालकेन पुस्तकं पठ्यते' में 'बालकेन' कर्त्ता है। यहाँ कर्त्ता मे तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है। कर्तृ-वाच्य में कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयाग होता है। कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, परन्तु कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

यहाँ प्रथमा आदि विभक्तियों के प्रयोग पर विचार किया जा रहा है।

प्रथमा

प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा—प्रातिपदिकार्थमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र या वचनमात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

प्रातिपदिकार्थमात्र—उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

उच्चैः, नीचैः अलिङ्ग शब्द हैं और कृष्ण, श्रीः आदि नियतलिङ्ग।

लिङ्गमात्र—तटः, तटी, तटम्।

परिमाणमात्र—द्रोणो[1] व्रीहिः। यहाँ द्रोण परिमाणवाचक है।

वचनमात्र—एकः, द्वौ, बहवः।

सम्बोधने च—सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे राम।

---

१ 'द्रोणरूपं यत्परिमाणं तत्परिच्छिन्नो व्रीहिरित्यर्थः। प्रत्ययार्थे परिमाणे प्रकृत्यर्थोऽभेदेन संसर्गेण विशेषणम्, प्रत्ययार्थस्तु परिच्छेद्यपरिच्छेदकभावेन व्रीहौ विशेषणमिति विवेकः।'—सिद्धान्तकौमुदी

द्वितीया

कर्तुरीप्सिततमं कर्म—कर्ता जिसे सबसे अधिक चाहता है, वह कर्म है। 'राम फल खाता है' में 'फल' राम के लिए अत्यन्त अभीष्ट है, अतः वह कर्म है।

अनभिहिते। कर्मणि द्वितीया—अनुक्त कर्म मे द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—हरिं भजति। जब कर्म उक्त रहता है, तब तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हरिः सेव्यते। तात्पर्य यह है कि कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है और कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमा।

तथायुक्तं चानीप्सितम्—अत्यन्त अभीष्ट पदार्थ की भाँति क्रिया से सम्बद्ध अनभीष्ट कारक भी कर्म होता है। 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में ग्राम की भाँति तृण भी क्रिया से सम्बद्ध है, अतः अनीप्सित होने पर भी तृण कर्म है।

अकथितं च—अपादानादि विशेष रूप से अविवक्षित कारक की कर्मसंज्ञा होती है। नीचे कुछ धातुएँ उद्धृत की जा रही हैं, जिनके अपादानादि कारकों की अविवक्षा होती है—

> दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ्मुषाम्।
> कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥

यहाँ धातुओं का परिगणन हुआ है। इन धातुओं की समानार्थक धातुओं में भी यह नियम लगता है।

धातुएँ हैं—१ दुह—दुहना, २ याच्—माँगना, ३ पच्—पकाना, ४ दण्ड्—दण्ड देना, ५ रुध्—रोकना, ६. प्रच्छ्—पूछना, ७ चि—चुनना, ८ ब्रू–कहना, ९ शास्—शासन करना, १० जि—जीतना, ११. मथ्—मथना, १२ मुष्—चुराना, १३ नी—ले जाना, १४ हृ—हरण करना, ले जाना, कृष्—खींचना और १६ वह्—ले जाना।

इनके उदाहरण निम्नलिखित हैं—

१ गां दोग्धि पयः—गाय से दूध दुहता है। यहाँ गाय अपादान है, किन्तु उसकी विवक्षा न होने के कारण कर्मसंज्ञा हुई। जब अपादान की विवक्षा होगी, तब पञ्चमी होगी—गोः दोग्धि पयः।

२ बलिं याचते वसुधाम्—बलि से पृथिवी माँगता है। यहाँ बलि अपादान है, किन्तु उसकी विवक्षा न होने के कारण कर्मसंज्ञा हुई और फिर कर्म में द्वितीया विभक्ति हुई।

३ तण्डुलान् ओदनं पचति—चावलों से भात पकाता है। यहाँ तण्डुल करण है, किन्तु विवक्षा न होने के कारण कर्मसंज्ञा हुई।

४ गर्गान् शतं दण्डयति—गर्गों पर सौ रुपये जुर्माना करता है। यहाँ गर्ग अपादान है। अविवक्षा होने पर उसकी कर्मसंज्ञा हुई।

५ व्रजमवरुणद्धि गाम्—व्रज में गाय को रोकता है। यहाँ व्रज अधिकरण है, किन्तु अविवक्षा के कारण कर्मसंज्ञा हुई।

६ माणवकं पन्थानं पृच्छति—लड़के से मार्ग पूछता है। यहाँ माणवक अपादान है। उसकी अविवक्षा होने पर कर्मसंज्ञा हुई।

७ वृक्षमवचिनोति फलानि—वृक्ष से फलों को चुनता है। यहाँ वृक्ष अपादान है। अविवक्षा होने के कारण कर्मसंज्ञा हुई है।

८-९ माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा—लड़के के लिए धर्म का उपदेश करता है। यहाँ माणवक सम्प्रदान है, परन्तु अविवक्षा होने के कारण कर्मसंज्ञा हुई।

१० शतं जयति देवदत्तम्—देवदत्त से सौ रुपये जीतता है। यहाँ देवदत्त अपादान है। अविवक्षा होने के कारण कर्मसंज्ञा हुई।

११ सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति—सागर को अमृत के लिए मथता है। यहाँ सुधा सम्प्रदान है। विवक्षा न होने से कर्मसंज्ञा हुई।

१२ देवदत्तं शतं मुष्णाति—देवदत्त के सौ रुपये चुराता है। यहाँ देवदत्त अपादान है। विवक्षा न होने पर कर्मसंज्ञा हुई है।

१३-१६ ग्राममजां नयति हरति, कर्षति, वहति वा—गाँव में बकरी को ले जाता है या खींचता है। यहाँ ग्राम अधिकरण है। उसकी विवक्षा नहीं है, अतः कर्मसंज्ञा हुई।

समानार्थक धातुओं के उदाहरण ये हैं—

बलिं भिक्षते वसुधाम्। माणवकं धर्मं भाषते, अभिधत्ते, वक्ति।

अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)—अकर्मक धातुओं के योग में देश, काल, भाव और गन्तव्य मार्ग भी कर्मसंज्ञक होते हैं। जैसे—

१ कुरून् स्वपिति—कुरुदेश में सोता है। यहाँ कुरु देशवाचक है।

२. मासमास्ते—महीने भर रहता है।

३ गोदोहमास्ते—गोदोहन की बेला तक रहता है।

४ क्रोशमास्ते—कोश भर में रहता है।

गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ—गमनार्थक, बुद्धयर्थक, भक्षणार्थक शब्द कर्म वाली (ऐसी धातुएँ जिनका कर्म शब्द हो) और अकर्मक धातुओं का अणिजन्त काल में जो कर्ता होता है, वही णिजन्त काल में कर्म हो जाता है। उदाहरण—

शत्रूनगमयत् स्वर्गं वेदार्थं स्वानवेदयत्।
आशयच्चामृतं देवान् वेदमध्यापयद् विधिम् ॥
आसयत् सलिले पृथ्वीं यः स मे श्रीहरिर्गतिः।

जिन भगवान् हरि ने शत्रुओं को स्वर्ग भेजा, आत्मीयों को वेदार्थ समझाया, देवों को अमृत खिलाया, ब्रह्मा को वेद पढ़ाया, पृथिवी को जल पर बैठाया, वे मेरी गति हैं।

अणिजन्त	णिजन्त (प्रेरणार्थक रूप)
शत्रवः स्वर्गमगच्छन्	शत्रून् स्वर्गमगमयत्
स्वे वेदार्थमविदुः	स्वान् वेदार्थमवेदयत्
देवा अमृतमाश्नन्	देवानमृतमाशयत्
विधिः वेदमध्यैत	विधिं वेदमध्यापयत्
पृथ्वी सलिले आस्त	पृथ्वीं सलिले आसयत्

हृक्रोरन्यतरस्याम्—हृ और कृ धातुओं का अणिजन्त का कर्ता णिजन्त में विकल्प से कर्म होता है। जैसे—

अणिजन्त	णिजन्त (प्रेरणार्थक)
हरति भारं भृत्यः	हारयति भारं भृत्यं भृत्येन वा
करोति कटं भृत्यः	कारयति कटं भृत्यं भृत्येन वा

अधिशीङ्स्थासां कर्म—जब शी, स्था और आस् धातुएँ अधि उपसर्ग से युक्त रहती हैं, तो इनका आधार कर्म होता है। जैसे—

अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा वैकुण्ठं हरिः। यहाँ अधि पूर्वक शी आदि धातुओं का आधार वैकुण्ठ है। उपर्युक्त सूत्र से वैकुण्ठ की कर्मसंज्ञा हुई है।

अभिनिविशश्च—अभिनि पूर्वक विश् धातु का आधार कर्मसंज्ञक होता है। जैसे अभिनिविशते सन्मार्गम्—वह सन्मार्ग का अनुसरण करता है।

उपान्वध्याङ्वसः—जब वस् धातु उप, अनु, अधि या आ उपसर्ग से युक्त रहती है, तब क्रिया का आधार कर्मसंज्ञक होता है। जैसे—

उपवसति वैकुण्ठ हरि ।
अनुवसति वैकुण्ठ हरि ।
अधिवसति वैकुण्ठ हरि ।
आवसति वैकुण्ठ हरि ।

अभुक्त्यर्थस्य न (वा०)—जब वस का अर्थ उपवास करना होता है, तब आधार कर्मसंज्ञक नहीं होता । जैसे—वने उपवसति-वन में उपवास करता है ।

उभसर्वतसो कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु ।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ।। (वा०)

उभयत , सर्वत और धिक् के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । जब सामीप्य अर्थ होता है, तब उपर्युपरि अधोऽध और अध्यधि के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । जैसे—उभयत कृष्ण गोपा , सर्वत कृष्णम् , धिक् कृष्णाभक्तम् , उपर्युपरि लोक हरि , अधोऽधो लोकम् , अध्यधि लोकम् ।

अभित परित समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि (वा०)—अभित. (सब ओर), परित. (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा और प्रति के योग में द्वितीया होती है । जैसे—अभित कृष्णम , परित कृष्णम् , ग्राम समया , निकषा लङ्काम् , हा कृष्णाभक्तम् (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है) , मन्दोत्सुक्योऽस्मि नगरगमन प्रति ।

अन्तराऽन्तरेण युक्ते—अन्तरा (बीच में) और अन्तरेण (विषय में, बिना) के योग में द्वितीया होती है । जैसे—अन्तरा त्वा मा हरि —तुम्हारे और मेरे बीच में हरि हैं । अन्तरेण हरिं न सुखम्—हरि के बिना सुख नहीं मिलता । देवी वसुमतीमन्तरेण—देवी वसुमती के विषय में ।

कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया —कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है । कर्मप्रवचनीय के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथन ध्यातव्य है—

'ये पूर्वं क्रिया काञ्चित् द्योतितवन्त. सम्प्रति तस्या क्रियाया अभावात् न क्रियां कामपि द्योतयन्ति, किन्तु क्रियान्तरेण कस्यापि सम्बन्धमात्र द्योतयन्ति, तेऽत्र कर्मप्रवचनीया ।'

—सारदारञ्जनकृत टीका

अनुर्लक्षणे —जब अनु से किसी हेतु का प्रकटन होता है, तब कर्मप्रवचनीय होता है । जैसे—जपमनु प्रावर्षत् —जप के समाप्त होते ही वृष्टि हुई ।

तृतीयार्थे—जब अनु तृतीयार्थ को प्रकट करता है, तब कर्मप्रवचनीय होता है। जैसे—नदीमन्ववसिता सेना—नदी से सटी हुई सेना।

हीने—हीन अर्थ द्योतित होने पर अनु कर्मप्रवचनीय होता है। जैसे—अनु हरिं सुरा—देवता हरि से हीन हैं। अनु शाकटायन वैयाकरणा—वैयाकरण शाकटायन से हीन हैं।

उपोऽधिके च—जब उप अधिक और हीन अर्थ का प्रकटन करता है, तब कर्मप्रवचनीय होता है। जब उप हीन अर्थ का द्योतन करता है, तभी द्वितीया होती है।

जैसे—उप हरिं सुरा—देवता हरि से हीन हैं।

लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनव—जब किसी दिशा में निर्देश करना हो, या यह इस प्रकार का है, ऐसा बताना हो, या भाग (हिस्सा) का प्रकटन करना हो या व्याप्ति सूचित करनी हो, तब प्रति, परि और अनु कर्मप्रवचनीय होते हैं। जैसे—

१ लक्षण—वृक्ष प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्।

२ इत्थम्भूताख्यान—भक्तो विष्णु प्रति परि अनु वा।

३ भाग—लक्ष्मीर्हरिं प्रति परि अनु वा—लक्ष्मी विष्णु के हिस्से में पड़ी।

४ वीप्सा—वृक्ष वृक्ष प्रति परि अनु वा सिञ्चति—प्रत्येक वृक्ष सींचता है।

अभिरभागे—भाग को छोड़कर उपर्युक्त सूत्र में निरूपित लक्षण आदि अर्थों में अभि कर्मप्रवचनीय होता है। जैसे—हरिमभिवर्तते। भक्तो हरिमभि। देव देवमभि सिञ्चति।

अधिपरी अनर्थकौ—जब अधि और परि का कोई अर्थ नहीं होता, तब कर्मप्रवचनीय होते हैं। जैसे—कुतोऽध्यागच्छति, कुत पर्यागच्छति।

सु पूजायाम्—पूजा के अर्थ में सु कर्मप्रवचनीय होता है। जैसे—सु सिक्तम्, सु स्तुतम।

अतिरतिक्रमणे च—अतिक्रमण और पूजा के अर्थ में अति कर्मप्रवचनीय होता है। जैसे—अति देवान् कृष्ण—कृष्ण सब देवों से उत्कृष्ट हैं।

अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु—जब अपि पदार्थ, सम्भावना, अन्ववसर्ग (यथेप्सित करने की आज्ञा), गर्हा (निन्दा) और समुच्चय का द्योतक होता है, तब कर्मप्रवचनीय होता है। जैसे—सर्पिषोऽपि स्यात्, अपि स्तुयाद् विष्णुम्, अपि स्तुहि, धिग्देवदत्तम् अपि स्तुयाद् वृषलम्, अपि सिञ्च, अपि स्तुहि।

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे अत्यन्त संयोग (अविच्छिन्न संयोग) द्योतित होने पर काल और मार्गवाचक शब्दों के योग में द्वितीया होती है।

जैसे—मासं कल्याणी, मासमधीते, मासं गुडधाना, क्रोशं कुटिला नदी, क्रोशं गिरिः।

तृतीया

साधकतमं करणम्—क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं। 'उसने हाथ से आम तोड़ा' वाक्य में क्रिया है—तोड़ना। यहाँ क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक 'हाथ' है, अतः वह करण है।

कर्तृकरणयोस्तृतीया—अनुक्त कर्ता तथा करण में तृतीया होती है। जैसे—रामेण बाणेन हतो वाली—राम ने बाण से बाली को मारा। यहाँ राम अनुक्त कर्ता है और बाण करण है, अतः दोनों में तृतीया हुई है।

प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वा०)—प्रकृति आदि में तृतीया होती है। जैसे—प्रकृत्या चारुः, प्रायेण याज्ञिकः, गोत्रेण गार्ग्यः, समेनैति, विषमेणैति, द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति, सुखेन दुःखेन वा याति।

दिवः कर्म च—दिव् 'खेलना' का अत्यन्त साधक कारक कर्म और करण संज्ञक होता है। जैसे—अक्षैरक्षान् वा दीव्यति—पाशों से या पाशों को खेलता है।

अपवर्गे तृतीया—जितने समय में या जितना मार्ग चलने पर फल की प्राप्ति होती है, उतने समय और उतने मार्ग में तृतीया होती है। जैसे—अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः—दिन भर में या एक कोश तक चलने में अनुवाक पढ़ लिया गया। जहाँ फल की प्राप्ति नहीं होती, वहाँ तृतीया नहीं होती। जैसे—मासमधीतो नायातः—एक महीने तक पढ़ा, किन्तु समझ में नहीं आया। यहाँ 'मास' में तृतीया नहीं हुई, क्योंकि फल नहीं मिला।

सहयुक्तेऽप्रधाने—'साथ' अर्थ वाले शब्द से युक्त रहने पर अप्रधान में तृतीया होती है। जैसे—पुत्रेण सह आगतः पिता। यहाँ अप्रधानता वाक्यगत है, पदार्थगत नहीं। अतएव 'पित्रा सह आगतः पुत्रः' प्रयोग भी होगा।

येनाङ्गविकारः—जब किसी विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित होता है, तब विकृत अङ्ग में तृतीया होती है। जैसे—अक्ष्णा काणः, पादेन खञ्जः।

इत्थम्भूतलक्षणे—जब किसी चिह्न से किसी विशेष स्थिति का ज्ञान होता है, तब उस चिह्न मे तृतीया होती है। जैसे—जटाभिस्तापस.।

हेतौ—कारण या प्रयोजन मे तृतीया होती है। जैसे—दण्डेन घट, पुण्येन दृष्टो हरि.।

चतुर्थी

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्—दान के कर्म से कर्ता जिसे सन्तुष्ट करना चाहता है, वह सम्प्रदान कहा जाता है। जैसे—उपाध्यायाय गा ददाति—अध्यापक को गाय देता है। यहाँ दान के कर्म से कर्ता उपाध्याय को सन्तुष्ट करना चाहता है।

चतुर्थी सम्प्रदाने—सम्प्रदान मे चतुर्थी होती है। जैसे—विप्राय गा ददादि—ब्राह्मण को गाय देता है। यहाँ विप्र सम्प्रदान है, अत उसमें चतुर्थी हुई।

रुच्यर्थाना प्रीयमाण—रुच् अर्थ वाली धातुओ के प्रयोग में प्रसन्न किया जाने वाला पदार्थ सम्प्रदान होता है। जैसे—हरये रोचते भक्ति। यहाँ रुच् धातु का प्रयोग हुआ है और हरि प्रसन्न किये जा रहे हैं, अत हरि मे चतुर्थी हुई है।

धारेरुत्तमर्ण—धारि धातु के प्रयोग में ऋण देने वाला सम्प्रदान होता है। जैसे—भक्ताय धारयति मोक्ष हरि।

स्पृहेरीप्सित—स्पृह् धातु के प्रयोग में इष्ट पदार्थ सम्प्रदान होता है। जैसे—पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थाना,य प्रति कोप—क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं और इनके समान अर्थ वाली धातुओ के प्रयोग में जिस पर क्रोध किया जाता है, वह सम्प्रदाय होता है। जैसे—हरये क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति असूयति वा।

क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयो कर्म—उपसर्ग युक्त क्रुध् और द्रुह धातुओ के योग में जिस पर क्रोध या जिसके प्रति द्रोह किया जाता है, वह कर्मसज्ञक होता है। जैसे—क्रूरमभिक्रुध्यति अभिद्रुह्यति।

परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्—परिमित काल तक वेतन देकर नौकर से काम लेना परिक्रयण कहा जाता है। परिक्रयण में जो करण होता है, उसकी विकल्प से सम्प्रदान सज्ञा होती है। जैसे—शतेन शताय वा परिक्रीतः।

नम स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलवषड्योगाच्च—नम , स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अल और वषट् के योग में चतुर्थी होती है। जैसे—हरये नम , प्रजाभ्य स्वस्ति, अग्नये स्वाहा, पितृभ्य. स्वधा, दैत्येभ्यो हरिरलम्, वषडिन्द्राय।

गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि—जब गत्यथक धातुओ का कम मार्ग नही रहता और क्रिया के सम्पादन में शरीर से व्यापार करना पडता है, तब गत्यथक धातुओ के कर्म में द्वितीया या चतुर्थी विभक्ति हाती है। जैसे—ग्राम ग्रामाय वा गच्छति।

पञ्चमी

ध्रुवमपायेऽपादानम्—अपाय का अथ विश्लेष है। जिससे विश्लेष होता है, वह ध्रुव या अवधिभूत कारक अपादान कहा जाता है।

अपादाने पञ्चमी—अपादान मे पञ्चमी होती है। जैसे – ग्रामादायाति, धावतोऽश्वात् पतति।

जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसख्यानम् – जुगुप्सा (घृणा), विराम और प्रमाद के समान अर्थ वाले शब्दा के योग में पञ्चमी होती है। जैसे—पापाज्जुगुप्सते, विरमति, धर्मात् प्रमाद्यति।

भीत्रार्थाना भयहेतु—भयाथक और त्राणाथक धातुओ के प्रयोग में भय का कारण अपादान होता है। जैसे—चोराद् बिभेति, चोरात् त्रायते।

पराजेरसोढ—परा पूर्वक जि धातु के प्रयोग में जो असह्य होता है, वह आपदान होता है। जैसे—अध्ययनात् पराजयते।

वारणार्थानामीप्सित. – जिससे किसी को रोका जाय या मना किया जाय, वह अपादान होता है। जैस—यवेभ्यो गा वारयति।

अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति—जब कोई किसी से अपने को छिपाना चाहता है, तो जिससे छिपाना चाहता है, उसकी अपादान सज्ञा होती है। जैसे—मातुर्निलीयते कृष्ण।

आख्यातोपयोगे – जिससे नियमपूवक विद्या स्वीकार की जाय, वह अपादान होता है। जैसे—उपाध्यायादधीते।

जनिकर्तु प्रकृति—उत्पन्न होने वाले का हेतु अपादान होता है। जैसे—ब्रह्मण: प्रजा प्रजायन्ते।

भुव प्रभवः—आविर्भूत पदार्थ का उत्पत्ति स्थान अपादान होता है। जैसे—हिमवत गङ्गा प्रभवति।

अन्यारादितरर्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते— अन्य, आरात्, इतर, ऋते, दिग्वाचक शब्द, ऐसे समास जिनका अन्तिम पद अञ्च् धातु से निष्पन्न कोई शब्द हो तथा आच् और आहि प्रत्ययो वाले शब्द—इनके योग में पञ्चमी होती है। जैसे—

१ अन्यो भिन्न इतरो वा कृष्णात्।

२ आराद्वनात्।

३ ऋते कृष्णात्।

४ पूर्वो ग्रामात्।

५ प्राक प्रत्यक् वा ग्रामात्।

६ दक्षिणा ग्रामात्।

७ दक्षिणाहि ग्रामात्।

अपपरी वर्जने— अप और परि वजन अथ में कमप्रवचनीय होते हैं।

आङ् मर्यादावचने— आङ् मर्यादा अथ मे कर्मप्रवचनीय होता है।

पञ्चम्यपाङ्परिभिः— कमप्रवचनीय अप, आङ् और परि के योग में पञ्चमी होती है। जैसे—अप हरेः ससार, परि हरे ससार—हरि को छोडकर ससार है। आ मुक्ते ससार।

पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्— पृथक्, विना और नाना शब्दो के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे— पृथक् राम रामेण रामात् वा।

दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च—दूर और अन्तिक (समीप) अर्थ वाले शब्दो के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—दूर दूरेण दूरात् वा ग्रामस्य, अन्तिकम् अन्तिकेन अन्तिकात् वा ग्रामस्य।

षष्ठी

शेषे षष्ठी—कारक और प्रातिपदिकाथ के अतिरिक्त स्वामी और भृत्य आदि सम्बन्ध में षष्ठी होती है। जैसे—राज्ञः पुरुष। यहाँ राजा स्वामी है और पुरुष भृत्य है।

षष्ठी हेतुप्रयोगे—जब हेतु शब्द का प्रयोग हो, तब कारणवाचक शब्द में षष्ठी होती है। जैसे—अन्नस्य हेतोर्वसति।

सर्वनाम्नस्तृतीया च—जब सर्वनाम कारण का द्योतन करता है और हेतु शब्द का प्रयोग होता है, तब सवनाम में तृतीया और षष्ठी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—केन हेतुना वसति, कस्य हेतो वसति।

निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा०) जब निमित्तार्थक शब्दों का प्रयोग होता है, तब प्राय सभी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—

किं निमित्तम्।
केन निमित्तेन।
कस्मै निमित्ताय।
कस्मान्निमित्तात्।
कस्य निमित्तस्य।
कस्मिन् निमित्ते।

इसी प्रकार किं प्रयोजनम्, केन प्रयोजनेन, कस्मै प्रयोजनाय इत्यादि प्रयोग होते हैं।

एनपा द्वितीया—एनप् प्रत्ययान्त शब्द के योग में द्वितीया और षष्ठी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा।

दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् दूर और अन्तिक (समीप) अर्थ वाले शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—दूरं निकटं ग्रामस्य ग्रामाद्वा।

अधीगर्थदयेशां कर्मणि—अधिपूर्वक इ, दय्, ईश् और इनके समान अर्थ वाली धातुओं के कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—मातुः स्मरणम्, सर्पिषो दयनम् ईशनं वा।

कर्तृकर्मणोः कृति—जब कृत् प्रत्ययान्त शब्द प्रयुक्त हो, तब कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—कृष्णस्य कृतिः, जगतः कर्ता कृष्णः।

न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्—लकारार्थ में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में, उ और उक प्रत्ययों वाले शब्दों के योग में, अव्यय के योग में, निष्ठा (क्त, क्तवतु) से युक्त शब्दों के योग में, खल् के समान अर्थ वाले प्रत्ययों वाले शब्दों के योग में और तृन् प्रत्याहार में आने वाले प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में षष्ठी नहीं होती। जैसे—

१ लकारार्थ—कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः।
२ उ—हरिं दिदृक्षुः, अलङ्करिष्णुर्वा।
३ उक – दैत्यान् घातुको हरिः।
४. अव्यय—जगत् सृष्ट्वा; सुखं कर्तुम्।
५. निष्ठा—विष्णुना हता दैत्याः, दैत्यान् हतवान् विष्णुः।

६ खलर्थ—ईषत्कर प्रपञ्चो हरिणा।

७ तृन्—सोम पवमान , आत्मान मण्डयमान , वेदमधीयन्, कर्ता लोकान् ।

क्तस्य च वतमाने— जब क्त प्रत्ययान्त शब्द का प्रयोग वतमान के अर्थ मे होता है, तब षष्ठा होती है । जैसे— राज्ञा मतो बुद्ध पूजितो वा ।

अधिकरणवाचिनश्च—अधिकरण में विहित क्त के योग मे षष्ठी होती है । जैसे —इदमेषामासित शयित गत भुक्त वा ।

अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययो —भविष्यत् के अर्थ मे विहित अक प्रत्यय के योग में और भविष्यत तथा आधमर्ण्य क अथ म विहित इन् प्रत्यय के योग में षष्ठी नही हाती । जैसे -- सत पालकोऽवतरति, व्रज गामी, शत दायी ।

कृत्याना कर्तरि वा—कृत्य प्रत्यय के योग मे कर्ता में विकल्प से षष्ठी हाती है । जैसे—मया मम वा सेव्यो हरि ।

तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्या तृतीयान्यतरस्याम्—तुला और उपमा शब्दो को छोडकर तुल्य के समान अथ वाले शब्दो के योग में षष्ठी या तृतीया होती है। जैसे—तुल्य सदृश समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा ।

चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितै—आशीर्वाद अर्थ होने पर आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अथ और हित और इनके समान अथ वाले शब्दोके योग में चतुर्थी और षष्ठी विभक्तियाँ होती हैं । जैसे—आयुष्य चिरञ्जीवित कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात्, मद्र भद्र कुशल निरामय सुख शम् अर्थ॰ प्रयोजन हित पथ्य कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात् ।

सप्तमी

आधारोऽधिकरणम्—कर्ता और कर्म के द्वारा क्रिया का आधार अधिकरण कहा जाता है ।

आधार तीन प्रकार का होता है —

१ औपश्लेषिक, २ वैषयिक और ३. अभिव्यापक ।

सप्तम्यधिकरणे च—अधिकरण में सप्तमी होती है । जैसे—

कटे आस्ते, स्थाल्या पचति, मोक्षे इच्छास्ति, सर्वस्मिन्नात्मास्ति ।

क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् (वा०)—जब क्त प्रत्ययान्त शब्द में इन् प्रत्यय लगाकर शब्द बनाया जाता है, तब उसके योग में उसके कर्म में सप्तमी होती है । जैसे—अधीती व्याकरणे ।

साध्वसाधुप्रयोगे च (वा०)—साधु और असाधु के प्रयोग में सप्तमी होती है । जैसे—साधुः कृष्णो मातरि, असाधुर्मातुले ।

निमित्तात्कर्मयोगे (वा०)—जब किसी क्रिया का निमित्त (फल) उसके कर्म से सम्बद्ध रहता है, तब निमित्त में सप्तमी होती है। जैसे—

'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्।
केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः॥'

'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' में क्रिया का फल चर्म है और वह क्रिया के कर्म द्वीपी के साथ समवेत है, अतः चर्म में सप्तमी हुई है। इसी प्रकार 'दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्' आदि प्रयोगों में भी समझना चाहिए।

यस्य च भावेन भावलक्षणम्—जब किसी क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित होती है, तब उसमें सप्तमी होती है। जैसे—गोषु दुह्यमानासु गतः।

षष्ठी चानादरे—जिसका अनादर करके कोई कार्य होता है, उसमें षष्ठी या सप्तमी होती है। जैसे—रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्।

स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च—स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू और प्रसूत शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—गवां गोषु वा स्वामी; गवां गोषु वा प्रसूतः।

आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्—यदि तत्परता अर्थ हो, तब आयुक्त और कुशल के योग में षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—आयुक्तः कुशलो वा हरिपूजने हरिपूजनस्य वा।

यतश्च निर्धारणम्—जब समुदाय से किसी एक का किसी विशेषता के कारण पृथक्करण होता है, तब समुदायवाचक शब्द में षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—

नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः—मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।
गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा—गायों में कृष्णा गाय बहुत दूध वाली होती है।
गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः—जाने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र जाता है।
छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः—छात्रों में मैत्र पटु है।

साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः—पूजन अर्थ में साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है, किन्तु प्रति के योग में सप्तमी नहीं होती। जैसे—मातरि साधुर्निपुणो वा।

अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् (वा०)—प्रति की भाँति परि, अनु आदि के योग में भी सप्तमी नहीं होती। जैसे—साधुर्निपुणो वा मातरं प्रति पर्यनु वा।

प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च—प्रसित (आसक्त) और उत्सुक शब्दों के योग में तृतीया और सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—प्रसित उत्सुको वा हरिणा हरौ वा।

नक्षत्रे च लुपि—यदि नक्षत्रवाचक शब्द में कोई प्रत्यय लगाया गया हो और उसका लोप हुआ हो, तो अधिकरण के रूप में प्रयुक्त होने पर उस शब्द में तृतीया और सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—मूलेनावाहयेद्देवी श्रवणेन विसर्जयेत्, मूले श्रवणे इति वा। पुष्येण पुष्ये वा पायसमश्नीयात्।

सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये—दो कारकशक्तियों के बीच के समय और स्थानवाचक शब्द में सप्तमी और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहे द्व्यहाद्वा भोक्ता—आज खाकर यह फिर दो दिन के बाद खायेगा। इहस्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत्—यहाँ खड़ा होकर यह एक कोश पर स्थित लक्ष्य को वेध देगा।

— —

नवम प्रकरण

समास

समास का अर्थ है सक्षेप—समसन समास । समास में पदो का आकार छोटा हो जाता है । जैसे—विद्याया॰ आलय –विद्यालय । यहाँ 'विद्याया' की षष्ठी विभक्ति का लोप कर दिया गया है । जब 'विद्यालय' के पदो को अलग करके 'विद्याया आलयः' रूप देते हैं, तब उसे विग्रह कहते हैं । वृत्ति के अर्थ का बोध कराने वाला वाक्य विग्रह कहा जाता हैं—वृत्त्यर्थावबोधक वाक्य विग्रह । वृत्तियाँ पाँच है—कृत्, तद्धित, समास, एकशेष और सनाद्यन्त धातुरूप । 'राज॰ पुरुष॰' समासवृत्ति है । इसके अर्थ का बोध 'राज्ञ पुरुष' वाक्य के द्वारा होता है, अत यह विग्रह है ।

विग्रह दो प्रकार का होता है—लौकिक और अलौकिक । जिसका प्रयोग लोक में होता है, वह लौकिक विग्रह कहा जाता है । जैसे—'राजपुरुष' का विग्रह 'राज्ञ पुरुष' । जिसका लोक में प्रयोग नही होता, वह अलौकिक विग्रह कहा जाता है । जैसे—'भूतपूर्व' का अलौकिक विग्रह 'पूर्व अम् भूत सु' ।

समास के मुख्यत चार भेद हैं—

१. अव्ययीभाव

२ तत्पुरुष

३. द्वन्द्व

४ बहुव्रीहि

तत्पुरुष का ही भेद कर्मधारय है और कमधारय का भेद द्विगु है ।

अव्ययीभाव

अव्ययीभाव में प्राय पूर्वपद प्रधान होता है । इसमें प्रथम पद प्राय अव्यय होता है । समस्त पद नपुसकलिङ्ग होता है ।

अव्यय विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु —विभक्ति, समीप, समृद्धि, समृद्धि का नाश, अभाव, नाश, अनुचित, शब्द की अभिव्यक्ति, पश्चात्, यथा, क्रमशः, एक साथ, सादृश्य, सम्पत्ति, सम्पूर्णता और अन्त–इन

अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। उदाहरण निम्नलिखित हैं—

१ विभक्ति—हरि ङि अधि = अधिहरि। 'हरौ' के अर्थ मे अधिहरि समस्त पद बना है।

२ समीप—कृष्णस्य समीपम् (कृष्ण ङस् उप) = उपकृष्णम्, उपकृष्णेन।

तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्—अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् तृतीया और सप्तमी को बहुलता से अम् आदेश होता है। अतः उपकृष्णम और उपकृष्णेन रूप हुए हैं।

३ समृद्धि—मद्राणां समृद्धि: = सुमद्रम।

४ व्यृद्धि—यवनानां व्यृद्धि (यवनो की समृद्धि का अभाव) = दुर्यवनम।

५ अभाव—मक्षिकाणामभाव (मक्खियो का अभाव) = निर्मक्षिकम्।

६ अत्यय—हिमस्यात्यय (हिम का नाश) = अतिहिमम।

७ असम्प्रति—निद्रा सम्प्रति न युज्यते (निद्रा इस समय उचित नही) = अतिनिद्रम्।

८ शब्दप्रादुर्भाव—हरिशब्दस्य प्रकाश (हरिशब्द का प्रादुर्भाव) = इतिहरि।

९ पश्चात्—विष्णो पश्चाद् (विष्णु के पीछे) = अनुविष्णु।

१० यथा—इसके चार अर्थ हैं—योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति, सादृश्य।

योग्यता—रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम्।

वीप्सा—अर्थमर्थं प्रति = प्रत्यर्थम्।

पदार्थानतिवृत्ति—शक्तिमनतिक्रम्य (शक्ति का अतिक्रमण न करके) = यथाशक्ति।

सादृश्य—हरे. सादृश्यम् (हरि की समानता) = सहरि।

'अव्ययीभावे चाकाले'—सूत्र से सहहरि में सह के स्थान पर स हुआ है। सूत्र का अर्थ है—यदि उत्तरपद कालवाचक न हो, तो सह को स आदेश होता है।

११ आनुपूर्व्य—ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण = अनुज्येष्ठम्।

१२ यौगपद्य—चक्रेण युगपत् = सचक्रम्। यहाँ भी सह को स आदेश हुआ है।

१३ सादृश्य—सदृश सख्या = ससखि। यहाँ सह को स आदेश हुआ है।

१४ सम्पत्ति—क्षत्राणां सम्पत्तिः (क्षत्रियों की सम्पत्ति) = सक्षत्रम्। यहाँ भी सह को स आदेश हुआ है।

१५ साकल्य—तृणमपरित्यज्य = सतृणम्। यहाँ भी सह के स्थान पर स आदेश हुआ है।

१६ अन्त—अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = साग्नि। सह के स्थान पर स आदेश हुआ है।

यावदवधारणे—निश्चित परिमाण अर्थ में वर्तमान यावत् का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे—यावन्तः श्लोकाः तावन्तोऽच्युतप्रणामाः—यावच्छ्लोकम्। यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व।

सुप्प्रतिना मात्रार्थे—मात्रा (थोड़ी मात्रा) अर्थ में प्रति का सुबन्त के साथ समास होता है और वह बाद में रक्खा जाता है। जैसे—शाकस्य लेशः = शाकप्रति।

अक्षशलाकासंख्याः परिणा—अक्ष, शलाका और संख्यावाचक शब्दों का परि के साथ समास होता है और इनका पहले प्रयोग होता है। जैसे—अक्षेण विपरीतं वृत्तम् = अक्षपरि (पासे के ठीक न पड़ने के कारण हार होना), शलाकापरि (शलाका ठीक न पड़ने से हार होना), एकपरि (एक पासे के ठीक न पड़ने से हार होना)।

अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या—अप, परि, बहिः तथा अञ्च् धातु से निष्पन्न शब्दों का पञ्चम्यन्त शब्दों के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे—अपविष्णु, अपविष्णोः, परिविष्णु, परिविष्णोः, बहिर्वनम्, बहिर्वनात्, प्राग्वनम्, प्राग्वनात्।

आङ् मर्यादाभिविध्योः—मर्यादा और अभिविधि अर्थ में आङ् का पञ्चम्यन्त के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे—आमुक्ति संसारः, आमुक्तेः, आबालं हरिभक्तिः, आबालेभ्यः।

लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये—आभिमुख्य (ओर) अर्थ में वर्तमान अभि और प्रति का लक्षणवाचक सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे—अभ्यग्नि शलभाः पतन्ति, अग्निमभि, प्रत्यग्नि, अग्निं प्रति।

यस्य चायामः—जिसकी दीर्घता का प्रकटन अनु के द्वारा होता है, उस लक्षणवाचक पद के साथ अनु का विकल्प से समास होता है। जैसे—अनुगङ्गं वाराणसी, गङ्गाया अनु।

पारे मध्ये षष्ठ्या वा—पार और मध्य शब्दों का षष्ठ्यन्त के साथ विकल्प से समास होता है। पार और मध्य का पूर्व प्रयोग होता है और ये दोनों शब्द एकारान्त हो जाते हैं। जैसे—पारेगङ्गात्, मध्येगङ्गात्। पक्ष में षष्ठी तत्पुरुष होता है। जैसे—गङ्गापारात्, गङ्गामध्यात्।

नदीभिश्च—संख्यावाचक शब्दों का नदीवाचक शब्दों के साथ समाहार अर्थ में विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है। जैसे—सप्तगङ्गम्, द्वियमुनम्।

अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः—अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों में समासान्त टच् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—शरदः समीपम् उपशरदम्, प्रतिविपाशम्। शरद् आदि शब्द हैं—शरद्, विपाश, मनस्, उपानह, दिव्, हिमवत्, अनडुह, विद्, दिश्, विश्, चेतस्, चतुर्, त्यद्, तद्, यद्, कियत्, जरस् (जरा के स्थान पर) आदि।

जराया जरस् च (ग० सू०)—जब जरा के बाद टच् प्रत्यय आता है, तब उसके स्थान पर जरस् हो जाता है। जैसे—उपजरसम्।

अनश्च—अन्नन्त (जिसके अन्त में अन् हो) अव्ययीभाव से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। जैसे—उपराजम्, अध्यात्मम्। यहाँ 'नस्तद्धिते' से टि का लोप हुआ है। 'नस्तद्धिते' का अर्थ है—जब तद्धित प्रत्यय बाद में रहता है, तब नकारान्त भसञ्ज्ञक अङ्ग की टि का लोप हो जाता है।

नपुंसकादन्यतरस्याम्—जब अन्नन्त नपुंसकलिङ्ग रहता है, तब विकल्प से टच् होता है। जैसे—उपचमम्, उपचर्म।

नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः—जब अव्ययीभाव समास के अन्त में नदी, पौर्णमासी और आग्रहायणी शब्द आते हैं, तब विकल्प से टच् प्रत्यय होता है। जैसे—उपनदम्, उपनदि, उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि, उपाग्रहायणम्, उपाग्रहायणि।

झयः—झयन्त अव्ययीभाव से विकल्प से टच् होता है। जैसे—उपसमिधम्, उपसमित्।

गिरेश्च सेनकस्य जब अव्ययीभाव समास के अन्त में गिरि शब्द रहता है, तब विकल्प से टच् प्रत्यय होता है। जैसे - उपगिरम्, उपगिरि।

तत्पुरुष

जिस समास का प्रायः उत्तरपद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष कहते हैं।

द्वितीया तत्पुरुष

द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः—द्वितीयान्त शब्द का श्रित,

अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न शब्दो के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे—कृष्ण श्रित = कृष्णश्रित, ग्रामम् अतीत = ग्रामातीत, नरक-पतित, स्वर्गगत, कूपात्यस्त, सुखप्राप्त, सङ्कटापन्न।

गम्यादीनामुपसंख्यानम् (वा०)—जैसे द्वितीयान्त शब्द का श्रित आदि के साथ समास होता है, उसी प्रकार गमी आदि के साथ भी समझना चाहिए। जैसे—ग्राम गमी ग्रामगमी (गाँव को जाने वाला), अन्न बुभुक्षु = अन्नबुभुक्षु।

खट्वा क्षेपे—द्वितीयान्त खट्वा शब्द का निन्दा अर्थ मे क्तप्रत्ययान्त के साथ समास होता है। जैसे – खट्वामारूढ = खट्वारूढ (मूर्ख)। वाक्य में निन्दा अर्थ नही होता। अत. खट्वामारूढ का अर्थ है – गृहस्थाश्रम वाला।

सामि—सामि अव्यय का क्तप्रत्ययान्त के साथ समास होता है। जैसे—सामिकृतम (आधा किया)।

काला—कालवाचक द्वितीयान्त शब्द का क्तप्रत्ययान्त के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे—मास प्रमित = मासप्रमित।

अत्यन्तसंयोगे च—अत्यन्त सयोग अर्थ में कालवाचक द्वितीयान्त शब्द का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे—मुहूर्त्तं सुखम् = मुहूर्त्तसुखम्।

तृतीया तत्पुरुष

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन- तृतीयान्त शब्द का तृतीयान्त के अर्थ से किये गए गुणवाचक शब्द के साथ और अर्थ शब्द के साथ समास होता है। जैसे–शङ्कुलया खण्ड. = शङ्कुलाखण्ड (सरौते से किया हुआ टुकडा), धान्येन अर्थ = धान्यार्थ।

पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णै—तृतीयान्त शब्द का पूर्व आदि के साथ समास होता है। जैसे—मासपूर्व, मातृसदृशः; पितृसम, माषेण ऊनम् = माषोन कार्षापणम्, वाचा कलह = वाक्कलह, आचारनिपुण, गुडमिश्र, आचारश्लक्ष्ण।

अवरस्योपसंख्यानम् (वा०) – पूर्व आदि शब्दों के साथ अवर की भी गणना करनी चाहिए। जैसे—मासेन अवरो मासावर (एक माह छोटा)।

कर्तृकरणे कृता बहुलम्—कर्ता या करण में विहित तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ समास होता है। जैसे—हरिणा त्रात = हरित्रात, नखैर्भिन्नः = नखभिन्न।

कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम् (परिभाषा)—कृत् के ग्रहण में गति-कारकपूर्वक का भी ग्रहण समझना चाहिए। इसके आधार पर यह तथ्य

प्रकट होता है कि जब कृदन्त के पहले गति और कारक रहते हैं, तब भी तृतीया तत्पुरुष होता है। जैसे—नखैर्निर्भिन्न = नखनिर्भिन्न । यहाँ 'निर्' गति है और यह क्तप्रत्ययान्त 'भिन्न' के पहले आया है, अत तृतीया तत्पुरुष समास हुआ है।

अन्नेन व्यञ्जनम—व्यञ्जनवाचक तृतीयान्त शब्द का अन्नवाचक शब्द के साथ समास होता है। जैसे—दध्ना ओदनः = दध्योदन ।

चतुर्थी तत्पुरुष

चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितै—चतुर्थ्यन्त का उसके साथ समास होता है, जिससे चतुर्थ्यन्त वस्तु बनी रहती है। चतुर्थ्यन्त का अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित शब्दो के साथ भी समास होता है। जैसे—यूपाय दारु = यूपदारु। यहाँ यूपाय चतुर्थ्यन्त है। यूप दारु (लकडो) से बना है।

अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् (वा०)—अर्थ शब्द के साथ नित्यसमास होता है और समस्तपद का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है। जैसे—द्विजार्थ सूप, द्विजार्था यवागू, द्विजार्थं पय.।

बलि आदि के साथ इस प्रकार समास होता है—भूतेभ्यो बलिः = भूतबलि, गोभ्यो हितम् = गोहितम्; गोभ्य. सुखम् = गोसुखम्, गोभ्यो रक्षितम् = गोरक्षितम्।

पञ्चमी तत्पुरुष

पञ्चमी भयेन—पञ्चम्यन्त शब्दो का भय के साथ समास होता है। जैसे—चोराद् भयम् = चोरभयम्।

भयभीतभीतिभीभिरिति वाच्यम् (वा०)—भय के साथ भीत, भीति और भी की गणना करनो चाहिए। इस प्रकार पञ्चम्यन्त शब्द का भीत आदि के साथ भी समास होता है। जैसे—वृकाद् भीत = वृकभीत ।

अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पश—कुछ पञ्चम्यन्त शब्दो का अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित, अपत्रस्त के साथ समास होता है। जैसे—सुखाद् अपेत = सुखापेतः, कल्पनापोढ., चक्रमुक्त, स्वगपतित, तरङ्गापत्रस्त ।

स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन—पञ्चम्यन्त स्तोक (थोडा), अन्तिक (समीप), दूर और इनके समान अर्थ वाले अन्य शब्दो तथा कृच्छ्र का क्तप्रत्ययान्त शब्दो के साथ समास होता है। स्तोक आदि के साथ समास होने पर पञ्चमी का लोप नही होता। जैसे—स्तोकान्मुक्तः, अन्तिकादागत, अभ्याशादागत, दूरादागत., कृच्छ्रादागतः।

षष्ठी तत्पुरुष

इसमें षष्ठ्यन्त पद का दूसरे पद के साथ समास होता है। जैसे—राज्ञ पुरुष॰ = राजपुरुष ।

याजकादिभिश्च—षष्ठ्यन्त शब्द का याजक आदि के साथ समास होता है। जैसे—ब्राह्मणयाजक॰, देवपूजक, राजपरिचारकः, अग्निहोता, भूभर्ता।

न निर्धारणे—निर्धारण (बहुतो में से एक को पृथक् करना) अर्थ में की गयी षष्ठी का अन्य शब्दो के साथ समास नही होता। जैसे—नृणा द्विज॰ श्रेष्ठ ।

पूरणगुणसुहितार्थसद्व्ययतव्यसमानाधिकरणेन—षष्ठ्यन्त पदो का पूरणार्थक प्रत्ययो से निष्पन्न शब्दो, गुणवाचक शब्दों, तृप्ति अर्थ वाले शब्दो, शतृ और शानच् प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों, अव्ययो, तव्य प्रत्ययान्त शब्दो और समानाधिकरण शब्दो के साथ समास नही होता। जैसे—सता षष्ठ॰, काकस्य कार्ष्ण्यम्, फलाना सुहिता, द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा; ब्राह्मस्य कृत्वा, ब्राह्मणस्य कर्तव्यम्, तक्षकस्य सर्पस्य।

क्तेन च पूजायाम्—षष्ठ्यन्त शब्द का 'मतिबुद्धि–' सूत्र से विहित क्तप्रत्य॰ यान्त शब्दो के साथ समास नही होता। जैसे—राज्ञां मतो बुद्ध पूजितो वा।

अधिकरणवाचिना च—अधिकरणवाचक क्तप्रत्ययान्त शब्दो के साथ षष्ठ्यन्त शब्द का समास नही होता। जैसे—इदमेषामासित गत भुक्त वा।

तृजकाभ्यां कर्तरि—जब कर्ता में तृच् और अक प्रत्ययो का प्रयोग होता है, तब षष्ठ्यन्त शब्द का इन प्रत्ययो से निष्पन्न शब्दों के साथ समास नहीं होता। जैसे—अपां स्रष्टा, वज्रस्य भर्ता।

पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे—यदि अवयवी एकत्वसंख्या युक्त हो, तब पूर्व, अपर, अधर और उत्तर अवयव–वाचक शब्दो का अवयवी–वाचक शब्द के साथ समास होता है। जैसे—पूर्वं कायस्य = पूर्वकायः; अपरकायः।

अर्धं नपुंसकम्—आधे भाग के वाचक नित्य नपुसकलिङ्ग शब्द अर्ध का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे—अर्धं पिप्पल्याः = अर्धपिप्पली।

सप्तमी तत्पुरुष

सप्तमी शौण्डैः—सप्तम्य शब्दो का शौण्ड आदि शब्दो के साथ समास होता है। जैसे—अक्षेषु शौण्डः (चतुर.) = अक्षशौण्ड॰। शौण्डादि में ये शब्द हैं—शौण्ड, धूर्त, कितव, व्याड, प्रवीण, संवीत, अन्तर, अधि, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण।

सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च—सप्तम्यन्त शब्दों का सिद्ध, शुष्क, पक्व तथा बन्ध शब्दों के साथ समास होता है। जैसे—पाङ्काश्यसिद्ध, आतपशुष्क, स्थालीपक्व, चक्रबन्ध।

ध्वाङ्क्षेण क्षेपे—निन्दा अर्थ में ध्वाङ्क्ष (कौआ) अर्थ वाले शब्द के साथ सप्तम्यन्त शब्द का समास होता है। जैसे—तीर्थे ध्वाङ्क्षः=तीर्थध्वाङ्क्ष (तीर्थकाकः)।

नञ्

नञ्—नञ् का सुबन्त के साथ समास होता है।

नलोपो नञः—जब नञ् के बाद कोई पद आता है, तब नञ् के न का लोप हो जाता है। जैसे—न ब्राह्मणः=अब्राह्मण।

तस्मान्नुडचि—लुप्त नकार वाले नञ् के बाद आये हुए अजादि उत्तरपद को नुट् का आगम होता है। जैसे—न अश्वः=अ अश्वः=अन् अश्व.=अनश्व.।

कर्मधारय

तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः—समानाधिकरण तत्पुरुष कर्मधारय कहा जाता है। इसमें पूर्वपद और उत्तरपद—दोनों में समान विभक्ति होती है।

उपमानानि सामान्यवचनैः—उपमान-वाचक शब्दों का साधारण-धर्म-वाचक शब्दों के साथ समास होता है। जैसे—घन इव श्याम=घनश्याम। यहाँ घन (बादल) उपमान और श्याम साधारण धर्म वाचक शब्द है। उपमान उसे कहते हैं, जिससे उपमा दी जाय।

उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे—सामान्य (साधारणधर्म) का प्रयोग न होने पर उपमेय का व्याघ्र आदि शब्दों के साथ समास होता है। जैसे-पुरुषो व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्र (बाघ के समान वीर पुरुष)।

व्याघ्र आदि में ये शब्द हैं—व्याघ्र, सिंह, ऋक्ष, ऋषभ, चन्दन, वृक, वृष, वराह, हस्तिन् कुञ्जर, तरु, रुरु, पृषत, पुण्डरीक, पलाश, कितव।

विशेषणं विशेष्येण बहुलम्—विशेषण का विशेष्य के साथ समास होता है। जैसे—नीलम् उत्पलम्=नीलोत्पलम्।

पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च—पूर्व, अपर प्रथम, चरम, जघन्य, समान, मध्य, मध्यम और वीर शब्दों का कर्मधारय समास में पहले प्रयोग होता है। जैसे—पूर्ववैयाकरण, अपराध्यापक.।

अपरस्यार्धे पश्च भावो वक्तव्य. (वा) जब अपर के बाद अर्ध शब्द

आता है, तब अपर के स्थान पर पश्च कर दिया जाता है। जैसे—अपरश्चा सावधश्च पश्चार्धः।

सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः—सत्, महत्, परम, उत्तम, उत्कृष्ट शब्दों का पूज्य व्यक्ति या वस्तु के साथ समास होता है। समास में इन शब्दों का पूर्व प्रयोग होता है। जैसे—सद्वैद्यः, महावैयाकरणः।

कडाराः कर्मधारये—कडार (पिङ्गल) आदि शब्दों का कर्मधारय समास में विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है। जैसे—कडारजैमिनिः, जैमिनिकडारः।

वर्णो वर्णेन—वर्णवाचक शब्द का वर्णवाचक शब्द के साथ समास होता है। जैसे—कृष्णसारङ्गः। सारङ्ग का अर्थ है—चित्र, बहुवर्ण।

दिक्संख्ये संज्ञायाम्—दिशावाचक और संख्यावाचक शब्दों का सुबन्त के साथ समास होता है। यदि समस्त पद संज्ञावाचक हो, तभी यह समास होता है। जैसे—सप्तर्षयः, पञ्चजनाः।

मयूरव्यंसकादयश्च—मयूरव्यंसक आदि समस्त पद निपातन से बनते हैं। जैसे—मयूरश्चासौ व्यंसकश्च = मयूरव्यंसकः (धूर्त मोर), उदक् च अवाक् च = उच्चावचम्, निश्चितञ्च प्रचितञ्च = निश्चप्रचम्, नास्ति किञ्चन यस्य सः अकिञ्चनः, नास्ति कुतो भयं यस्य सः अकुतोभयः, अन्यो राजा राजान्तरम्, चिदेव चिन्मात्रम्।

प्रादि समास

इसमें प्र आदि उपसर्गों का पहले प्रयोग होता है।

प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया (वा०)—प्र आदि का प्रथमान्त सुबन्त के साथ गत आदि अर्थ में समास होता है। जैसे—प्रगतः आचार्यः = प्राचार्यः।

अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया (वा०)—अति आदि का द्वितीयान्त सुबन्त के साथ क्रान्त आदि अर्थ में समास होता है। जैसे—अतिक्रान्तो मालाम् = अतिमालः।

अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया (वा०)—अव आदि का तृतीयान्त सुबन्त के साथ क्रुष्ट आदि अर्थ में समास होता है। जैसे—अवक्रुष्टः कोकिलया = अवकोकिलः।

पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या (वा०) परि आदि का चतुर्थ्यन्त सुबन्त के साथ ग्लान आदि अर्थमें समास होता है। जैसे—परिग्लानोऽध्ययनाय = पर्यध्ययनः।

निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या (वा०)—निर् आदि का पञ्चम्यन्त सुबन्त

के साथ क्रान्त आदि अर्थ में समास होता है। जैसे—निष्क्रान्त कौशाम्ब्या = निष्कौशाम्बि.।

गति-समास

ऊर्यादिच्विडाचश्च—ऊरी आदि, च्वि प्रत्ययान्त शब्द और डाच् प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गति कहे जाते हैं। इनका क्त आदि प्रत्ययों से युक्त शब्दों के साथ समास होता है। जैसे—ऊरीकृत्य, उररीकृत्य, वषट्कृत्य, प्रादुर्भूय, पटपटाकृत्य।

कारिकाशब्दस्योपसख्यानम् (वा०)—कारिका शब्द भी गतिसंज्ञक है। अतः—कारिकाकृत्य।

अनुकरणञ्चानितिपरम्—यदि अनुकरणात्मक शब्द के बाद इति न आए, तो वह गतिसंज्ञक होता है। अत —खाटकृत्य।

आदरानादरयो सदसती—सत् और असत् क्रमश आदर और अनादर अर्थ में गतिसंज्ञक होते हैं। अत.—सत्कृत्य, असत्कृत्य।

भूषणेऽलम्—अलम् भूषण अर्थ में गति कहा जाता है। अत -अलङ्कृत्य।

पुरोऽव्ययम्—पुरस् अव्यय गति कहा जाता है। अत —पुरस्कृत्य।

अस्तञ्च—अस्तम् भी गतिसंज्ञक है। अत —अस्तगत्य।

अच्छ गत्यर्थवदेषु—गत्यर्थ धातुओं और वद् धातु के योग में अच्छ अव्यय गति कहा जाता है। अतः—अच्छगत्य, अच्छोद्य।

तिरोऽन्तर्धौ—अन्तर्धान अर्थ में तिरस् गतिसंज्ञक होता है। अतः—तिरोभूय।

विभाषा कृञि—कृ धातु के साथ तिरस् विकल्प से गतिसंज्ञक होता है। अत —तिरस्कृत्य, तिर कृत्वा।

साक्षात्प्रभृतीनि च—कृ धातु के साथ साक्षात् आदि की विकल्प से गति-संज्ञा होती है। अत —साक्षात्कृत्य, साक्षात् कृत्वा।

उपपद-समास

उपपदमतिङ्—उपपद सुबन्त का समर्थ के साथ नित्य समास होता है। यह समास तिङन्त के साथ नहीं होता। जैसे—कुम्भ करोति इति कुम्भकार।

द्विगु

सख्यापूर्वो द्विगुः—जब प्रथम पद सख्यावाचक होता है, तब द्विगु समास कहा जाता है।

द्विगुरेकवचनम्—समाहार द्विगु एकवचन होता है।

स नपुंसकम्—समाहार में द्विगु और द्वन्द्व नपुंसक होते हैं।

उदा०—पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम्। त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्। पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्।

द्वन्द्व

चार्थे द्वन्द्वः—'च' के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का जो समास होता है, उसे द्वन्द्व कहते हैं।

'च' के चार अर्थ हैं—समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतरयोग और समाहार।

१ समुच्चय—जब परस्पर निरपेक्ष अनेक पदार्थों का एक पदार्थ में अन्वय होता है तब उसे समुच्चय कहते हैं। जैसे—ईश्वरं गुरुं च भजस्व। इसमें ईश्वर और गुरु दोनों पदार्थ परस्पर निरपेक्ष हैं तथा दोनों का भजन क्रिया में अन्वय हो रहा है।

२ अन्वाचय—जब एक पदार्थ का गौण रूप से अन्वय होता है, तब उसे अन्वाचय कहते हैं। जैसे—भिक्षामट गां चानय। यहाँ प्रधान कार्य भिक्षा माँगना है। गाय लाना गौण कार्य है। अतः यहाँ 'च' का अर्थ अन्वाचय है।

समुच्चय और अन्वाचय में सामर्थ्य न होने के कारण समास नहीं होता।

३. इतरेतरयोग—जब पदार्थ मिलकर आगे अन्वित हों, तब इतरेतरयोग होता है। जैसे—धवखदिरौ छिन्धि (धव और खैर को काटो)। यहाँ धव और खदिर परस्पर मिलकर छेदनक्रिया में अन्वित हो रहे हैं।

४. समाहार—समूह ही समाहार है। इसमें पदार्थों के समूह का अन्वय होता है। जैसे—सञ्ज्ञा च परिभाषा च = सञ्ज्ञापरिभाषम् (संज्ञा और परिभाषा का समूह)।

इतरेतरयोग और समाहार—इन दो अर्थों में समास होता है।

परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः—द्वन्द्व और तत्पुरुष में बाद वाले शब्द के समान लिङ्ग होता है।

राजदन्तादिषु परम्—राजदन्त आदि शब्दों में जिनका पूर्व प्रयोग करना चाहिए, उन्हें बाद में रक्खा जाता है। जैसे—दन्तानां राजा = राजदन्तः।

धर्मादिष्वनियमः (वा०)—धर्म आदि में यह नियम नहीं लगता, अर्थात् किसी को पहले या बाद में रक्खा जा सकता है। जैसे—अर्थश्च धर्मश्च अर्थधर्मौ या धर्मार्थौ।

द्वन्द्वे घि—द्वन्द्व में घिसञ्ज्ञक का पूर्व प्रयोग होता है। जैसे—हरिहरौ।

यहाँ 'शेषो घ्यसखि' से हरि घिसञ्ज्ञक है, अतएव उसका पूर्व प्रयोग हुआ है।

अजाद्यदन्तम्—जिस शब्द के आरम्भ में कोई स्वर हो और अन्त में अ हो, उसका द्वन्द्व मे पहले प्रयोग होता है। जैसे—ईशकृष्णौ। ईश मे प्रारम्भ में ई स्वर है, और अन्त मे अ है, अत उसका पहले प्रयोग हुआ है।

बहुष्वनियम (भाष्य)—जब दो से अधिक शब्दो का समास होता है, तब उपर्युक्त नियम नही लगता। जैसे—अश्वरथेन्द्रा, इन्द्ररथाश्वा।

अल्पाच्तरम्—जिस शब्द मे अल्प स्वर हो, उसे पहले रक्खा जाता है। जैसे—शिवकेशवौ।

ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण (वा०)—यदि ऋतु और नक्षत्र वाचक शब्दो में समान अक्षर हो, तो उन्हे क्रम से रक्खा जाता है। जैसे—हेमन्तशिशिरवसन्ता, कृत्तिकारोहिण्यौ।

अभ्यर्हितञ्च (वा०)—अधिक पूजनीय का पहले प्रयोग होता है। जैसे—तापसपर्वतौ। यहाँ तापस अधिक पूज्य है, अत. उसका पहले प्रयोग हुआ है।

वर्णानामानुपूर्व्येण (वा०)—वर्णों का नाम क्रम से दिया जाता है। जैसे—ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्रा।

भ्रातुर्ज्यायस (वा०)—ज्येष्ठ भ्राता के नाम का पहले प्रयोग होता है। जैसे—युधिष्ठिरार्जुनौ।

द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्—प्राणी, तूर्य (बाजा) और सेना के अङ्गों के वाचक शब्दो का समाहार द्वन्द्व होता है। जैसे—

पाणिपादम्—पाणी च पादौ च। हाथ और पैर प्राणी के अङ्ग हैं।

मार्दङ्गिकवैणविकम्—मार्दङ्गिकश्च वैणविकश्च—मृदङ्ग बजाने वाला और वंशी बजानेवाला। यहाँ मार्दङ्गिक और वैणविक तूर्य के अङ्ग हैं।

रथिकाश्वारोहम्—रथिकाश्च अश्वारोहाश्च—रथिक और घुड़सवार। यहाँ रथिक और अश्वारोह सेना के अङ्ग हैं, अत समाहार द्वन्द्व हुआ है।

जातिरप्राणिनाम्—निर्जीव वस्तुओ के वाचक शब्दो का द्वन्द्व एकवचनान्त होता है। जैसे—धानाश्च शष्कुलयश्च—धानाशष्कुलि।

विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामा—ग्राम को छोडकर नदी और देश वाचक भिन्न लिङ्गो वाले शब्दो का द्वन्द्व एकवचनान्त होता है। जैसे—गङ्गा च शोणश्च =गङ्गाशोणम्, कुरवश्च कुरुक्षेत्रञ्च =कुरुकुरुक्षेत्रम्।

क्षुद्रजन्तव—क्षुद्रजन्तु वाचक शब्दो का द्वन्द्व एकवचनान्त होता है। जैसे—यूका च लिक्षा च (जूं और लीख) = यूकालिक्षम् ।

येषा च विरोध शाश्वतिक—जिनका शाश्वतिक विरोध है, उन जीवो के वाचक शब्दो का द्वन्द्व एकवचनान्त होता है। जैसे—अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम् ।

विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्—वृक्ष, मृग, तृण, धान्य, व्यञ्जन, पशु तथा शकुनि (पक्षी)—इनके वाचक शब्दो का विकल्प से समाहार द्वन्द्व होता है। अश्ववडव, पूर्वापर तथा अधरोत्तर समास भी विकल्प से एकवचान्त होते हैं। जैसे—

वृक्ष—प्लक्षन्यग्रोधम्, प्लक्षन्यग्रोधाः ।
मृग—रुरुपृषतम्, रुरुपृषताः ।
तृण—कुशकाशम्, कुशकाशा ।
धान्य—व्रीहियवम्, व्रीहियवा ।
व्यञ्जन—दधिघृतम्, दधिघृते ।
पशु—गोमहिषम्, गोमहिषा ।
शकुनि—शुकवकम्, शुकवका ।
अश्ववडवम् अश्ववडवौ । पूर्वापरम्, पूर्वापरे । अधरोत्तरम्, अधरोत्तरे ।

फलसेनावनस्पतिमृगशकुनिक्षुद्रजन्तुधान्यतृणाना बहुप्रकृतिरेव द्वन्द्वः एकवदिति वाच्यम्—(वा०) फल, सेनाङ्ग, वनस्पति, मृग, शकुनि, क्षुद्रजन्तु, धान्य और तृण—इनके वाचक शब्दों का द्वन्द्व उस स्थिति में एकवचनान्त होता है, जब ये बहुवचन में होते हैं। जैसे—बदराणि च आमलकानि च = वदरामलकम् । जब बहुवचन वाला प्रयोग नहीं रहता, तब समाहार द्वन्द्व नहीं होता। जैसे—वदर च आमलक च = वदरामलके, रथिकश्च अश्वारोहश्च = रथिकाश्वारोहौ ।

आनङ्ऋतो द्वन्द्वे—विद्या-सम्बन्ध या योनि-सम्बन्ध के वाचक शब्दो का द्वन्द्व समास होने पर अन्तिम शब्द के पूर्व वाले ऋकारान्त पद के ऋकार के स्थान पर आ हो जाता है। जैसे—होतापोतारौ, होतृपोतृनेष्टोद्गातार , मातापितरौ।

देवताद्वन्द्वे च—देवतावाचक शब्दों का द्वन्द्व समास होने पर पूर्वपद के अन्तिम वर्ण के स्थान पर आ कर दिया जाता है। जैसे—मित्रश्च वरुणश्च = मित्रावरुणौ । यहाँ मित्र और वरुण दोनो देवतावाचक हैं, अत मित्र के अन्तिम वर्ण अ के स्थान पर आ कर दिया गया है।

वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेध (वा०)—यदि समास में वायु शब्द का प्रयोग हो, तब पूर्वपद के अन्तिम वर्ण के स्थान पर आ नही होता। जैसे—अग्निवायू, वाय्वग्नी।

ईदग्ने सोमवरुणयोः—यदि सोम या वरुण शब्द बाद मे हो, तब अग्नि के अन्तिम वर्ण के स्थान पर ई कर दी जाती है।

अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः—जब अग्नि के बाद स्तुत्, स्तोम या सोम शब्द आता है, तब स्तुत् आदि के स के स्थान पर ष कर दिया जाता है। जैसे—अग्निष्टुत्, अग्निष्टोम, अग्नीषोमौ, अग्नीवरुणौ।

दिवो द्यावा—जब देवताद्वन्द्व मे दिव् के बाद कोई पद आता है, तब दिव् के स्थान पर द्यावा कर दिया जाता है। जैसे—द्यौश्च भूमिश्च=द्यावाभूमी, द्यौश्च क्षमा च=द्यावाक्षमे।

दिवसश्च पृथिव्याम्—जब देवताद्वन्द्व में दिव् शब्द के बाद पृथिवी शब्द आता है, तब दिव् के स्थान पर दिवस् या द्यावा कर दिया जाता है। जैसे—द्यौश्च पृथिवी च दिवस्पृथिव्यौ या द्यावापृथिव्यौ।

उषासोषसः—देवताद्वन्द्व मे उषस् के स्थान पर उषासा हो जाता है। जैसे—उषासासूर्यम्।

मातरपितरावुदीचाम्—उत्तर के आचार्यों का मत है कि मातृ और पितृ का द्वन्द्व समास करने पर मातृ के स्थान पर मातर करना चाहिए। अत मातरपितरौ। अन्य आचार्यों के मत के अनुसार 'मातापितरौ' होता है।

द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे—यदि समाहार द्वन्द्व समास में अन्तिम पद के अन्त मे चवर्ग, द्, ष् या ह् हो, तो समस्त पद के अन्त में टच् (अ) प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे—वाक् च त्वक् च=वाक्त्वचम्, त्वक्स्रजम्, शमीदृषदम्, वाक्त्विषम्, छत्रोपानहम्।

समाहार द्वन्द्व न होने पर अन्त में टच् प्रत्यय नही जुड़ता। जैसे—प्रावृट्-शरदौ। यहाँ इतरेतरयोग द्वन्द्व है।

एकशेष द्वन्द्व

जब अनेक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, तब उसे एकशेष द्वन्द्व कहते हैं।

पुमान् स्त्रिया—यदि स्त्रीवाचक शब्द के साथ पुरुषवाचक शब्द का समास हो और स्त्रीप्रत्यय के कारण ही विरूपता हो, तो पुरुषवाचक शब्द शेष रहता है। जैसे—हंसी च हंसश्च=हंसौ।

भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्--जब भ्रातृ और स्वसृ का समास होता है, तब भ्रातृ शेष रहता है, जब पुत्र और दुहितृ का समास होता है, तब पुत्र शेष रहता है। जैसे--भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च पुत्रौ।

पिता मात्रा--जब पितृ और मातृ का समास हो, तब विकल्प से पितृ शेष रहता है। जैसे--माता च पिता च पितरौ या मातापितरौ।

श्वशुरः श्वश्र्वा वा--जब श्वश्रू और श्वशुर का समास हो, तब विकल्प से श्वशुर शेष रहता है। जैसे--श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ या श्वश्रूश्वशुरौ।

नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम्--जब नपुंसकलिङ्ग शब्दों का अनपुंसकलिङ्ग शब्दों के साथ समास होता है, तब नपुंसकलिङ्ग शब्द शेष रहता है और वह विकल्प से एकवचनान्त होता है। जैसे--शुक्लश्च शुक्ला च शुक्लञ्च = शुक्लम् या शुक्लानि।

बहुव्रीहि समास

अनेकमन्यपदार्थे--जब समास में आये हुए पद किसी अन्य पद का बोध कराते हैं, तब बहुव्रीहि समास होता है। तात्पर्य यह है कि बहुव्रीहि समास में जितने पद रहते हैं, वे सब मिलकर किसी अन्य पदार्थ के विशेषण के रूप में आते हैं। इसीलिए कहा गया है कि बहुव्रीहि में प्राय अन्य पदार्थ प्रधान होता है--प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि। उदाहरण--

प्राप्तोदको ग्राम--प्राप्तमुदकं यम।

ऊढरथोऽनड्वान्--ऊढो रथो येन।

उपहृतपशू रुद्र--उपहृतः पशुर्यस्मै।

उद्धृतौदना स्थाली--उद्धृत ओदनो यस्या।

पीताम्बरः हरिः--पीतानि अम्बराणि यस्य।

वीरपुरुषको ग्राम--वीरा पुरुषाः यस्मिन्।

स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु--यदि बहुव्रीहि में प्रथम शब्द पुंलिङ्ग शब्द में स्त्रीप्रत्यय लगाकर बनाया हुआ स्त्रीलिङ्ग शब्द हो, किन्तु ऊङ् प्रत्यय लगाकर न बनाया गया हो, और दूसरा शब्द समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग हो, किन्तु पूरणार्थ प्रत्ययान्त या प्रियादि शब्द न हो, तब प्रथम शब्द पुंलिङ्ग कर दिया जाता है। जैसे--

रूपवती भार्या यस्य स. रूपवद्भार्यः।

चित्रा गावो यस्य स चित्रगु।

अप्पूरणीप्रमाण्योः--यदि बहुव्रीहि समास के अन्त में पूरणार्थक प्रत्ययान्त

स्त्रीलिङ्ग शब्द हो या प्रमाणी शब्द हो, तो समासान्त अप् प्रत्यय लगता है। जैसे—कल्याणीपञ्चमा रात्रय —कल्याणी पञ्चमी यासा रात्रीणा ता'। स्त्रीप्रमाण — स्त्री प्रमाणी यस्य स.।

स्त्रिया —' सूत्र मे बताया गया है कि यदि पहला शब्द ऊङ् प्रत्ययान्त हो, तो वह पुलिङ्ग नही किया जाता। जैसे—वामोरूभायः। यहाँ 'वामोरू' ऊङ् प्रत्यया त है।

उक्त सूत्र से यह भी ज्ञात होता है कि यदि समास के अन्त में प्रियादि शब्द हो, तो प्रथम स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुलिङ्ग रूप नही रक्खा जाता। जैसे—कल्याणीप्रिय ।

न कोपधाया—जब स्त्रीलिङ्ग शब्द की उपधा में क रहता है, तब पुवद्भाव नही होता। जैसे—पाचिकाभायः, रसिकाभार्य ।

सञ्ज्ञापूरणयोश्च—सञ्ज्ञा शब्दो तथा पूरणप्रत्ययान्त शब्दो का पुवद्भाव नही होता। जैसे—दत्ताभाय., पञ्चमीभाय.।

स्वाङ्गाच्चेत—स्वाङ्गवाचक शब्द मे ईकार लगाकर बनाये हुए स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुवद्भाव नही होता। जैसे—सुकेशीभाय.। 'सुकेशी' मे 'स्वाङ्गाच्चोपसजनात्—' से ङीष् प्रत्यय हुआ है।

अमानिनीति वक्तव्यम् (वा०)—यदि बाद में मानिन् शब्द हो, तब 'स्वाङ्गाच्चेत' के द्वारा पुवद्भाव के निषेध का नियम नही लगता अर्थात् स्वाङ्गवाचक शब्द में ईकार लगाकर बनाये हुए स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुवद्भाव होता है। जैसे—सुकेशमानिनी।

जातेश्च—जातिवाचक शब्द में लगे हुए स्त्रीप्रत्यय से युक्त शब्द का पुवद्भाव नही होता। जैसे—शूद्राभार्य, ब्राह्मणीभाय.।

दिङ्नामान्यन्तराले—दिशाओ के अन्तराल का बोध कराने के लिए दिशावाचक शब्दो का समास होता है। दक्षिणस्या पूर्वस्याश्च दिशः अन्तराल दक्षिणपूर्वा।

तेन सहेति तुल्ययोगे—तुल्य योग में वतमान सह का तृतीयान्त पद के साथ समास होता है।

वोपसर्जनस्य—बहुव्रीहि समास में सह का विकल्प से स होता है। जैसे—पुत्रेण सह सपुत्र सहपुत्रो वा आगतः।

प्रकृत्याशिषि—आशीर्वाद अर्थ में सह का सह ही रहता है। जैसे—स्वस्ति राज्ञे सहपुत्राय सहामात्याय।

अगोवत्सहलेष्विति वाच्यम् (वा०)—यदि गो, वत्स या हल शब्द बाद में हो, तब सह का प्रकृतिभाव नही होता। जैसे—स्वस्ति भवते सहगवे सगवे वा, सहवत्साय सवत्साय वा, सहहलाय सहलाय वा।

बहुव्रीहौ सख्येये डजबहुगणात्—सख्येय अर्थ में वतमान बहुव्रीहि से डच् प्रत्यय होता है। जैसे—उपदशा। यदि बहुव्रीहि समास का अन्तिम पद बहु या गण हो, तब डच् प्रत्यय नही होता। जैसे—उपबहव., उपगणा।

टि०—डच् के रहने पर भी उपगणा ही रूप होगा। यहाँ स्वर मे विशेषता होने के कारण ही डच का निषेध किया गया है। द्रष्टव्य सिद्धान्त-कौमुदी की बालमनोरमा टीका—ननु उपगणा इत्यत्र डचि सति असति च रूपसाम्यात् कि तन्निषेधेनेत्यत आह—अत्र स्वरे विशेष इति। डचि सति चित्' इति अन्तोदात्तत्व स्यादित्यर्थ।

बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो. स्वाङ्गात षच्—जिस बहुव्रीहि समास के अन्त मे स्वाङ्गवाचक सक्थि या अक्षि शब्द हो, उसमे षच् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—दीर्घसक्थ -दीर्घे सक्थिनी यस्य (जिसके ऊरु बडे हो), जलजाक्षी—जलजे इव अक्षिणी यस्या (जिसकी आँखें कमल के समान हो)।

जब सक्थि और अक्षि शब्द स्वाङ्गवाचक नही रहते, तब षच् प्रत्यय नही लगता। जैसे—दीर्घसक्थि शकटम्, स्थूलाक्षा वेणुयष्टि।

द्वित्रिभ्या ष मूर्ध्न—यदि बहुव्रीहि समास में द्वि या त्रि शब्द के बाद मूर्धन् हो, तो समासान्त ष प्रत्यय लगता है। जैसे—द्विमूर्ध.—द्वौ मूर्धानौ यस्य (जिसके दो शिर हो), त्रिमूर्धः—त्रयो मूर्धानो यस्य।

अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्न.—यदि बहुव्रीहि समास मे अन्तर् या बहिस् के बाद लोमन् हो, तो समासान्त अप् प्रत्यय होता है। जैसे—अन्तर्लोम —अन्तर्लोमानि यस्य, बहिर्लोम —बहिर्लोमानि यस्य।

अच् नासिकाया सज्ञाया नस चास्थूलात्—जब सज्ञा के बोधक बहुव्रीहि समास के अन्त में नासिका शब्द रहता है, तब समासान्त अच् प्रत्यय होता है और नासिका के स्थान पर नस् आदेश कर दिया जाता है। जैसे—द्रुणसः—द्रुरिव नासिका यस्य (जसकी नाक वृक्ष की भाँति हो)। यह एक राक्षस का नाम है। दूसरा उदाहरण है—खरणस.—गदहे की भाँति नाकवाला। यह भी एक राक्षस का नाम है। जब बहुव्रीहि समास में नासिका के पहले स्थूल शब्द रहता है, तब नासिका को नस् आदेश नहीं होता। जैसे—स्थूलनासिक।

उपसर्गाच्च—जब ब व्रीहि मे प्रादि के बाद नासिका शब्द आता है, तब समासान्त अच् प्रत्यय आता है और नासिका का नस आदेश होता है। यह नियम उन शब्दों के लिए है, जो संज्ञा नहीं हैं। उदाहरण—उन्नस —उन्नता नासिका यस्य स ।

उपसर्गाद्बहुलम्—यदि उपसर्ग के बाद नस हो और उपसर्ग के ही कारण न के स्थान पर ण हो रहा हो, तो नस् के न के स्थान पर ण कर दिया जाता है। जैसे—प्रणस —प्रगता नासिका यस्य।

सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः -निम्नलिखित बहुव्रीहि समास अच प्रत्यय लगाकर अनियमित रूप से बनाये जाते हैं—सुप्रात. - जिसके लिए प्रातःकाल मङ्गलमय है। सुश्व – जसके लिए कल (आनेवाला दिन) मङ्गलमय है। सुदिव —जिसके लिए दिन मङ्गलमय है। शारिकुक्ष — जिसका पेट शारि (पक्षिविशेष) के पेट की भांति है। चतुरश्र —चार कानों वाला। एणीपदः—मृगी के पैरों की भाँति पैरों वाला। अजपद —बकरे के पैरों की भांति पैरों वाला। प्रोष्ठपद —गाय के पैरों की भाँति पैरों वाला।

नित्यमसिच् प्रजामेधयोः—यदि बहुव्रीहि समास मे नञ्, दुस् या सु के बाद प्रजा या मेधा शब्द हो, तो नित्य समासान्त असिच् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—अप्रजा. (अविद्यमाना प्रजाऽस्य), दुष्प्रजा, सुप्रजा, अमेधा., दुर्मेधा., सुमेधा.।

धर्मादनिच् केवलात्—यदि बहुव्रीहि समास में केवल एक शब्द पहले हो और उसके बाद धर्म शब्द हो, तो समासान्त अनिच् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—कल्याणधर्मा—कल्याणो धर्मोऽस्य।

जम्भा सुहरिततृणसोमेभ्य—जब बहुव्रीहि समास में सु, हरित, तृण, या सोम के बाद जम्भ (भक्ष्य, दन्त) शब्द आता है, तब जम्भ का जम्भा आदेश हो जाता है। जैसे—सुजम्भा, हरितजम्भा, तृणजम्भा, सोमजम्भा।

प्रसम्भ्यां जानुनोर्ज्ञुः—यदि बहुव्रीहि समास में प्र या सम् के बाद जानु शब्द हो, तो उसे ज्ञु आदेश होता है। जैसे—प्रज्ञु —प्रगते जानुनी यस्य। सज्ञु।

ऊर्ध्वाद्विभाषा—यदि ऊर्ध्व के बाद जानु शब्द आए, तब उसे विकल्प से ज्ञु आदेश होता है। जैसे—ऊर्ध्वज्ञु, ऊर्ध्वजानु।

धनुषश्च—यदि धनुस शब्द बहुव्रीहि समास के अन्त में आए, तो उसके अंतिम वर्ण के स्थान पर अनङ् आदेश होता है। जैसे—शार्ङ्गधन्वा—शार्ङ्गं धनुरस्य।

वा संज्ञायाम्—यदि समस्त पद संज्ञा हो, तो विकल्प से अनङ् आदेश होता है। जैसे—शतधन्वा, शतधनु, दृढधन्वा, दृढधनु।

जायाया निङ्—यदि जाया शब्द बहुव्रीहि समास का अन्तिम पद हो, तो जाया के अन्तिम वर्ण को निङ् आदेश होता है। जैसे—युवजानि—युवति र्जाया अस्य।

जाया + निङ् = जाय् + निङ् = जानि।

जाय् के य का लोप 'लोपो व्योर्वलि' से होता है। सूत्र का अर्थ है—यदि व् या य के बाद वल् प्रत्याहार हो, तो व् और य् का लोप हो जाता है।

गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः—यदि बहुव्रीहि समास में उत्, पूति, सु या सुरभि शब्द के बाद गन्ध शब्द आए, तो गन्ध के अन्तिम वर्ण को इ आदेश होता है। जैसे—उद्गन्धि, पूतिगन्धि, सुगन्धि, सुरभिगन्धि।

उपमानाच्च—यदि उपमानवाचक शब्द पहले आए, तो गन्ध के अन्तिम वर्ण (अ) को इ आदेश होता है। जैसे—पद्मगन्धि—पद्मस्येव गन्धोऽस्य। इसी प्रकार 'उत्पलगन्धि' 'करीषगन्धि' आदि समास होते हैं।

पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः—यदि बहुव्रीहि समास में हस्ति आदि के अतिरिक्त किसी अन्य उपमान के बाद पाद शब्द आए, तो पाद के अन्तिम अ का लोप हो जाता है। जैसे—व्याघ्रपात्—व्याघ्रस्येव पादावस्य।

जब हस्ति आदि शब्द पहले रहेंगे, तब पाद के अन्तिम वर्ण का लोप नहीं होगा। जैसे—हस्तिपाद, कुसूलपाद।

हस्त्यादि में निम्नलिखित शब्द हैं—

हस्तिन्, कुद्दाल, अश्व, कशिक, कुरुत, कटोल, कटोलक, गण्डोल, गण्डोलक, कण्डोल, कण्डोलक, अज, कपोत, जाल, गण्ड, महेला (महिला), दासी, गणिका, कुसूल।

कुम्भपदीषु च—कुम्भपदी आदि शब्दों में पद के अन्तिम वर्ण का लोप हुआ है और ङीप् प्रत्यय लगा है। पाद् को पत् आदेश होता है।

कुम्भपद्यादि में निम्नलिखित शब्द हैं—

कुम्भपदी, एकपदी, जालपदी, शूलपदी, मुनिपदी, गुणपदी, शतपदी, सूत्रपदी, गोधापदी, कलशीपदी, विपदी, तृणपदी, द्विपदी, त्रिपदी, षट्पदी, दासीपदी, शितिपदी, विष्णुपदी, सुपदी, निष्पदी, आर्द्रपदी, कुणिपदी (कुणपदी), कृष्णपदी, शुचिपदी, द्रोणपदी (द्रोणीपदी), द्रुपदी, सूकरपदी, शकृत्पदी, अष्टापदी, स्थूलपदी,

अपदी, सूचीपदी, मालापदी, गोपदी, घृतपदी, सूपपदी, पञ्चपदी, अर्वपदी, स्तनपदी, कलहमपदी, विषपदी ।

सख्यासुपूर्वस्य—यदि बहुव्रीहि समास में सख्यावाचक शब्द या सु पहले हो, तो पाद के अन्तिम वर्ण (अ) का लोप हो जाता है । जैसे--द्विपात्—द्वौ पादावस्य, त्रिपात्, सुपात्—शोभनौ पादावस्य ।

वयसि दन्तस्य दतृ—यदि समस्त पद आयु का बोधक हो, तो सख्यावाचक शब्द या सु के बाद आने वाले दन्त शब्द का दत् आदेश हो जाता है । जैसे—द्विदन् (द्वौ दतौ अस्य), चतुदन्, सुदन्—सुदती ।

अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च—जब दन्त शब्द शुद्ध, शुभ्र, वृष या वराह शब्द के बाद आता है या ऐसे पद के बाद आता है, जिसके अन्त में अग्र शब्द हो, तब दन्त को विकल्प से दत् आदेश होता है । जैसे—कुड्मलाग्रदन् या कुड्मलाग्रदन्त, शुभ्रदन् या शुभ्रदन्त, वृषदन् या वृषदन्त, वराहदन् या वराहदन्त ।

उद्विभ्या काकुदस्य—जब बहुव्रीहि समास में उद् या वि के बाद काकुद शब्द आता है, तब काकुद के अन्तिम वर्ण (अ) का लोप हो जाता है । जैसे—उत्काकुत्—उद्गत काकुदमस्य, विकाकुत्—विगत काकुदमस्य ।

पूर्णाद्विभाषा—जब पूर्ण शब्द के बाद काकुद शब्द आता है, तब विकल्प से काकुद के अन्तिम वर्ण का लोप होता है। जैसे—पूर्णकाकुत् या पूर्णकाकुद ।

सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयो—सुहृद् और दुर्हृद् का क्रमश मित्र और अमित्र अर्थ में निपातन होता है । दोनो में हृदय को हृद् आदेश होता है । यहाँ यह ध्यातव्य है कि मित्र अर्थ होने पर ही सुहृद् बनता है और अमित्र अर्थ होने पर ही दुर्हृद् । भिन्न अर्थ होने पर सुहृदय और दुर्हृदय शब्द बनते हैं । जैसे—सुहृदयः कारुणिक, दुर्हृदयश्चोर ।

उर प्रभृतिभ्य कप्—बहुव्रीहि समास में उरस् आदि से कप् प्रत्यय होता है । जैसे—व्यूढोरस्कः—व्यूढम् उर यस्य (विशाल वक्ष.स्थल वाला), प्रियसर्पिष्क—प्रिय सर्पिः यस्य (घी जिसे प्रिय हो) ।

उरस् आदि में निम्नलिखित आते हैं—

उरस्, सर्पिस्, उपानह्, पुमान्, अनड्वान्, पयस्, नौ, लक्ष्मी, दधि, मधु, शालि, अर्थान्नञ ।

निष्ठा—बहुव्रीहि समास में निष्ठान्त पद का पहले प्रयोग होता है। जैसे—युक्तयोग – युक्तो योगो येन यस्य वा।

वाहिताग्न्यादिषु—आहिताग्नि आदि में निष्ठान्त पद का विकल्प से पहले प्रयोग होता है। जैसे—आहिताग्नि या अग्न्याहित।

शेषाद् विभाषा—जिस बहुव्रीहि से किसी समासान्त प्रत्यय का विधान न किया गया हो, उसमें विकल्प से कप् प्रत्यय होता है। जैसे—महायशस्क या महायशा।

समासान्त

ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे—यदि समास के अन्त मे ऋच्, पुर, अप्, धुर् या पथिन शब्द हो, तो समासान्त अ प्रत्यय लगाया जाता है। जब धुर् शब्द अक्षधुरा का वाचक रहता है तब अ प्रत्यय नही लगता। जैसे—अर्धर्च, विष्णुपुरम् विमलापसर, राजधुरा, सखिपथ। 'अक्षधू' में अ प्रत्यय नही लगा है क्योंकि यहाँ धुर शब्द गाडी की धुरा के लिए आया है।

अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्न —यदि प्रति, अनु या अव के बाद सामन् या लोमन् शब्द आए, तो समासान्त अच् प्रत्यय होता है। जैसे—प्रतिसामम्, अनुसामम् अवसामम्, प्रतिलोमम्, अनुलोमम्, अवलोमम।

कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्वाया भूमेरजिष्यते (वा०)—यदि समास के अन्त में भूमि शब्द हो और कृष्ण, उदच्, पाण्डु या कोई संख्यावाचक शब्द उसके पहले हो, तो समासान्त अच् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—कृष्णभूम, उदग्भूम, पाण्डुभूम., द्विभूम प्रासाद।

संख्याया नदीगोदावरीभ्यां च (वा०)—यदि संख्यावाचक शब्द के बाद नदी या गोदावरी शब्द आए तब भी समासान्त अच् प्रत्यय होता है। जैसे—पञ्चनदम, सप्तगोदावरम्।

अक्ष्णोऽदर्शनात्—यदि समास के अन्त में अक्षि शब्द हो और उसका अर्थ नेत्र न हो, तो समासान्त अच् प्रत्यय होता है। जैसे—गवाक्ष—गवामक्षीव।

ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः—जब ब्रह्मन् या हस्तिन् शब्द के बाद वर्चस् शब्द आता है, तो समासान्त अच प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—ब्रह्मवर्चसम्, हस्तिवर्चसम्।

पल्यराजभ्यां चेति वक्तव्यम् (वा०)—यदि पल्य (मासभोजी) या राजन्

उत्तर पद हो, तो भी समासान्त अच् प्रत्यय होता है। जैसे—पल्यवचसम, राजवचसम।

अवसमन्धेभ्यस्तमस—यदि समास के अन्त में तमस् शब्द हो और पूर्वपद अव, सम या अन्ध हो, तो समासान्त अच् प्रत्यय होता है। जैसे—अवतमसम्, सन्तमसम्, अन्धतमसम्।

अन्ववतप्ताद्रहस—यदि समास के अन्त में रहस् शब्द हो और अनु, अव या तप्त पूर्वपद हो, तो समासान्त अच् प्रत्यय होता है। जैसे—अनुरहसम्, अवरहसम्, तप्तरहसम्।

उपसर्गादध्वन—यदि पूर्वपद कोई उपसर्ग हो और उत्तरपद अध्वन् शब्द हो, तो समासान्त अच् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—प्रगतोऽध्वानं प्राध्वो रथः।

न पूजनात्—यदि पूर्वपद पूजनार्थक हो, तो समासान्त प्रत्यय नहीं लगाया जाता। जैसे—सुराजा, अतिराजा।

किमः क्षेपे—जब निन्दा अर्थ में वर्तमान किम् के बाद कोई पद आता है, तब कोई समासान्त प्रत्यय नहीं लगता। जैसे—कुत्सितो राजा किंराजा, किंसखा।

जब किम् निन्दा अर्थ में नहीं प्रयुक्त होता, तब टच् प्रत्यय लगता है। जैसे—कस्य राजा = किंराज, किंसख, किंगव।

नञस्तत्पुरुषात्—यदि तत्पुरुष समास में नञ् के बाद राजन् आदि पद हो, तो समासान्त प्रत्यय नहीं लगता। जैसे—अराजा, असखा।

पथो विभाषा—यदि तत्पुरुष में नञ् के बाद पथिन् शब्द हो, तो विकल्प से समासान्त प्रत्यय लगता है। जैसे—अपथम्, अपन्थाः।

अलुक्समास

पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः—यदि स्तोक आदि के बाद कोई पद आए, तो स्तोक आदि की पञ्चमी विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—स्तोकान्मुक्त, अन्तिकादागत, अभ्याशादागत, दूरादागतः, विप्रकृष्टादागत, कृच्छ्रान्मुक्तः।

ओजःसहोम्भस्तमसस्तृतीयायाः—यदि कोई पद बाद में हो, तो ओजस्, सहस्, अम्भस् या तमस् की तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—ओजसाकृतम्, सहसाकृतम्, अम्भसाकृतम्, तमसाकृतम्।

अञ्जस उपसंख्यानम् (वा०)—ओजस् आदि की तृतीया की भाँति अञ्जस् की तृतीया का भी लोप नहीं होता। जैसे—अञ्जसाकृतम् (आर्जवेन कृतम्)।

पुंसानुजो जनुषान्ध इति च (वा०)—पुंसानुज और जनुषान्ध पदों में भी तृतीया का लोप नहीं होता। जैसे—पुंसानुज (यस्याग्रजः पुमान्), जनुषान्ध (जात्यन्ध)।

मनसः संज्ञायाम्—यदि कोई पद बाद में आए और समस्त पद संज्ञा हो, तो मनस् की तृतीया का लोप नहीं होता। जैसे—मनसागुप्ता।

आत्मनश्च । पूरणे इति वक्तव्यम् (वा०)—यदि उत्तरपद पूरणप्रत्ययान्त हो, तो आत्मन् की तृतीया का लोप नहीं होता। जैसे—आत्मनापञ्चम.।

वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः—यदि चतुर्थ्यन्त आत्मन् के बाद कोई पद आए और समस्त पद व्याकरण का कोई पारिभाषिक शब्द हो, तो आत्मन् की चतुर्थी का लोप नहीं होता। जैसे—आत्मनेपदम्, आत्मनेभाषा।

परस्य च—यदि समस्त पद व्याकरण का कोई पारिभाषिक शब्द हो, तो पूर्व पद 'पर' की चतुर्थी का लोप नहीं होता। जैसे—परस्मैपदम्, परस्मैभाषा।

हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्- यदि समस्त पद संज्ञा हो और हलन्त या अदन्त के बाद कोई पद आए, तो हलन्त या अदन्त की सप्तमी का लोप नहीं होता। जैसे—त्वचिसार (बाँस)।

गवियुधिभ्यां स्थिरः—गवि और युधि के बाद आए हुए स्थिर के स् को ष् हो जाता है। जैसे—गविष्ठिरः (सत्यवादी), युधिष्ठिर। यहाँ गवि और युधि दोनों की सप्तमी का लोप नहीं हुआ है।

हृद्द्युभ्यां च (वा०)—यदि कोई पद में बाद में हो, तो हृद् और दिव् की सप्तमी का लोप नहीं होता। जैसे—हृदिस्पृक्, दिविस्पृक्।

मध्याद्गुरौ—यदि गुरु शब्द बाद में हो, तो मध्य की सप्तमी का लोप नहीं होता। जैसे—मध्येगुरु (बीच में भारी)।

अन्ताच्च (वा०)—यदि उत्तरपद गुरु शब्द हो, तो अन्त की सप्तमी का लोप नहीं होता। जैसे—अन्तेगुरु।

अमूर्धमस्तकात् स्वाङ्गादकामे—यदि मूर्द्धन् और मस्तक को छोड़कर किसी स्वाङ्गवाचक शब्द के बाद काम शब्द के अतिरिक्त कोई शब्द आए, तो स्वाङ्गवाचक शब्द की सप्तमी का लोप नहीं होता। जैसे—कण्ठेकाल, उरसिलोमा।

मूर्धन् और मस्तक की सप्तमी का लोप होता है। जैसे—मूर्धशिख, मस्तकशिखः।

जब काम शब्द बाद में आता है, तब सप्तमी का लोप होता है। जैसे—मुखकाम - मुखे कामोऽस्य।

तत्पुरुषे कृति बहुलम्—यदि तत्पुरुष समास में उत्तरपद कृदन्त हो, तो सप्तमी का विकल्प से लोप होता है। जैसे—स्तम्बेरम (हाथी) या स्तम्बरम, कर्णेजप (पिशुन, चुगलखोर) या कर्णजप। कहीं लोप नहीं होता। जैसे—कुरुचर. - कुरुषु चरति इति।

प्रावृट्शरत्कालदिवां जे—यदि 'ज' उत्तरपद हो, तो प्रावृष्, शरद्, काल और दिव् की सप्तमी का लोप नहीं होता। जैसे—प्रावृषिज., शरदिजः, कालेज, दिविज।

विभाषा वर्षक्षरशरवरात्—यदि 'ज' उत्तरपद हो, तो वर्ष, क्षर, शर और वर की सप्तमी का विकल्प से लोप होता है। जैसे—वर्षेज या वर्षज, क्षरेज या क्षरज, शरेज या शरजः, वरेज या वरज।

षष्ठ्या आक्रोशे—यदि समस्तपद से आक्रोश अर्थ व्यक्त हो, तो उत्तरपद के पहले आने वाली षष्ठी का लोप नहीं होता। जैसे—चौरस्यकुलम्।

जब आक्रोश अर्थ नहीं रहता, तब षष्ठी का लोप होता है। जैसे—ब्राह्मण-कुलम्।

देवानांप्रिय इति च मूर्खे (वा०)—'मूर्ख' अर्थ रहने पर 'देवानांप्रिय' की षष्ठी का लोप नहीं होता। अत 'मूर्ख' अर्थ होने पर 'देवानांप्रिय' पद बनता है। जब 'मूर्ख' अर्थ नहीं होता, तब 'देवप्रिय' पद बनता है। इसमे षष्ठी का लोप हो जाता है।

पुत्रेऽन्यतरस्याम्—यदि पुत्र शब्द उत्तरपद हो और समस्तपद निन्दा के अर्थ का बोध कराए, तो षष्ठी का विकल्प से लोप होता है। जैसे—दासीपुत्रः, दास्याः पुत्र.।

मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम्—जब समास में मातु या पितु के बाद स्वसृ शब्द आता है, तब उसके स् को विकल्प से ष् होता है। जैसे—मातुःस्वसा या मातुःष्वसा, पितु स्वसा या पितु ष्वसा।

मातृपितृभ्यां स्वसा—समास में मातृ और पितृ के बाद आने वाले स्वसृ के स् को ष् हो जाता है। जैसे—मातृष्वसा, पितृष्वसा।

जब समास नहीं रहता, तब स् को ष् नहीं होता। जैसे—मातु स्वसा, पितुः स्वसा।

———

दशम प्रकरण

तद्धित

तद्धित प्रत्यय प्रातिपदिकों में लगाये जाते हैं। ये विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।

अश्वपत्यादिभ्यश्च—अपत्य आदि अर्थों में अश्वपति आदि में अण प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—अश्वपतेरपत्यम् (अश्वपति की सन्तान)=आश्वपतम्। यहाँ 'तद्धितेष्वचामादे' सूत्र से अ की वृद्धि हुई है। जब ञित् या णित् तद्धित प्रत्यय किसी शब्द के बाद आता है, तब शब्द के प्रथम स्वर की वृद्धि हो जाती है।

दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्य—दिति, अदिति, आदित्य और पत्युत्तर-पद (जिसका उत्तरपद 'पति' शब्द हो) से ण्य प्रत्यय होता है। जैसे—दितेरपत्य दैत्य, अदितेरपत्यम् आदित्य, आदित्यस्य अपत्यम् आदित्य.। यहाँ आदित्य के य का लोप '**हलो यमा यमि लोप**' सूत्र से होता है।

सूत्र का अर्थ है—यदि हल् के बाद यम् हो और उसके बाद यम् हो, तो पहले यम् का विकल्प से लोप हो जाता है। 'आदित्य य' की स्थिति में आदित्य के यकारोत्तरवर्ती अकार का '**यस्येति च**' से लोप हो जाता है और फिर 'हलो –' सूत्र से 'आदित्य्' के य् का विकल्प से लोप हो जाता है। इस प्रकार 'आदित्य' रूप बनता है।

देवाद्यञञौ (वा०)—देव से यञ् और अञ् प्रत्यय होते हैं। जैसे—दैव्यम्, दैवम्।

बहिषष्टिलोपो यञ् च (वा०)—बहिस् से यञ् प्रत्यय होता है और टि का लोप होता है। अत—बाह्य.।

ईकक् च (वा०)—बहिस् से ईकक् प्रत्यय होता है और टि का लोप होता है।

किति च—जब कित् तद्धित प्रत्यय बाद में आता है, तब प्रथम स्वर की वृद्धि होती है। उदाहरण—बहिस्+ईकक्=बाहीक।

ईकक् कित् प्रत्यय है, अतः बहिस् के प्रथम स्वर अ की वृद्धि हो गई है।

सर्वत्र गोरजादिप्रसङ्गे यत् (वा०)-प्राग्दीव्यतीय अर्थों में गो शब्द से अच् आदि प्रत्ययों के प्रसङ्ग में यत् प्रत्यय होता है। तात्पर्य यह है कि जहाँ गो शब्द से अच् आदि प्रत्यय की प्राप्ति हो, वहाँ यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण—गवि भव गव्यम् (गो + यत्)।

उत्सादिभ्योऽञ्—उत्स आदि शब्दों से अञ् प्रत्यय होता है। उदा०—औत्स।

अपत्याधिकार

स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्—'धान्यानां भवने०' सूत्र से पहले आये हुए अर्थों में स्त्री और पुंस् शब्दों से क्रमश नञ और स्नञ् प्रत्यय होते हैं।

उदा०—स्त्रैण स्त्रिया अपत्य पुमान, स्त्रीपु भव, स्त्रीणा समूह। पौंस्न —पुंस अपत्यम पुंसु भव, पुंसा समूह।

ओर्गुण – यदि तद्धित प्रत्यय बाद में हो, तो उवर्णान्त भसंज्ञक को गुण होता है। उदाहरण—औपगव – उपगोरपत्यम। यहाँ अपत्य अर्थ मे अण् प्रत्यय हुआ है। प्रकृत सूत्र से उपगु में गु के उ को गुण हो गया है।

अपत्य पौत्रप्रभृतिगोत्रम्—अपत्य रूप से विवक्षित पौत्र आदि को गोत्र कहते हैं।

एको गोत्रे—गोत्र अर्थ में एक ही अपत्य प्रत्यय होता है। उदाहरण—उपगोर्गोत्रापत्यम् औपगव।

गर्गादिभ्यो यञ्—गोत्रापत्य अर्थ में गर्ग आदि से यञ् प्रत्यय होता है। जैसे—गर्गस्य गोत्रापत्यम् – गार्ग्य, वात्स्य – वत्सस्य गोत्रापत्यम्।

जीवति तु वंश्ये युवा – यदि पिता आदि जीवित हो, तो पौत्र आदि के अपत्य की युवसंज्ञा होती है।

यञिञोश्च—गोत्र अर्थ में वर्तमान यञ् प्रत्ययान्त और इञ् प्रत्ययान्त शब्दों से फक् प्रत्यय होता है। उदा०—गार्ग्यायणः—गर्गस्य युवापत्यम्। यहाँ गार्ग्य से फक् प्रत्यय हुआ है। फक् के फ को निम्नलिखित सूत्र से आयन् आदेश हुआ है—

आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्—

प्रत्यय के आदि	फकार	को	आयन्	आदेश होता है।
"	ढ	"	एय्	"
"	ख	"	ईन्	"

" छ " ईय् "
" घ " इय "

अत इञ्—अकारान्त शब्द से अपत्य अर्थ मे इञ् प्रत्यय होता है। जैसे—दाक्षि—दक्षस्य अपत्य पुमान्।

बाह्वादिभ्यश्च—बाहु आदि से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है। जैसे—बाहवि—बाहोरपत्य पुमान्, औडुलोमि—उडुलोम्नोऽपत्य पुमान्।

अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ्—बिद आदि से गोत्र अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है, परन्तु इनमें जो ऋषि नही हैं, उनसे अपत्य अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है। जैसे—बिदस्य गोत्रम्—वैद.। पुत्रस्यापत्यम्—पौत्र।

बिद, ऊर्व, कश्यप, कुशिक, भरद्वाज, उपमन्यु, किलात, किंदर्भ, विश्वानर, ऋषिषेण, ऋतभाग, हर्यश्व, प्रियक, आपस्तम्ब इत्यादि बिदादिगण में आते हैं।

शिवादिभ्योऽण्—शिव आदि से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। जैसे—शैव, गाङ्ग।

ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च—ऋषि-वाचक तथा अन्धक, वृष्णि और कुरु कुल वाचक शब्दो से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। जैसे—(१) ऋषि-वाचक—वासिष्ठ, वैश्वामित्र, (२)—अन्धक—श्वाफल्क, (३) वृष्णि—वासुदेव, आनिरुद्ध., (४) कुरु—नाकुल, साहदेवः।

मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः—यदि सख्यावाचक शब्द, सम् या भद्र पहले हो, तो मातृ को उत् आदेश होता है और अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। जैसे—द्वैमातुर—द्वयोर्मात्रोरपत्य पुमान्, षाण्मातुर, सामातुरः, भाद्रमातुरः।

कन्याया कनीन च—कन्या शब्द से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है और कन्या को कानीन आदेश होता है। उदा०—कानीन (कन्याया अपत्य पुमान्) व्यासः कर्णश्च।

स्त्रीभ्यो ढक्—स्त्री-प्रत्ययान्त शब्दो से अपत्य अर्थ में ढक् प्रत्यय होता है। जैसे—वैनतेय—विनताया अपत्य पुमान्।

राजश्वशुराद्यत्—राजन् और श्वशुर शब्द से अपत्य अर्थ में यत् प्रत्यय होता है।

राज्ञो जातावेवेति वाच्यम्—(वा०)—राजन् से जाति अर्थ में ही यत् प्रत्यय होता है। उदा०—राजन्य, श्वशुर्य· (साला)।

क्षत्राद् घः—क्षत्र शब्द से जाति अर्थ में घ प्रत्यय होता है। उदा०—क्षत्रिय।

जातिभिन्न अर्थ मे 'अत इञ्' सूत्र से इञ् प्रत्यय होता है। इञ् प्रत्यय लगाने से 'क्षात्रि' रूप बनता है।

रेवत्यादिभ्यष्ठक्—रेवती आदि शब्दा से अपत्य अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है। जसे—रैवतिकः।

यहाँ 'ठस्येक' सूत्र से ठकार को इक् आदेश हुआ है।

•ठस्येक—अङ्ग के बाद के ठकार को इक् आदेश हाता है।

जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्—यदि जनपदवाचक शब्द क्षत्रिय का वाचक हो, तो उससे अपत्य अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है। जैसे—पाञ्चाल।

पूरोरण् वक्तव्य—(वा०) पुरु शब्द से राजा अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। उदा०—पौरव.—पूरूणा राजा।

पाण्डोर्ड्यण् (वा०)—पाण्डु शब्द से राजा अर्थ में ड्यण् प्रत्यय होता है। उदा०—पाण्ड्य।

कुरुनादिभ्यो ण्य—कुरु शब्द मे तथा नकारादि जनपद और क्षत्रिय वाचक शब्दो से अपत्य तथा राजा अर्थ मे अण् प्रत्यय होता है। जैसे—कौरव्य, नैषध्य।

रक्ताद्यर्थक

तेन रक्त रागात्—'उससे रँगा हुआ' अर्थ में तृतीयान्त रग-वाचक पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—काषायम्—कषायेण रक्त वस्त्रम्।

दृष्ट साम—'उसने साम को देखा' इस अर्थ में तृतीयान्त से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—वासिष्ठम्—वसिष्ठेन दृष्ट साम।

वामदेवाद् ड्यड्ड्यौ—'उसने साम को देखा' इस अर्थ में वामदेव शब्द से ड्यत् और ड्य प्रत्यय होते हैं। ड्यत् और ड्य—दोनो का केवल यकार बचता है। उदा०—वामदेव्यम्—वामदेवेन दृष्ट साम।

परिवृतो रथः—'घिरा हुआ रथ' अर्थ में तृतीयान्त पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—वास्त्रो रथ—वस्त्रै परिवृतो रथ।

पाण्डुकम्बलादिनि—'घिरा हुआ रथ' अर्थ में तृतीयान्त पाण्डुकम्बल से इनि प्रत्यय होता है। उदा०—पाण्डुकम्बली रथ—पाण्डुकम्बलेन परिवृतो रथ।

तत्रोद्धृतममत्रेभ्य—'उसमे निकाल कर रक्खा हुआ' अर्थ में सप्तम्यन्त पात्र-वाचक पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—शाराव, ओदन.—शरावे उद्धृत।

संस्कृत भक्षा —यदि संस्कृत पदार्थ खाने की वस्तु हो, तो सप्तम्यन्त पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—भ्राष्ट्रा यवा —भ्राष्ट्रेषु संस्कृताः (भाड में संस्कृत)।

साऽस्य देवता—'इसका देवता है' अर्थ में प्रथमान्त पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—ऐन्द्र हवि , पाशुपतम्, बार्हस्पतम।

शुक्राद्घन्—'इसका देवता है' अर्थ मे शुक्र शब्द से घन् प्रत्यय होता है। उदा०—शुक्रियम्।

सोमाट्ट्यण्—'इसका देवता है' अर्थ मे सोम शब्द से ट्यण् प्रत्यय होता है। उदा०—सौम्यम्।

वाय्वृतुपित्रुषसो यत्—'इसका देवता है' अर्थ में वायु, ऋतु, पितृ और उषस् शब्द से यत् प्रत्यय होता है। जैसे—वायव्यम्, ऋतव्यम, पित्र्यम्, उषस्यम्।

पितृव्यमातुलमातामहपितामहा —पितृव्य (चाचा), मातुल (मामा), मातामह (नाना, और पितामह (पिता का पिता)—ये शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं।

पितृव्य—पितृ शब्द से भ्राता अर्थ में व्यत् प्रत्यय होता है।

मातुल—भ्राता अर्थ में मातृ शब्द से डुलच् प्रत्यय होता है।

मातुल—भ्राता अर्थ में मातृ शब्द से डुलच प्रत्यय होता है।

मातामह, पितामह—पिता अर्थ में मातृ और पितृ शब्दो से डामहच् प्रत्यय होते हैं।

तस्य समूह —समूह अर्थ में षष्ठ्यन्त पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे—काकम्—काकाना समूहः।

भिक्षादिभ्योऽण्—समूह अर्थ में भिक्षा आदि षष्ठ्यन्त पदो से अण प्रत्यय होता है। जैसे—भैक्षम्—भिक्षाणा समूह, गार्भिणम्—गर्भिणीना समूहः।

भिक्षा आदि में निम्नलिखित पद आते हैं—

भिक्षा, गर्भिणी, क्षत्र, करीष, अङ्गार, चर्मिन्, धर्मिन्, सहस्र, युवति, पदाति, पद्धति, अर्थवत् आदि।

ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्—समूह अर्थ में ग्राम, जन, और बन्धु शब्दो से तल् प्रत्यय होता है। उदा०—ग्रामता, जनता, बन्धुता।

गजसहायाभ्या चेति वक्तव्यम् (वा०)—गज और सहाय (सहायक) शब्दो से भी समूह अर्थ में तल् प्रत्यय होता है। जैसे—गजता (हाथियो का समूह), सहायता (सहायको का समूह)।

अह्न ख क्रतौ (वा०)—यज्ञ वाच्य होने पर अहन् शब्द से समूह अर्थ में ख प्रत्यय होता है। उदा०—अह्ना समूहेन साध्यः क्रतुविशेष अहीन।

अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्—अचेतनपदार्थवाचक शब्दो से तथा हस्ती और धेनु शब्दो से समूह अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—साक्तुकम्—सक्तूना समूह।

यहाँ '**इसुसुक्तान्तात्क**' सूत्र से ठ को क आदेश हुआ है। सूत्र का अर्थ है—जिन शब्दो के अन्त में इस्, उस्, उक् या तकार हो, उनके बाद आने वाले ठ को क आदेश होता है।

सक्तु शब्द के बाद ठक् प्रत्यय आया है। सक्तु के अन्त में उक् है, अत ठ को क आदेश हो गया है।

चातुरर्थिक

इस प्रकरण में चार अर्थों में होने वाले प्रत्ययो का निरूपण किया गया है, अत इसका नाम चातुरर्थिक है। चारो अर्थ ये हैं—१ इसमें है, २ उसने बनाया, ३ उसका निवास और ४ उससे जो दूर नही है।

तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि—यदि प्रत्ययान्त शब्द देश का वाचक हो, तो 'इसमें है' इस अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। जसे—औदुम्बरः—उदुम्बरा सन्त्यस्मिन् देशे।

तेन निर्वृत्तम्—यदि प्रत्ययान्त शब्द देश का नाम हो, तो 'बसाई गई' अर्थ में तृतीयान्त पद से अण् आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—कुशाम्बेन निर्वृत्ता कौशाम्बी नगरी।

तस्य निवास—यदि प्रत्ययान्त शब्द देश का वाचक हो, तो 'निवास' अर्थ में षष्ठ्यन्त पद से अण् आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—शिबीना निवासो देशः शैब।

अदूरभवश्च—यदि प्रत्ययान्त शब्द देश का वाचक हो, तो अदूरभव (जो दूर न हो) अर्थ में षष्ठ्यन्त पद से अण् आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—विदिशाया अदूरभव नगर वैदिशम्।

जनपदे लुप्—यदि प्रत्ययान्त शब्द जनपद वाचक हो, तो चातुरर्थिक प्रत्यय का लोप होता है।

लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने—प्रत्यय का लोप होने पर लिङ्ग और वचन प्रकृति की भाँति होते हैं।

उदा०—पञ्चाला॰—पञ्चालानां निवासो जनपद। यहाँ पञ्चाल शब्द से निवास अर्थ में अण् प्रत्यय हुआ है और 'जनपदे लुप' से प्रत्यय का लोप हो गया है।

इसी प्रकार कुरवः, अङ्गाः, वङ्गा, कलिङ्गा आदि बनते हैं। इन सभी उदाहरणों में लिङ्ग और वचन प्रकृति के समान हैं।

वरणादिभ्यश्च—वरणा आदि के बाद आने वाले चातुर्रथिक प्रत्यय का लोप होता है। जैसे—वरणा—वरणानामदूरभव नगरम्। वरणा, शृङ्गी, शाल्मलि, शुण्डी, ताम्रपर्णी, गोदा, जालपदी, जम्बू, पुष्कर, चम्पा, वल्गु, उज्जयिनी, गया, मथुरा, तक्षशिला, उरसा, गोमती, वलभी आदि वरणादि में आते हैं।

कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप्—कुमुद, नड और वेतस से उपर्युक्त चार अर्थों में ड्मतुप् प्रत्यय होता है और इन शब्दों के अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है।

झयः—झय् के बाद आने वाले मतु के मकार को वकार आदेश होता है। उदा०—कुमुद्वान्, नड्वान्।

नडशादाड् ड्वलच्—नड और शाद स ड्वलच प्रत्यय होता है। उदा०—नड्वल., शाद्वल।

शिखाया वलच्—शिखा से वलच् प्रत्यय होता है। जैसे—शिखावल—शिखा सन्त्यस्मिन् देशे।

शैषिक

राष्ट्रावारपाराद्घखौ—राष्ट्र और अवारपार शब्दों से शेष अर्थ में क्रमश घ और ख प्रत्यय होते हैं। जैसे—राष्ट्रियः—राष्ट्रे जातो भवो वा, अवारपारीण॰ (पारगत)—अवारपार गत.। यहाँ गत अर्थ में ख प्रत्यय हुआ है।

अवारपाराद् विगृहीतादपि विपरीताच्चेति वक्तव्यम् (वा०)—अवार, पार (विगृहीत) से तथा पारावार से भी ख प्रत्यय होता है। उदा०—अवारीण, पारीणः, पारावारीणः।

ग्रामाद्यखञौ—ग्राम शब्द से य और खञ् प्रत्यय होते हैं। जैसे—ग्राम्य, ग्रामीणः—ग्रामे जात भवो वा।

नद्यादिभ्यो ढक्—नदी आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है। जैसे—नादेयम्—नद्यां जातं भवं वा, माहेयम्—मह्यां जातं भवं वा, वाराणसेयम्—वाराणस्यां जातं भवं वा।

दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्—दक्षिणा, पश्चात् और पुरस् शब्दों से त्यक् प्रत्यय होता है। जैसे—दाक्षिणात्य—दक्षिणस्यां जातः भवो वा, पाश्चात्य—पश्चात् जातः भवो वा, पौरस्त्य।

द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्—दिव्, प्राच्, अपाच्, उदच् और प्रतीच् शब्दों से यत् प्रत्यय होता है। जैसे—दिव्यम्—दिवि जातं भवं वा, प्राच्यम्—पूर्व दिशा में पैदा हुआ, अपाच्यम्—दक्षिण दिशा में पैदा हुआ।

मध्यान्मः—मध्य शब्द से म प्रत्यय होता है। अतः—मध्यम—मध्ये भवः।

कालाट्ठञ्—काल शब्द से तथा कालवाचक शब्दों से ठञ् प्रत्यय होता है। जैसे—कालिकम्, मासिकम्, सांवत्सरिकम्।

प्रावृष एण्यः—प्रावृष् से एण्य प्रत्यय होता है। अतः—प्रावृषेण्य।

सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च—सायम्, चिरम्, प्राह्णे, प्रगे और अव्यय शब्दों से ट्यु और ट्युल् प्रत्यय होते हैं और इन प्रत्ययों को तुट् का आगम होता है। जैसे—सायंतनम्, चिरंतनम्, प्राह्णेतनम्, प्रगेतनम्, दोषातनम्।

यहाँ 'युवोरनाकौ' से यु को अन आदेश हो गया है।

तत्र जातः—सप्तम्यन्त समर्थ पद से 'जात' अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—स्रौघ्नः—स्रुघ्ने जातः—स्रुघ्न देश में उत्पन्न हुआ, औत्सः—उत्से जातः।

प्रावृषष्ठप्—प्रावृष् शब्द से 'जात' अर्थ में ठप् प्रत्यय होता है। अतः—प्रावृषिक।

कोशाड्ढञ्—कोश शब्द से सम्भूत अर्थ में ढञ् प्रत्यय होता है। उदा०—कौशेयम्—कोशे सम्भवति—कोश में होने वाला।

दिगादिभ्यो यत्—दिश् आदि से भव अर्थ में यत् प्रत्यय होता है। जैसे—दिश्यम्—दिशि भवम्, वर्ग्यम—वर्गे भवम्—समूह में होने वाला।

शरीरावयवाच्च—शरीर के अवयवो के वाचक शब्दो से भी भव अर्थ में यत् प्रत्यय होता है। जैसे—दन्त्यम्—दन्तेषु भवम्, कण्ठ्यम्—कण्ठे भवम्।

अध्यात्मादेष्ठञिष्यते (वा०)—अध्यात्म आदि से भव अर्थ में ठञ् प्रत्यय होता है। जैसे—आध्यात्मिकम्।

अनुशतिकादीनां च—जब 'अनुशतिक' आदि पदो के बाद ञित्, णित् या कित् प्रत्यय आता है, तब इनके दोनो पदों को वृद्धि होती है। जैसे—आधिदैविकम्, आधिभौतिकम्, ऐहलौकिकम्, पारलौकिकम्।

जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः—जिह्वामूल और अङ्गुलि पदो से भव अर्थ में छ प्रत्यय होता है। जैसे—जिह्वामूलीयम्, अङ्गुलियम्।

वर्गान्ताच्च—जिसके अन्त में वर्ग शब्द हो, उससे भी भव अर्थ में छ प्रत्यय होता है। जैसे—कवर्गीयम्।

प्राग्दीव्यतीय

तस्य विकारः—षष्ठ्यन्त पद से विकार अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं।

अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः—प्राणिवाचक, ओषधिवाचक और वृक्षवाचक पदों से विकार और अवयव अर्थों में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—मायूरः—मयूरस्यावयवो विकारो वा।

नित्यं वृद्धशरादिभ्यः—वृद्ध शब्दो से तथा शर आदि शब्दों से विकार और अवयव अर्थों में मयट् प्रत्यय नित्य होता है। जैसे—आम्रमयम्, शरमयम्।

गोश्च पुरीषे—गो शब्द से पुरीष (गोबर) अर्थ में मयट् प्रत्यय होता है। अतः—गोमयम्।

गोपयसोर्यत्—विकार और अवयव अर्थों में गो और पयस् शब्दों से यत् प्रत्यय होता है। अतः—गव्यम्, पयस्यम्।

ठगधिकार

तेन दीव्यति खनति जयति जितम्—दीव्यति (खेलता है), खनति (खनता है), जयति (जीतता है) और जितम् (जीता हुआ)—इन अर्थों में

तृतीयान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—आक्षिकः—अक्षैर्दीव्यति खनति जयति जित वा।

संस्कृतम्—संस्कृत (संस्कार किया हुआ) अर्थ में तृतीयान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—दाधिकम्—दध्ना संस्कृतम, मारीचिकम्—मरीचिभि संस्कृतम्।

तरति—'पार करता है' अर्थ में तृतीयान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—औडुपिकः—उडुपेन तरति।

गोपुच्छाट्ठञ्—'पार करता है' अर्थ में तृतीयान्त गोपुच्छ पद से ठञ् प्रत्यय होता है। अत—गौपुच्छिकः।

चरति—'चलता है या खाता है' अर्थ मे तृतीयान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—हास्तिकः—हस्तिना चरति (चलता है), दाधिक—दध्ना चरति—दही से खाता है।

उञ्छति—'चुनता है अर्थ में द्वितीयान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। बादरिक (बेरो को बीनने वाला)—बदराणि उञ्छति।

रक्षति—'रक्षा करता है' अर्थ में द्वितीयान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—सामाजिक—समाज रक्षति। जो समाज की रक्षा करता है, उसे सामाजिक कहते हैं।

शब्ददर्दुरं करोति—'शब्द करता है' (प्रकृति और प्रत्यय का निरूपण करते हुए व्युत्पत्ति करता है) और 'दर्दुर (मिट्टी का बड़ा पात्र) बनाता है' अर्थों में द्वितीयान्त शब्द और दर्दुर पदो से ठक प्रत्यय होता है। उदा०—शाब्दिक—शब्द करोति, दार्दुरिक—दर्दुर करोति—कुम्हार। दर्दुर के अर्थों के सम्बन्ध में विश्वकोश द्रष्टव्य है—

> 'दर्दुरस्तोयदे भेके वाद्यभाण्डाद्रिभेदयो।
> दर्दुरा चण्डिकाया स्यात्पामजाले तु दर्दुरम्॥'

धर्मं चरति—'धर्माचरण करता है' अर्थ में द्वितीयान्त धर्म शब्द से ठक् प्रत्यय होता है। अतः—धार्मिक—धर्म चरति।

शिल्पम्—'इसका शिल्प है' अर्थ में शिल्प वाचक प्रथमान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—मार्दङ्गिक—मृदङ्गवादन शिल्पमस्य (मृदङ्ग बजाना इसका शिल्प है)।

शीलम्— यह इसका स्वभाव है' अर्थ में शीलवाचक प्रथमान्त पद से ठक् प्रत्यय होता है। जैसे—आपूपिक (जिसका मालपुआ खाने का स्वभाव है)—अपूपभक्षण शीलमस्य।

यदधिकार

तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम्-- वहन करता है' अर्थ में द्वितीयान्त रथ, युग और प्रासङ्ग शब्दों से यत् प्रत्यय होता है। जैसे—रथ्य —रथ वहति–रथ का वहन करने वाला, युग्य —युग (जुआ) वहति, प्रासङ्ग्य — प्रासङ्ग वहति।

प्रासङ्ग—'रथादिवहने सुशिक्षितावश्वौ नियुज्य तत्स्कन्धवाह्ययुगे यद् युगान्तरमासज्य तस्मिन्नशिक्षिता अश्वादयो वहनशिक्षार्थं नियुज्यन्ते स प्रासङ्ग इत्यर्थः।'

—सिद्धान्तकौमुदी की बालमनोरमा टीका

दूसरे जुए को प्रासङ्ग कहते हैं—'प्रासङ्गो ना युगान्तरम'—अमरकोश। रथादि के वहन में सुशिक्षित घोडों को लगाकर उनके कन्धों पर रक्खे गए जुए में दूसरा जुआ जोडकर उसमें अशिक्षित घोडों आदि को वहन की शिक्षा देने के लिए लगाया जाता है। पहले जुए में जोडा गया दूसरा जुआ प्रासङ्ग कहा जाता है।

धुरो यड्ढकौ--'वहन करता है' अर्थ में द्वितीयान्त धुर् से यत् और ढक् प्रत्यय होते हैं। जैसे--धुर्य, धौरेय।

नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसम्मितेषु—तृतीयान्त पदों—नौ, वयस्, धर्म, विष, मूल, मूल, सीता और तुला—से क्रमश तार्य, तुल्य, प्राप्य, वध्य, आनाम्य, सम, समित और सम्मित अर्थों में यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण—

नाव्यम्—नावा तार्यम्—नाव से पार करने योग्य।

वयस्य—वयसा तुल्यः—मित्र।

धर्म्यम्—धर्मेण प्राप्यम्।

विष्यम्—विषेण वध्यः—विष से मारा जाने योग्य।

मूल्यम्—मूलेन आनाम्यम्—मूल–पूँजी–के द्वारा अपने लिए बचाया जाने वाला धन।

टि०—जितने में कोई वस्तु खरीदी जाती है, उसे मूल कहते हैं। वस्तु को बेचने से मूल के अतिरिक्त जो धन मिलता है, उसे मूल्य कहते हैं। तात्पर्य यह है कि किसी वस्तु को बेचने से जो लाभ होता है, वही मूल्य है। द्रष्टव्य—सिद्धान्त कौमुदी की बालमनोरमा टीका

"पटादेरुत्पत्त्यर्थं वणिग्भिर्विनियुक्तं द्रव्यं मूलम्। तेन सह यदधिकं द्रव्यम् आनम्यते विक्रेतुः सम्मतीकरणेन लभ्यते तन्मूल्यमित्यर्थः। लोकास्तु विक्रेतुर्लब्धं सर्वं द्रव्यं मूल्यमिति व्यवहरन्ति। तत्र लक्षणा बोध्या।"

मूल्य.—मूलेन सम.—मूल के बराबर।

सीत्यम्—सीतया समितम्—हल के द्वारा जोता हुआ। सीता का अर्थ है—लाङ्गलपद्धति—हल के द्वारा खींची गई रेखा।

तुल्यम्—तुलया सम्मितम्—तराजू से तौला हुआ।

सभाया य—सप्तम्यन्त सभा शब्द से साधु अर्थ मे य प्रत्यय होता है। यत.—सभ्य—सभायां साधु—सभा में प्रवीण।

छयतोरधिकार

उगवादिभ्यो यत्—उकारान्त और गो आदि शब्दो से यत् प्रत्यय होता है। जैसे—शङ्कव्य दारु—शङ्कु के लिए लकडी, गव्यम—गोभ्यो हितम्—गायों के लिए हितकर।

आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् ख—'हितकर' अर्थ में आत्मन्, विश्वजन और भोगोत्तर (जिसके अन्त में भोग शब्द हो) चतुर्थ्यन्त पदो से ख प्रत्यय होता है।

आत्माध्वानौ खे—जब आत्मन् और अध्वन् शब्दो से ख प्रत्यय होता है, तब इन शब्दों को प्रकृतिभाव होता है। उदाहरण—

आत्मनीनम्—आत्मने हितम्—अपने लिए हितकर।

विश्वजनीनम्—विश्वस्मै जनाय हितम्—सब लोगो के लिए हितकर।

मातृभोगीण —मातृभोगाय हित.—माता के शरीर के लिए हितकर।

भावकर्मार्थ

तस्य भावस्त्वतलौ—'भाव' अर्थ में षष्ठ्यन्त पद से त्व और तल् प्रत्यय होते हैं। जैसे—गोत्वम्, गोता—गोर्भावः।

त्वान्तं क्लीबम् (लि० सू०)--त्व प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

तलन्त स्त्रियाम् (लि० सू०)--तल प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

पृथ्वादिभ्य इमनिज् वा--'भाव' अर्थ में पृथु आदि शब्दों से विकल्प से इमनिच प्रत्यय होता है। जैसे--प्रथिमा—पृथोर्भाव ।

वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च--'भाव' अर्थ में वर्णवाचक और दृढ आदि षष्ठ्यन्त पदों से ष्यञ् प्रत्यय भी होता है। जैसे—शौक्ल्यम्, शुक्लिमा--शुक्लस्य भाव ।

गुणवचनब्राह्मणादिभ्य कर्मणि च—'भाव' और 'कर्म' अर्थ में षष्ठ्यन्त गुणवाचक और ब्राह्मण आदि शब्दों से ष्यञ् प्रत्यय होता है। जैसे—जाड्यम्—जडस्य भाव कर्म वा, मौढ्यम—मूढस्य भाव कर्म वा, ब्राह्मण्यम्—ब्राह्मणस्य भाव कर्म वा।

सख्युर्य —'भाव' और 'कर्म' अर्थ में षष्ठ्यन्त सखि शब्द से य प्रत्यय होता है। अत —सख्यम् (मित्रता)—सख्युर्भाव कर्म वा।

कपिज्ञात्योर्ढक—'भाव' और 'कर्म' अर्थ में षष्ठ्यन्त कपि और ज्ञाति शब्दों से ढक प्रत्यय होता है। जैसे—कापेयम—कपेर्भाव कर्म वा, ज्ञातेयम्—ज्ञातेर्भावः कर्म वा।

पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्—षष्ठ्यन्त पत्यन्त (जिस पद के अन्त में पति शब्द हो) और पुरोहित आदि शब्दों से यक् प्रत्यय होता है। जैसे—सैनापत्यम्, पौरोहित्यम्।

मत्वर्थीय

प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्--मत्वर्थ में प्राणी के अंगों के वाचक प्रथमान्त आकारान्त शब्दों से विकल्प से लच् प्रत्यय होता है। जैसे--चूडालः—चूडा अस्य सन्ति।

यहाँ चूडा प्राणी का अंग है, अत लच् प्रत्यय हुआ है।

लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः--मत्वर्थ में लोमन् आदि से श प्रत्यय, पामन् आदि से न प्रत्यय और पिच्छ आदि से इलच् प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे--लोमशः—लोमानि सन्ति अस्य; रोमशः; पामन (खुजली वाला); पिच्छिलः।

मतुप् होने पर लोमवान्, रोमवान्, पिच्छवान् रूप बनते हैं।

दन्त उन्नत उरच्—यदि दाँत ऊँचे हो, तो प्रथमा त दन्त शब्द से मत्वर्थ में उरच् प्रत्यय होता है। यत —दन्तुर —उन्नता दन्ता सन्त्यस्य।

केशाद्वोऽन्यतरस्याम्—मत्वथ में प्रथमान्त के। शब्द से विकल्प से व प्रत्यय होता हैं। यत —केशव —केशा सन्त्यस्य।

अन्येभ्योऽपि दृश्यते—(वा०) केश शब्द के अतिरिक्त अन्य शब्दो से भी मत्वथ मैं व प्रत्यय होता है। जैसे—मणिव —मणि वाला सप।

अर्णसो लोपश्च (वा०)—मत्वथ मे प्रथमान्त अर्णस् शब्द से व प्रत्यय होता है और अणस् के स् का लोप होता है। यत —अणव —समुद्र।

अत इनिठनौ—मत्वथ में प्रथमान्त अदन्त शब्दा से इनि और ठन् प्रत्यय होते हैं। जैसे—दण्डी, दण्डिक (दण्डवाला)।

व्रीह्यादिभ्यश्च—प्रथमान्त व्रीहि आदि शब्दो से भी मत्वर्थ में उपर्युक्त दोनों प्रत्यय होते हैं। जैसे—व्रीही, व्रीहिक।

अस्मायामेधास्रजो विनि—मत्वर्थ में प्रथमान्त असन्त (जिन शब्दो के अन्त में अस् हो), माया, मेधा तथा स्रज् शब्दों से विकल्प से विनि प्रत्यय होता है। जैसे—यशस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी।

वाचो ग्मिनि—मत्वर्थ में प्रथमान्त वाच् शब्द से ग्मिनि प्रत्यय होता है। यत—वाग्मी—अच्छा वक्ता।

अर्शआदिभ्योऽच्—मत्वर्थ में प्रथमान्त अर्शस् आदि शब्दों से अच् प्रत्यय होता है। जैसे—अर्शसः (बवासीर रोग वाला)

प्रागिवीय

अतिशायने तमबिष्ठनौ—'अतिशय' अथ में वर्तमान प्रातिपादिक से तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं। जैसे—लघुतम., लघिष्ठः—अयम् एषाम् अतिशयेन लघु।

द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ[1]—द्वयर्थ प्रतिपादक और विभक्तव्य उपपद रहने पर प्रातिपादिक और तिङन्त से अतिशय अर्थ में तरप और ईयसुन्

---

1. द्रष्टव्य—सिद्धान्तकौमुदी की बालमनोरमा टीका—'द्वयर्थ प्रतिपादके विभक्तव्यविषयके च उपपदे सतीति फलितम्। प्रातिपदिकादिति तिङ इति चानुवर्तते।'

प्रत्यय होते हैं। जैसे—लघुतर, लघीयान् (अयम् अनयोरतिशयेन लघु)। यह द्व्यर्थप्रतिपादक उपपद का उदाहरण है। विभक्तव्य उपपद का उदाहरण—उदीच्या प्राच्येभ्य पटुतरा पटीयास (उत्तर के लोग दक्षिण के लोगो से अधिक चतुर होते हैं)।

तरप् और ईयसुन् प्रत्यय तब लगाये जाते हैं, जब दो में से एक का उत्कर्ष प्रकट करना होता है।

प्रशस्यस्य श्रः—जब इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय लगते हैं, तब प्रशस्य को श्र आदेश होता है। अत—श्रेष्ठः, श्रेयान्।

ज्य च—जब प्रशस्य में इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय लगते हैं, तब उसको ज्य आदेश भी होता है। अत—ज्येष्ठ।

ज्यादादीयस—ज्य के पश्चात् आने वाले ईयस् को आकार आदेश होता है। अत—ज्यायान्।

प्रशसाया रूपप्—प्रशसा अर्थ मे सुबन्त और तिङन्त से रूपप् प्रत्यय होता है। जैसे—पटुरूप: (प्रशस्तः पटु), पचतितराम् (प्रशस्त पचति)।

ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयर—ईषद् असमाप्ति (कुछ कमी) अर्थ में सुबन्त और तिङन्त से कल्पप्, देश्य और देशीयर् प्रत्यय होते हैं। जैसे—विद्वत्कल्पः, विद्वद्देश्य, विद्वद्देशीयरः (ईषदूनो विद्वान्)।

तिङन्त का उदाहरण—पचतिकल्पम—कुछ कम पकाता है।



एकादश प्रकरण

स्त्री-प्रत्यय

टाप्

अजाद्यतष्टाप्--स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए अज आदि से और अकारान्त (जिसके अन्त में ह्रस्व अकार हो) शब्दो से टाप् प्रत्यय होता है। जैसे--अजा, एडका, अश्वा, चटका मूषिका, बाला, वत्सा, होडा, मन्दा, विलाता।

सम्भस्त्राजिनशणपिण्डेभ्य फलात् (वा०)--यदि सम्, भस्त्र, अजिन, शण या पिण्ड के बाद फल शब्द आए, तो टाप् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—सम्फला, भस्त्रफला, अजिनफला, शणफला, पिण्डफला।

सदच्काण्डप्रान्तशतैकेभ्य पुष्पात् (वा०)—यदि सत्, अच्, काण्ड, प्रान्त, शत या एक के बाद पुष्प शब्द आए, तो टाप् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—सत्पुष्पा, प्राक्पुष्पा, प्रत्यक्पुष्पा, काण्डपुष्पा, प्रान्तपुष्पा, शतपुष्पा, एकपुष्पा।

शूद्रा चामहत्पूर्वा जाति (वा०)—यदि जाति अर्थ हो और महत् शब्द पहले न हो, तो शूद्र से टाप् प्रत्यय होता है। अत --शूद्रा।

जब महत् शब्द पहले आता है, तब ङीष् प्रत्यय लगता है। जैसे—महाशूद्री।

मूलान्नञ (वा०)—यदि मूल शब्द के पहले नञ् हो, तो टाप् लगता है। जैसे—अमूला।

प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुप—यदि प्रत्यय के क के पहले अ हो और आकारान्त स्त्री-प्रत्यय बाद में हो, तो अ के स्थान पर इ कर दी जाती है। यहाँ स्त्री-प्रत्यय सुप् के बाद नहीं आना चाहिए। जैसे—सर्विका, कारिका।

मामकनरकयोरुपसङ्ख्यानम् (वा०)—यदि बाद में टाप् प्रत्यय हो, तो मामक और नरक शब्दों में क के पहले आने वाले अ के स्थान पर इ कर दी जाती है। जैसे—मामिका, नरिका।

त्यक्त्यपोश्च (वा०)—यह नियम ऐसे शब्दो के विषय में भी लगता है, जिनके अन्त में त्यक् और त्यप् प्रत्यय लगे हो। जैसे—दाक्षिणात्यिका, इहत्यिका।

त्यकनश्च निषेध (वा०)—जिस शब्द में त्यकन् प्रत्यय लगा रहता है, उसमें क के पहले आने वाले अ के स्थान पर इ नही होती। जैसे—अधित्यका, उपत्यका।

आशिषि वुनश्च (वा०)—आशीर्वाद अर्थ मे प्रयुक्त वुन् प्रत्यय में भी क के पहले के अ के स्थान पर इ नहीं होती। जैसे—जीवका, भवका।

उत्तरपदलोपे न (वा०)—जब समास में उत्तरपद का लोप होता हैं, तब क के पहले आने वाले अ के स्थान पर इ नही होती। जैसे—देवका, यज्ञका

क्षिपकादीना च न (वा०—क्षिपक आदि में भी अ के स्थान पर इ नहीं होती। जैसे—क्षिपका, ध्रुवका, कन्यका चटका।

तारका ज्योतिषि (वा०)— नक्षत्र अर्थ में तारका रूप बनता है, अन्यथा तारिका रूप होता है। तारिका का अर्थ है—दासी।

वर्णका तान्तवे (वा०)—तान्तव (तन्तुओ का विकार) अर्थ होने पर वर्णका (प्रावरणविशेष) रूप बनता है, अन्यथा वर्णिका रूप बनता है। 'वर्णिका स्तोत्रीत्यर्थ। वर्णिकेति ग्रन्थविशेषस्य सञ्ज्ञा वा।'—सिद्धान्तकौमुदी की टीका बालमनोरमा।

वर्तका शकुनौ प्राचाम् (वा०)—पूर्व के वैयाकरणो के अनुसार पक्षी अर्थ में वर्तका रूप बनता है। उत्तर के वैयाकरणों के अनुसार वर्तिका बनता है (उदीचा तु वर्तिका—सिद्धान्तकौमुदी)।

डाप्

डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्—मन्नन्त शब्द से तथा अन्नन्त बहुव्रीहि से विकल्प से डाप् होता है। जैसे—सीमा, दामा, बहुयज्वा।

चाप्

सूर्याद्देवताया चाब्वाच्य (वा०)—देवता जाति की स्त्री अर्थ में पुयोग में वर्तमान सूर्य शब्द से चाप् प्रत्यय होता है। अत—सूर्यस्य स्त्री देवता सूर्या।

ङीप्

ऋन्नेभ्यो ङीप्—जिन शब्दो के अन्त में ऋ या न् हो है, उनसे ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—कर्त्री, हर्त्री, दण्डिनी।

उगितश्च—जिसका उक् (उ, ऋ, लृ) इत् हो, उससे ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—भवन्ती, पचन्ती।

टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः—जिस प्रातिपदिक के अन्त में अ हो और जो टित् प्रत्ययान्त हो या ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ या क्वरप् प्रत्ययान्त हो, उससे ङीप प्रत्यय होता है। जैसे –

कुरुचरी—ट प्रत्यय लगाने पर कुरुचर रूप बनता है। इसके बाद टिदन्त कुरुचर से ङीप् प्रत्यय होता है।

सौपर्णेयी—ढ प्रत्ययान्त सौपर्णेय से ङीप प्रत्यय हुआ है।

ऐन्द्री—ऐन्द्र अण् प्रत्ययान्त है। उससे ङीप् प्रत्यय हुआ है।

औत्सी—अञ् प्रत्ययान्त औत्स में ङीप् प्रत्यय लगाकर औत्सी रूप बनाया गया है।

ऊरुद्वयसी—द्वयसच् प्रत्ययान्त में ङीप् प्रत्यय हुआ है।

ऊरुदघ्नी—दघ्नच् प्रत्ययान्त से ङीप् प्रत्यय हुआ है।

ऊरुमात्री—मात्रच् प्रत्ययान्त ऊरुमात्र से ङीप् प्रत्यय लगाने पर रूप बना है।

पञ्चतयी—तयप् प्रत्ययान्त शब्द से ङीप् प्रत्यय हुआ है।

आक्षिकी—ठक् प्रत्यय लगाने से आक्षिक शब्द बनता है। उससे ङीप् प्रत्यय हुआ है।

प्रास्थिकी—ठञ प्रत्ययान्त प्रास्थिक से ङीप् प्रत्यय हुआ है।

लावणिकी—यहाँ ठञ् प्रत्ययान्त लावणिक शब्द में ङीप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाया गया है।

यादृशी—कञ् प्रत्ययान्त यादृश में ङीप् प्रत्यय लगाया गया है।

इत्वरी—क्वरप् प्रत्ययान्त इत्वर में ङीप् प्रत्यय लगाया गया है।

नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा॰)—नञ्, स्नञ्, ईकक् और ख्युन् प्रत्ययों से युक्त शब्दों से तथा तरुण और तलुन शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—स्त्रैणी, पौंस्नी, शाक्तीकी, आढ्यङ्करणी, तरुणी, तलुनी।

यञश्च—यञन्त प्रातिपादिक से ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—गार्गी।

वयसि प्रथमे—प्रथम अवस्था-सूचक अदन्त प्रातिपादिक से ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—कुमारी।

द्विगो—अदन्त द्विगु से ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—त्रिलोकी।

दामहायनान्ताच्च—यदि संख्यावाचक शब्द बहुव्रीहि समास के आदि में हो और दामन् या हायन शब्द अन्त में हो, तो उससे ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे-द्विदाम्नी, द्विहायनी।

मनोरौ वा—मनु शब्द से विकल्प से ङीप प्रत्यय होता है। मनु के उ को औ या ऐ आदेश होता है। जसे—मनावी, मनायी, मनु।

मनः—मन्नन्त से ङीप् नहीं होता। जैसे—सीमा, सीमानौ।

अनो बहुव्रीहेः—अन्नन्त बहुव्रीहि से ङीप् नहीं होता। जैसे—बहुयज्वा, बहुयज्वानौ।

ङीष्

षिद्गौरादिभ्यश्च—षित् प्रत्ययान्त से और गौर आदि से ङीष प्रत्यय होता है। जैसे—गार्ग्यायणी, नर्तकी, गौरी।

जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु—जानपद, कुण्ड, गोण, स्थल, भाज, नाग, काल, नील, कुश, कामुक, कबर शब्दों से क्रमश वृत्ति, पात्र, आवपन, अकृत्रिम भूमि, यवागू, स्थूलता, वर्ण, अनाच्छादन, अयोविकार (फार), मैथुनेच्छा, केशसन्निवेश अर्थों में ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—जानपदी, कुण्डी, गोणी, स्थली, भाजी, नागी, काली, नीली, कुशी, कामुकी, कबरी।

शोणात् प्राचाम्—पूर्व के वैयाकरणों के अनुसार शोण शब्द से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। अत शोणी, शोणा।

वोतो गुणवचनात्—उदन्त (जिसके अन्त में उ हो) गुणवाचक शब्द से विकल्प से ङीष् होता है। जैसे—मृद्वी, मृदु।

बह्वादिभ्यश्च—बहु आदि से विकल्प से ङीष् होता है। जैसे—बह्वी, बहुः।

कृदिकारादक्तिन. (वा०)—जिस प्रातिपादिक के अन्त में कृत् का इकार हो, उससे विकल्प से ङीष् होता है। जैसे—रात्रि, रात्री। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द से ङीष् नही होता।

पुंयोगादाख्यायाम्—पुरुषवाचक प्रातिपादिक से उस पुरुष की स्त्री का बोध कराने के लिए ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—गोपी—गोपस्य स्त्री। यहाँ 'गोप' पुलिङ्ग शब्द है। इससे गोप की स्त्री का बोध कराने के लिए ङीष् प्रत्यय हुआ है।

पालकान्तान्न (वा०)—यदि पुलिङ्ग शब्द के अन्त में पालक शब्द हो, तो ङीष् प्रत्यय नही लगता। जैसे—गोपालिका। यहाँ पालक शब्द अन्त में आया है, अत. ङीष् प्रत्यय नही हुआ है।

इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्—इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य—इन शब्दो से ङीष् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम होता है। जैसे—इन्द्राणी (इन्द्रस्व स्त्री), वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी।

हिमारण्ययोर्महत्त्वे (वा०)—हिम और अरण्य शब्दो से महत्त्व (अधिकता) अर्थ में ङीष् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम होता है। अत हिमानी—महद्धिमम्, अरण्यानी—महदरण्यम्।

यवाद्दोषे (वा०)—दाष अर्थ में यव से ङीष् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम होता है। अतः—यवानी—दुष्टो यव।

यवनाल्लिप्याम् (वा०)—यवन शब्द से लिपि अर्थ में ङीष् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम होता है। अतः—यवनानी—यवनाना लिपि।

मातुलोपाध्याययोरानुग्वा (वा०)—मातुल और उपाध्याय शब्दो को आनुक् आगम विकल्प से होता है। अत—मातुलानी, मातुली, उपाध्यायानी, उपाध्यायी।

या तु स्वयमेवाध्यापिका तत्र वा ङीष् वाच्य (वा०)—जब कोई स्त्री स्वय अध्यापन करती है, तब विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। अत—उपाध्यायी, उपाध्याया।

आचार्यादणत्वं च (वा०)--आचार्य शब्द से ङीष् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम होता है। यहाँ आनुक के नकार को णकार नहीं होता। अत —आचार्यानी—आचार्यस्य स्त्री। जो स्वयं धर्म का उपदेश करती है, उसे आचार्या कहते हैं।

अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे (वा०)--अर्य और क्षत्रिय शब्दों से स्वार्थ में विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम होता है। जैसे--अर्याणी, अर्या (वैश्य जाति की स्त्री), क्षत्रियाणी, क्षत्रिया (क्षत्रिय जाति की स्त्री)।

क्रीतात्करणपूर्वात्--यदि अकारान्त प्रातिपदिक के अन्त में क्रीत शब्द हो और आदि में ऐसा शब्द हो, जो उस साधन का नाम हो, जिसके द्वारा वस्तु खरीदी गई हो, तो ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे--वस्त्रक्रीता--वस्त्रेण क्रीता।

पाणिगृहीती भार्यायाम् (वा०)--भार्या अर्थ होने पर पाणिगृहीत शब्द से ङीष् प्रत्यय होता है। ङीष् प्रत्यय लगाने से पाणिगृहीती शब्द बनता है। जब भार्या अर्थ नहीं होता, तब पाणिगृहीता शब्द बनता है। इसका अर्थ है—वह स्त्री जिसका हाथ पकड़ा गया हो।

स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्--यदि उपसर्जनभूत स्वाङ्ग-वाचक शब्द अन्त में हो और उसकी उपधा में संयोग न हो, तो अदन्त प्रातिपदिक से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—अतिकेशी, अतिकेशा; चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा।

नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च—यदि समास के अन्त में नासिका, उदर, ओष्ठ, जङ्घा, दन्त, कर्ण या शृङ्ग शब्द हो, तो विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका।

अङ्गगात्रकण्ठेभ्यो वक्तव्यम् (वा०)—यदि समास के अन्त में अङ्ग, गात्र या कण्ठ शब्द हो, तो भी विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—स्वङ्गी, स्वङ्गा (शोभनानि अङ्गानि यस्याः), सुगात्री, सुगात्रा, सुकण्ठी, सुकण्ठा।

पुच्छाच्च (वा०)—यदि पुच्छ शब्द अन्त में हो, तो भी विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—सुपुच्छी, सुपुच्छा।

कबरमणिविषशरेभ्यो नित्यम् (वा०)—यदि कबर, मणि, विष या शर के बाद पुच्छ शब्द आए तो नित्य ङीष् होता है। जैसे—कबरपुच्छी, मणिपुच्छी, विषपुच्छी, शरपुच्छी।

न क्रोडादिबह्वचः—यदि क्रोडा आदि या बहुत स्वरों वाले स्वाङ्गवाचक शब्द अन्त में हो, तो ङीष् नहीं होता। जैसे—कल्याणक्रोडा।

सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च—यदि समास में सह, नञ् या विद्यमान शब्द पहले हो, तो स्वाङ्गवाचक शब्द से ङीष् नहीं होता। जैसे—सकेशा, अकेशा, विद्यमाननासिका।

नखमुखात्संज्ञायाम—जिस पद के अन्त में नख या मुख शब्द हो, उससे संज्ञा अर्थ में ङीष् नहीं होता। जैसे—शूर्पणखा, गौरमुखा।

सख्यशिश्वीतिभाषायाम्—सखि और अशिशु में ङीष् लगाकर सखी और अशिश्वी शब्द निपातित होते हैं। इनका प्रयोग लौकिक संस्कृत में होता है।

जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्—जिनकी उपधा में यकार न हो और जो नियत स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं, उन जातिवाचक प्रातिपदिकों से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे—तटी, वृषली, कठी, बह्वृची।

योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः (वा०)—उपधा में यकार होने पर भी हय, गवय, मुकय, मनुष्य और मत्स्य शब्दों से ङीष् प्रत्यय होता है। अतः—हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी।

मत्स्यस्य ङ्याम् (वा०)—ङी के पहले आने वाले मत्स्य शब्द के यकार का लोप हो जाता है। अत.—मत्सी।

ङीन्

शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्—शार्ङ्गरव आदि और अञन्त जातिवाचक प्रातिपदिक से ङीन् प्रत्यय होता है। जैसे—शार्ङ्गरवी, बैदी।

नृनरयोर्वृद्धिश्च—(ग० सू०)—नृ और नर शब्दों से ङीन् प्रत्यय होता है और नृ और नर शब्दों को वृद्धि होती है। अत.—नारी।

ऊङ्

ऊङुतः—जिसकी उपधा में य न हो, ऐसे मनुष्य-जाति-वाचक प्रातिपदिक से ऊङ् प्रत्यय होता है। जैसे—कुरूः।

बाह्वन्तात्संज्ञायाम्—यदि पूरा पद नाम हो, तो बाह्वन्त (जिसके अन्त में बाहु शब्द हो) प्रातिपदिक से ऊङ् प्रत्यय होता है। जैसे—भद्रबाहूः।

पङ्गोश्च—पङ्गु शब्द से ऊङ् प्रत्यय होता है। अत—पङ्गूः।

श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च (वा०)—श्वशुर शब्द से ऊङ प्रत्यय होता है और श्वशुर शब्द के शु के उकार का तथा र के अकार का लोप हो जाता है। अतः—श्वश्रू। ।

ऊरूत्तरपदादौपम्ये—जिस प्रातिपदिक का पूर्वपद उपमान-वाचक हो और उत्तरपद 'ऊरु' शब्द हो, उससे ऊङ् प्रत्यय होता है। जैसे—करभोरू ।

सहितशफलक्षणवामादेश्च—यदि किसी प्रातिपदिक के आदि में सहित, शफ, लक्षण या वाम शब्द हो 'और 'ऊरु' शब्द उत्तरपद हो, तो उससे ऊङ् प्रत्यय होता है। जैसे—सहितोरू, शफोरू, लक्षणोरू, वामोरू ।

सहितसहाभ्या चेति वक्तव्यम् (वा०)—यदि आदि में सहित या सह पद हो और अन्त में 'ऊरु' पद हो, तो भी ऊङ् प्रत्यय होता है। अत —सहितोरू, सहोरू ।

ति

यूनस्ति'—युवन् शब्द से ति प्रत्यय होता है। अत.—युवति ।

———